॥ श्री वर्द्धमान स्वामिने नमः ॥

॥ ॐ ॥

श्रीमान् मलधारीगच्छना श्री हेमचंद्रसूरिना शिष्य चंद्रसूरि विरचित.

बृहत्संग्रहणी ॥

प्रातःस्मरणीय तपगच्छना पूज्यपाद गुरुणीजी श्री-श्री-१०८ श्रीजकोर श्रीजी महाराजश्रीना सुविहित शिष्या गुरुणीजी देवश्रीजी तेमना शिष्या गुरुणीजी महाराज श्री सौभाग्य श्रीजी-ना सदुपदेशथी.

चतुर्विध संघना उपयोग माटे

छपावी प्रसिद्ध करनार
खंभात निवासी

मास्तर उमेदचंद रायचंद

मु. अमदावाद ठे. पांजरापोल

संवत १९८० ॥ वीर निर्वाण सं २४५० ॥ सन् १९२४

आवृत्ति १ ली प्रत १०००

श्री विद्याविजय मुद्रणालयमां-महेता मंछाराम लाला-शंकरलाले छाप्युं माडोआ-अमदावाद

कीमत १-८-०

प्रस्तावना.

मूळ ग्रंथकर्त्ता अने टीका.

आ एक अति उत्तम प्रकारनो ग्रंथ छे के जेनुं नाम श्री बृहत्संग्रहणी अर्थात् मोटी संग्रहणीना नामे प्रसिद्ध छे. जेनुं बीजुं नाम त्रैलोक्यदीपिका पण कहेवाय छे अने ते नाम पण सार्थक छे. एनो अर्थ ए थाय छे के–आ ग्रंथ पण लोकना दीवा समान छे. कारण के आ ग्रंथनी अंदर देवता–मनुष्य–तिर्यंच अने नारकी एम चारे गतिना जीवोना–शरीर आयुष्य. संघयण संस्थान–भुवन–विमान–गति आगति–विगेरे जाणवानी इच्छा करनाराने आ संग्रहणी नामनुं प्रकरण उत्तम साधन रूप छे. देवता अने नारकी तो अवधि ज्ञानना बलथी बीजी गतिमां रहेला जीवोना आयुष्य प्रमाण तथा सुख दुःखने जाणी शके पण मनुष्य तो अवधि ज्ञानना अभावने लीधे हमणां पूर्वाचार्योना रचेला ग्रंथोना आधारथीज बीजी गतिना जीवोनां आयुष्य तथा सुख दुःखादि जाणवा समर्थ थाय छे. जो के दरेक जीव उंची गतिमां जवानी तथा विशेष सुख मेळववानी इच्छा करे छे परन्तु नारकी तिर्यंच अने देवता पोतानी गतिथी विशेष उंची एटले मोक्ष सुख मेळववानी इच्छा छतां पण चारित्रना अभावे मनुष्य गति पाम्या विना ते मेळवी शकातुं नथी. आम होवाथी पांच ज्ञानना धारक पूर्व महा पुरुषोए मनुष्य गतिना जीवोना उपकारने माटे अन्य गतिमां रहेला जीवोना शरीर आयुष्य संघयण संस्थान विगेरेनुं तेमज सुख दुःख आदिनुं अनेक ग्रंथोनी अंदर वर्णन करेलुं छे पण ते बहु ग्रंथोनी अंदर भिन्न भिन्न रूपे वर्णवेलुं होवाथी जाणवानी इच्छा करनारने घणु दुष्कर थाय छे. आ कारणथी मलधारीगच्छना श्री हेमचंद्रसूरिना बाल शिष्य श्रीमान् चंद्रसूरिए अनेक भव्य जीवोना उपकार माटे आ संग्रहणी नामनो ग्रंथ रच्यो छे.

आ ग्रंथ बहु जीवोने उपकारक होवाथी तेनु भाषांतर गुजरातीमा वढवाणवाला शास्त्री हरिशंकर कालीदासे करी जैनी भाइओनी मददथी छपावी बहार पाडेलु हतु पण-हाल ते मल्तु नहीं होवाथी अने घणा जैनी भाइओने तथा-साधु साध्वीओने भणवा वाचवानु सुगम होवाथी प्रातःस्मरणीय तपगच्छना पूज्यपाद गुरुणीजी महाराजश्री सौभाग्यश्रीजीना सदुपदेशथी अने तेमनी खास प्रेरणाथीज कोइनी काइ पण मदद नहीं छतां तेनी योग्य कींमत राखी आ पुस्तक बहार पाडवामां आव्यु छे जेओ साहेबना उपकार साथे तेमनु टुक वृत्तांत अहीं आपवामा आव्यु छे

आपने सुविदितज छे के आ जैन शासनना प्रत्यक्ष महान् वितराग तीर्थंकर भगवान होय छे तेमना अभावे शासन चलावनार आचार्य महाराजा होय छे जेम श्रावकोने विशेष उपकारक आचार्य महाराजा होय छे तेमज श्राविकाओ तथा बालीकाओने विशेष उपकारक गुरुणीजी महाराजा होय छे. तेज न्याये आ पूज्यपाद पवित्र चारित्र भूषण गुरुणीजी महाराजश्री सौभाग्यश्रीजी महाराज साहब पण हिंदुस्तानना घणा शहरो अने गामोमां विहार करता पूर्वक-श्राविकाओ अने बालीकाओने धर्म मार्गमा जोडवामा हमेशा उद्यमवंत अने घणाज खंत धरावनारा महापवित्र साध्वीजीओमाना एक उत्तम चारित्रवंत गुरुणीजी महाराज छे एटलुज नहीं पण तेमनो समुदाय पण गामो गाम विहार करवा पूर्वक अनेक उपकार करी रह्यो छे ते नीचे मुजब छे. तप गच्छना मुख्य मान. स्मरणीय परम पूज्य गुरुणीजी महाराजश्री जे श्रीजीनी शिष्याओ

गुरुणीजी श्री विजकोर श्रीजी

तेमनी शिष्याओ.

विनयश्रीजी देव श्रीजी रूपश्रीजी उत्तमश्रीजी उमेदश्रीजी अने रिद्धीश्रीजी गुरणीजी साहबश्री देवश्रीजीनी शिष्याओ मान

श्रीजी. सौभाग्यश्रीजी आणंदश्रीजी. हरखश्रीजी. गुरुणीजीमहाराजश्री सौभाग्यश्रीजीनी शिष्याओ. चंपाश्रीजी. हीरश्रीजी. दानश्रीजी. लावण्यश्रीजी. गुलाबश्रीजी दोलतश्रीजी. कनकश्रीजी विद्याश्रीजी मणीश्रीजी मुनंदाश्रीजी. साध्वी आणंदश्रीजीनी शिष्याओ. अनोपश्रीजी कमलश्रीजी शांतीश्रीजी चंद्रश्रीजी. साध्वी हरखश्रीजीनी शिष्याओ. प्रसनश्रीजी. साध्वी चंपाश्रीजीनी शिष्याओ. दरसनश्रीजी शिवश्रीजी हीराश्रीजी खीमाश्रीजी प्रभाश्रीजी साध्वीदानश्रीजीनी शिष्याओ. दीपश्रीजी वल्भश्रीजी.

मांगरोलवाला साध्वीजी गुलाबश्रीजीनी शिष्याओ. पुन्यश्रीजी गुणश्रीजी प्रधानश्रीजी.

उपर बतावेलो परीवार तथा प्रशिष्याओनो घणो समुदाय विगेरे हालमां विचरे छे. अने घणी श्रावीकाओ तथा बालीकाओने धर्म मार्गमां जोडवामां घणो उपकार करी रह्या छे. एटलुंज नही परंतु प्राचीन स्तवनो जीनशतक दंडक प्रकरण ४१ द्वारवालुं तेमज नीत्य स्मरणीय शेत्रुंजा प्रकरणो आदि नाना मोटा पुस्तको पण तेमना सदुपदेशथी छपावी बहार पाडवामां आवेला छे अने ते एटला बधा लोकप्रीय थयेला छे के तेनी बबे चार चार आवृत्तिओ काडवी पडी छे. तेज प्रमाणे आ मोटी संग्रहणीनुं पण पुस्तक लोकप्रीय थशे तेमां कांइ संदेह जेवुं नथी.

उपरनी हकीकत जणाव्या बाद हवे आ बृहत्संग्रहणीनी प्रत यंत्रो सहित उक्त गुरुणीजी महाराज तरफथी बराबर सुद्ध करावी छपाववामां आवी छे छतां पण दृष्टी दोषथी तेमज प्रेस दोषथी--जे कांइ भुल चुक रही गइ होय अगर जीनाज्ञा विरुद्ध कांइ लखाइ गयुं होय तेनी क्षमायाची मीच्छामि दुक्कडं देवा पूर्वक आ प्रस्तावना समाप्त करवामां आवे छे. एज मुज्ञेशुकीं बहुनां.

संवत १९८० ना महा शुद ५ रवीवार.

ली०

प्रसिद्धकर्ता.

॥ श्रीवर्द्धमानस्वामिने नमः ॥

॥ श्री बृहत्संग्रहणी प्रारभ्यते ॥

श्री परमपददायकाष्टकर्मारिघातकत्रिलोकाधारक-चतुर्दशरज्ज्वात्मकप्रकटकारकधर्मदीपकादिप्ररूपक-परमपुरुषोत्तमाय नमोनम ॥ श्रीदानादिचतुष्कस्य शक्त्या धारकशासनाधिष्ठायकदेवेभ्यो नमोनम ॥ श्रीमहावीरस्वामिने नमोनम ॥

हवे ग्रंथकर्त्ता प्रथम शिष्टाचार पालवाने अर्थे तथा विघ्न निवारवाने अर्थे दोढ गाथाथी मंगलाचरण अने अभिधेय, प्रयोजन, सम्बन्ध तथा अधिकारी ए चार वस्तुनु प्रतिपादन करेछे।

नमिउं अरिहंताई, ठिइभवणो गाहणा य पत्तेयं ॥
सुरनारयाण वुच्छं, नरतिरियाण विणा भवणं ॥१॥
उववाय चवण विरहं, संखं इगसमइयं गमागमणे॥

अर्थ—(अरिहंताई) के० अरिहंतादिक पांच परमेष्ठिने—त्रण सकल त्रण भुवनना जनने चमत्कार उपजावनार, उत्तम अरिहंतम-

हिमाने विस्तारनार, अशोकवृक्षादिक आठ प्रातिहार्य धारक, चोत्रीश अतिशयथी सुशोभित, रागादिक शत्रुने हणनार अने बार गुण सहित ते अरिहंत कहेवाय. तथा ज्ञानावरणीयादिक आठ कर्म रहित, आठ गुणना धारक अने सिद्धक्षेत्रने विषे निराकाररूप धारक ते सिद्ध कहेवाय. तथा ज्ञानादिक पांच आचारने पोते पालनार, बीजाने पलावनार पालनांने अनुमोदना करनार, धर्मनो उपदेश आपनार अने छत्रीश गुण सहित ते आचार्य कहेवाय. तथा पच्चीश गुणना धारक, बीजाओने भणावनार अने शुद्ध वाचना आपनार ते उपाध्याय कहेवाय. तथा सत्तावीश गुणना धारक, सत्तर प्रकारे संयम पालनार, पांच महाव्रतना धारक, बावीस परिसहने जीतनार, दशविध यति धर्मना धारक, पांच सुमति त्रण गुप्तिना आधार, षट्कायना रक्षक, मन वचन काय योगने गोपवनार अने बेंतालीश दोष रहित आहारनी गवेषणा करनार ते साधु कहेवाय. ते पूर्वे कहेला पांच परमेष्ठीने (नमिउं) के० त्रिकरण शुद्धिथी नमस्कार करीने (सुरनारयाण) के० देवता तथा नारकीनी (ठिइ) के० स्थिति एटले आयुष्य (भवण) के० निवास करवानां घर अने (ओगाहणाय) के० शरीरनुं प्रमाण, अहिं मूलगाथामां य शब्दनु ग्रहण कर्युंछे तेथी ए देवतानां चिह्न, संस्थान, शरीर, अवधिज्ञान, अवधिज्ञाननो आकार, विमान, विषय, लेश्या ए (पत्तेय) के० अनुक्रमे प्रत्येक (वुच्छं) के० कहीशुं, परन्तु (नरतिरियाण) के० मनुष्य अने तिर्यंचना (भवण विणा) के० भवनो शाश्वतां न होवाथी भुवन विना आयुष्य तथा अवगाहना कहीशुं. ए ३ द्वार थयां ॥ १ ॥ तथा (उववायविरहं) के० एक देव उपज्या पछी बीजो देव केटला कालने आंतरे उपजे ? ते उपपात विरहकाल ४, तथा (चवणविरहं) के० एक देव चव्या पछी बीजो देव केटला कालने आंतरे चवे ? ते च-

वन विरहकाल ५, तथा (इगसमइय) के० एक समये (सख) के० संख्याए गणतां केटला उपजे ? ते उपपात संख्या ६, तथा एक समये संख्याए गणता केटला चवे ? ते चवन संख्या ७, तथा (गमण) क० मरीने केटली गतिमा जाय ? ते गति ८, तथा (आगमणे) के० केटली गतिना आव्या जीवो देवपणे उपजे ? ते आगति ९ ॥ एम देवता तथा नारकीना नव नव द्वार मळी अढार द्वार थाय अने मनुष्य तथा तिर्यंचना भवन विना आठ आठ द्वार मली शोल थाय, एम सर्व मली चोत्रीश द्वार थाय. ए चोत्रीश द्वार कहीशु, ए अभिधेय क .

ग्रन्थकर्त्ताने ग्रन्थ रचता जे शुभ आश्रव अने अशुभनी निर्जरा थाय ते अनन्तर प्रयोजन अने तेथी परंपराए मोक्षप्राप्ती ते परंपरा प्रयोजन जाणवु. ए बे प्रयोजन ग्रन्थकर्त्ताना जाणवा. तथा श्रोताने देवादिकनु स्वरूप जाणवु ते श्रोतानु अनतर प्रयोजन अने तेथी परंपराए मोक्षप्राप्ती ते श्रोतानु परंपरा प्रयोजन, ए बे प्रयोजन श्रोताना जाणवा.

संबंध बे प्रकारनो छे. पहेलो उपायोपेय लक्षण अने बीजो गुरुपर्वक्रम लक्षण. तेमा सग्रहणी ग्रथ ते उपाय अने तेनु तत्वज्ञान ते उपेय एम बन्ने मलीने उपायोपेय लक्षण संबंध जाणवो. तथा गुरुपर्वक्रमलक्षण ते ए संग्रहणीनो अर्थ श्रीवीरप्रभुए वखाण्यो, त्यार पछी सुधर्मा स्वामीए द्वादशागीमा गुथ्यो. त्यांथी श्यामाचार्यादिके पन्नवणा प्रमुखमा गुथ्यो. त्यांथी जिनभद्र गणि क्षमाश्रमणे आ संग्रहणीमा उतार्यो. ए गुरुपर्वक्रम लक्षण जाणवु. ए संबंध कह्यो.

वली आ संग्रहणी ग्रन्थ भणवाना अधिकारी साधु साध्वी श्रावक अने श्राविका छे ते अधिकारीपणु जाणवु.

हवे जेवी रीते अनुक्रमे करीने चोवीश द्वार कह्या, तेवीज रीते अनुक्रमे करीने देवतानी स्थिति प्रमुख नव द्वार कहे छे, तेमां प्रथम १ भुवनपति, २ व्यंतर, ३ ज्योतिषी अने ४ वैमानिक. ए चार प्रकारना देवोमांथी भुवनपति देवोनी जघन्य आयुष्यनी स्थिति अर्द्धगाथाए करीने कहे छे

दस वाससहस्साइं, भवणवईणं जहन्नठिई ॥ २ ॥

अर्थ–(भवणवईणं) के० असुरकुमारादिक दश प्रकारना भुवनपति देवोनी अने भुवनपतिनी देवीओनी सामान्यपणे (दस वाससहस्साइं) के० दश हजार वर्षनी (जहन्नठिई) के० जघन्यथी आयुष्यनी स्थिति होय, पण तेथी ओछी न होय.

अहिं देवताओना आयुष्यनुं प्रमाण पल्योपम तथा सागरोपमथी कहेशे, माटे पल्योपम तथा सागरोपमनुं स्वरुप देखाडे छे.

देवकुरु तथा उत्तरकुरुना उगजेला सात दिवसना घेटाना एक उत्सेधांगुल प्रमाण रोमखण्डना सात वार आठ आठ खण्ड करतां ते सर्व मलीने वीस लाख सत्ताणुं हजार एक सो बावन खंड थाय. तेवा खंडथी चार गाउनो घनवृत्त (चार गाउ विष्कंभ अने चार गाउ उंडाईवालो) कूवो ठांसीने कांठा सुधी भरी तेमांथी समये समये एक एक रोमखंड काढतां ज्यारे कूवो खाली थाय त्यारे एक उद्धार पल्योपम कहेवाय, अने सो सो वर्षे एक एक रोमखण्ड काढतां अद्धा पल्योपम कहेवाय छे. तेवा दश कोडाकोडी पल्योपमे एक सागरोपम थाय छे. अहिं छ प्रकारना पल्योपमनुं विशेष स्वरूप क्षेत्रसमासादि ग्रन्थोथी जाणी लेवुं ॥

हवे भुवनपति देवोनी उत्कृष्टी आयुष्यस्थिति बे गाथाए करी कहे छे.

चमरबलि सारमहिय, तद्देवीणं तु तिन्नि चत्तारी ॥
पलियाइ सड्ढाइ, सेसाण नव निकायाण ॥ ३ ॥
दाहिण दिवड्ढ पलिय, उत्तरओ हुंति दुन्नि देसूणा ॥
तदेवीमद्धपलियं, देसूण आउमुक्कोस ॥ ४ ॥

अर्थ—भुवनपति देवोना दश निकाय (जाति विशेष अथवा निवास स्थान) छे. ते दरेक निकायमां दक्षिण अने उत्तर एम बबे खण्ड छे. दरेक खण्डनो एक एक इन्द्र छे. तेथी भुवनपति देवोना सव मलीने वीश इद्रो छे. तेमा पहेला निकायने विषे दक्षिण दिशाना खण्डमा रहेनारा असुरकुमारोनो राजा (चमर) के०, चमरेंद्र छे, तेनुउत्कृष्ट आयुष्य (सार) के० एक सागरोपमनु छे. तथा उत्तर दिशाना खण्डमां रहेनारा असुरकुमारोनो राजा (बलि) क० बलीन्द्र छे. तेनुं उत्कृष्ट आयुष्य (अहिय) के० एक सागरोपमथी कांइक अधिक छे. (तु) के० वली (तद्देवीण) क० ते चमरेन्द्रनी देवीनु उत्कृष्ट आयुष्य (सड्ढाइ तिन्नि पलियाइ) के० साडात्रण पल्योपमनु छे. तथा बलीन्द्रनी देवीनु उत्कृष्ट आयुष्य (सड्ढाइ चत्तारि पलियाइ) के० साडाचार पल्योपमनुं छे. तथा (सेसाण नव निकायाण) के० ए चमरेन्द्र तथा बलीन्द्र विना बाकीना जे नव निकायना इद्रो छे. ॥ ३ ॥ तेमा (दाहिण) के० दक्षिण दिशाना नव निकायना धरणेंद्र प्रमुख-नव इन्द्रो छे तेमनु उत्कृष्ट आयुष्य (दिवड्ढ पलिय) क० दोढ पल्योपमनु जाणवु, अने (उत्तरओ) क० उत्तर दिशाना नव निकायना भूतानंद्र प्रमुख नव इद्रो छे तेमनु उत्कृष्ट आयुष्य (दुन्नि देसूणा) के० देशे ऊणु बे पल्योपमनुं एटले बे पल्योपममा काइक ओछु जाणवु. तथा (तद्देवीमद्ध) के० ते धरणेन्द्र प्रमुख

नव इंद्रोनी देवीओनुं अर्द्ध पल्योपमनुं अने भूतानेन्द्र प्रमुख नव इंद्रोनी देवीओनुं (देसूणं पलियं) के० देशे ऊणुं एक पल्योपमनुं (आउमुक्कोसं) के० उत्कृष्ट आयुष्य जाणवुं अहिं इन्द्रना उपलक्षणथी सामान्य भुवनपति देवोनुं तथा तेमनी देवीओनुं उत्कृष्ट आयुष्य पण पूर्वोक्त प्रकारे जाणवुं ॥ ४ ॥

हवे व्यंतरदेवता तथा तेमनी देवीओनुं जघन्य अने उत्कृष्ट आयुष्य गाथाना त्रण पदे करीने कहे छे,

वंतरियाण जहन्नं, दसवाससहस्स पलियमुक्कोसं॥
देवीणं पलियद्धं–

अर्थ–(वंतरियाण) के० व्यंतरदेवता[1] तथा तेमनी देवीओनुं (जहन्न) के० जघन्य आयुष्य (दसवाससहस्स) के० दश हजार वर्षनुं होय छे. अने व्यंतरदेवोनुं (पलियं) के० एक पल्योपमनुं तथा (देवीणं) के० तेमनी देवीओनुं (पलियद्धं) के० अर्द्धपल्योपमनुं. (उक्कोसं) के० उत्कृष्ट आयुष्य जाणवुं.

हवे चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र अने तारा ए पांच जातना ज्योतिषी देवता तथा तेमनी देवीओनु जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुष्य एक पद अने बे गाथाए करीने कहे छे.

---

१ भवनपतिनी पेठे अहिं व्यन्तरना इन्द्र इन्द्राणिओनुं आयुष्य कह्युं नथी तो पण व्यन्तरेन्द्र अने इन्द्राणीनुं आयुष्य उत्कृष्ट पल्योपम अने अर्ध पल्योपम अनुक्रमे जाणवुं. इन्द्र इन्द्राणीओनुं जघन्य आयुष्य संभवे नहि.

२ श्री ह्रीधृति विगेरे देवीओनु आयुष्य १ पल्योपम छे ते व्यन्तर निकायनी नहि पण भवनपति निकायनी होवाथी (१) पल्यापमनुं आयुष्य छे.

पलियं अहियं ससिरवीणं ॥ ५ ॥
लक्खेण सहस्सेण य, वासाण गहाण पलियमेएसि ॥
ठिइ अद्ध देवीणं, कमेण नक्खत्त ताराणं ॥ ६ ॥
पलिअद्धं चउभागो, चउअडभागाहिगा उ देवीण ॥
चउजुयले चउभागो, जहन्नमडभाग पचमए ॥ ७ ॥

अर्थ–ज्योतिषी देवताना बे भेद छे. चर अने स्थिर तेमा अढी द्वीपनी माहेल्ा चर छे अने अढी द्वीपनी बाहेरना स्थिर छे ते सर्व ज्योतिषी माहेना जे (ससि) के० चंद्रमा इन्द्र अने चन्द्रमाना विमानवासी देवो छे, तेमनु उत्कृष्ट आयुष्य (वासाण लक्खेण अहिय पलिय) के० एक लाख व अधिक एक पल्योपम, अर्थात् एक पल्योपम अने एक लाख वर्षनु होय छे (य) के० तथा (रवीण) के० सूय इन्द्र अने सूर्यना विमानवासी देवोनु उत्कृष्ट आयुष्य (वासाण सहस्सेण अहिय पलियं) के० एक हजार वर्ष अधिक एक पल्योपमनुं अर्थात् एक पल्योपम अने एक हजार वर्षनु होय छे. तथा (गहाण) के० ग्रह विमानाधिपति अने ग्रहना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्ट आयुष्य (पलिय) के० एक पल्योपमनु होय छे. वली (एएसिं) के० ए पूर्व कहेला चन्द्र सूय अने ग्रहो तथा तेमना विमानवासीदेवो ए सर्वनी (देवीण) के० देवीओनी (ठिइ) के० आयुष्य (अद्ध) के० अर्द्ध जाणवु एटले चंद्रनी देवीनु तथा चंद्रना विमानवासी देवोनी देवीओनु उत्कृष्ट आयुष्य अर्ध पल्योपम अने पचास हजार वर्ष उपर होय छे तथा सूर्यनी देवीनु अने सूर्यना विमानवासी देवोनी देवीओनु उ कृष्ट आयुष्य अर्ध पल्योपम अने

पांचसो वर्षनुं उमर होय छे. तथा ग्रहनी देवीनुं तथा ग्रहना विमानवासी देवोनी देवीओनुं उत्कृष्ट आयुष्य अर्ध पल्योपमनुं होय छे. हवे (नक्खत्ततारार्ण) के० नक्षत्र तथा तारानुं उत्कृष्ट आयुष्य (कमेण) के० अनुक्रमे करीने कहे छे. ॥ ६ ॥ नक्षत्र अधिपति अने नक्षत्रना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्ट आयुष्य (पलियद्धं) के० अर्द्ध पल्योपमनुं होय छे. तथा तारा अधिपति अने ताराना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्ट आयुष्य (चउभागो) के० पल्योपमना चोथा भागनुं होय छे. तथा (देवीणं) के० नक्षत्रनी देवीनुं तथा नक्षत्रना विमानवासी देवोनी देवीओनुं (आउ) के० उत्कृष्ट आयुष्य (चउभागाहिग) के० पल्योपमनो चोथो भाग विशेषाधिक एटले पल्योपमनो चोथो भाग अने कांइक वधारे होय छे. तथा तारानी देवीओनुं अने ताराना विमानवासी देवोनी देवीओनुं उत्कृष्ट आयुष्य (अड भागाहिग) के० पल्योपमनो आठमो भाग विशेषाधिक एटले पल्योपमनो आठमो भाग अने कांइक वधारे होय छे. एम ए ज्योतिषी देवोनां पांचे युगलनुं उत्कृष्ट आयुष्य कह्युं.

हवे ज्योतिषी देवोनुं जघन्य आयुष्य कहे छे. पांच जातना ज्योतिषीमां चंद्र अने सूर्य ए बे इंद्र छे अने बाकीना त्रण विमानना अधिपतिओ छे, तेथी तेमनुं जघन्य तथा मध्यम आयुष्य नथी, माटे तेमना विना (चउजुअले) के० चार जुगल—ते चंद्रना विमानवासी देव अने देवीओ १, सूर्यना विमानवासी देव अने देवीओ २, ग्रहना विमानवासी देव अने देवीओ ३, नक्षत्रना विमानवासी देव अने देवीओ ४, ए चारे जुगलनुं (जहन्न) के० जघन्य आयुष्य (चउ भागो) के० पल्योपमनो चोथो भाग होय अने (पंचमए) के० ताराना विमानवासी देव अने देवीओ ए पांचमा युगलनुं जघन्य

आयुष्य अड भाग के० पल्योपमना आठमा भागनुं जाणवु. ए ज्योतिषी देव तथा देवीओनी जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति कही ॥ ७ ॥

हवे वैमानिक देवोनु उत्कृष्ट आयुष्य दोढ गाथावडे कहे छे.—

दो साहि सत्त साहिय, दस चउदस सतर अयर जा सुक्को ॥ इक्किक महियमित्तो, जा इगतीसुवरि गेविज्जे ॥ ८ ॥ तित्तीसणुत्तरेसु, सोहम्माइसु इमा ठिई जिट्ठा ॥

अर्थ —पहेला सौधर्म देवलोकने विषे देवतानु उत्कृष्ट आयुष्य (दो) के० बे सागरोपमनु होय छे. आ आयुष्य सौधर्म देवलोकना छेल्ला तेरमा प्रतरमा निवास करनारा देवतानु जाणवु बीजा इशान देवलोके पण तेरमा प्रतरे बे सागरोपम अने (साहि) के० पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक होय छे. त्रीजा सनत्कुमार देवलोके देवतानु उत्कृष्ट आयुष्य (सत्त) के० सात सागरोपमनुं छेल्ले प्रतरे होय छे. ए प्रमाणे चोथा माहेन्द्र देवलोके सात सागरोपम अने (साहि) के० पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक होय छे पांचमे ब्रह्मदेवलोके देवतानु उत्कृष्ट आयुष्य (दस) के० दश सागरोपमनु, छठ्ठे लांतक देवलोके (चउदस) के० चउद सागरोपमनु, अने सातमे शुक्र देवलोके देवतानु उत्कृष्ट आयुष्य (सतर अयर) के० सत्तर सागरोपमनु होय छे. एम (जा सुक्को) के० यावत् छठ्ठा शुक्र देवलोक सुधी जाणवु (इत्तो) के० त्यार पछी (इक्किमहिय) के० एक एक सागरोपमनी वृद्धि करवी ते (जा) के० ज्यां सुधी (उवरि गेविज्जे) के० उपरना नवमा

ग्रैवयके (इगतीस) के० एकत्रीश सागरोपमनुं आयुष्य थाय ते कही देखाडे छे. आठमा सहस्रार देवलोके अढार सागरोपम, नवमा आनत देवलोके ओगणीश सागरोपम, दशमा प्राणत देवलोके वीश सागरोपम, अग्यारमा आरण देवलोके एकवीश सागरोपम, अने बारमा अच्युत देवलोके बात्रीश सागरोपमनुं उत्कृष्ट आयुष्य होय छे. वली त्रण त्रण ग्रैवेयकना त्रण जोडलां मली नव ग्रैवेयक उपरा उपरी रहेला छे. तेमां नीचेना त्रणमांना नीचेना सुदर्शन ग्रैवेयके त्रेवीश, वच्चेना (बीजा) सुप्रतिष्ठ ग्रैवेयके चोवीश अने उपरना त्रीजा मनोरम ग्रैवेयके पच्चीश सागरोपमनुं आयुष्य होय छे, वच्चेना त्रणमांना नीचेना एटले चोथा सर्वभद्र ग्रैवेयके छवीश, वच्चेना एटले पांचमा सुविशाल ग्रैवेयके सत्यावीश अने उपरना एटले छठा सोमनस ग्रैवेयके अठा-वीश सागरोपमनुं आयुष्य होय छे. तथा उपरना त्रणमानां नीचेना एटले सातमा सुमनस ग्रैवेयके ओगणत्रीश, वच्चेना एटले आठमा प्रीयंकर ग्रैवेयके त्रीश अने उपरना नवमा आदित्य ग्रैवेयके एक-त्रीश सागरोपमनुं उत्कृष्ट आयुष्य होय छे ॥ ८ ॥ एहथी उपरना विजय वैजयंत जयंत अपराजित अने सर्वार्थसिद्ध ए पांचे अनुत्तर विमानने विषे देवतानु (तित्तिस) के० तेत्रीश सागरोपमनुं उत्कृष्ट आयुष्य जाणवुं. (सोहम्माइसु) के० सौधर्म देवलोकथी मांडी पांच अनुत्तर विमान सुधीना वैमानिक देवतानी (इमा) के० आ (जिठा ठिइ) के० उत्कृष्ट स्थिति कही.

हवे वैमानिक देवोनुं जघन्य आयुष्य ते गाथाथी कहे छेः—

सोहम्मे ईसाणे, जहन्नठिई पलियमहियं च ॥ ९ ॥
दो साहि सत्त दस चउ–दस सत्तर अयराइं जा
सहस्सारो ॥ तप्परओ इक्किक्कं, अहियं जाणुत्तर-

चउक्के ॥१०॥ इगतीस सागराइं, सव्वट्ठे पुण जहन्नठिइ नत्थि ॥

अर्थ —(सोहम्मे) के० सौधर्म देवलोकने विषे देवताओनी (जहन्नठिई) के० जघन्य आयुष्य (पलिय) के० एक पल्योपमनु होय छे. आ आयुष्य सौधर्म देवलोकना तेरे प्रतरमा निवास करनारानु जाणवु. (च) क० अने (ईसाणे) क० ईशान देवलोकने विषे एक पल्योपम तथा (अहियं) क० एक पल्योपमनो असख्यातमा भाग अधिक होय छे ॥ ९ ॥ त्रीजा सनत्कुमार देवलोके (दो) के० बे सागरोपमनु अने चोथा माहेन्द्रदेवलोक बे सागरोपम अने (साहि) के० कांइक अधिक होय छे. पाचमा ब्रह्म देवलोके (सत्त) के० सात सागरोपमनु, छट्ठा लांतक देवलोके दस के० दश सागरोपमनु, सातमा शुक्र देवलोके (चउदस) के० चउद सागरोपमनु, एम (जा सहस्सारो) क० यावत् आठमा सहस्रार देवलोकने विषे (सत्तर अयराइ) के० सत्तर सागरोपमनु जघन्य आयुष्य होय छे (तप्परओ) के० तेथी उपर आनतादि देवलोकने विषे (इक्कि अहिय) के० एक एक सागरोपम वधारता जवुं. ते (जा णुत्तरचउक्के) क० ज्या सुधी चोथा अनुत्तर विमानने विषे एकत्रीश सागरोपमनु जघन्य आयुष्य थाय छे ते आ प्रमाणे–आनत देवलोके. अढार सागरोपमनु, प्राणत देवलोके ओगणीश सागरोपमनु, आरण देवलोक वीश सागरोपमनु, अने अच्युत देवलोके एकवीश सागरोपमनु जघन्य आयुष्य थाय छे. त्यारपछी नवे ग्रैवेयके एक एक सागरोपम वधारता नवमे ग्रैवेयके त्रीश सागरोपमनु जघन्य आयुष्य होय. त्यार पछी विजय वैजयत जयत अने अपराजित ए चार अनुत्तर विमाने–॥ १० ॥ (इग-

तीससागराइं) के० एकत्रीश सागरोपमनुं जघन्य आयुष्य होय. (पुण) के० वली (सव्वट्ठे) के० सर्वार्थसिद्ध नामना पांचमा अनुत्तर विमानने विषे (जहन्नठिइ नत्थि) के० जघन्य आयुष्य नथी ॥

हवे वैमानिक देवीओ केटला देवलोक सुधी होय छे? तथा केटला प्रकारनी होय छे? ते अर्धी गाथा वडे कहे छे.

परिगहियाणियराणि य, सोहम्मीसाण देवीणं ॥११॥

अर्थः—(देवीणं) के० वैमानिक देवीनी उत्पत्ति (सोहम्मीसाण) के० सौधर्म तथा ईशान ए बे देवलोकने विषे होय छे. अने ते देवीओ बे प्रकारनी छे. (परिगहियाणिइयराणि य) के० एक परिग्रहिता ते परणेली[1] कुलांगना सरखी अने बीजा अपरिग्रहिता ते साधारण गणिका सरखी जाणवी. ॥ ११ ॥

हवे एक इंद्रना भवमां केटली देवीओ उत्पन्न थइ मरण पामे? ते बे गाथावडे कहे छे.

दोकोडाकोडीओ, पंचासी कोडी लक्ख इगसयरी ॥
कोडिसहस्स चउकोडि–सयाण अडवीसकोडीणं
॥ १२ ॥ सत्तावन्नं लक्खा चउदससहस्साय दुस-

१ देवोमां मनुष्यवत् परणवानी विधी नथी परन्तु अमुक एक पतिदेवनीज ते देवी गणाती होवाथी पतिव्रतापणु होय छे. प्रथम पतिदेव चवी गयाथी बीजो तेज स्थाने उपजेला देवने पुनः पति तरीके अंगीकार करे तो पण पतिव्रतापणुं लोपाय नहि एवी देवलोकनी मर्यादा छे.

यपंचासी ॥ इय सखा देवीओ, चवंति इंदस्स
जम्मंमि ॥ १३ ॥

अर्थ —(दो कोडाकोडीओ) के० बे क्रोडाक्रोड, (पचासीकोडीलक्ख) के० पचासी क्रोड लाख, (इगसयरि कोडी सहस्स) के० एकोतेर क्रोड हजार, (चउकोडि सयाण) के० चार सो क्रोड अने (अट्ठवीस कोडीण) के० अठावीस क्रोड ॥ १२ ॥ (सत्तावन्न लक्खा) के० सत्तावन लाख, (चउदस सहस्सा) के० चउद हजार (य) के० अने (दुसय पंचासी) के० बसो पचासी २८५७१४२८५७१४२८५ (इय सखा देवीओ) के० एटली देवीओनी संख्या इन्द्रस्स जम्मंमि के० ॥ एक इंद्रना भवमां (चवंति) के० मरण पामे छे ॥ १३ ॥

हवे वैमानिक देवीओनु जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुष्य एक गाथाथी कहे छे

पलिय अहिय च कमा, ठिई जहन्ना इओ य
उक्कोसा ॥
पलियाइ सत्तपन्नास, तहय नव पंचवन्नाय ॥ १४ ॥

अर्थ—सौधर्म देवलोकने विषे (इओ) के० ए परिग्रहीता तथा अपरिग्रहीता देवीओनी (जहन्ना ठिइ) के० जघन्य आयुष्य (पलिय) के० एक पल्योपमनु, (च) के० ईशान देवलोकने विषे परिग्रहीता तथा अपरिग्रहीता देवीओनु जघन्य आयुष्य (अहिय) के० एक पल्योपमथी काइक अधिक (कमा) के० अनुक्रमे करीने जाणवु. तथा सौधर्म देवलोके परिग्रहीता देवीओनु (उक्कोसा) के० उत्कृष्ट आयुष्य (पलियाइ सत्त) के० सात

पल्योपमनी अने अपरिग्रहीता देवीओनी (पन्नान्न) के० पचास पल्योपमनी आयुस्थिति होय छे. (तह) के० तथा ईशान देवलोके परिग्रहीता देवीओनुं (नव) के० नव पल्योपम अने अपरिग्रहीता देवीओनुं (पंचवन्ना) के० पंचावन पल्योपमनुं आयुष्य होय छे ॥ १४ ॥

सौधर्म तथा ईशान देवलोकना देवताने भोग्य एवी जे पतिव्रता देवीओ छे ते परिग्रहीता देवीओ कहेवाय छे. सौधर्म देवलोके अपरिग्रहीता देवीओनां छ लाख विमान छे. ते अपरिग्रहीता देवीओ गणिका जाति छे. ते अपरिग्रहीता देवीओ त्रीजा पांचमा सातमा नवमा अने अग्यारमा देवलोकना देवोने भोग्य छे, तेथी जे देवीओ जे देवलोकने भोग्य छे ते त्यां जाय छे. तथा ईशान देवलोके अपरिग्रहीता देवीओनां चार लाख विमान छे. ए अपरिग्रहीता देवीओ चोथा छठ्ठा आठमा दशमा अने बारमा देवलोकना देवने भोग्य छे, तेथी जे देवीओ जे देवलोकने भोग्य छे ते त्यां जाय छे.

हवे असुर कुमारादिक इंद्रोनी अग्रमहिषीओनी संख्या कहे छे.

पण छ चउ चउ अठ्ठ य, कमेण पत्तेयमग्गमहिसीओ ॥
असुरा नागाइ वंतर—जोईस कप्प दुगिंदाणं ॥ १५ ॥

अर्थः—जे प्रधान पटराणी होय ते अग्रमहिषी कहेवाय छे. तेमां भुवनपतिनी पहेली निकायनी बे दिशामां रहेनारा (असुरो) के० असुरकुमारना चमरेन्द्र तथा बलीन्द्र नामना बे इंद्र छे. तेमने एक एकने (पण) के० पांच पांच (अग्गमहिसीओ) के० अग्रमहिषीओ होय छे. तथा (नागाइ) के० नागकुमार विगेरे बाकीना भुवनपतिनी नव निकाय छे तेना धरणेंद्र तभूतथा नंद्र विगेरे

अढार इद्र छे, तेमने दरेकने (छ) के० छ छ अग्रमहिषीओ छे. तथा (वंतर) के० व्यतर देवतानी सोल निकायना काल महाकाल विगेरे बत्रीश इद्र छे तेमने दरेकने (चउ) के० चार चार अग्रमहिषीओ होय छे. तथा (जोईस) के० ज्योतिषीना चद्र तथा सूर्य ए बे इन्द्रने (चउ) क० चार अग्रमहिषीओ होय छे. तथा (कप्पदुगिंदाण) के० सौधर्म तथा ईशान ए बे देवलोकना बे इन्द्र छे तेमने दरकने (अट्ठ) के० आठ आठ अग्रमहिषीओ होय छे. सौधर्म तथा ईशान देवलोकथी उपरना देवलोकने विषे देवीनु उपजवु नथी, तेथी त्या परिग्रहीता देवीओ पण नथी. परतु ते देवलोकना इद्र तथा देवोने ज्यारे विषय सेववानी इच्छा थाय त्यारे तेमने यथायोग्य सौधर्म तथा ईशान देवलोकनी अपरिग्रहीता देवीओ उपभोगने अर्थ थाय छे, माटे त्या अग्रमहिषीओनो सभव नथी ॥ १८ ॥

हवे देवलोकना प्रतरनी सख्या एक गाथावडे कहे छेः—

दुसु तेरस दुसु बारस, छ पण चउ चउ दुगे
दुगे य चउ ॥
गेविज्जणुत्तरे दस, बिसट्ठि पयरा उवरि लोए ॥१६॥

अर्थ —जेम घरने उपराउपर माल होय छे, तेम देवलोकमा उपराउपर प्रतर होय छे. पण माळनी पेठे एक प्रतरथी बीजा प्रतरनी वच्चे टेकारूप कइ न होय. देवलोकना दरेक प्रतरो आकाशमा निराधार होय. तेमा (दुसु) के० सौधर्म अने ईशान ए बे देवलोकना मळीने (तेरस) के० तेर प्रतर वलयाकार छे तेमा पूर्व महाविदेह अने पश्चिम महाविदेहनी रचमा अर्द्धवलयाकार खडथी अर्द्धो अर्द्ध खंड करवा, जेमा एक दक्षिण दिशानो खण्ड, अने

बीजो उत्तर दिशानो खण्ड. तेमां दक्षिण दिशाना अर्द्धवलय खण्डना तेर प्रतर सौधर्मेन्द्रना जाणवा अने उत्तर दिशाना अर्द्धवलय खण्डना तेर प्रतर ईशानेंद्रना जाणवा.[1] तेमज (दुगु) के० सनत्कुमार अने माहेंद्रने विषे मलेला वलयाकार (बारस) के० बार प्रतर छे. अहिं पण अर्द्धोअर्द्ध करी दक्षिण दिशाना सनत्कुमारेन्द्रना अने उत्तर दिशाना माहेन्द्रना प्रतर जाणवा. ब्रह्म देवलोके (छ) के० छ प्रतर, लांतक देवलोके (पण) के० पांच प्रतर, शुक्र देवलोके (चउ) के० चार प्रतर, सहस्रारे (चउ) के० चार प्रतर, तथा आनत अने प्राणत ए (दुगे) के० बे देवलोकना मलीने (चउ) के० चार प्रतर, तथा आरण अने अच्युत ए (दुगे य) के० बे देवलोकना मलीने चार प्रतर जाणवा. ए सर्व मलीने बावन प्रतर थया. वली (गेविज्ज) के० नव ग्रैवेयके एक एक प्रतर गणतां नव प्रतर थाय, अने (अणुत्तरे) के० पांचे अनुत्तर विमाने एक प्रतर ए (दस) के० दश प्रतर थया. ते पूर्वे कहेला बावन साथे मेलवतां (उवीर लोए) के० उपरना लोकने विषे (बिसट्ठि पयग) के० बासठ प्रतर थाय छे ॥ १६ ॥

हवे प्रतरे प्रतरे जूदुं जूदुं उत्कृष्ट तथा जघन्य आयुष्य जाणवा माटे प्रथम सौधर्म देवलोके उपाय कहे छे.

सोहम्मुक्कोसठ्ठिइ, नियपयर विहत्त इच्छ संगुणिओ ॥

---

१ सौधर्मना १३ प्रतर अने इशानना १३ प्रतर मळी २६ प्रतर न गणाय, पण १३ प्रतरज गणाय. कारण के सौधर्मने तावे दक्षिण बाजुना १३ अर्धा प्रतर अने इशान इन्द्रने तावे उत्तर बाजुना १३ अर्धा प्रतर मळी १३ आखा प्रतर थाय. ए प्रमाणे त्रीजा चोथा आठमा नवमा दशमा अने अगीआर बारमा देवलोके पण जाणवुं.

पयरुकोसट्ठिइओ, सव्वत्थ जहन्नओ पलियं ॥ १७ ॥

अर्थः—(सोहम्मुक्कोसठिइ) के० पहला सौधर्म देवलोकने विष जे उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपमनी छे तेने (नियपयर) के० पोताना तेर प्रतर साथे (विहत्त) के० वहेंचीने पछी (इच्छ सगुणिओ) के० अहिं जे त्रीजा पाचमा अथवा सातमा प्रतरनु आयुष्य काढवाने इच्छेलु होय ते प्रतरनी साथे ज्यारे गुणाकार करीए त्यारे (पयर) के० ते प्रतरनी (उक्कोसठिइओ) के० उत्कृष्ट स्थिति थाय. ते आ प्रमाणे—सौधर्म देवलोकना तेरमा प्रतर उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति बे सागरोपमनी छे, तेमांथी एक एक सागरोपमना तेर तेर भाग करीये त्यारे बे सागरोपमना तेरीया छवीश भाग थाय, तेने तेर भागे वहेंचता एक सागरोपमना तेरीया बे भागनु आयुष्य पहेले प्रतरे होय. एवीज रीते बीजा प्रतरनु आयुष्य काढवु होय तो तेने ते साथे गुणीये तो एक पल्योपमना तेरीया चार भाग आवे तेवीज रीते त्रीजे प्रतर छ भाग, चोथे आठ भाग, पाचमे दश भाग, छट्ठे बार भाग, सातमे चउद भाग एटले एक सागरोपम अने उपर तेरीओ एक भाग, आठमे एक सागरोपम ने त्रण भाग, नवमे एक सागरोपम ने पांच भाग, दशमे एक सागरोपम ने सात भाग, अग्यारमे एक सागरोपम ने नव भाग, बारमे एक सागरोपम ने अग्यार भाग अने तेरमे प्रतर बे सागरोपम सपूर्ण आयुष्य होय एज प्रमाणे ईशान देवलोकने विषे पण प्रत्येक प्रतरमा आयुष्य काढवानो उपाय जाणवो, परन्तु एटलु विशेष छे के—ए देवलोकना पहेले प्रतरे सागरोपमना तेरीया बे भागथी काइक अधिक आयुष्य कहवु. एम दरक प्रतरे अधिक आयुष्य कहता तेरमे प्रतरे बे सागरोपम साधिक आयुष्य स्थिति थाय, अने (सव्वत्थ) के० सौधर्म देवलोकना सर्वत्र एटले तेर

प्रतरने विषे (जहन्नओ) के० जघन्यथी (पलिय) के० एक पल्योपमनी आयुष्य स्थिति होय. तथा ईशान देवलोकना तेरे प्रतरने विषे जघन्यथी एक पल्योपम अधिक आयुष्य स्थिति होय छे. ॥ १७ ॥

हवे सौधर्मेन्द्रना चार लोकपालोनुं उत्कृष्ट आयुष्य कहे छे.

सोमजमाणं सतिभाग–पलियं वरुणस्स दुन्नि देसूणा ॥
वेसमणे दो पलिया, एस ठिइ लोगपालाणं ॥ १८ ॥

अर्थः—पूर्व दिशानो लोकपाल (सोम) के० सोम छे अने दक्षिण दिशानो लोकपाल (जम) के० यम छे. ते बन्नेनुं उत्कृष्ट आयुष्य (सतिभागपलियं) के० एक पल्योपमना त्रीजा भाग सहित एक पल्योपमनुं छे. पश्चिम दिशानो (वरुणस्स) के० वरुण नामनो लोकपाल छे, तेनुं उत्कृष्ट आयुष्य (दुन्नि देसूणा) के० देशे उणा बे पल्योपमनुं छे. तथा उत्तर दिशाना (वेसमणे) के० वैश्रमण नामना लोकपालनुं उत्कृष्ट आयुष्य (दोपलिया) के० बे पल्योपमनुं छे. ए प्रमाणे (लोगपालाणं) के० सौधर्मेन्द्रना चारे लोकपालनी (एस ठिइ) के० ए उत्कृष्ट आयुष्यनी स्थिति कही ॥ १८ ॥

ए लोकपालोनां विमान केवडां होय छे? ते एक गाथाथी कहे छेः—

अद्धतेरसलक्खा, विमाणमाणं च लोगपालाणं ॥
भणीयं च पंचभंगे, वुहेहिं निच्चं मुणेयव्वं ॥ १९ ॥

अर्थः—(च) के० वली (लोगपालाणं) के० ए लोकपालनां[1] (विमाणमाणं) के० विमानोनुं प्रमाण एटले विमानोनी

१ इन्द्रना मोटा अधिकारीओ.

ल्याई तथा गहोग्गाई (अद्धतेरसलस्खा) के० साडा बार लाख योजननी (पचभंग) के० भगवती सूत्रमा (भणीय) क० कही छे. ते (नूहेहिं) के० विद्वानोए (निच्च) के० नित्य (मुणेयव्वं) के० जाणवु. ॥ १९ ॥

हवे बार देवलोकना इन्द्रोने रहवाना स्थानक कहे छे —

कप्पस्स अतपयरे, नियकप्पवडिंसया विमाणाओ ॥
इदनिवासा तेसि, चऊदिसि लोगपालाण ॥ २० ॥

अर्थ —(कप्पस) क० दरेक देवलोकना (अतपयरे) क० छेल्ला प्रतरना मध्यभागने[1] विषे (नियकप्पवडिंसया) के० पोत-पोताना कल्पने नामे अवतसक नामना (विमाणाओ) के० विमानो छे. जेमके—सौधर्म देवलोकना उपरना तेरमा प्रतरने विषे दक्षिण दिशाए मध्यभागे सुधर्मावतंसक नामनुं विमान छे तेमज ईशान देवलोकना उपरना तेरमा प्रतरने विषे उत्तर दिशाए मध्य भागे ईशानावतसक नामनु विमान छे. एवी रीते सर्व देवलोकने विषे जाणवु. परंतु नवमा तथा दशमा देवलोकनो एक इन्द्र छे त्या चोथा प्रतर प्राणावतंसक नामनु विमान छे अने अग्यारमा तथा बारमा देवलोकनो एक इन्द्र छे, त्या पण चोथा प्रतर अच्युतावतंसक नामनु विमान छे ते अवतसक नामना विमानोने विषे (इन्दनिवासा) के० इद्रोनो निवास छे अने (तेसिं) के० ते विमाननी (चऊदिसि) के० चारे दिशाने विषे (लोगपालाणं) क० ते सोम विगेरे चार लोकपालोनो निवास छे. एम सर्व देवलोकने विषे जाणवु. ॥ २० ॥

---

१ पोतपोताना वाथाना अथवा छेल्ला प्रतरना या पूर्ण प्रतरना मध्य भाग

हवे सनत्कुमारादिक देवलोकना प्रत्येक प्रतरोने विषे जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुष्यनी स्थिति जाणवानो उपाय कहे छेः—

सुरकप्पठिइविसेसो, सगपयरविहत्त इच्छ संगुणिओ ॥
हिठ्ठिल्लठिइसहिओ, इच्छियपयरंमि उक्कोसा ॥ २१ ॥

अर्थः—(सुरकप्प) के० देवोना कल्प एटले देवताओने निवास करवाना बार देवलोक ते कल्प कहेवाय छे अने नव ग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तर विमान ते कल्पातीत कहेवाय छे. ते सुरकल्पना उत्कृष्ट आयुष्यनी जे (ठिइ) के० स्थिति छे तेनो (विसेसो) के० विश्लेष करवो, अर्थात् अधिक स्थितिमांथी ओछी स्थिति काढी नाखवी. एम कर्या पछी जे वधे तेने (सग-पयरविहत्त) के० पोत पोताना प्रतरे करीने वहेंचीए. पछी (इच्छसंगुणिओ) के० ए स्थाने वांछित प्रतर साथे गुणीए. तेनो जे आंक आवे तेने (हिठ्ठिल्लठिइसहिओ) के० हेठली उत्कृष्ट स्थिति साथे एकठो करीए त्यारे (इच्छियपयरंमि) के० इच्छित प्रतरने विषे (उक्कोसा) के० उत्कृष्ट स्थिति आवे.

ते वातने अहिं उदाहरण सहित समजावे छे केः—पहेला सौधर्म देवलोकना तेरमे प्रतरे उत्कृष्ट आयुष्यनी स्थिति बे सागरोपमनी छे अने सनत्कुमार देवलोकनुं उत्कृष्ट आयुष्य सात सागरोपमनुं छे, माटे सात सागरोपममांथी बे सागरोपमनी स्थिति बाद करीए त्यारे पांच सागरोपम सनत्कुमारना बाकी रहे. पछी ते पांच सागरोपमने सनत्कुमारना बार प्रतरे करीने वहेंचीए. ते एवी रीते के–एक सागरोपमना बार बार भाग करवा, जेथी पांचे सागरोपमना बारीया साठ भाग थाय अने ते साठे भागने बारे प्रतरे वहेंचीए त्यारे एक एक प्रतरे सागरोपमना बारीया पांच पांच

के० स्तनित कुमार. ए (दस विह भवणवइ) के० दश प्रकारना भुवनपति देवता छे. (तेसु) के० ते एक एक निकायने विषे एक दक्षिण श्रेणिनो अने एक उत्तर श्रेणिनो एम (दुदु इंदा) के० बे बे इन्द्रो छे. ए दशे निकायना देवो कुमार एटले बालकनी पेठे क्रीडा करनारा छे, माटे दरेक नामनी साथे कुमार शब्द जोड्यो छे. ॥ २२ ॥

हवे भुवनपतिनी दश निकायना वीश इन्द्रोनां नाम कहे छेः—

चमरे बली य धरणे, भूयाणंदे य वेणुदेवे य ॥
तत्तो य वेणुदाली, हरिकंते हरिस्सहे चेव ॥ २३ ॥
अग्गिसिह अग्गिमाणव, पुन्नविसिट्ठे तहेव जलकंते ॥
जलपह तह अमि अगई, मियवाहण दाहि-
णुत्तरओ ॥ २४ ॥
वेलंबे य पभंजण, घोस महाघोस एसिमन्नयरो ॥
जंबुद्दीवं छत्तं, मेरुं दंडं पहु काउं ॥ २५ ॥

अर्थः—अहिं (दाहिणुत्तरओ) के० दक्षिण श्रेणीनो इन्द्र अने उत्तर श्रेणीना इन्द्र एम दरेक निकायना बबे इन्द्रो कहेवा. तेमना अनुक्रमे करीने नाम कहे छे. पहेली असुरकुमार निकायनी दक्षिण दिशानो (चमरे) के० चमरेन्द्र (य) के० अने उत्तर दिशानो (बली) के० बलीन्द्र, बीजी नागकुमार निकायनी दक्षिण दिशानो (धरणे) के० धरणेन्द्र (य) के० अने उत्तर दिशानो (भूयाणंदे) के० भूतानंद्र. (य) के० वली त्रीजी सुवर्ण कुमार निकायनी दक्षिण दिशानो (वेणुदेवे) के० वेणुदेवेन्द्र अने उत्तर

दिशानो (वेणुमाली) क० वेणुमालीन्द्र. (तत्तो) के० त्यारपछी चोथी विद्युत्कुमार निकायनी दक्षिण दिशाने वे वि(हरिकंते) के० हरिकंतेन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे, (हरिस्सह) के० हरिसहन्द्र (चेव) के० निश्चयथी जाणवा. ॥ २३ ॥ पांचमी अग्नि कुमार निकायनी दक्षिण दिशाने विषे (अग्गिसिह) के० अग्निशिखेन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे (अग्गिमाणव) के० अग्निमानवेंद्र. छठ्ठी द्वीपकुमार निकायनी दक्षिण दिशाने विषे (पुन्न) के० पूर्णेन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे (विसिट्ठ) के० विशिष्टेन्द्र (तहेव) के० तेमज सातमी उदधिकुमार निकायनी दक्षिण दिशाने विषे (जलकंते) के० जलकंतेन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे (जलपह) के० जलप्रभेन्द्र (तह) के० तेमज आठमी दिशिकुमार निकायनी दक्षिण दिशाने विषे (अमिअगई) के० अमितगतीन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे (अमियवाहण) के० अमितवाहनेन्द्र—॥ २४ ॥ (य) के० वली नवमी वायुकुमार निकायनी दक्षिण दिशाने विषे (वेलंबे) के० वेलंबेन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे (पभंजण) के० प्रभंजनेन्द्र. दशमी स्तनितकुमार निकायनी दक्षिण दिशाने विषे (घोस) के० घोषेंद्र अने उत्तर दिशाने विषे (महाघोस) के० महाघोषेन्द्र. (एसिं) के० ए वीश इंद्रमांथी (अन्नयरो) के० कोइ इंद्र जो पोतानी शक्ति फोरवे तो ते (जंबुद्दीव) के० जंबुद्वीपने (छत्त) के० छत्राकार करवाने तथा (मेरु) के० मेरुपर्वतने (दंड पहु) के० दंड करवाने (पहु) के० समर्थ थाय छे. अर्थात् ते इंद्र पृथ्वीनु छत्र करी अने मेरपर्वतनो दंड करी हाथा हाथे धारण करे तो पण तेना शरीरने काइ प्रयास जणाय नहीं. छता कोइ वखत एवी शक्ति फोरवी जंबुद्वीपने छत्राकार कर्यु नथी, करता नथी ने करशे पण नहिं

हवे असुर कुमारादिक निकायोनी दक्षिण श्रेणीनी भुवन संख्या कहे छेः—

चउतीसा चउचत्ता, अठ्ठत्तीसाय चत्त पंचण्हं ॥
पन्ना चत्ता कमसो, लक्खा भवणाण दाहिणओ ॥२५॥

अर्थः—असुर कुमारनां (चउतीसा) के० चोत्रीश लाख, नाग कुमारनां (चउचत्ता) के० चुमालीश लाख, सुवर्ण कुमारनां (अठ्ठतीसाय) के० आडत्रीश लाख, वली विद्युत्कुमार अग्निकुमार द्वीपकुमार, उदधिकुमार अने दिशिकुमार ए (पंचण्हं) के० पांचे निकायनां (चत्त) के० चालीश चालीश लाख भुवन छे. तथा पवनकुमारनां (पन्ना) के० पचास लाख अने स्तनितकुमारनां (चत्ता) के० चालीश लाख भुवन छे, ए (कमसो) के० अनुक्रमे करीने (दाहिणओ) के० दक्षिण श्रेणीना (भवणाण) के० भुवनोना (लक्खा) के० लाखोनी संख्या कही. ॥ २६ ॥

हवे उत्तर श्रेणीना भुवननी संख्या कहे छेः—

चउ चउ लक्ख विहूणा, तावइया चेव उत्तर दिसाए ॥
सव्वेवि सत्त कोडी, बावत्तरि हुंति लक्खा य ॥२७॥

अर्थः—दशे निकायनी दक्षिण श्रेणीए जे भुवन संख्या कही छे. तेमां एक एकमांथी (चउ चउ लक्ख विहूणा) के० चार चार लाख ओछां कर्यां थकां शेष जे जे निकायनां जेटलां जेटलां भुवन रहे (तावइया) के० तेटलां तेटलां (उत्तर दिसाए) के० उत्तर दिशानी निकायने विषे (चेव) के० निश्चे होय छे. ते आ

प्रमाणे असुरकुमारना चौशठ लाख, नागकुमारना चालीश लाख, सुवर्णकुमारना चोत्रीश लाख, पछी विद्युत्कुमार अग्निकुमार द्विपकुमार उदधिकुमार अने दिशिकुमार ए पांचेना छत्रीस छत्रीस लाख, पवनकुमारना छँताळीस लाख, अने स्तनितकुमारना छत्रीसलाख भुवन उत्तर दिशाए छे, (सव्वंपि) के० ए दक्षिण तथा उत्तर बन्ने श्रेणिना मळी ने (सत्तकोडी) के० सात क्रोड पके० अने (बावत्तरी लक्खा) के० बहोंतेर लाख भुवन हुनि के० होय छे ॥ २७ ॥

हवे एज दश निकायनी दक्षिण तथा उत्तर श्रेणीनी जुदी जुदी भुवन संख्या कहे छे'—

चत्तारिय कोडीओ, लक्खा छच्चेव दाहिणे भवणा,
तिन्नेव य कोडीओ, लक्खा छावट्ठी उत्तरओ ॥२८॥

अर्थ.—(चत्तारि कोडीओ) के० चार क्रोड, पके० अने (छ लक्खा) के० छ लाख, (दाहिणे) के० दक्षिण दिशामां, (भवण) के० भुवनो, (चेव) के० निश्चे थाय छे, तथा (तिन्नेव कोडीओ) के० त्रण क्रोड, पके० (छावट्ठी लक्खा) के० छासठलाख भुवनो, (उत्तरओ) के० उत्तर दिशा तरफ होय छे ॥ २८ ॥

हवे ए पुर्वोक्त भुवन क्यां छे ? ते स्थानक कहे छे'—

रयणाए हिट्ठुवरि, जोयण सहस्सं विमुत्तु ते भवणा ॥
जंबुद्दीप समा तह, संखमसंखिज्जवित्थारा ॥ २९ ॥

अर्थ —रयणाए के० रत्नप्रभा पृथ्वीनो पींड एक लाख अने एँसीहजार योजन जाडपणे छे, तेमाथी, (हिट्ठुवरि) के० हेठे ने उपर, (जोयण सहस्स विमुत्तु) के० एक एक हजार योजन

मुनीने वचमांना एक लाख अट्टोतेर हजार योजनमांहे, ते के० ते भुवनपति देवोना, (भवणा) के० भुवनो छे. तेमां नाना भुवनो (जंबुद्दीव समा) के० जंबुद्धिप सरखा छे. (तह) के० तथा मध्यम भुवनो ते, (संख) के० संख्यात कोटी योजन प्रमाण छे, तथा उत्कृष्टाते (असंखिज्ज) के० असंख्याता कोटा कोटी योजन प्रमाण, (वित्थारा) के० विस्तारवंत होय छे ॥ २९ ॥

हवे घणा देवोमां पोतपोतानी निकाय जाणी शकाय माटे असुरादिक दश निकायना देवोनां मुकुटादिक आभूषणने विषे चिन्हो होय छे ते कहे छेः—

चूडामणि फणि गरुडे, वज्जे तह कलस सीह अस्सेय, ॥
गय मगर वद्धमाणे असुराइगं मुणसु चिण्हं ॥ ३० ॥

अर्थः—असुरकुमारना मुकुटने विषे, (चूडामणि) के० चूडामणिनुं चिन्ह छे. नागकुमारना आभूषणने विषे, (फणि] के० सर्पनुं चिन्ह छे सूवर्णकुमारना आभूषणने विषे, (गरुड) के० गरुडनुं चिन्ह छे. विद्युत्कुमारना मुकुटमां, (वज्जे) के० वज्रनुं चिन्ह छे. (तह) के० तथा अग्निकुमारना आभूषणमां, (कलस) के० कलसनुं चिन्ह छे द्विपकुमारना आभूषणमां (सीह) के० सिहनुं चिन्ह छे, उदधिकुमारना मुकटने विषे के० (अस्सेय०) अश्वनुं चिन्ह छे, दिशिकुमारनां मुकुट विषे, (गय) के० हाथीनुं चिन्ह छे, वायुकुमारना आभूषणने विषे, (मगर) के० मगरनु चिन्ह छे स्तनितकुमारना आभूषणने विषे, (वद्धमाणे०) के०सराव संपूटनुं चिन्ह छे. ए प्रमाणे (असूराईणं) के० असुरादिक दश भुवन पतिनां (चिण्हं) के० चिन्ह (मुणसु) के० जाणवा. ॥ ३० ॥

हवे एज असुरादिक दश प्रकारना भुवनपति देवोना शरीरनो वर्ण कहे छेः—

असुरा कालानागु, दहिपडुरा तह सुवन्न दिसि थणिया-
कणगाभ विज्जु सिहि दीव, अरुणा वाउ पियगु
निभा ॥ ३१ ॥

अर्थ —असुराकाला के० असुरकुमारना शरीर काला वर्ण होय छे, (नागुदहि) के० नागकुमार अने उदधिकुमार ए बन्नेना शरीर, (पडुरा) के० गोर वर्ण छे तह के० तेमज, सुवन्न के० सुवर्णकुमार (दिसि) के० दिशिकुमार तथा (थणिया) के० स्तनितकुमार ए त्रणनां शरीर (कणगाभ) के० सुवर्णकाति समान होय छे (विज्जु) के० विद्युत्कुमार (सिहि) के० अग्निकुमार (दीव) के० द्वीपकुमार ए त्रणनां शरीर(उवरुगा) के० राता वर्ण छे तथा (वाउ) के० वायुकुमारना शरीरनी काति (पियगु) निभा के० प्रियगु वृक्षना वर्ण समान होय छे नील होय छे ॥ ३१ ।

हवे असुरकुमारादिकना वस्त्रोनो वर्ण कहे छे —

असुराण वत्थरत्ता, नागोदहि विज्जु दीव सिहि नीला ॥
दिसि थणिय सुवन्नाग, धवला वाउग सज्झरुइ ॥ ३२ ॥

अर्थ —असुराण के० असुरकुमारना वत्थ के० वस्त्र, (रत्ता) के० राता होय छे, (नागोदहि) के० नागकुमार अने उदधिकुमार तथा (विज्जु) के० विद्युत्कुमार(दीव)के० द्विपकुमार (सिहि)के० अग्निकुमार ए पांचेना वस्त्रो निला के० नील वर्ण होय छे, दिसि के० दिशिकुमार (थणिय)के० स्तनितकुमार अने(सुवन्नाग) के०(सुवर्ण)कुमार ए त्रणेना वस्त्रो (धवला) के० उज्वल होय छे तथा (वाउग) के० वायुकुमारना वस्त्र (सज्झरुइ) के० स ध्याना रग सरखा छे

हवे भुवनपति विगेरे दशे निकायना इद्रोना सामानिक देवोनी तथा आत्मरक्षक देवोनी सख्या कहे छे —

चउसट्ठि सट्ठि असुरे, छच्चसहस्सा धरइंण माइणं ॥
सामाणिया इमेसिं, चउग्गुणा आय रक्खाय ॥ ३३ ॥

अर्थः—असुरे के असुरकुमार निकायना वे इन्द्र छे तेमां पहेला चमरेन्द्रने (चउसट्ठि) के० चोसठ हजार अने बलिन्द्रने (सट्ठि) के० साठ हजार तथा (धरणमाइणं) के० धरणेन्द्र विगेरे अढारहजार इन्द्रने (छच्च सहस्साइ) के० छ हजार (सामाणिया) के० सामानिक देवता छे, (य) के० अने (इमेसिं) के० ए सामानिक देवोथी (चउग्गुणा) के० चार गुणा (आयरक्खा) के० आत्मरक्षक देवो होय छे. ॥ ३३ ॥ एम भुवनपतिनी दशे निकायनां नाम, इन्द्र, भुवनसंख्या, चिन्ह, वर्ण, वस्त्र, सामानिक देव अने आत्मरक्षक विगेरेनी वक्तव्यता कही.

हवे व्यंतरदेवोनी वक्तव्यता कहेता थका प्रथम व्यंतर देवोनां भुवन कहे छेः—

रयणाए पढम जोयण—सहसे हिट्ठुवरि सय सय विहूणे॥
वंतरियाणं रम्मा, भोमा नगरा असंखिज्जा ॥ ३४ ॥

अर्थः—(रयणाए) के० रत्नप्रभा पृथ्वीना पिंडना (पढम) के० प्रथम उपरना जोयण (सहसे) के० जे एक हजार योजन मूक्या छे, तेमांथी (हिट्ठुवरि सय सय विहूणे) के० हेठे अने उपर सो सो योजन मूकीए. वचमां आठसो योजन रह्या, तेमां (वंतरियाणं) के० व्यंतर देवोनां (भोमा) के० पृथ्वीकाय संबंधी (रम्मा) के० रमणिक (असंखिज्जा) के० असंख्याता (नगरा) के० नगरो छे. ॥ ३४ ॥

हवे व्यंतर देवोना घरना आकार कहे छेः—

वाहि वट्टा अतो, चउरस अहो अ कण्णियायारा ॥
भवणवइण तह वतराण, इद भवणाओ नायव्वा ॥३५॥

अर्थ—व्यन्तरदेवोना नरो (वाहिं) के० बाहेरना भागे (वट्टा) के० वृत एटले गोल आकारवाला छे, अने (अतो) के० माहेला भागे (चउरस) के० चोखूणा छे (अ) के० वली (अहो) के० अधोभागे एटले नीचेना भागे (कण्णियायारा) के० कमलनी कर्णिकाना आकार छे ए उपर कहेली आकृतीवाला (भवणवईण) के० भवनपतिना (तह) के० तथा (वतराण) के० व्यतरदेवोना (इदभवणाओ) के० इन्द्रना भुवनो (नायवा) के० जाणवा ॥ ३५ ॥

तहि देवा वतरिया, वरतरुणीगीयवाइयरवेण ॥
निच्चं सुहिया पमुइया, गयंपि काल न याणति ॥३६॥

अर्थ—(तहिं) के० ते भुवनोमा (देवा वतरिया) के० व्यतरिक देवताओ (वरतरुणी) के० अति सुन्दर देवागनाओना (गीयवाइयर वेण) के० मधुर गीत अने बत्रीशबद्ध नाटक सहित मृदगादिक वाजित्रना शब्दथी (निच्च) के० नित्य (सुहिया) के० सुखी छता अने (पमुइया) के० हर्षवत छता (गयपि काल) के० गयेला कालने (न याणति) के० नथी जाणता ॥ ३६ ॥

हवे ते व्यतर देवोना नगरोनु प्रमाण तथा निकायना नाम कहे छे —

ते जबुदीव भारह–विदेह सम गुरु जहन्न मज्झिमगा ॥
वंतर पुण अट्ठविहा, पिसाय भूया तहा जक्खा ॥३७॥

रक्खस किंनर किंपुरिसा, महोरगा अट्ठमा य गंधव्वा ॥
दाहिण उत्तर भेया, सोलस तेसिं इमे इंदा ॥ ३८ ॥

अर्थः—ते व्यंतर देवोनां (नगरो) जे (गुरु) के० महोटां छे ते (जंबुदीव) के० जंबुद्वीप जेवडां एक लाख योजन प्रमाण गोल आकारवालां छे. तथा जे (जहन्न) के० जघन्य नगरो छे ते (भारह) के० भरतक्षेत्र जेवडां एटले ५२६ योजन तथा एक योजनना ओगणीया छ भाग उपर छे, अने (मज्झिमगा) के० मध्यम भुवनो छे ते (विदेहसम) के० महाविदेह क्षेत्र समान एटले ३३६८४ योजन अने एक योजनना ओगणीया चार भाग उपर एवडां महोटां छे. (पुण) के० वली ते नगरोमां रहेनारा (वंतर) के० व्यंतर देवो (अट्ठविहा) के० आठ प्रकारना छे. तेमनां नाम कहे छे. १ (पिसाय) के० पिशाच, २ (भूया) के० भूत, (तहा) के० तथा ३ (जक्खा) के० यक्ष. ॥ ३७ ॥ ४ (रक्खस) के० राक्षस, ५ (किंनर) के० किन्नर, ६ (किंपुरिसा) के० किंपुरुष, ७ (महोरगा) के० महोरग, (य) के० अने ८ (अट्ठमा) के० आठमा (गंधव्वा) के० गंधर्व. (दाहिण उत्तर भेया) के० दक्षिण अने उत्तर एवा बबे भेदथी (तेसिं) के० तेमना (इमे) के० आगली गाथामां कहेवाशे ते नामना सोलस इंदा के० शोल इन्द्रो छे. ॥ ३८ ॥ अहिं ए आठेना प्रतिभेद कहे छेः—

सुन्दर आकृतिवाला, जोनारने आनंद उपजावनारा, हाथ तथा कंठमां रत्ननां आभूषणोने धारण करनारा कुष्मांड, पटक, जोप, आन्हिक, काल, महाकाल, चोक्ष, अचोक्ष, तालपिशाच,

मुखरपिशाच, अग्रस्तारक, देह, महादेह, तूष्णीक अने वनपिशाच ए पदर प्रकारना पिशाच देवो छे ॥ १ ॥

रूपवत, सुन्दर मुखवाला अने विविध लेपनने धारण करनारा स्वरूप, प्रतिरूप, अतिरूप, भूतोत्तम, स्कन्दिक, महास्कन्दिक, महावेग, प्रतिछन्ना अने आकाशगा ए नव प्रकारना भूतदेवो छे ॥ २ ॥

गभीर स्वभाववाला, प्रीय देखाववाला, शरीरना मानोन्मान प्रमाणवाला, हाथपगना तलीया, नख, तालु, जीभ, होठ ए जेमना राता छे एवा, सुन्दर मुकुट तथा विचित्र आभूषणोने धारण करनारा एवा पूर्णभद्र, माणिभद्र, श्वेतभद्र, हरिभद्र, सुमनोभद्र, व्यतिपाकभद्र, सुभद्र, सर्वतोभद्र, मनुष्ययक्ष, वनाधिप, वनाहार, रूपयक्ष अने यक्षोत्तम ए तेर भेद यक्ष देवोना छे ॥३॥

भयकर स्वभाववाला, भयकर देखाववाला, विकराल राता लाबा होठवाला, झलहलता आभूषणवाला, नाना प्रकारना विलेपनवाला एवा भीम, महाभीम, विघ्न, विनायक, जलराक्षस, यक्षराक्षस अने ब्रह्मराक्षस ए सात प्रकारना राक्षस देवो छे. ॥ ४ ॥

शात आकृतिवाला, सुन्दर मुखवाला अने मस्तक उपर मुकुटने धारण करनारा एवा किंनर, किंपुरुष, किंपुरुषोत्तम, हृदयंगम, रूपशालिन, अनिंदित, किंनरोत्तम, मनोरम, रतिप्रिय अने रतिश्रेष्ठ ए दश प्रकारना किंनर देवो छे. ॥ ५ ॥

जेमना साथल अने भुजाओ रूपवत छे, सुन्दर मुख शोभावाला तथा नाना प्रकारना आभूषणोने धारण करनारा एवा पुरुष, सत्पुरुष, महापुरुष, पुरुषवृषभ, पुरुषोत्तम, अतिपुरुष, महादेव, मरुत, मेरुप्रभ अने यशस्वत ए दश प्रकारना किं पुरुष छे. ॥६॥

अति वेगवाला, सुन्दर आकृतिवाला, महोटा शरीरवाला, पुष्ट विस्तारवंत स्कंध ग्रीवावाला अने विचित्र आभूषणोने धारण करनारा एवा भुजंग, भोगशालिन, महाकाय, अतिकाय, स्कंध सालिन, मनोरम, महावेग, महेश्वक्ष, मेरुकांत अने भास्वंत ए दश प्रकारना महोरग देवो छे. ॥ ७ ॥

सुन्दर आकृतिवाला, श्रेष्ठ मुखवाला, प्रीय शब्दवाला, मस्तकने विषे मुकुट अने कंठने विषे हारने धारण करनार एवा हाहा, हूहू, तुंवरु, नारद, रुषिवादक, भूतवादक, कादंव, महाकादंव, रैवत विश्वावसु, गीतरति अने गीतयश ए बार प्रकारना गंधर्व देवो छे, ए व्यंतरदेवोना प्रतिभेद कह्या.

हवे व्यंतर देवोना शोल इन्द्रोनां नाम बे गाथावडे कहे छेः—

काले य महाकाले, सुरूव पडिरूव पुन्नभद्दे य ॥
तह चेव माणिभद्दे, भीमे य तहा महाभीमे ॥ ३९ ॥
किंनर किंपुरिसे सप्पु–रिसा महपुरिस तहय अइकाए ॥
महकाए गीयरई, गीयजसे दुन्नि दुन्नि कमा ॥ ४० ॥

अर्थः—पिशाच निकायमां दक्षिण दिशाए (काले) के० कालेंद्र अने (य) के० वळी उत्तर दिशाए (महाकाले) के० महाकालेन्द्र, भूतनिकायमां दक्षिण दिशाए (सुरूव) के० स्वरूपेंद्र अने उत्तर दिशाए (पडिरूव) के० प्रतिरूपेन्द्र, (य) के० अने यक्षनिकायमां दक्षिण दिशाए (पुन्नभद्दे) के० पूर्णभद्र अने उत्तर दिशाए (तह चेव) के० तेवीज रीते निश्चे (माणिभद्दे) के० माणिभद्र, य के० वळी तहा के० (तथा) राक्षस निकायमां दक्षिण दिशाए (भीमे) के० भीमेन्द्र अने उत्तर दिशाए (महाभीमे)

के० महाभीमेन्द्र ॥ ३९ ॥ किंनर निकायमां दक्षिण दिशाए (किंनर) के० किंनरेन्द्र अने उत्तर दिशाए (किंपुरिसे) के० किंपुरुषेन्द्र, तथा किंपुरिष निकायमा दक्षिण दिशाए (सप्पुरिसा) के० सत्पुरुषेन्द्र अने उत्तर दिशाए (महपुरिस) के० महापुरुषेन्द्र, (तहय) के० तेमज महोरग निकायमा दक्षिण दिशाने विषे (अइकाए) के० अतिकायेन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे (महकाए) के० महाकायेन्द्र, गधर्व निकायमा दक्षिण दिशाने विषे (गीयरई) के० गीतरतींद्र अने उत्तर दिशाने विषे (गीयजसे) के० गीतयशेंद्र ए प्रमाणे आठ निकायमां (कमा) के० अनुक्रमे करीने (दुन्नि, दुन्नि) के० बबे इंद्रो होय छे ॥ ४० ॥

हवे ए पिशाचादिक आठ निकायना व्यतर देवोनी ध्वजामा चिन्ह होय ते कहे छे —

चिंध कलव सुलसे, वड खट्टंगे असोग चंपयए ॥
नागे तुवरु अ झए, खट्टगविवज्जिया रुक्खा ॥ ४१ ॥

अर्थ—पिशाचने (कलंब) के० कदंब वृक्षनु चिन्ह, भूतने (सुलसे) के० सुलस वृक्षनु चिन्ह, यक्षने (वड) के० वडवृक्षनु चिन्ह राक्षसने (खट्टगे) के० तापसना पात्रनु चिन्ह, किंनरने (असोग) के० अशोक वृक्षनु चिन्ह, किंपुरुषने (चपयए) के० चपक वृक्षनु चिन्ह, महोरगने (नागे) के० नाग वृक्षनु चिन्ह, गधर्वने (तुवरु अ) के० वळी तुंबराना वृक्षनु चिन्ह होय छे ए सर्वे (चिंध) के० चिन्ह (झए) के० ध्वजामा होय छे तेमा (खट्टगविवज्जिया) के० खट्टांगने वर्जीने बाकीना सर्व चिन्हो रुक्खा के० वृक्षो छे अने खट्वाग ए तापसनु उपकरण छे ॥४१॥

हवे ए व्यतर देवोना शरीरनो वर्ण कहे छे —

जक्ख पिसाय महोरग, गंधव्वा साम किंनरा नीला ॥
रक्खस किंपुरिसा वि य, धवला भूया पुणो काला ॥४२॥

अर्थः—(जक्ख) के० यक्ष, (पिसाय) के० पिशाच, (महोरग) के० महोरग, (गंधव्वा) के० गंधर्व ए चारनो वर्ण (साम) के० श्याम एटले किंचित् कृष्णवर्ण जाणवो. (किंनरा) के० किंनरो (नीला) के० श्याम पण किंचित् नील वर्णवाला जाणवा. (रक्खस) के० राक्षस अने (किंपुरिसाविय) के० किंपुरुष पण (धवला) के० उज्वल वर्णवाला होय छे. (पुणो) के० वली (भूया) के० भूतदेवो (काला) के० कृष्णवर्णवाला होय छे. ॥ ४२ ॥

हवे बीजा आठ जातिना व्यंतर देवो छे, ते कहे छेः—

रयणाए जोयणसए, हिट्ठुवरि दस दस ठाइए चेव ॥
वंतरियाण निकाया, भवणासंखा सुए भणिया ॥ ४३ ॥

अर्थः—(रयणाए) के० रत्नप्रभा पृथ्वीना पिंड मांहेला (जोयणसए) के० पहेला सो योजनमां (हि वरि) के० नीचे अने उपर (दस दस ठाइए चेव) के० निश्चय दश दश योजन मूकीये. बाकीना एसी योजनमां वंतरियाण (निकाया) के० व्यंतर देवतानी आठ निकायो छे. तेमां (भवणासंखा) के० व्यंतर देवोना असंख्य भुवनो (सुए भणिया) के० सूत्रमां कह्यां छे ॥ ४३ ॥

अणपन्नी पणपन्नी, इसिवाई भूयवाइए चेव ॥
कंदी य महाकंदी, कोहंडे चेव पयए य ॥ ४४ ॥

अर्थः—१ (अणपन्नी) के० अणपन्नी निकाय, २ (पण-

पन्नी) के० पणपन्नी निकाय, ३ (इसिवाई) के० ऋषिवादी निकाय, ४ (भूयवाइए) के० भूतवादी निकाय, (चेव) के० निश्चे, ५ (कंदी य) के० वळी कंदित निकाय, ६ (महाकंदी) के० महाकंदित निकाय ७ (कोहंडे) के० कोहंडिक निकाय, (चेव) के० निश्चय ८ (पयए य) के० वळी पतग निकाय ए व्यंतर देवोनी आठ निकाय जाणवी ॥ ४४ ॥

इय पढमजोयणसए, रयणाए अट्ठ वंतरा अवरे ॥
तेसु इह सोलसिंदा, रुअगअहो दाहिणुत्तरओ ॥ ४५ ॥

अर्थ—(इय) के० ए आठ निकाय ते (रयणाए) के० रत्नप्रभा पृथ्वीना (पढमजोयणसए) के० पहेला सो योजन माहेला उपला एसी योजनमां वसनारा (अट्ठ वंतरा) के० आठ जातिना व्यंतर ते पूर्वे कह्या व्यंतरोथी (अवर) के० बीजा अर्थात् वाणव्यंतर देवो जाणवा. (इह) के० अहिं (तेसु) के० ते व्यंतर देवताने विषे आठ निकायना (सोलसिंदा) के० शोल इंद्रो (रुअगअहो) के० रुचक प्रदेशथी दश योजन नीचे एसी योजनमां दाहिणुत्तरओ के० दक्षिण अने उत्तर दिशाना भेदे करीने जाणवा ॥ ४५ ॥

हवे बे गाथावडे शोल इंद्रोना नाम कहे छे —

सन्निहिए सामाणे, धाइ विहाए इसी य इसिवाले ॥
ईसर महेसरे वि य, हवइ सुवत्थे विसाले य ॥ ४६ ॥
हासे हासरई वि य, सेए य भवे तहा महासेए ॥
पयगे पयगवई वि य, सोलस इंदाण नामाणि ॥ ४७ ॥

अर्थ—१ (सन्निहिए) के० सन्निहितेंद्र, २ (सामाणे)

के० सामानेंद्र, ३ (धाइ) के० धाता इंद्र, ४ (विहाए) के० विधाता इंद्र, ५ (इसी य) के० वळी ऋषि इंद्र, ६ (इसिवाले) के० ऋषिपालेंद्र, ७ (ईसर) के० ईश्वरेन्द्र, ८ (महेसरे) के० महेश्वरेन्द्र, (वि य) के० निश्चय (हवइ) के० होय. ९ (सुवत्थे) के० सुवत्सेंद्र, (य) के० अने १० (विसाले) के० विशालेन्द्र. ॥ ४६ ॥ ११ (हासे) के० हास्य इंद्र, १२ (हासरई) के० हास्यरति इंद्र, (वि य) के० वळी १३ (सेए) के० श्वेतइंद्र; (भवे) के० होय. (तहा) के० तेमज १४ (महासेए) के० महाश्वेत इंद्र, १५ (पयगे) के० पतंग इंद्र, १६ (पयगवइ) के० पतंगपति इंद्र. ए वि य के० निश्चय (सोलसइंदाण) के० सोल इंद्रोनां (नामाणि) के० नाम कह्यां. ॥ ४७ ॥

आ वाणव्यंतर देवोना सोल इंद्र कह्या. तेनी पहेला व्यंतर देवोना पण सोल इंद्रो कह्या छे. सर्व मळी बत्रीस इन्द्र थया. तेमनी साथे भुवनपतिना वीश, सूर्य चंद्रना बे अने वैमानिकना दश मळी चोसठ इंद्रो गणाय छे.

हवे व्यंतर तथा ज्योतिषि देवोना सामानिक अने आत्मरक्षक देवो सरखा छे, माटे साथे संख्या कहे छेः—

सामाणियाण चउरो, सहस्स सोलस य आयरक्खाणं ॥
पत्तेयं सव्वेसिं, वंतरवइ ससिरवीणं च ॥ ४८ ॥

अर्थः—(सव्वेसिं) के० सर्व एटले बत्रीश (वंतरवइ) के० व्यंतर इन्द्रोने (च) के० अने (ससिरवीणं) के० सूर्य अने चंद्रने ते (पत्तेयं) के० दरेकने (सामाणियाण) के० सामानिक देवो (चउहोसहस्स) के० चार हजार अने (आयरक्खाणं) के० अंगरक्षक देवो ते (सोलसय) के० शोल हजार होय छे. ॥४८॥

हवे दरेक इन्द्रनी पासे केटली जातना देवो होय छे ? ते कहे छे —

**इंदसामाणियाण ता-यतीसा परिसा य अगरक्खा य ॥
लोगपाला अणिका, पइन्न अभिओग किव्वि-
सीया ॥ ४९॥**

अर्थ —(इंद) के० इन्द्र, (सामाणियाण) के० सामानिक देवो, (तायतीसा) के० त्रायस्त्रिंशक देवो, (परिसा) क० पर्षदाना देवो, (अगररका) के० अगरक्षक देवो, (लोगपाला) के० लोकपाल देवो, (अणिका) के० अनिक ते कटकना देवो, (पइन्न) के० प्रकीर्ण एटले प्रजारूप देवो, (अभिओग) के० आभियोगिक ते चाकर देवो, (किव्विसीया) के० किल्विषिक देवो. ए दश जातिना देवो होय छे. ॥ ४९ ॥

हवे कटकना सात प्रकार कहे छे —

**गधव्व नट्ट हय गय, रह भड अणियाणि सव्वइदाण ॥
वेमाणियाण वसहा, महिसा य अहोनिवासाण ॥ ५० ॥**

अर्थ —(गधव्व) के० गंधर्व गवैयानु, (नट्ट) के० नृत्य करनार नाटकीयानु, (हय) के० घोडानु, (गय) के० हाथीनु, (रह) क० रथनु अने (भड) क० सुभटनु. ए छ प्रकारना (अणियाणि) के० कटको (सव्वइन्दाण) के० सर्वे इन्द्रोने होय छे, परतु (वेमाणियाण) के० वैमानिक इन्द्रोने सातमु कटक (वसहा) के० वृषभनु होय छे (य) के० अने (अहोनिवासीण) के० भुवनपति तथा व्यतर इन्द्रोने सातमु कटक (महिसा) के० महिष एटले पाडानु होय छे. ॥ ५० ॥

हवे प्रत्येक इन्द्रने त्रायत्रिंशकादिक देवोनी संख्या कहे छेः—

तित्तिस तायतीसा, परिसतिया लोगपाल चत्तारि ॥
अणियाणि सत्त सत्त य, अणियाहिव सव्वइंदाणं ॥५१॥

अर्थः—(तित्तिस तायतिसा) के० तेत्रीस त्रायत्रिंशक एटले गुरुस्थानीया सलाह पूछवा योग्य देवो. (पडिसतिया) के० बाह्य-मध्य अने अभ्यंतर एवी त्रण पर्षदा, (लोगपाल चत्तारि) के० सोम यम वरुण अने कुबेर ए नामना चार लोकपाल, (अणि-याणि सत्त सत्त य) के० वळी सात सात प्रकारनुं कटक, अने (अणियाहिव) के० कटकना अधिपति, ए सव्वइंदाणं) के० सर्वे इन्द्रोने होय छे. ॥ ५१ ॥

नवरं वंतर जोइस, इंदाण न हुंति लोगपालाओ ॥
तायत्तीसभिहाणा, तियसाविय तेसिं नहु हुंति ॥५२॥

अर्थः—परंतु (नवरं) के० एटलुं विशेष छे के-(वंतर) के० व्यंतर देवोना बत्रीश इंद्रोने तथा (जोइस) के० ज्योतिषीना बे इंद्रोने (लोगपालाओ) के० चार लोगपाल (न हुंति) के० न होय. तेमज (तायत्तीसभिहाणा) के० त्रायत्रिंशक नामना (तिय साविय) के० ते देवता पण (तेसिं) के० व्यंतर तथा ज्योतिषीना इन्द्रोने (नहु हुंति) के० न होय. ॥ ५२ ॥

हवे ज्योतिषी देवोना विमानोनी वक्तव्यता कहे छे. ज्योतिषी तिर्यक् लोकमां छे. अने तिर्यक् लोक मेरु मध्यरुचकथी नवसो योजन उपर अने नवसो योजन नीचे एम अढारसो योजन प्रमाण छे, तेमां उपरना जे तिर्यक् लोकना नवसो योजन छे. तेमां ज्योतिषीना विमान केटला उंचा छे ? ते कहे छेः—

समभूतलाओ अट्ठहिं, दसूण जोयणसएहिं आरम्भ ॥
उवरि दसूत्तर जोयण–सयंमि चिट्ठंति जोइसिया ॥५३॥

अर्थ —मेरुपर्वतना मध्य भागमां जे आठ रुचकप्रदेश छे, ते समभूतला कहेवाय ते (समभूतलाओ) के० समभूतला थकी (दसूण) के० दश योजन ओछा एवा (अट्ठहिं जोयणसएहिं) के० आठसो योजन अर्थात् सातसो ने नेवु योजन, त्यांथी (आरम्भ) के० आरंभीने (उवरि) के० उपरना भागने विषे (दसूत्तर जोयणसयंमि) के० एकसो दश योजनमांहे (जोइसिया) के० ज्योतिषी देवो (चिट्ठंति) के० रहे छे ॥ ५३ ॥

हवे एकसो दश योजनमां ज्योतिषि देवो केवी रीते रह्या छे ? ते कहे छे —

तत्थ रवी दसजोयण, असीइ तदुवरि ससी य रिक्खेसु ॥
अह भरणि साइ उवरिं, बहि मूलो भितरे अभिई ॥५४॥

अर्थ —(तत्थ) के० त्यां एटले एकसो दश योजनमां (दस जोयण) के० प्रथम दश योजननी उपर (रवी) के० सूर्य छे. (तदुवरि) के० तेना उपर (असीइ) के० एंशी योजन (ससी) के० चंद्रमा छे (य) के० वळी ते थकी चार योजन उंचा (रिक्खेसु) के० अठ्ठावीश नक्षत्रो छे तेमां (भरणि) के० भरणी नक्षत्र सर्व नक्षत्रोथी (अह) के० नीचे चाले छे, तथा (साइ) के० स्वाति नक्षत्र सर्व नक्षत्रोथी (उवरि) के० उपर चाले छे वळी (मूलो) के० मूल नक्षत्र सर्व नक्षत्रोथी (बहि) के० बहारना मंडले चाले छे अने (अभिइ) के० अभिजित् नक्षत्र सर्व नक्षत्रोनी (भितर) के० अंदर चाले छे ॥ ५४ ॥

(दगफालिहमया) के० उदकस्फटिकरत्नमय छे. लवण समुद्रनी शिखा दश हजार योजन पहोली अने सोळ हजार योजन उंची छे, अने ज्योतिषि विमानो तो नवसो योजन उंचाइमां छे, तेथी ते विमानो पाणीनी शिखामां चाले छे, परंतु स्फटिकरत्नना प्रभावथी पाणी फाटीने मोकळुं थइ जाय छे, तेथी विमानोने बाधा थती नथी. तेम विमानोमां पाणी भरातुं नथी. आवा कारणोथी सूर्यप्रज्ञप्ति विगेरेमां ज्योतिषि विमानो स्फटिकमय, पण लवण समुद्रमां फरता ज्योतिषि विमानो उदकस्फटिकमय कह्यां छे. वळी ते विमानोना तेजनी पाणीथी कांइ हानी थती नथी ॥ ५८ ॥

हवे चंद्रादिक ज्योतिषि देवोना विमानोनुं प्रमाण कहे छेः—

जोयणिगसट्ठि भागा, छप्पन्नऽडयाल गाउ दु इग द्धं ॥
चंदाइविमाणायाम, वित्थडा अद्धमुच्चत्तं ॥ ५९ ॥

अर्थः—(जोयणिगसट्ठि भागा) के० एक योजनना एकसठ भाग करीये, तेवा (छप्पन्न) के० छप्पन्न भागनुं चन्द्र विमान लांबु छे अने (अडयाल) के० अडतालीश भागनुं सूर्य विमान लांबु छे. वळी (गाउ दु) के० बे गाउनां ग्रह विमानो लांबा छे, तथा (इग) के० एक गाउनां नक्षत्र विमानो लांबा छे, अने (अद्धं) के० अर्द्धा गाउना ताराना विमानो लांबा छे. ए (चंदाइविमाणायाम) के० चन्द्र विगेरेना विमानोनी लंबाइ कही, वळी (वित्थडा) के० विस्तार एटले पहोळाइ पण तेटली जाणवी. अने जेटलां लांबां पहोळां कह्यां. तेथी (अद्धं उच्चत्तं) के० अर्द्धी उंचपणे जाणवां. ॥ ५९ ॥

हवे मनुष्यलोकनु प्रमाण तथा मनुष्यलोकथी बाहेरना स्थिर चन्द्रादि पांचे ज्योतिषिओना विमानोनुं स्वरूप कहे छेः—

पणयाल लक्ख जोयण, नरखित तत्यिमे मया भमिरा ॥
नरखित्ताओ बहि पुण अद्धपमाणा ठिया निच्च ॥६०॥

अर्थ —(पणयाल लक्ख जोयण) के० पिस्तालीस लाख योजननु (नरखित्त) के० मनुष्यक्षेत्र छे (तत्थ) के० ते मनुष्य क्षेत्रमा (इमे) के० ए चर ज्योतिषि (मया) के० निरंतर (भमिरा) के० फरे छे (पुण) के० वली (नरखित्ताओ बहि) के० मनुष्य क्षेत्रनी बाहर (अद्धपमाणा) के० जे चर ज्योतिषिना विमानोनु प्रमाण कह्यु छे, तेथी अर्द्धा प्रमाणवाला ज्योतिषि विमानो (निच्च) के० निरंतर (ठिया) के० स्थिर रह्या छे अर्थात् चर ज्योतिषिना विमानोथी स्थिर ज्योतिषिना विमानोनु प्रमाण लंबाइ पहोलाइ अने उंचाइमा अर्धु छे ॥ ६० ॥

अहिं पिस्तालीश लाख योजननु मनुष्य क्षेत्रनु प्रमाण कह्यु छे ते—जंबुद्वीपथी पूर्व दिशामा बे लाख योजननो लवण समुद्र, चार लाख योजननो धातकी खण्ड, आठ लाख योजननो कालोदधि समुद्र, अने आठ लाख योजननो पुष्करार्द्ध ए सर्वे मली बावीश लाख योजन थया तेमज बावीश लाख योजन पश्चिम दिशामा थाय बन्ने मली चुमालीश लाख योजन थाय, तेनी साथे एक लाख योजननो जंबूद्वीप मेलवता पिस्तालीस लाख योजन थाय, तेज प्रमाणे उत्तर दक्षिणमा गणता पण पिस्तालीश लाख योजन थाय छे, ए पिस्तालीश लाख योजनना मनुष्य क्षेत्रने वींटीने सतरसो एकवीस योजन उचो मानुषोत्तर पर्वत रह्यो छे. तेनी अन्दर मनुष्योना जन्म मरण थवाथी ते मनुष्य क्षेत्र कहवाय छे ए मनुष्य क्षेत्रमा चर ज्योतिषिना विमानो मेरु पर्वतने प्रदक्षिणा देता निरंतर फरे छे ।

हवे मनुष्य क्षेत्रमां चन्द्र विगेरे ज्योतिषि देवतानी गति तथा तेमना विमानने वहन करनारा देवतानी संख्या विगेरे कहे छेः—

ससि रवि गह नक्खता, ताराओ हुंति जहुत्तरं सिग्धा ॥
विवरीया उ महड्ढिअ, विमानवहगा कमेणेसिं ॥ ६१ ॥

अर्थः—(ससि) के० चन्द्र, (रवि) के० सूर्य, (गह) के० ग्रह, (नक्खत्ता) के० नक्षत्र अने (ताराओ) के० तारा तेमनी गति (जहुत्तरं) के० यथोत्तरपणाए करीने (सिग्धा) के० उतावली (हुंति) के० होय छे. (उ) के० वली (महड्ढिअ) के० महर्द्धिके करीने (विवरीया) के० पूर्व कहेला अनुक्रमथी विपरीत क्रम जाणवो. अने (कमेणेसिं) के० अनुक्रमे करीने (विमाणवहगा) के० विमाने वहन करनारा देवता ए सर्व आगली गाथाओथी कहे छे. ॥ ६१ ॥

चंदेहिं रवी सिग्धा, रविणो भवे उ गहा य सिग्धयरा ॥
तत्तो नक्खत्ताओ, नक्खत्ते हुंति ताराओ ॥ ६२ ॥

अर्थः—(चंदेहिं) के० चन्द्रथी (रवी) के० सूर्य (सिग्धा) के० उतावली गतिवालो छे. (उ) के० वली (रविणो के० सूर्यथी (गहा य) के० ग्रहो (सिग्धयरा) के० उतावली गतिवाला (भवे) के० होय छे. (तत्तो) के० ग्रहोथी (नक्खत्ताओ) के० नक्षत्रो, अने (नक्खत्ते) के० नक्षत्रोथी (ताराओ) के० तारा उतावली गतिवाला (हुंति) के० होय छे. ॥ ६२ ॥

अप्पड्ढीयाओ तारा, नक्खत्ता खलु तओ महड्ढीया ॥
नक्खत्ते हुंति गहा, गहेहिं सूरा तओ चन्दा ॥ ६३ ॥

अर्थ—सर्वथी (अप्पड्ढीयाओ) के० थोडी रुद्धिवाला (तारा) के० ताराओ छे, (तेओ) के० तेथी (महड्ढीया) के० वधारे रुद्धिवाला (नक्खत्ता) के० नक्षत्रो (खलु) के० निश्चे होय छे अने (नक्खत्ते) के० नक्षत्रोथी (गहा) के० ग्रहो वधारे रुद्धिवाला (हुंति) के० होय छे वली (गहेहिं) के० ग्रहोथी वधारे रुद्धिवाला (सूरा) के० सूर्य होय छे, अने (तओ) के० सूर्यथी वधारे रुद्धिवाला (चंदा) के० चन्द्र होय छे तारा पांच वर्णना होय छे अने बीजा सर्व ज्योतिषि देवो अग्नितप्त सुवर्ण समान छे पांचे ज्योतिषि देवोने पोत पोतानी नामाकृति सरखा मुकुटमा चिन्ह होय छे ॥ ६३ ॥

सोलस सोलस अड चउ, दो सुरसहस्सा पुरो
य दाहिणओ ॥
पच्छिम उत्तर सीहा, हत्थी वसहा हया कमसो ॥ ६४ ॥

अर्थ —(सोलस सुर सहस्सा) के० सोळ हजार देवो चन्द्र विमानने वहन करनारा अने (सोलस) के० सोळ हजार देवो सूर्यना विमानने वहन करनारा होय छे. वली (अड) के० आठ हजार देवो ग्रहना विमानने वहन करनारा, (चउ) के० चार हजार देवो नक्षत्रना विमानने वहन करनारा, तथा (दो) के० बे हजार देवो ताराना विमानने वहन करनारा होय छे. जो के चन्द्रादिकना विमानो स्वाभाविक रीते आकाशमां आलंबन रहित फर्या करे छे परंतु आज्ञाकारी देवो भक्ति देखाडवाने माटे विमानना नीचे सिंहादिकना रूप धारण करी रह्या छे तेथी तेओ पण विमाननी साथे भ्रमण कर्या करे छे

ए पांच ज्योतिषि विमानोने चलावनारा देवो चारे दिशामां सरखे भागे रह्या छे ते कहे छे. (पुरो) के० पूर्वदिशाये (सीहा) के० सिंहनां रूपे, (दाहिणओ) के० दक्षिण दिशाये (हत्थी) के० हाथीनां रूपे, (पच्छिम) के० पश्चिम दिशाये (वसहा) के० वृषभने रूपे अने (उत्तर) के० उत्तर दिशाये (हया) के० घोडाने रूपे (कमसो) के० अनुक्रमे करीने जाणवा. ॥ ६४ ॥

तेज वात दृढ करवाने बीजी गाथायो कहे छेः—

पुरो य हुंति सिंहा, दाहिणे कुंजरो महाकाए ॥
पच्छिमेण य वसहा, तुरगा पुण उत्तरे पासे ॥ ६५ ॥

अर्थः—चन्द्रना विमानने वहन करनारा सोल हजार देवो छे. तेमां (पुरो) के० पूर्व दिशामां (सिंहा) के० सिंहनां रूपने धारण करनारा चार हजार देवो होय छे, (दाहिणे) के० दक्षिण दिशामां कुंजरो (महाकाए) के० मोटा शरीरवाला हाथीनां रूपने धारण करनारा चार हजार देवो होय छे, (पच्छिमेण य) के० पश्चिम दिशामां (वसहा) के० वृषभनां रूपने धारण करनारा चार हजार देवो होय छे, (पुण) के० वली (उत्तरे पासे) के० उत्तर दिशामां (तुरगा) के० घोडानां रूपने धारण करनारा चार हजार देवो होय छे. एज प्रमाणे सूर्य विगेरेना विमानोने वहन करनारा देवोनी जे संख्या कही होय तेना चोथे भागे दरेक दिशामां सिंहादि रूपने धारण करनारा देवो होय छे एम जाणवुं. ॥ ६५ ॥

सर्व ज्योतिषि देवोमां चन्द्र अधिक ऋद्धिवंत छे, माटे चंद्रनो परिवार कहे छेः—

गह अट्ठासी नक्खत्त, अडवीस तार कोडि कोडीण ॥
छासठ्ठि सहस्स नव सय, पणहत्तरि एगससिसिन्न ॥६६॥

अर्थ —(गह) के० मंगळ विगेरे ग्रहो ते (अट्ठासी) के० अठ्यासी छे, अने (नक्खत्त) के० अभिजित् विगेरे नक्षत्रो (अडवीस) के० अठावीश छे, वली (छासठ्ठि सहस्स) के० छासठ हजार, (नव सय) के० नवसो अने (पणहत्तरि) के० पचोतेर एटली (कोडि कोडीण) के० कोडा कोडी—अर्थात् छासठ हजार कोडा कोडी अने पचोतेर कोडा कोडी एटला (तार) के० तारा ए सर्व (एगससिसिन्न) के० एक चन्द्रनु सैन्य एटले परिवार छे ॥ ६६ ॥

अहिं कोइने शंका थाय के—मनुष्यक्षेत्र पिस्तालीश लाख योजन छे अने तारानी संख्या घणी छे तो तेटला क्षेत्रमा समावेश थाय नही. आ शंकानी आगली गाथाथी निवृत्ति करे छे —

कोडाकोडी सन्न—तर तु मन्नति खित्तथोनतया ॥
केइ अन्ने उस्से—हगुलमाणेण ताराण ॥ ६७ ॥

अर्थ —अहिं ए मत छे (केइ) के० कोईक आचार्य (कोडा कोडी) के० कोडा कोडीनी संज्ञाने (सन्नतर) के० नामांतर (मन्नति) के० माने छे जेम वीशने कोडी कहेवाय छे तेम कोडाकोडी पण तेवुज भीन्न नाम छे कारण के (खित्तथोनतया) के० मनुष्यक्षेत्रनु थोडापणु छे माटे वली (अन्ने) के० बीजा केटलाक आचार्य (ताराण) के० तारानां विमाननु प्रमाण (उस्सेहगुलमाणेण) के० उत्सेधागुलप्रमाणे करीने माने छे अहिं केटलाक ग्रन्थोमां चारसो उत्सेधागुले एक प्रमाणागुल कह्यु छे अने केटलाक ग्रन्थोमा एक हजार उत्सेधागुले एक प्रमाणागुल कह्यु छे

तेथी क्षेत्रनुं अल्पत्व होवा छतां उत्सेधांगुलना मानथी तारानां विमाननुं प्रमाण करी शकाय छे. ॥ ६७ ॥

हवे राहुनुं स्वरुप अने तेनी गति कहे छेः—

आयामं विक्खंभं, जोयणमेगं तु तिगुणओ परिही ॥
अड्ढाइज्ज धणुसया, राहुविमाणाण बाहल्लं ॥ ६८ ॥

अर्थः—(राहु विमाणाण) के० राहुना विमाननी (आयामं विक्खंभं) के० लंबाइ तथा पहोलाइ (जोयणमेगं) के० एक योजननी होय छे. तु के० वली (परिही) के० परिधि ते (तिगुणओ) के० त्रण गुणो एटले त्रण योजनथी अधिक छे. अने (बाहल्लं) के० जाडाइ ते (अड्ढाइज्जधणुसया) के० अढीसो धनुष्यनी छे. ॥ ६८ ॥

कण्हं राहु विमाणं, निच्चं चन्देण होइ अविरहियं ॥
चतुरंगुलमप्पत्तं, हिट्ठा चन्दस्स तं चरइ ॥ ६९ ॥

अर्थः—(कण्हं) के० काला वर्णवालुं (राहुविमाणं) के० राहुनुं विमान (निच्चं) के० निरंतर (चन्देण) के० चन्द्रना विमानथी (अविरहियं होइ) के० अभिन्न होय छे. अर्थात् दूर थातुं नथी. (तं) के० ते राहुनुं विमान (चंदस्स) के० चन्द्रना विमानथी (चतुरंगुलमप्पत्तं) के० चार अगुल दूर (हिट्ठा) के० नीचे (चरइ) के० चाले छे. ॥ ६९ ॥

राहु बे प्रकारना छे. एक नित्यराहु बीजो पर्वराहु. पर्वराहु जघन्यथी छ मासे चन्द्रने अने सूर्यने ग्रहण करे छे अर्थात् पोताना विमानथी ढांके छे. तथा उत्कृष्टथी चन्द्रने बेंतालीश मासे अने सूर्यने अडतालीश वर्षे ग्रहण करे छे. नित्यराहुनुं विमान काला

वर्णनु छे. ते सर्वदा चन्द्रनी साथे पण चन्द्रना विमानथी चार अंगुल नीचु चाले छे तेमा कृष्णपक्षमा चन्द्रमंडलना पंदर भाग करीये तेना एक एक भागने प्रतिदिन ढांके छे. अने शुक्लपक्षमा एक एक भागने मूके छे. जेथी लोकमा चन्द्रमंडलना तेजनी हानी वृद्धि देखाय छे.

हवे जंबूद्वीपमा तथा बीजा पण मनुष्यक्षेत्रमा एक ताराथी बीजा ताराना विमानोनु पर्वतादिकना व्याघाते (आतरे) अथवा व्याघात विना (आतरा विना) जघन्योत्कृष्ट अंतर केटलु होय ते कहे छे —

तारस्स य तारस्स य, जंबुद्दीवंमि अंतरं गुरूयं ॥
बारस जोयण सहस्सा दुन्निसया चेव बायाला ॥७०॥

अर्थ —(जंबुद्दीवंमि) के० जंबूद्वीपने विषे (तारस्स य तारस्स य) के० एक ताराथी बीजा तारानु (गुरूय अंतर) के० उत्कृष्ट अंतर (बारस जोयण सहस्सा) के० बार हजार योजन, (दुन्नि सया) के० बसो योजन अने (बायाला) के० बेतालीस योजन अर्थात् (१२२४२) योजन (चेव) के० निश्चे होय छे आ अंतर मेरु पर्वतना व्याघातथी पडले आतराथी जाणवु. कारण मेरु पर्वत समभूतलानी नीचे दश हजार योजन जाडो छे, तथा मेरुने अने एक बाजुना ताराने अगीयारसो एकवीस योजननु अंतर छे अने बीजी बाजुए पण मेरुने अने ताराने तेटलुज अंतर छे, ए त्रण अंतरनी संख्याने एकठी करीये तो एक ताराथी बीजा तारानु उत्कृष्ट अंतर (१२२४२) योजन थाय छे ॥ ७० ॥

हवे मेरु पर्वत विना बीजा पर्वतोना आतरे अथवा आतरा विना तारा तथा नक्षत्रोनु जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर कहे छे —

निसढो य नीलवंतो, चत्तारिस उच्च पंच सय कूडा ॥
अद्धं उवरि रिक्खा, चरंति उभय ट्ठ वाहाए ॥ ७१ ॥

अर्थः—(निसढो य नीलवंतो) के० निषध अने नीलवंत ए वन्ने पर्वत (चत्तारि सय उच्च) के० भूमिथी चारसो योजन उंचा छे अने ते पर्वतनां (पंच सय) के० पांचसो योजन उंचा (कूडा) के० नव नव कूट एटले शिखरो छे. ते कूटो (उवरि) के० उपरना भागे (अद्ध) के० अढीसो योजन पहोला छे. पर्वत अने शिखरनुं मली नवसो योजन उच्चपणुं थयुं. ते कूटना (उभय) के० वन्ने वाजुए (अट्ठ) के० आठ योजननी (अवाहाए) के० अवाधाए (रिक्खा) के० नक्षत्रो (चरंति) के० फरे छे. एटले के-अढीसो योजन शिखरनी पहोलाइ तथा वन्ने वाजुए आठ योजननी अवाधा मलीने—॥ ७१ ॥

छावट्ठा दुन्निसया, जहन्नमेयं तु होइ वाघाए ॥
निव्वाघाए गुरुलहु, दो गाउ य धणुसया पंच ॥ ७२ ॥

अर्थः—(छावट्ठा दुन्निसया) के० वसो ने छासठ योजन (एयं) के० ए (जहन्न) के० जघन्यथी तारा ताराने तथा नक्षत्र नक्षत्रने (वाघाए) के० पर्वतादिकना व्याघाते एटले आंतरे अंतर छे. अने (निव्वाघाए) के० पर्वतादिकना आंतरा विना तो (गुरु) के० उत्कृष्ट अंतर (दो गाउ) के० वे गाउनुं छे, (य) के० अने (लहु) के० जघन्य अंतर (धणुसया पंच) के० पांचसो धनुष्यनुं छे ॥ ७२ ॥

हवे मनुष्य क्षेत्रनी वहार घंटाकारे स्थिर रहेला चन्द्र सूर्यनुं मांहोमांहे अंतरप्रमाण कहे छेः—

माणुसनगाओ बाहि, चदा सूरस्स सूर चदस्स ॥
जोयण सहस्स पन्नास, णूणगा अंतर दिठ्ठ ॥ ७३ ॥

अर्थ—(माणुस नगाओ) के० मनुष्यक्षेत्रनी मर्यादा रूप मानुषोत्तर पर्वतथी (बाहिं) के० बहार (चदा) के० चन्द्रथी (सूरस्स) के० सूर्यनु अने (सूर) के० सूर्यथी (चदस्स) के० चन्द्रनु (जोयण सहस्स पन्नास) के० पचाश हजार योजननु (अणूणगा) के० परिपूर्ण (अतर) के० अतर (दिठ्ठ) के० तीर्थंकरोए कह्यु छे. ॥ ७३ ॥

उपरनी गाथामा सूर्यथी चन्द्रनु अने चन्द्रथी सूर्यनु अतर कह्यु हवे सूर्यथी सूर्यनु अने चन्द्रथी चन्द्रनु अतर कहे छे —

ससि ससि रवि रवि साहिय, जोयण लक्खेण
अतर होइ ॥
रवि अतरिया ससिणो, ससि अतरिया रवी दित्ता ॥७४॥

अर्थ—(ससि ससि) के० एक चन्द्रथी बीजा चन्द्रनु अने (रवि रवि) के० एक सूर्यथी बीजा सूर्यनु (साहिय जोयण लक्खेण) के० एक लाख योजन अधिक अतर (होइ) के० अतर होय छे. कारण के (रवि अतरिया ससिणो) के० सूर्य सूर्यने आतरे चन्द्र छे. अने (ससि अतरिया रवी) के० चद्र चद्रने आतरे सूर्य (दित्ता) के० प्रकाशे छे अर्थात् एक चन्द्रथी बीजा चन्द्रनु अतर एक लाख योजन उपर सूर्यना मडल जेटलु एटले एक योजनना एकसठीया अडतालीश भाग जेटलु छे अने एक सूर्यथी बीजा सूर्यनु अतर एक लाख योजन तथा एक योजनना एकसठीया छप्पन भाग जेटलु छे ॥ ७४ ॥

अर्थः—(तत्तो) के० त्यार पछी (समए समए) के० एक एक समये (इक्किके) के० एक एक रोमखंड काढतां (जो कालो) के० जेटले काले (अवहियंमि) के० ते पलो खाली थाय. तेमां (संखिज्जवासकोडी) के० संख्याता वर्षकोटि थाय. ते (सुहुमे उद्धारपलियंमि) के० सूक्ष्म उद्धार पल्योपम कहेवाय. ॥ ८० ॥

जावइया उद्धार, अड्ढाइज्जाण सागराण भवे
तावइया खलू लोए, एवं दिवा समुद्दाय ॥८१॥

अर्थः—(अड्ढाइज्जाण) के० अढी (उद्धार सागराण) के० उद्धार सागरोपमना (जावइया) के० जेटला समय (भवे) के० थाय. (तावइया) के० तेटला (लोए) के० लोकने विषे (एवं) के० ए प्रमाणे (दीवा) के० द्वीप (य) के० अने (समुद्दा) के० समुद्र (खलु) के० निश्चे जाणवा. ॥ ८१ ॥

उद्धारसागर दुगे सड्ढे समएहिं तुल्लदीवुदहि
दुगुणादुगण पवित्थर, वलयागारा पढमवज्जं ॥८२॥

अर्थः—(उद्धारसागर) के० उद्धार सागरोपम ते (दुगे सढे) के० अढी एटले अढी उद्धारसागरोपमना जेटला (समएहिं) के० समय थाय तेहने (तुल्ल) के० बराबर अर्थात् तेटला (दीवुदहि) के० द्वीप अने समुद्र छे. तेमां (पढमवज्ज) के० पहेला जंबुद्धीपने वर्जीने बाकीना सर्वे (दुगुणादुगुपयवित्थर) के० एक बीजाथी बमणा विस्तारवाला अने (वलयागारा) के० वलय एटले चूडीना आकारे छे. अने प्रथमना जंबूद्वीप वृत्ताकारे छे. ॥ ८२ ॥

अहीं प्रस्तावे छ प्रकारना पल्योपम अने ६ प्रकारना सागरोपमनुं स्वरुप जणावे छे ते आ प्रमाणेः—

१ सात वार आठ आठ खण्ड करीने भरेला वनकूत कुवामाथी एकेक समये एकेक स्थूल वालाग्र काढता जेटलो काळ लागे तेटलो काळ बादर उद्धार पल्योपम, अने एवा १० कोडाकोडि पल्योपमे एक बादर उद्धार सागरोपम थाय

२ प्रथम भरेला संख्यात रोम खण्डमांथी दरेक रोमखण्डना पुन असंख्य असंख्य रोमखण्ड करीए ते सूक्ष्म रोमखण्ड कहेवाय एवा सूक्ष्म रोमखण्डथी भरेला ते वनकूत कुवामाथी एकेक समये एकेक वालाग्र काढता जेटले काळे ते कुवो खाली थाय तेटलो काळ सूक्ष्म उद्धार पल्योपम, अने एवा १० कोडाकोडि पल्योपमे एक सूक्ष्म उद्धार सागरोपम थाय

३ स्थूल वालाग्रथी भरेला कुवामाथी दर सो सो वर्षे एकेक स्थूल वालाग्र काढता जेटलो काळ लागे तेटलो काळ बादर अद्धा पल्योपम अने एवा १० कोडाकोडि पल्योपमे एक बादर अद्धा सागरोपम

४ सूक्ष्म वालाग्रथी भरेला कुवामाथी दर सो सो वर्षे एकेक सूक्ष्म वालाग्र काढता जेटलो काळ लागे तेटलो काळ सूक्ष्म अद्धा पल्योपम अने एवा १० कोडाकोडि पल्योपमे १ सूक्ष्म अद्धा सागरोपम.

५ स्थूल वालाग्रथी भरेला कुवामा जेटला आकाश प्रदेशो स्थूल वालाग्रोने स्पर्शेला छे तेमाथी दरेक स्पर्शेला आकाश प्रदेशने एकेक समये काढता जेटलो काळ लागे तेटलो काळ बादर क्षेत्र पल्योपम, अने एवा १० कोडाकोडि पल्योपमे १ बादर क्षेत्र सागरोपम

६ सूक्ष्म रोमखण्डथी भरेला कुवामाथी ते सूक्ष्म रोमखण्डोने स्पर्शेला अने नहि स्पर्शेला आकाश प्रदेशोने एकेक समये काढता

जेटलो काळ लागे तेटलो काळ सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम, अने एवा १० कोडाकोडि पल्योपमे १ सूक्ष्म क्षेत्र सागरोपम.

पढमो जोयणलक्खं, वट्टो तं वेढिउं ठिया सेसा
पढमो जंबुदीवो, सयंभूरमणोदही चरमो ॥८३॥

अर्थः—(पढमो) के० पहेलो जंबुद्वीप (वट्टो) के० थाळीनी पेठे गोळ आकारे (जोयणलक्खं) के० एक लाख योजननो छे. अने (तं) के० ते जंबुद्वीपने (वेढिउं) के० वींटीने (सेसा) के० बीजा सर्वे द्वीपो (ठिया) के० रह्या छे. (पढमो) के० सर्वेथी पहेलो (जंबुदीवा) के० जंबुवृक्षथी प्रसिद्ध थयेलो जंबुद्वीप छे, अने (चरमो) के० सर्वेथी छेलो (सयंभूरमणोदही) के० स्वयंभूरमण नामनो समुद्र छे. ॥ ८३ ॥

हवे केटलाक द्वीप अने समुद्रनां नाम कहे छेः—

जंबु धायइ पुक्खर, वारुणिवर खीर धय खोय नंदिसरा ॥
अरुण रुणवाय कुंडल, संख रुपग भुयग कुस कुंचा ॥८४॥

अर्थः—१ (जंबु) के० जंबुद्वीप, २ धायइ) के० धातकीखंड द्वीप, ३ (पुक्खर) के० पुष्करवर द्वीप, ४ (वारुणिवर) के० वारुणिवर द्वीप, ५ (खीर) के० क्षीरवर द्वीप, ६ (घय) के० घृतवर द्वीप, ७ (खोय) के० इक्षुवर द्वीप, ८ (नंदिसरा) के० नन्दीश्वर द्वीप, ९ (अरुण) के० अरुण द्वीप, १० (अरुणवाय) के० (अरुणोपपात) द्वीप, ११ (कुंडल) के० कुंडल द्वीप, १२ (संख) के० शंख द्वीप, १३ (रुयग) के० रुचक द्वीप, १४ (भुयग) के० भुयंग द्वीप, १५ (कुस) के० कुसद्वीप, १६ (कुंचा) के० क्रौंच द्वीप. ॥ ८४ ॥

हो सत्र द्वी। एकेक समुद्रथी वींटरा छे ते समुद्रोनां नाम कहे छे—

पढमे लवणो जलहि, बीए कालो य पुक्खराइसु ॥
दीवेसु हुंति जलहि, दीवसमाणेहि नामेहि ॥८५॥

अर्थ —(पढमे) के० पहेलो (लवणो जलहि) के० लवण नामनो समुद्र छे, (बीए) के० बीजो कालो के० कालोदधि नामनो समुद्र छे (य) के० अने (पुक्खराइसु) के० बीजा पुष्करवर समुद्रथी माडीने (दीवेसु) के० सर्व द्वीपने विषे (दीवसमाणेहि नामेहि) के० द्वीपना सरखा नामवाला (जलही) के० समुद्रो (हुंति) के० होय छे जेम वारुणिवर द्वीप अने वारुणिवर समुद्र ए प्रमाणे बीजा पण जाणवा ॥ ८५ ॥

ए सर्व द्वीप समुद्र वज्रमय जगतीथी वींटायला छे जगती आठ योजन उंची छे. मूलमां बार योजन पहोली, पछी प्रदेशे प्रदेशे हीन थतां उपर चार योजन पहोली छे ते उपर बे गाउ अने पांचसो धनुष्य उंची पद्मवर वेदिका छे ते उपर वन छे.

हवे लवण समुद्रना चार द्वारनुं परस्पर अंतर कहे छे

दुन्नि सया य असिया, पणनउइ सहस्स तिन्नि लक्खा य ॥
कोसा अंतर लवणे, दारस्स दाराणी विन्नेया ॥ ८६ ॥

अर्थ.—(तिन्नि लक्खा य) के० त्रणी त्रण लाख, (पणनउइ सहस्स) के० पचाणु हजार, (दुन्नि सया) के० बसो, (य) के० अने (असिया) के० एंशी एटला योजन, तथा (कोसो) के० एक गाउ उपर, एटले (लवणे) के० लवणसमुद्रमां (दारस्स

द्वाराणी) के० एक द्वारथी बीजा द्वार सुधीनुं (अंतर) के० अंतर (विज्ञेया) के० जाणवुं ॥ लवण समुद्रनो परिधि (१५८११३९) योजनमां कांइक ओछो छे. अने लवण समुद्रनी चार दिशामां चार दरवाजा छे. ते दरेक दरवाजो चार चार योजन पहोलो छे. तेथी चार दरवाजाना सोल योजन थाय. अने दरेक दरवाजानी बन्ने बाजुए एक एक गाउना विस्तारवाली द्वारशाख प्रदेशनी भींत छे. तेथी चार दरवाजाना आठ द्वारशाख प्रदेशना बे योजन मेलवतां अढार योजन थाय, ते अढार योजन काढी नाखीने बाकीनी लवण समुद्रनी परिधिना चार भाग करतां (३९५२८०) योजन अने एक गाउ एटलुं द्वार द्वारनुं अंतर थाय. ॥ ८६ ॥

हवे मोटा पाताल कलशानुं स्वरूप अने तेनी संख्या कहे छेः—

जोयण सहस्स दसगं, मूले उवरि य होंति विच्छीण्णा ॥
मज्झे य सय सहस्सं, तीत्तियमित्तं च उगाढा ॥ ८७ ॥

अर्थः—लवण समुद्रनी चारे दिशामां पूर्व दिशाथी आरंभीने १ वडवामुख, २ केयूप, ३ यूप, अने ४ ईश्वर ए नामना अने एक हजार योजननी जाडी ठींकरीवाला चार मोटा पातालकलशा छे. ते कलशा (मूले) के० नीचे मूलमां (य) के० अने (उवरि) के० उपर मुख आगल (जोयण सहस्स दसगं) के० दश हजार योजन (विच्छीण्णा) के० विस्तारवाला होंति के० छे. (य) के० अने (मज्झ) के० मध्यभागने विषे (सय सहस्सं) के० एक लाख योजन विस्तारवाला छे. (च) के० वली तित्तिय-मित्तं के० तेटलाज एटले एक लाख योजन (उगाढा) के० पृथ्वीमां उंडा छे. ॥ ८७ ॥

हवे नाना पाताल कलशानुं स्वरूप अने तेनी संख्या कहे छे –

जोयण सयविच्छिण्णा मूले उवरि दससयाणि मज्झमि ।
उगाढा य सहस्स दसजोयण वायमि कुडा ॥ ८८ ॥
अन्ने लहुपायाला खुड्डालिं जरगमट्ठिया लवण
अट्ठसया चुलसीया, सत्त सहस्सा य सव्वेवि ॥ ८९ ॥

अर्थ —(मूले) के० मूलमां नीचे अने (उवरि) के० उपर (जोयणसय विच्छिण्णा) के० सो योजन विस्तारवाळा (मज्झमि) के० मध्य भागमां (दससयाणि) के० दस हजार योजन विस्तारवाळा, (य) के० अने (सहस्स) के० एक हजार योजन (उगाढा) के० उंडा, तथा (दस जोयण) के० दस योजन (वायमि कुडा) के० जाडी ठीकरीवाळा–॥ ८८ ॥ एम (अन्ने लहु पायाला) के० बीजा नाना पाताल कलशा तेनी (खुड्डालिं) के० नानी नव पंक्ति ते (जगमट्ठिया) के० गरवाने आकारे (लवणे) के० लवण समुद्रमां रही छे. मोटा चार पाताल कलशानी वचमां वचमां नाना पाताल कलशानी नव पंक्तिओ छे पहेली पंक्तिमां (२१५) कलशा छे, बीजी पंक्तिमां (२१६) कलशा छे एम वधता वधता नवमी पंक्तिमां (२२३) कलशा छे. एक भागना सर्व मळीने (१९७१) कलशा छे चारे भागना मळीने (७८८४) कलशा थाय छे ॥ ८९ ॥

पायाला लवण तिभागे. मज्झाग ति तिन्नि
भाग तिन्नेया ॥
हेट्ठीमभागे वाऊ, मज्झे वाऊ य उदग च ॥ ९० ॥

अर्थः—(लवण) के० लवण समुद्रमां (पायाला) के० पाताल कलशाना नाना अने मोटा एवा (विभागे) के० बे भाग छे. ते (सव्वाणावि) के० सर्व कलशाना एक एकना (तिन्नि भाग) के० त्रण भाग (विन्नेया) के० जाणवा. तेमां (हेट्ठीम-भागे) के० नीचेना भागमां (वाऊ) के० वायु छे. (मज्झे) के० मध्यना भागमां (वाऊं) के० वायु (य) के० अने (उदगं) के० पाणी भेगुं छे. तथा उपरना भागमां पाणीज छे. ॥ ९० ॥

हवे बीजा द्वीप समुद्रोनां केवां केवां नाम छे ? ते कहे छेः—

आभरण वत्थ गंधे, उप्पल तिलए य पउम निहि रयणे ।
वासहर दह नईओ, विजया वक्खार कप्पिंदा ॥ ९१ ॥
कुरु मंदर आवासा, कुडा नक्खत्त चन्द सूरा य
अन्नेवि एवमाई, पसत्थवत्थूण जे नामा ॥ ९२ ॥

अर्थः—(आभरण) के० हार विगेरे आभूषण, (वत्थ) के० वस्त्र, (गंध) के० कस्तुरी वगेरे सुगंधिवस्तु, (उप्पल) के० चन्द्रविकाशी कमल, (तिलए य) के० वृत्त तिलक अथवा तिलक-वृक्ष, (पउम) के० शतपत्र पुंडरिकादिक सूर्यविकाशी कमल, (निहि) के० महापद्मादिक नव निधि, (रयणे) के० कर्केतनादि रत्न. (वासहर) के० हिमवंतादिक वर्षधर पर्वत, (दह) के० पद्मादिक द्रह, (नइओ) के० गंगा विगेरे नदीओ, (विजया) के० कच्छादिक विजय, (वक्खार) के० मालवंत विगेरे वक्षस्कार पर्वत, (कप्प) के० सौधर्मादिक देवलोक, (इंदा) के० शक्रेंद्र विगेरे इंद्रो ॥ ९१ ॥ (कुरु) के० देवकुरु उत्तरकुरु (मंदर) के० मेरु पर्वत, (आवासा) के० इन्द्रादिकना निवासभुवन, (कूडा) के० कूटपर्वत, (नक्खत्त) के० कृतिकादि नक्षत्र, (चन्द) के०

चन्द्र, अने सूरा य क० सूर्य, (एवमाई) के० ए विगेरे (अन्नेवि) के० बीजा पण (पसत्थवत्थूण) क० श्रेष्ठ वस्तुना (जे नामा) के० जे नामो छे ॥ ९२ ॥

तन्नामा दीवुदही, तिपडोयारा हुंति अरुणाई
जंबुलवणाइया, पत्तेयं ते असंखिज्जा ॥ ९३ ॥
ताणंतिम सूरवरा-वभासजलही परं तु इक्किका
देवे नागे जक्खे, भूए य सयंभूरमणे य ॥ ९४ ॥

अर्थ —(तन्नामा) क० ते नामना (दीवुदही) के० द्वीप अने समुद्र छे, तेमां (अरुणाई) क० अरुण द्वीपथी आरंभीने सर्व द्वीप समुद्र (तिपडोयारा) के० त्रिप्रत्यवतार एटले त्रण द्वीप-समुद्रना एक सरखा नाम (हुंति) क० छे तेमज आभरणादिक वस्तुना नामवाला सर्व द्वीपसमुद्र त्रिप्रत्यवतार होय छे. जेमके अरुण द्वीप, अरुणसमुद्र, अरुणवरद्वीप, अरुणवरसमुद्र, अरुण-वरावभास द्वीप, अरुणवरावभास समुद्र, हार द्वीप, हार समुद्र, हारवर द्वीप, हारवर समुद्र, हारवरावभास द्वीप, हारवरावभास समुद्र विगेरे (जंबु लवणाइया) के० जंबुद्वीप अने लवण समुद्र विगेरे जे (पत्तेयं) के० दरेक द्वीप समुद्र छे. (ते) के० ते नामना बीजा (असंखिज्जा) क० असंख्याता द्वीप समुद्रो छे. ॥ ९३ ॥ (ताणंतिम) क० तेना छेला (सूरवरावभास) के० सूर्यवरावभास नामना समुद्र छे, त्यांसुधी त्रिप्रत्यवतार जाणवा (परं तु) क० अने त्यारपछी आगळ तो छेला (देवे) के० देव द्वीप अने देव समुद्र, (नागे) क० नाग द्वीप अने नाग समुद्र, (जक्खे) क० यक्ष द्वीप अने यक्ष समुद्र, (भूए य) के० भूत द्वीप अने भूत समुद्र, तथा (सयंभूरमणे य) के० स्वयंभूरमण द्वीप

अने स्वयंभूरमग समुद्र ए पांच द्वीपसमुद्रो (इक्किका) के० एक एक छे. ते त्रिप्रत्ययावतार नथी ॥ ९४ ॥

हवे सर्वे समुद्रोनां पाणी विगेरेनुं विशेष स्वरूप कहेछे.

वारुणिवर खीर वरो, घयवर लवणो य हुंति भिन्नरसा ॥
कालो य पुक्खरोदहि, सयंभूरमणो य उदगरसा ॥९५॥
इक्खुरस सेसजलही, लवणे कालो य चरिम वहुमच्छा ॥
पण सग दस जोयण सय,तणु कमा थोव सेसेसु॥९६॥

अर्थः—(वारुणिवर) के० वारुणिवर समुद्रनुं पाणी मदिरा-सरखुं, (खीरवरो) के० क्षीर समुद्रनुं पाणी दुध सरखुं, (घयवर) के० घृतवर समुद्रनुं पाणी गायना घी सरखुं, (य) के० अने (लवणो) के० लवण समुद्रनुं पाणी खारुं. एम ए चारे समुद्रो (भिन्नरसा) के० जूदा जूदा रसवाला (हुंति) के० छे. अर्थात् नाम सरखा पाणीना स्वादवाला छे. तेमज (कालो) य के० कालोदधि, (पुक्खर) के० (पुष्करवर य) के० अने (सयंभूरमणो) के० स्वयंभूरमण. ए त्रण (उदहि) के० समुद्रो (उदगरसा) के० वर्षादना पाणी जेवा स्वादवाला छे. ॥ ९५ ॥ (सेस जलहि) के० वाकीना नंदीश्वर समुद्रथी आरंभी भूतसमुद्र पर्यंतना सर्व समुद्रना पाणी(इक्खुरस) के० शेरडीना रस समान मीष्ट पाणीवाला छे. वली (लवण) के० लवगसमुद्र, (कालो) के० कालोदधि समुद्र, (य) के० अने (चरिम) के० स्वयंभूरमण समुद्र. ए त्रण समुद्रमां (वहुमच्छा) के० घणा माछलांनी जाती छे. अने ते माछलां (पण सग दश योजणसयतणु के० पांच सो, सात सो अने हजार योजनना शरीरवाला (कमा) के० अनुक्रमे करीने जाणवा. अर्थात् लवण समुद्रमां उत्कृष्ट पांचसो योजनना, कालोदधिमां सात सो योज-

नना अने स्वयंभूरमणमां एक हजार योजनना शरीरवाळा मच्छ छे (शेष समुद्रेसु) के० बाकीना समुद्रोमां थोडा अने न्हाना मच्छ छे ॥ ९६ ॥

हवे दरेक द्वीप अने समुद्रे चंद्र सूर्यनी संख्या कहे छे.

दो ससि दो रवि पढमे, दुगुणा लवणंमि धायईसंडे ॥
बारस ससि बारस रवि, तप्पभिइ निदिट्ठ ससिरविणो॥९७॥
तिगुणा पुव्विल्लजुया, अणंतराणंतरंमि खित्तंमि ॥
कालोए बायाला, बिसत्तरी पुक्खरद्धंमि ॥ ९८ ॥

अर्थ —(पढमे) के० पहेला जंबुद्वीपने विषे (दो ससि दो रवि) के० बे चंद्र अने बे सूर्य छे (लवणंमि) के० लवण समुद्रने विषे तेथी (दुगुणा) के० बमणा एटले चार चंद्र अने चार सूर्य छे तथा (धायईसंडे) के० धातकी खंडने विषे (बारस ससि बारस रवि) के० बार चंद्र अने बार सूर्य छे वळी (तप्पभिइ) के० ते धातकी खंड प्रमुखने विषे (निदिट्ठ ससिरविणो) के० चंद्र सूर्यनी जे संख्या कही छे तेने ॥ ९७ ॥ (तिगुणा) के० त्रण गुणी करीये अने (पुव्विल्लजुया) के० प्रथमना द्वीप समुद्रना चंद्र सूर्यनी संख्या तेमां भेळवीये एटले (अणंतराणंतरंमि खित्तंमि) के० पाछळ पाछळना द्वीप समुद्रना क्षेत्रने विषे चंद्र सूर्यनी संख्या थाय जेमके धातकी खंडना बार चंद्र अने बार सूर्य छे तेने त्रण गुणा करीये त्यारे छत्रीश सूर्य अने छत्रीश चंद्र थाय, तेमां जंबुद्वीपना अने लवण समुद्रना मळी छ चंद्र अने छ सूर्य भेळवीये त्यारे (कालोए) के० कालोदधिने विषे (बायाला) के० बेंतालीश चंद्र अने बेंतालीश सूर्य थाय. आगळना द्वीप समुद्रने विषे पण एज प्रमाणे करण करवाथी चंद्र सूर्यनी संख्या थाय छे. जेमके—कालोदधिना बेंतालीश-

शने त्रण गुणा करता एक सो छत्रीश थाय, तेमां धातकीखंडना चार, लवण समुद्रना चार, अने जंबुद्वीपना बे. एअढार मेलवतां एकसो चुमालीश थाय, परंतु पुष्करवरद्वीपमां अर्धुं मनुष्य क्षेत्र छे माटे (पुक्खवरद्धंमि) के० अर्धा पुष्करवर द्वीपमां (विसत्तरा के० बहोंतेर बहोंतेर चंद्र सूर्य छे. बाकीना बहोंतेर चंद्र सूर्य समश्रेणीए नथी अने स्थीर छे माटे गण्या नथी. वली पुष्करवर द्वीपना एक सो चुमालीशने त्रण गुणा करतां चार सो बत्रीश थाय, तेमां जंबुद्वीपना बे, लवण समुद्रना चार, धातकी खंडना बार, अने कालोदधीना बेंतालीश मेलवतां पुष्करवर समुद्र चारसो बाणु चंद्र अने चारसो बाणु सूर्य थाय छे. एज प्रमाणे आगलना द्वीप समुद्रने विषे पण [१]जाणवुं. ॥ ९८ ॥

हवे मनुष्य लोकमां पक्तिने विषे चंद्र सुर्यनी संख्या कहे छे.

दो ससि दो रवि पंती, एगंतरिया छसठ्ठि संखाया ॥
मेरुं पयाहिणंता, माणुसखित्ते परिभमंति ॥ ९९ ॥

अर्थ—जंबुद्वीपमां (दो ससि) के० बे चंद्र अने (दो रवि) के० बे सूर्य तेमनी (पंती) के० पंक्ति एटले श्रेणि छे. ते पंक्ति (एगंतरिया) के० एक एकने आंतरे छे. एटले सूर्यनी पंक्तिने आंतरे चंद्रपंक्ति अने चंद्रपंक्तिने आंतरे सूर्यपंक्ति छे. अढी द्वीपरूप मनुष्य क्षेत्रमां एक पंक्तिने विषे छसठ्ठिसंखाया के० छासठ छासठ चंद्र सूर्य होय छे. तेवी ते चार पंक्ति छे. ते चारे पंक्तिओ (माणुसखित्ते) के० मनुष्य क्षेत्रने विषे (मेरुं पयाहिणंता) के०

---

१ ए संबंधमां मतांतर घणो छे, ते मोटा ग्रंथोथी जाणवो आ चालु प्रकरणनीज १०६-१०७ ने १०८ मी गाथा देखवाथी आ करणनो मतांतर समजाय छे, तोपण व्यामोह करवो योग्य नथी.

मेरुपर्वतने प्रदक्षिणा देतो छतो (परिभमति) के० फरे छे एटले जम्बुद्वीपमां ज्यारे एक सूर्य मेरुपर्वतथी दक्षिण दिशाए फरतो होय त्यारे बीजो सूर्य उत्तर दिशाए फरतो होय छे, तेवीज रीते लवण समुद्रमा एक एक दिशाए बबे सूर्य, धातकी खंडमा एक एक दिशाए छ छ सूर्य, कालोदधिमा एक एक दिशाए एकवीश एकवीश सूर्य, अने पुष्करार्द्धमा एक एक दिशाए छत्रीश छत्रीश सूर्य. एम सर्व मली, छासठ सूर्य दक्षिण दिशाए अने छासठ सूर्य उत्तर दिशाए ए बे समश्रेणिना सर्व मली एकसो बत्रीश सूर्य अने तेवीज रीते एकसो बत्रीश चन्द्र मनुष्यक्षेत्रमा फरे छे ॥ ९९ ॥

हवे मनुष्यक्षेत्रमा ग्रहनी पक्ति कहे छे

एव गहाइणोवि हु, नवरं धुवपासवत्तिणो तारा ॥
तं चिय पयाहिणंता, तत्थेव सया परिभमंति ॥१००॥

अर्थ—(एव) के० ए पूर्वे कहेली चद्र सूर्यनी पक्तिनी पेठे (गहाइणोवि हु) के० ग्रह तथा नक्षत्रनी पक्तिओ पण जाणवी ते आ प्रमाणे एक एक चद्रनी पाछल अठावीश नक्षत्रनी एक पक्ति एवी छासठ छासठनी बे पक्ति मली एक सो बत्रीश पक्ति चद्रनी पाछल जाणवी तेमज अठाशी ग्रहनी एक पक्ति, एवी छासठ छासठनी बे पक्ति जाणवी तेमा (नवर) के० एटलु विशेष छे के (धुवपासवत्तिणो तारा) के० ध्रुवना तारानी पासे रहेला ताराओ (तचिय पयाहिणता) के० ध्रुवना तारानेज प्रदक्षिणा करता (तत्थेव) के० त्याज (सया) के० निरतर (परिभमति) के० भ्रमण करे छे ॥ १०० ॥

बत्तीससयं चदा, बत्तीससयं च सूरिया सययं ॥
समसेणीए सव्वे माणुसखित्ते परिभमंति ॥ १०१ ॥

अर्थ—(बत्तीससय) के० एकसो बत्रीश (चंदा) के० चंद्र, (च) के० अने (बत्तिससय) के० एक सो बत्रीश (सूरिया) के० सूर्य (सव्वे) के० ते सर्वे (समसेणीए) के० समश्रेणिए रह्या छता (सययं) के० निरंतर (माणुसखित्तं) के० मनुष्य क्षेत्रने विषे (परिभमंति) के० फरे छे ॥ १०१ ॥

चत्तारि य पंतीओ, चंदाइच्चाण मणुयलोगंमि ॥
छावट्ठी छावट्ठी य, होइ इक्किकया पंती ॥ १०२ ॥

अर्थ—(मणुयलोगंमि) के० मनुष्यक्षेत्रने विषे (चंदाइच्चाण) के० एक सो बत्रीश चंद्र अने एक सो बत्रीश सूर्यनी (चत्तारिय-पंत्तीओ) के० चार पंक्ति छे. तेमां (छावट्ठी छावट्ठी य) के० छासठ छासठ चंद्र सूर्यनी (इक्किकया पंती) के० एक एक पंक्ति (होइ) के० होय छे ॥ १०२ ॥

छप्पन्न पंतीओ, नक्खत्ताणं च मणुयलोगंमि ॥
छावट्ठी छावट्ठी य, होइ इक्किकया पंती ॥ १०३ ॥

अर्थ—(मणुयलोगंमि) के० मनुष्य लोकमां (नक्खताणं) के० नक्षत्रोनी (छप्पन्न पंतीओ) के० छप्पन पंक्ति छे. वली (छावट्ठी छावट्ठी य) के० बंने श्रेणिना छासठ छासठ चंद्र सूर्य-मांना दरेक चंद्र सूर्यनी पाछल (इक्किकया पंती) के० अठावीश अठावीश नक्षत्रनी एक एक पंक्ति (होइ) के० होय छे ॥ १०३ ॥

छावत्तरी गहाणं, पंतिसयं होइ मणुअलोयंमि ॥
छावट्ठी छावट्ठी य, होइ इक्किकया पंती ॥ १०४ ॥

अर्थ—(गहाणं) के० ग्रहोनी (छावत्तरी पंतीसयं) के०

एक्सो ने छोतेर पक्ति (मणुअलोगमि) के० मनुष्य लोकमा (होइ) के० होय छे. (छासट्ठी छावठी य) के० ए बने श्रेणिना छासठ छासठ चद्र सूर्यमाना दरेक चद्र सूर्यनी पाछल (इकिकया पती) के० अठाशी ग्रहोनी एक एक पक्ति (होइ) के० होय छे १०४

ते मेरुपरिअडना, पयाहिगा वत्तमडला सव्वे ॥
अणवट्ठिरजोगेग चदा सूरा गहगणा य ॥ १०५ ॥

अथ—(ते सव्वे) क० ते सर्व (चदा सूरा गह गणाय) के० चद्र सूर्य अने ग्रहगणो (अणवट्ठियजोगेण) के० अनवस्थितयोगे करीने (मेरुपरिअडता) के० मेरु पर्वतनी समीपे (वत्तमडला) के० गोल मडले करीने (पयाहिणा) के० प्रदक्षिणा करे छे ॥१०८॥

चउयालसय पढम—भूया पतिए चदसूराग ॥
तेण परियतीओ, चउरुत्तरियाए वुड्ढीए ॥ १०६ ॥

अर्थ—अढी द्वीपनी बहारना अर्द्धा पुष्करवर द्वीपमा (पढमभूयापतीए) के० मानुषोत्तर पर्वतनी पछे गोल रहेली प्रथम पक्तिने विषे (चदसूराण) के० एक बीजाने आतरे रहेला बहोतेर चद्र तथा बहोतेर सूर्य मलीने (चउयाल सय) के० एक सो चुमालीश चद्र सूर्य होय छे (तेण) के० त्यार पछी क्षेत्रवृद्धिना कारणे असख्याता द्वीप समुद्र सुधी (परियतीओ) के० दरेक पक्तिमा (चउरुत्तरियाए वुड्ढीए) के० बे चद्र अने बे सूर्य मली चार चारनी वृद्धि करवी ॥ १०६ ॥

बावत्तरि चंदाग बावत्तरि सूरियाण पत्तिए ॥
पढमाए अतर पुण चदा चदस्स लक्खदुग ॥१०७॥

अर्थ—(पढमाए पंत्तिए) के० पहेली पंक्तिमां (बावत्तरि चंदाणं) के० बहोंतेर चंद्र अने (बावत्तरि सूरियाण) के० बहोंतेर सूर्य होय छे. (पुण) के० वली (चंदा चंदस्स) के० चंद्र चंद्रनुं (अंतर) के० अंतर (लक्खदुगं) के० बे लाख योजननुं जाणवुं. ॥ १०७ ॥

जो जावइ लक्खाइ, वित्थारो सागरो य दीवो वा ॥
तावइआओ य तहिं, चंदासूराग पंतीओ ॥ १०८ ॥

अर्थ—(जो) के० जे (सागरो) के० समुद्र (वा) के० अथवा (दीवो) के० द्वीप (जावइ लक्खाइं) के० जेटला लाख योजननो (वित्थारो) के० विस्तारवालो होय, (तहिं) के० त्यां (तावइआओ) के० तेटली (चंदासूराण) के० चंद्र सूर्यनी (पंतीओ) के० पंक्तिओ जाणवी. एटले जेम बाह्य पुष्करार्द्ध आठ लाख योजननो छे तो तेमां लाख लाख योजनने अंतरे चंद्र सूर्यनी आठ पंक्ति छे. एम बीजा बहारना सर्व द्वीप समुद्रोने विषे जाणवुं. ॥ १०८ ॥

हवे जंबुद्वीपने विषे चंद्रसूर्यनां मांडलां कहे छे.

पन्नरस चूलसीइसयं, इह ससिरविमंडलाइं तक्खित्त ॥
जोयण पणसयदसहिय, भागा अडयाल इगसट्टा ॥१०९॥

अर्थ—(इह) के० आ जंबुद्वीपमां (ससि) के० चंद्रना (पन्नरस) पंदर मांडलां छे, अने (रविमंडलाइं) के० सूर्यनां मांडलां चूलसीइसयं) के० एकसो चोरासी छे. तथा (तक्खितं) के० ते मांडलांनुं क्षेत्र (जोयणपणसयदसहिय) के० पांच सो दश

योजन अने (भागा अडयाल इग सट्ठा) के० एक योजनना एक-सठ भाग करीये तेवा अडताळीश भाग जाणवा. ॥ १०९ ॥

हवे गगतोथी एनु परिमाण कहे छे

तिन्नि इगसट्ठा चउरो, इग इगसट्ठस्स सत्त भइयस्स ॥
पणतीस च दुजोयण, ससि रविणो मंडलंतरं ॥११०॥

अर्थ—एक योजनना (इगसट्ठा) के० एकसठ भाग करीये, तेवा (तिन्नि) के० त्रीश भाग, अने (इग) क० एक एवा (इग-सट्ठस्स) क० एकसठीया भागना (सत्त भइयस्स) के० सात भाग करीये तेवा (चउरो) के० चार भाग, तथा (पणतीस जोयण) के० पांत्रीश योजन एटलु (ससि) के० चद्रना मांडलानु अंतर छे अने (दुजोयण) क० बे योजननु (रविणो) के० सूर्यना मांडलानु अंतर छे, ॥ ११० ॥

एज वात आगलनी गाथावडे कहे छे.

दो जोयणाणि सूरस्स, मंडलाणि हवंति इयरस्स ॥
पणतीस जोयणीगस-ट्ठिनीस चउ भाग सत्तहिया॥१११॥

अर्थ—(सूरस्स) के० सूर्यना (मांडलाणि) के० मांडला (दो जोयणाणि) क० बे बे योजनने आंतरे (हवंति) क० होय छे अने (इयरस्स) के० चद्रना मांडला मांडलानु अंतर (पणतीस जोयण) क० पांत्रीश योजन, तथा (इगसट्ठी) के० एक योजनना एकसठ भाग करीये तेवा (तीस) के० त्रीश भाग अने (सत्तहिया) क० ते एकसठी एक भागना सात भाग करीये तेवा (चउ भागा) के० चार भाग उपर एटलु अंतर चद्रना मांडलानु जाणवु ॥ १११ ॥

तेनी गणती आ प्रमाणे-सूर्यना एक सो चोराशी मांडलाना एक सो त्र्याशी आंतरा थाय. ते एक एक आंतरानुं परिमाण बे योजन छे. माटे एकसो त्र्याशीने बमणा करिये एटले सर्व मली त्रण सों छासठ योजन थाय. हवे सूर्यना एक एक विमाननुं जाडपणुं योजनना एकसठीया अडतालीश भागनुं छे, ते अडतालीश भागने एक सो चोराशी मांडले गुणीये त्यारे (८८३२) भाग थाय. ते भागनो एकसठे भागाकार करीये त्यारे एक सो चुमालीश योजन, अने उपर एक योजनना एकसठीया अडतालीश भाग वधे. ते पूर्वे कहेला आंतराना त्रण सो छासठ योजनमां मेलवीये त्यारे सर्व मली पांच सो दश योजन अने एक योजनना एकसठीया अडतालीश भाग एटले सूर्यने विचरवानुं क्षेत्र होय ।

हवे चंद्रना मांडला पंदर छे अने तेना आंतरा चउद छे. ते एक मांडलाथी बीजा मांडला सुधीनुं अंतर पांत्रीश योजन, ते उपर एक योजनना एकसठीया त्रीश भाग, तथा एक एकसठीया भागना सात भाग करीये तेवा चार भाग एटलुं अंतर छे. तेवा आंतरा चउद छे माटे आंतराना योजनने चउद गुणा करीये त्यारे चारसो सत्ताणुं योजन. अने ते उपर एकसठीयो एक भाग वधे. हवे चंद्रना एक एक मंडलनुं जाडपणुं एक योजनना एक सठीया छपन भागनुं छे. तेने पंदर गुणा करतां तेर योजन अने एक सठीया सुडतालीश भाग आवे. तेने चार सो सत्ताणुं योजन साथे मेलवीये त्यारे पांच सो दश योजन अने एक योजनना एक सठीया अडतालीश भाग उपर थाय. एटलुं चद्रना मंडलने विचरवानुं क्षेत्र जाणवुं.

हवे सूर्य चद्रनां केटलां मांडलां जंबुद्वीपमां अने केटलां लवण समुद्रमां छे ? ते कहे छे.

मंडलदसग लवणे, पणगं निसढमि होइ चंदस्स ॥
मंडलअंतरमाणं, जाणपमाणं पुरा कहियं ॥ ११२ ॥

अर्थ–(चन्दस्स) के० चंद्रना (मंडलदसग) के० दश मांडला (लवणे) के० लवण समुद्रमा छे अने (पणग) के० पांच मांडला (निसढमि) के० निषधपर्वत उपर (होइ) के० छे वली (मंडल अंतरमाण) के० मंडलना आंतरानुं प्रमाण "पांत्रीश योजन, एक योजनना एकसठीया त्रीशभाग अने एक सठीया एक भागना सात भाग करीये तेवा चार भाग ए उपरनी गाथामां कह्युं छे ते," तथा (जाण पमाण) के० विमाननुं प्रमाण "एक योजनना छप्पन्न भागनुं" ते (पुरा कहिय) के० प्रथम कह्युं छे तेम जाणवुं ॥ ११२ ॥

पणसट्ठी निसढमि य, दुन्निय बाहा दुजोयणंतरिया ॥
इगुणवीसंतु सयं, सूरस्स य मंडला लवणे ॥ ११३ ॥

अर्थ—(य) के० वली (सूरस्स) के० सूर्यनां (पणसट्ठी) के० पांसठ मांडला (निसढमि) के० निषध पर्वत उपर छे, पण तेमांना (दुन्नि य बाहा) के० बे मांडला निषधपर्वतनी बाहेर हरिवर्ष पर्वतनी जिह्वाना अग्रभागउपर छे अने (इगुणवीस तु सयं) के० एकसो ओगणीस मांडला (लवणे) के० लवण समुद्रमां छे तथा ते मांडला (दुजोयणंतरिया) के० बबे योजनने आंतरे रह्या छे ॥ ११३ ॥

हवे जंबुद्वीपमां तथा लवणसमुद्रमां चंद्रसूर्यने फरवानुं क्षेत्र केटलां योजन छे? ते कहे छे.

ससिरविणो लवणंमि य, जोयणसयतिन्नि तीस
अहियाइं ॥
असियं, तु जोयणसयं, जंबुद्दीवंमि पविसंति ॥११४॥

अर्थ—(लवणंमि) के० लवणसमुद्रमां (ससिरविणो) के० चंद्र अने सूर्यनुं चारक्षेत्र एटले फरवानुं क्षेत्र (जोयणसयतिन्नि) के० त्रण सो योजन अने (तीस अहियाइं) के० त्रीश अधिक अर्थात् त्रण सो त्रीश योजन अने एकसठीया अडतालीश भाग अधिक छे. अने त्यांथी पाछो फरतां (असियं तु जोयणसयं) के० एक सो एंशी योजन जंबुद्दीवंमि) के० जंबुद्वीपमां (पविसंति) के० प्रवेश करे छे ॥ ११४ ॥

ग्रह, नक्षत्र अने ताराओने एक एकज मांडलुं होय छे, तेथी तेओ पोत पोताने मांडलेज फरे छे, पण दक्षिण उत्तर तरफ जता नथी.

बे चंद्रने तथा बे सूर्यने सर्वथी अंदरना मांडले अने बहारना मांडले अंतर केटलुं होय ? ते कहे छे.

ससिससि रविरवि अंतर, मज्झे इग लक्ख तिसयस-
ट्ठिमाउणो ॥
साहिय दुसयरिचय, बहि लक्खो छसय सट्ठिहिओ ॥११५॥

अर्थ—(मज्झे) के० सर्वथी अंदरना मांडलाने विषे एटले एक चंद्र निषध पर्वत उपरना अभ्यंतर मांडले आवे अने बीजो चंद्र नीलवंत पर्वत उपरनाअभ्यंतर मांडले आवे त्यारे (ससि-ससि) के० चंद्र चंद्रने तथा रवि रवि) के सूर्य सूर्यने (अंतर) के० आंतरुं ते

(इगलक्ख) के० एक लाख योजननी मध्ये (तिसयसट्ठिसाउणो) के० त्रण सो साठ योजन ओछु अर्थात् (९९६४०) योजननु होय छे. केमके एक सूर्य निषध पर्वत उपर एक सो एंशी योजन जबुद्वीपमां आवे त्यारे बीजो सूर्य नीलवंत पर्वत उपर एक सो एंशी योजन जबुद्वीपमा आवे त्यारे बन्ने मलीने त्रण सो साठ योजन थाय ते त्रणसो साठ योजन जंबुद्वीपना एक लाख योजनना आयाम विष्कभमाथी बाद करीये त्यार (९९६४०)योजन रहे.एटलु अदरना मडले आतरु जाणवु त्यार पछी (साहियदु) के० सूर्य सूर्यने दरेक माडले बे योजन वधारवु अने चद्र चद्रने (सयरिचय) के० दरेक माडले सीत्तेर योजन वधारवु जेथी (बहि) के० सर्वथी बहारना मडले (लक्खो) के० एक लाख, (छसय) के० छ सो अने (सट्ठिहिओ) के० साठ अधिक एटला योजन आतरु थाय.॥११५॥

तिन्नेव सयसहस्सा, पन्नरस हवंति जोयण सहस्सा ॥
एगुणनउया परिही, अब्भितर मडले तेसिं ॥ ११६ ॥

अर्थ—तिन्नेव य सयसहस्सा) के० त्रण लाख, (पन्नरस जोयण सहस्सा) के० पन्नर हजार, अने (एगुणनउया) के० नेव्याशी योजननी (परिही) के० परिधी (तेसिं) के०ते सूर्यना (अब्भितर मडले) के० अदरना माडलानी (हवति) के० होय छे ॥ ११६ ॥

लक्ख तिग अट्ठारस,सहसा तिन्नि सय पंचदस अहिया॥
परिही य जोयणाइ, बाहिरए मडले हुंति ॥ ११७ ॥

अर्थ—(लक्ख तिग) के० त्रण लाख, (अट्ठारस सहस्सा) के० अढार हजार, (तिन्नि सय) के० त्रण सो, अने (पचदस

अहिया) के० पंदर उपर एटला (जोयणाइं) के० योजननी (परिही) के० परिधि ते (बाहिरए मंडले) के० सूर्यना सवथी बाहेरना मंडले (हुंति) के० होय छे. ॥ ११७ ॥

हवे द्वीप समुद्रने विषे ग्रह नक्षत्र तथा तारानी संख्या जाणवानो उपाय कहे छे.

गहरिक्खतारसंखं, जत्थेच्छसि नाउ मुदहि दीवे वा ॥
तस्ससिहि एगससिगो, गुण संखं होइ सव्वग्गं ॥११८॥

अर्थ-(जत्थ) के० जे (उदहि) के० समुद्रने विषे (वा) के० अथवा (दीवे) के० द्वीपने विषे (गहरिक्खतारसंखं) के० ग्रह नक्षत्र अने तारानी संख्याने (नाउं) के० जाणवाने (इच्छसि) के० इच्छा करे छे, तो (तस्ससिहि) के० ते द्वीप समुद्रना चंद्रनी संख्याने मांडीने (एगससिगो) के० एक चंद्रना ग्रह नक्षत्र अने ताराना परिवार साथे (गुण) के० गुणाकार कर-के जेथी (सव्वग्गं संख होइ) के० सर्व संख्या थाय छे.

दृष्टांत-जेम लवण समुद्रमां चार चंद्र छे, अने एक एक चंद्रने अट्ठाशी ग्रहनो परिवार होवाथी अट्ठाशीने चार गुणा करतां त्रणसो बार ग्रह थाय. तेवीज रीते अठ्ठावीश नक्षत्रने चार गुणा करीये तो एकसो बार नक्षत्र थाय, तथा तारानी संख्या कोडा कोडी जेटली जे प्रथम कही छे तेने चार गुणी करीये त्यारे बे लाख कोडाकोडी, सडसठ हजार कोडाकोडी अने नव सो कोडा कोडी थाय. एवी रीते सर्व द्वीप समुद्रने विषे जाणवुं. ॥ ११८ ॥

एज वात बे गाथाथी कहे छे.

चत्तारि चेव चंदा, चत्तारि य सूरिया लवणतोए ॥
बारस नक्खत्तसयं, गहाण तिन्नेव बावन्ना ॥ ११९ ॥
दो चेव सय सहस्सा, सत्तट्ठी खलु भवे सहस्सा य ॥
नवयसया लवणजले, ताराण कोडिकोडीण ॥ १२० ॥

अर्थ—(लवणतोए) के० लवण समुद्रने विषे (चत्तारि चंदा) के० चार चंद्र, (चत्तारि सूरिया) के० चार सूर्य, (बारस नक्खत्तसयं) के० एकसो बार नक्षत्र, अने (गहाण तिन्नेव बावन्ना) के० त्रण सो बावन ग्रह (चेव) के० निश्चे होय छे ॥ ११९ ॥

(य) के० वली (दो चेव सयसहस्सा) के० बे लाख,(सत्तट्ठी सहस्सा) के० सडसठ हजार अने (नवसया) के० नव सो एटली (ताराणं कोडिकोडीण) के० ताराओनी कोडाकोडी (लवण जले) के० लवण समुद्रने विषे (खलु) के० निश्चे (भवे) के० होय छे ॥ १२० ॥

हवे वैमानिक देवोना विमाननी संख्या कहे छे.

बत्तीस ट्ठावीसा, बारस अड चउ विमाण लक्खाइं ॥
पन्नास चत छ सहस्स, कमेण सोहम्माईसु ॥ १२१ ॥
दुसु सय चउ दुसु सय तिग, मिगारसहियं सयं तिगेहिट्ठा॥
मज्झे सत्तुत्तर सयं, सुवरितिगे सय सुवरि पंच ॥१२२॥

अर्थ—सौधम देवलोके (बत्तीस) के० बत्रीस लाख, ईशान देवलोके (अट्ठावीसा) के० अठावीस लाख, सनत्कुमार (बारस) के० बार लाख, माहेंद्र (अड) के० आठ लाख, ब्रह्मदेवलोके (चउ)

के० चार लाख (विमाण) के० विमान छे. ए सर्वे (लक्खाइं) के० लाखनी संख्याये करीने जाणवा. लांतके (पन्नास) के० पचास हजार, शुक्र (चत्त) के० चालीश हजार, सहस्रारे (छ) के० छ हजार, ए सर्वे (सहस्स) के० हजारनी संख्याये जाणवा. ए (कमेण) के० अनुक्रमे करीने (सोहम्माइसु) के० सौधर्मादिक देवलोकना विमाननी संख्या जाणवी ॥ १२१ ॥ तथा आनत अने प्राणत ए (दुसु) के० बे लोकने विषे (सय चउ) के० चार सो विमान, तथा आरण अने अच्युत ए (दुसु) के० बे देवलोकने विषे (सय-तिगं) के० त्रण सो विमान जाणवा. (तिगेहिट्ठा) के० नीचेना त्रण ग्रैवेयके (इगारसहियं) के० अगीयार सहित (सयं) के० सो अर्थात् एक सो अगियार विमान छे. (मज्झे) के० वचला त्रण ग्रैवयके (सत्तुत्तरसयं) के० एक सो सात विमान छे, अने (उवरितिगे) के० उपरना त्रण ग्रैवेयके (सय) के० एक सो विमान छे. वली (उवरि) के० उपरना पांच अनुत्तर विमाने (पंच) के० पांच विमान छे. ॥ १२२ ॥

हवे ए पूर्वे कहेला विमानोनी सर्व संख्या तथा विमानादिकनुं स्वरूप कहे छे.

चुलसीइ लक्ख सत्ताण, वइसहस्सा विमाण तेवीसं ॥
सव्वग्गमुड्ढलोगंमि, इंदय बिसट्ठि पयरेसु ॥ १२३ ॥

अर्थ—(सव्वग्गं) के० सर्व संख्याये (चुलसीइ लक्ख) के० चोरासी लाख, (सत्ताणवइ सहस्सा) के० सत्ताणु हजार, अने (तेवीसं) के० तेवीश उपर एटला (उड्ढलोगंमि) के० ऊर्ध्वलोकने विषे (विमाण) के० विमानो छे. अने ते बार देवलोकना (बिसट्ठि-

पयरेसु) के० बासठे प्रतरने विषे मध्य भागमा (इदय) के० एक एक इंद्रक विमान छे सव मळीने इंद्रक विमान बासठ छे. ॥१२३॥

चउदिसि चउपंतीओ, बासट्ठि विमाणिया पढमपयरे ॥
उवरि इक्किकहीणा, अणुत्तरे जाव इक्किक ॥ १२४ ॥

अर्थ—(पढमपयरे) के० पहेला प्रतरने विषे मध्यना इंद्रक विमानथकी (चउदिसि) के० चारे दिशाए (बासट्ठिविमाणिया) के० बासठ बासठ विमाननी (चउपत्तीओ) के० चार पंक्तिओ छे, तेना (उवरि) के० उपर दरेक प्रतरे (इक्किक्कहीणा) के० एक एक विमान चारे दिशाथी ओछु करवु, जेथी (अणुत्तरे) के० अनुत्तर विमाने जाव (इक्कक) के० यावत् एक एक विमान चारे दिशाए रहे ॥ १२४ ।

इदय वट्टा पंतिसु, तो कमसो तंस चउरसा वट्टा ॥
विविहा पुप्फवकिन्ना, तयंतरे मुत्तु पुव्वदिसिं ॥१२५॥

अर्थ—सर्वेनी वचमा (इदय) के० इंद्रक विमान (वट्टा) के० वाटलु एटले गोळाकृतिवाळु छे (तो) के० त्यार पछी (पंतिसु) के० पंक्तिने विषे (कमसो) के० अनुक्रमे करीने प्रथम (तंस) के० त्रीखूणावाळा, पछी (चउरसा) के० चार खूणावाळा, अने छेल्ला (वट्टा) के० गोळाकृतिवाळा विमानो छे अने (तयंतरे) के० ते चारे पंक्तिओनी वचमा एक (पुव्वदिसिं मुत्तु) के० पूर्वदिशा मूकीने बाकीनी सर्वदिशामां (विविहा) के० विविधप्रकारना (पुप्फवकिन्ना) के० भिन्न भिन्न पुष्पावकीर्ण विमानो छे. ॥१२५॥

हवे पहेला प्रतरनी चार एक पंक्तिना बासठ बासठ विमान क्ये क्ये स्थानके छे ? ते कहे छे

एगं देवे दीवे, दुवे य नागोदहीसु बोधव्वे ॥
चत्तारि जक्खदीवे, भूयसमुद्देसु अठ्ठेव ॥ १२६ ॥
सोलस सयंभुरमणे, दीवेसु पइठ्ठिया य सुरभवणा ॥
इगतीसं च विमाणा, सयंभुरमणे समुद्दे य ॥ १२७ ॥

अर्थ—पहेला प्रतरनी चारे दिशानुं (एगं) के० पहेलुं एक एक विमान (देवे दीवे) के० देवद्वीपमां छे, (य) के० अने (दुवे) के० बे बे विमान (नागोदहीसु) के० नागसमुद्रमां (बोधव्वे) के० जाणवां. त्यार पछीनां (चत्तारि) के० चार चार विमान (जक्खदीवे) के० यक्षद्वीपमां छे. अने (भूयसमुद्देसु) के० भूतसमुद्रमां (अठ्ठेव) के० आठ आठ विमानो छे. ॥ १२६ ॥ वली (सयंभुरमणे दीवेसु) के० स्वयंभूरमण द्वीपने विषे (सोलस) के० शोल (सुरभवणा) के० विमानो (पइठ्ठिया) के० रह्यां छे (च) के० अने (इगतीसं विमाणा) के० एकत्रीश विमानो (सयंभुरमणे समुद्दे) के० स्वयंभूरमण समुद्रमां छे. ॥ १२७ ॥

हवे बीजा प्रतरमां चारे दिशाये एकसठ विमानोनी पंक्ति शी रीते छे, ते कहे छे.

वट्टं वट्टस्सुवरिं, तंसं तंसस्स उवरिमं होइ ॥
चउरंसे चउरंसं, उढ्ढं तु विमाणसेढीए ॥ १२८ ॥

अर्थः—(वट्टस्सुवरिं) के० वाटला एटले गोलविमाननी उपर (वट्टं) के० गोल विमान छे. (तंसस्स) उवरिमं) के० त्रण खूणानी उपर (तंसं) के० त्रिखूणी विमान (होइ) के० होय छे. (तु) के० वली (चउरंसे) के० चार खूणा विमाननी उपर

(चउरस) क० चार खूणा विमान होय छे एम (उड्ढ) क० उपर (विमाणसेढीए) क० विमानोनी पंक्ति जाणवी सर्व प्रतरमां मध्यभागे इंद्रक विमान वाटलुं छे त्यार पछी चारे दिशाए चार पंक्तिमां अनुक्रमे एक एक विमान त्रिखूणावाळा. पछी चार खूणावाळा, पछी वाटलां एम अनुक्रमे पंक्ति पूरी थाय त्यां सुधी जाणवा दरेक प्रतर हेठलुं एक एक विमान ओछुं करवुं जेथी सर्वार्थसिद्धे एक एक विमान त्रिखूणुं रहे ॥ १२८ ॥

सव्वे वट्टविमाणा, एगदुवारा हवंति नायव्वा ॥
तिण्णि य तंसविमाणे, चत्तारि य हुंति चउरंसे ॥१२९॥

अर्थ —(सव्वे वट्टविमाणा) के० सर्व वाटलां विमानो (एगदुवारा) क० एक बारणावाळा (हवंति) के० होय छे. एम (नायव्वा) के० जाणवा (तंसविमाणे) क० त्रिखूणा विमानने विषे (तिण्णिय) के० त्रण बारणा होय छे (य) के० अने (चउरंसे) क० चार खूणा विमानने विषे (चत्तारि) के० चार बारणां (हुंति) के० होय छे ॥ १२९ ॥

पागारपरिक्खित्ता, वट्टविमाणा हवंति सव्वेवि ॥
चउरंस विमाणाणं, चउद्दिसिं वेइया होइ ॥ १३० ॥

अर्थ.—(सव्वेवि) क० चार दिशामां रहेला सर्व (वट्टविमाणा) क० वाटलां पहेला गोळविमानो (पागारपरिक्खित्ता) के० गढथी विंटायेला (हवंति) के० होय छे अने (चउरंस विमाणाणं) के० चार खूणावाळा विमानने (चउद्दिसिं) के० चारे दिशाए (वेइया होइ) क० वेदिका होय छे, शयरा विनाना

गढने वेदिका जाणवो अर्थात् वाटला विमानने कांगरावालो गढ अने चोखूणा विमानने कांगरा विनानो गढ छे. ॥ १३० ॥

जत्तो वट्टविमाणा, तत्तो तंसस्स वेइया होइ ॥
पागारो बोधव्वो, अवसेसेण विमाणाणं ॥ १३१ ॥

अर्थः—(जत्तो) के० जे दिशाए (वट्टविमाणा) के० गोल विमानो छे, (तत्तो) के० ते दिशाए (तंसस्स) के० त्रिखूणिया विमानने (वेइया) के० वेदिका एटले कांगरा विनानो गढ (होइ) के० छे, अने (अवसेसेण) के० बाकीनी दिशाये (विमाणाणं) के० विमानोने (पागारो) के० कागरावालो गढ (बोधव्वो) के० जाणवो. ॥ १३१ ॥

सव्वेसु पयडेसु, मज्झे वट्टं अणंतरं तंसं ॥
तयणंतर चउरंसं, पुणोवि वट्टं तओ तंसं ॥ १३२ ॥

अर्थः—(सव्वेसु पयडेसु) के० देवलोकना सर्व एटले बासठे प्रतरोमां (मज्झं) के० मध्यनुं इंद्रक विमान (वट्टं) के० गोलाकार छे. अने (अणंतरं) के० त्यार पछी चारे दिशाये एक एक विमान (तंसं) के० त्रण खूणावालुं छे, (तयणंतर) के० त्यार पछी चारे दिशाये एक एक विमान (चउरंसं) के० चार खूणावालुं छे, एम (पुणोवि) के० फरीने पण (वट्टं) के० गोलविमान अने (तओ) के० त्यार पछी (तंसं) के० त्रण खूणावालुं. एम छेला बासठमा विमान सुधी जाणवुं, अने दरेक प्रतरे एक एक विमान ओछुं करवुं ॥ १३२ ॥

हवे विमानोनुं अंतर कहे छे.

आवलियविमाणाणं, अंतरं नियमसो असंखिज्जं ॥
सखिज्जमसखिज्जं भणियं पुप्फावकिन्नाण ॥ १३३ ॥

अर्थ—(आवलियविमाणाणं) के० चारे दिशानी पक्तिमा रहेला विमानोनु (अतर) के० अतर (नियमसो) क०) निश्चयथी (असंखिज्ज) के० असरयाता योजननु होय छे. अने (पुप्फावकिन्नाण) के० चारे दिशानी वचमा रहेला पुप्पावकीर्ण विमानोनु अतर (संखिज्जमसंखिज्ज) के० संरयाता अथवा असरयाता योजननु (भणिय) के० कह्यु छे. ॥ १३३ ॥

हवे विमानोनी आकृति दृष्टांतथी कहे छे

वट्ट तु वलगपिव, तसं सिघाडगंपिव विमागं ॥
चउरंस विमाण पुण, अरकाडगसठियं भणियं ॥१३४॥

अर्थ—(वट्ट) के० जे वाटला विमान छे ते (वलगपिव) के० वलयाकार होय छे, अने (तस विमाण) के० त्रिखूणा विमान (सिंघाडगंपिव) के० सिंघोडाना आकारे होय छे (पुण) के० वली (चतुरस विमाण) क० चोखूणा विमान (अरवाडगसठिय) के० नाटकना अखाडाना आकारे चोखूणा (भणिय) के० कह्या छे ॥ १३४ ॥

हवे विमानोना गंध अने स्पर्श वणवे छे.

अच्चंतसुरहिगंधा, फासे नवणीयमउयसुहफासा ॥
निच्चुज्जोया रम्मा, संयपहा ते विरायति ॥ १३५ ॥

अर्थ—ते विमान (अच्चतसुरहिगधा) के० अत्यन्त सुगध

वाला, तेमज (फासे) के० रुयगमां (नवणीयमउयसुहफासा) के० माखण सरखा कोमळ अने सुखकारी स्पर्शवाळा, (निच्चुज्जोया) के० नित्य प्रकाशवाळा, (रम्मा) के० रमणिक अने (सयंपहा) के० पोताना भले प्रकाशीत एवा (ते) के० ते विमानो (विरायंति) के० शोभे छे. ॥ १३५ ॥

जे दक्खिणेग इंदा, दाहिगओ आवली मुणेयव्वा ॥
जे पुग उत्तर इंदा, उत्तरओ आवली मुणे तेसिं ॥१३६॥

अर्थ—(जे दक्खिणेण इंदा) के० जे दक्षिण दिशाए सौधर्मेंद्र तथा सनत्कुमारेंद्र छे, तेमना (दाहिणओ) के० दक्षिण दिशानी (आवली) के० पंक्तिमां रहेलां विमानो (मुणेयव्वा) के० जाणवां. पुण के० वली (जे उत्तरइंदा) के० जे उत्तरदिशाए इशानेंद्र तथा माहेंद्र छे. (तेसिं) के० तेमनां (उत्तरओ) के० उत्तरदिशानी (आवली) के० पंक्तिमां रहेलां विमानो (मुणे) के० जाणवां. ॥ १३६ ॥

पुव्वेण पच्छिमेण य, सामण्णा आवली मुणेयव्वा ॥
जे पुग वट्टविमाणा, मज्झिल्ला दाहिणिल्लाणं ॥१३७॥

अर्थ—(पुव्वेण पच्छिमेण य) के० पूर्व दिशा अने पश्चिम दिशानी (आवली) के० विमानोनी पंक्ति ते सौधर्मेंद्र तथा इशानेंद्र बन्ने इंद्रोनी (सामण्णा) के० साधारण सामान्यपणे जाणवी. (पुण) के० वली जे (मज्झिल्ला) के० जे मध्यभागना (वट्टविमाणा) के० वाटलां विमान छे, ते (दाहिणिल्लाग) के० दक्षिण दिशाना सौधर्मेंद्रनां जाणवां. ॥ १३७ ॥

पुव्वेण पच्छिमेण य, जे वट्टा तेवि दाहिणिल्लस्स ॥
तंस चउरंसगा पुण, सामन्ना हुंति दुण्हवि ॥ १३८ ॥

अर्थ—(पुव्वेण पच्छिमेण य) के० पूर्वदिशा अने पश्चिमदिशाना विमाननी पंक्तिने विषे (जे वट्टा) के० जे वाटला विमान छे (तेवि) के० ते विमानो पण (दाहिणिल्लस्स) के० दक्षिणदिशाना सौधर्मेंद्रना छे (पुण) के० वली तम के० त्रण खूणवाला अने (चउरंसगा) के० चार खूणवाला जे विमान छे. ते (सामन्ना के० सामान्यपणाथी (दुण्हवि) के० सौधर्मेंद्र तथा ईशानेंद्र ए बन्नेना (हुंति) के० छे. एटले बन्ने इंद्रो ते विमानोना अर्द्धो अर्द्ध मालीक छे । १३८ ॥

पढमपयरंमि पढमे, कप्पे उडुनाम इंदयविमाणं ॥
पणयाललक्खजोयण, लक्खं सव्वुवरि सव्वट्ठं ॥१३९॥

अर्थ—(पढमे कप्पे) के० पहेला देवलोकना (पढमपयरंमि) के० पहेला प्रतरने विषे (उडुनाम) के० उडुनामनुं (इंदयविमाण) के० इंद्रक विमान छे ते (पणयाललक्खजोयण) के० वाटलाकारे पिस्तालीश लाख योजनना प्रमाणवालु छे अने (सव्वुवरि) के० सवना ऊपर बासठमा प्रतरे (सव्वट्ठ) के० सर्वार्थसिद्ध नामनुं विमान (लक्खं) के० एक लाख योजननु गोलाकार छे. ॥ १३९ ॥

हवे बासठ प्रतरना मध्यभागमां रहेला इंद्रक विमाननां नाम कहे छे

उडु चंद रयण वग्गु, वीरिय वरुणे तहय आणंदे ॥
बंभे कंचण रुइरे, चंदे अरुणे य वरुणे य ॥१४०॥

अर्थ—१ (उडु) के० उडु विमान, २ (चंद) चंद्रक विमान, ३ (रयण) के० रजत विमान, ४ (वग्गु) के० वल्गुविमान, ५ (वीरिय) के० वीर्य विमान, ६ (वरुणे) के० वरुण विमान (तहेव) के० तेमज, ७ (आणंदे) के० आनन्द विमान, ८ (बंभे) के० ब्रह्म विमान, ९ (कंचण) के० कांचन विमान, १० (रुइभे) के० रुचिप्रभ विमान, ११ (चंदे) के० चंद्र विमान, १२ (अरुणे य) के० अरुण विमान, १३ (वरुणे य) के० वरुण विमान, ए तेर विमान. ए तेर विमान पहेला तथा बीजा देवलोके छे. ॥१४०॥

वेरुलिय रुयग रुइरे, अंके फलिहे तहेव तवणिज्जे ॥
मेहे अग्घ हलिद्दे, नलिणे तह लोहियक्खे य ॥१४१॥

अर्थ—१४ (वेरुलिय) के० वैडुर्य विमान, १५ (रुयग) के० रुचक विमान, १६ (रुइरे) के० रुचिर विमान, १७ (अंके) के० अंकविमान, १८ (फलिहे) के० स्फटिक विमान, (तहेव) के० तेमज १९ (तवणिज्जे) के० तपनीय विमान, २० (मेहे) के० मेघविमान २१ (अग्घ) के० अर्घ विमान, २२ (हलिद्दे) के० हलिद्र विमान, २३ (नलिणे) के० नलिन विमान, (तह) के० तेमज २४) लोहियक्खे य) के० लोहिताक्ष विमान.॥१४१॥

वइरे अंजण वरमाल, रिठ्ठ देवे य सोम मंगलए ॥
बलभद्द चक्क गया. सोवत्थिय णंदियावत्ते ॥ १४२ ॥

अर्थ—२५ (वइरे) के० वज्र. ए बार विमान त्राजे तथा चोथे देवलोके छे ॥ २६ (अंजन) के० अंजन विमान, २७ (वरमाल) के० वरमाल विमान, २८ (रिठ्ठ) के० रिष्ट विमान, २९

(देवेय) के० देव विमान, ३० (सोम) के० सौम्य विमान, ३१ (मगलए) के० मगल विमान० ॥ ए छ विमान पांचमा देवलोकें छे ३२ (बल्भद्दे) के० वलभद्र विमान, ३३ (चक्क) के० चक्र विमान, ३४ (गया) के० गया विमान, ३५ (सोवच्छिय) के० स्वस्तिक विमान, ३६ (णदियावत्ते) नंदावर्त्त. ए पंच विमान छठा देवलोकने छे. ॥ १४१ ॥

आभकरे य गिद्धी, केऊ गरुले य होइ बोधव्वे ॥
बंभे बंभहिए पुण, बंभुत्तर लंतए चेव ॥ १४२ ॥

अर्थ—३७ (आभकर) य के० आभकर विमान. ३८ (गिद्धी) के० गृद्ध विमान, ३९ (केऊ) के० केतु विमान, ४० (गरुले य) के० गरुड विमान ए चार विमान सातमा देवलोकें० (होइ) के० छे ते (बोधव्वे) के० जाणवा ४१ (बंभे) के० ब्रह्म विमान, ४२ (बंभहिए) के० ब्रह्महित विमान. (पुण) के० वली ४३ (बंभुत्तर) के० ब्रह्मोत्तर विमान, ४४ (लंतए) के० लंतक विमान ए चार विमान आठमा देवलोकना (चेव) के० निश्चे जाणवा. ॥ १४३ ॥

महासुक्क सहस्सारे आणय तह पाणए य बोधव्वे ॥
पुप्फे लंकार आरण, तहाविय अच्चुए चेव ॥ १४४ ॥

अर्थ—४५ (महासुक्क) के० महाशुक्र विमान, ४६ (सहस्सार) के० सहस्रार विमान, ४७ (आणय) के० आनत विमान, (तह) के० तेमज ४८ (पाणए य) के० प्राणत विमान, ए चार विमान नवमे तथा दशमे देवलोके (बोधव्वे) के० जाणवा. ४९ (पुप्फे) के० पुष्प विमान, ५० (अलंकार) के० अलंकार वि-

मान, ५१ (आरण) के० आरण विमान, (तहाविय) के० तेमज ५२ (अच्चुए) के० अच्युत विमान. ए चार विमान अगीयारमे तथा बारमे देवलोके (चेव) के० निश्चे जाणवा ॥ १४४ ॥

सुदंसण सुपडिबद्धे, मणोरमे चेव होइ पढमतिगे ॥
तत्तो य सव्वभद्दे, विसालए सुमणे चेव ॥ १४५ ॥

अर्थ—५३ (सुदंसणे) के० सुदर्शन विमान, ५४ (सुपडिबद्धे) के० सुप्रतिबद्ध विमान, ५५ (मणोरमे) के० मनोरम विमान, ए त्रण विमान नव ग्रैवेयकना (पढमतिगे) के० प्रथम त्रिकने विषे (चेव) के० निश्चे (होइ) के० छे. (तत्तो य) के० अने त्यार पछी ५६ (सव्वभद्दे) के० सर्वभद्र, ५७ (विसालए) के० विशाल, ५८ (सुमणे) के० सुमनस–ए त्रण विमान नव ग्रैवेयकना बीजा त्रिकने विषे (चेव) के० निश्चे छे. ॥ १४५ ॥

सोमणसे पीइकरे, आइच्चे चेव होइ तइयतिगे ॥
सव्वट्ठसिद्धिनामे, इंदया एव बासट्ठी ॥ १४६ ॥

अर्थ—५९ (सोमणसे) के० सोमनस विमान, ६० (पीइकरे) के० प्रीतिकर विमान, ६१ (आइच्चे) के० आदित्य विमान. ए त्रण विमान नव ग्रैवेयकना त्रीजा त्रीकने विषे (चेव) के० निश्चे (होइ) के० छे. अने पांच अनुत्तर विमानने विषे ६२ (सव्वट्ठसिद्धिनामे) के० एक सर्वार्थ सिद्धि नामनुं विमान छे. (इंदया एव बासट्ठी) के० ए बासठ इंद्रक विमाननां नाम कह्यां. १४६

हवे दरेक देवलोके श्रेणीना विमाननी संख्या लाववा माटे उपाय कहे छे.

पढमतिमपयरावली, विभागमुहभूमि तस्समासद्धं ॥
पयरगुणमिट्ठकप्पे, सव्वग्ग पुप्फकन्नियरे ॥ १४७ ॥

अर्थ—सौधर्म अने ईशान देवलोकना (पढम) क० पहेला (पयरावली विमाण) के० प्रतरना विमाननी पंक्ति ते (मुह) क० मुख कहेवाय, अने (अतिम) क० छेल्ला प्रतरना विमाननी पंक्ति ते (भूमि) क० भूमि कहेवाय. (तस्समासद्ध) क० ते मुख अने भूमिना विमानोने एकठा करीने तेना अर्द्ध करवा पछी (इट्ठपयरगुण) के वांछित प्रतरना प्रतर गुणवा तेथी (कप्प) के० वांछित देवलोके (पुप्फकन्नियरे) क० आवलिकाना विमानोनी (सव्वग्ग) के० सर्व सरया आवे ॥ १४७ ॥

अहिं ते नार दृष्टांत सहित समजावे छे के—सौधर्म तथा ईशान ए बन्ने देवलोकने विषे पहेला प्रतरना (२४९) विमान ते मुख कहेवाय, अने छेल्ला तेरमा प्रतरना (२०१) विमान ते भूमि कहेवाय ए बन्ने सख्याने एकठी करीए त्यारे (४५०) थाय एनु अर्द्ध करीए त्यारे (२२५) थाय तेने ए बन्ने देवलोकनाज तेर प्रतरे गुणीए त्यारे सौधर्म तथा ईशान देवलोकना विमाननी पंक्तिना सर्व विमानोनी सख्या (२९२५) थाय

हवे ए बन्ने देवलोकना सर्व मळी साठ लाख विमानो छे, तेमाथी (२९२५) श्रेणीना विमान काढीये त्यारे (५९९७०७५) एटला पुष्पावकीर्ण विमान बाकी रहे ए रीते आगलना देवलोक पण जाणी लेवु ॥ १५० ॥

तेज वात आगली गाथावडे कहे छे

नं. १
उर्ध्व देवलोके विमानोना मुख-भूमि विगेरे गणितनुं कोष्टक.

कया देवलोके.	मुख विमान.	भूमि विमान	समास.	समासनुं अर्ध.	प्रतरनो संख्या (गुणाकार माटे)	इतर संख्याए गुणवाथी लब्ध थये ज्यां) पंक्ति विमान.	पुष्पावकीर्ण विमान.	सर्व विमान
सोधर्म-इशान	२४९	२०१	४५०	२२५	१३	२९२५	५९९७०७५	६००००००
सनत्०-माहेन्द्र	१९७	१५३	३५०	१७५	१२	२१००	१९९७९००	२००००००
ब्रह्म	१४९	१२९	२७८	१३९	६	८३४	३९९१६६	४०००००
लांतक	१२५	१०९	२३४	११७	५	५८५	४९४१५	५००००
शुक्र	१०५	९३	१९८	९९	४	३९६	३९६०४	४००००
सहस्रार	८९	७७	१६६	८३	४	३३२	५६६८	६०००
आनत-प्राणत	७३	६१	१३४	६७	४	२६८	१३२	४००
आरण-अच्युत	५७	४५	१०२	५१	४	२०४	९६	३००
अध: ग्रैवेयक ३	४१	३३	७४	३७	३	१११	•	१११
मध्य ग्रैवेयक ३	२९	२१	५०	२५	३	७५	३२	१०७
उर्ध्व ग्रैवेयक ३	१७	९	२६	१३	३	३९	६१	१००
अनुत्तर	५	०	०	०	१	५	०	५
उर्ध्व देवलोक	२४९	५	२५४	१२७	६२	७८७४	८४८९१४९	८४९७०२३

अट्ठणण्ही मयसहस्सा, सत्ताणउई भवे सहस्साइं ॥
पणहत्तरि य विमाणा, हवंति पुप्फावकिण्णाण ॥१४८॥

अर्थ—(अट्ठणण्ही सयसहस्सा) के० ओगणसाठ लाख, (सत्ताणउई सहस्साइं) के० सत्ताणुं हजार, (य) के० अने (पणहत्तरि) के० पचोत्तर एटला (पुप्फावकीण्णाणं) के० पुप्पावकीर्ण (विमाणा) के० विमानो (हवंति) के० होय छे. ॥१४८॥

तेवण्णे चउवण्णे, पचावण्णे तहेव बासट्ठे ॥
एएसु पयरेसु अ, न हुंति पुप्फावकीण्णाइ॥ १४९ ॥

अर्थ—(तेवण्णे) के० त्रेपनमु, (चउवण्णे) के० चोपनमु, (पचावण्णे) के० पचावनमु (तहेव) के० तेमज (बासट्ठे) के० बासठमु (एएसु पयरेसु) के० एटला प्रतरोने विषे (पुप्फावकीण्णाइ) के० पुप्पावकीर्ण विमानो (न हुंति) के० नथी ॥१४९॥

हवे बासठे प्रतरमाना कोइपण प्रतरने विषे त्रिखूणा चोखूणा अने वाटला विमानो जाणवानो उपाय कहे छे.

इगदिसि पंतिविमाणा, तिविभत्ता तंस चउरसा वट्टा ॥
तंसेसु सेसमेगं, खिव सेस दुगस्स इक्किक ॥ १५० ॥
तंसेसु चउरंसेसु य, तो रासितिगंपि चउगुण काउ ॥
वट्टेसु इदय खिव, पयरधण मीलिय कप्पे ॥ १५१ ॥

अर्थ—(इगदिसि पंतिविमाणा) के० एक दिशाना पंक्तिना विमानोने (तिविभत्ता) के० त्रण भागे वहेंचीये एटले अनुक्रमे (तंस चउरंसा वट्टा) के० त्रिखूणा चारखूणा अने वाटला प्रत्ये

त्रण भाग थाय, अने एम करता (सेससेगं) के० जो एक शेष रहे तो (तंसेसु) के० त्रिखूणामांहि (खिव) के० मेलववुं. अने (सेसदुगस्स) के० शेष बे रहे तो (इक्किक्कं) के० एक एक मेलववुं. ॥ १५० ॥ एटले (तंसेसु य चउरंसेसु) के० एक त्रण खूणामां अने एक चार खूणामां मेलववुं. (तो) के० त्यार पछी (रासितिगंपि) के० ए त्रणे राशीमांहेली एक एक राशीने पण (चउगुणं काउ) के० चारगुणा करीने पछी (वट्टेसु) के० वाटला विमानमांहि (इंदयं खिव) के० इंद्रक विमान मेलववुं. पछी (पयरधणं) के० प्रतरना चारे दिशाना विमानो एकठा करवाथी (कप्पे)के० सौधर्मादिक देवलोकें विमानोनी सर्व संख्या थाय. १५१

अहिं एज वात दृष्टांत सहित समजावे छे के—सौधर्म तथा ईशान देवलोकना पहेला प्रतरमां एक दिशाए बासठ विमान छे, तेने त्रण भागे वहेंचीए तो वीश वीशनो एक एक भाग थाय. उपर बे विमान रहे. तेमांहेलुं एक विमान त्रिखूणामां अने बीजुं विमान चोखूणामां मेलवतां एकवीश विमान त्रिखूणावाला, एकवीश विमान चोखूणावाला अने वीश विमान वाटला थाय. पछी ए त्रणे राशीना विमानने चारगुणा करीने वाटलामांहि एक इंद्रक विमान मेलवीये एटले पहेला प्रतरनी चारे दिशाना चारे पंक्ति मलीने चोराशी त्रिखूणा, चोराशी चो खूणा अने एकाशी वाटलां. एम सर्व मलीने बसो ओगणपचास विमान थाय. ॥ ए प्रमाणे बीजा प्रतरोने विषे पण जाणी लेवुं.

हवे सौधर्मादिक बार देवलोकना देवोनां चिन्ह कहे छे.

कप्पेसु य मिय महिसो, वराह सिंहा य छगल सालूरा ॥
हय गय भुयंग खग्गी, वसहा विडिमाइं चिंधाइं ॥१५२॥

अर्थ—(कप्पेसु य) के० बार देवलोक माहेला पहेला सौधर्म देवलोकना देवोने (मिय) के० मृगनु चिन्ह, बीजा ईशान देवलोकना-देवोने (महिसो) के० पाडानु चिन्ह, त्रीजा सनत्कुमार देवलोकना देवोने (वराह) के० सूअरनु चिन्ह चोथा माहेंद्र देवलोकना देवोने (सिंहा य) के० सिंहनुं चिन्ह पांचमा ब्रह्म देवलोकना देवोने (छगल) के० बोकडानु चिन्ह छठ्ठा लांतक देवलोकना देवोने (मालरा) के० देडकानु चिन्ह, सातमा शुक्र देवलोकना देवोने (हय) के० घोडानु चिन्ह, आठमा सहस्रार देवलोकना देवोने (गय) के० हाथीनु चिन्ह, नवमा आनत देवलोकना देवोने (भुयग) के० सर्पनु चिन्ह दशमा प्राणत देवलोकना देवोने (खग्गी) के० गेंडानु चिन्ह, अगीयारमा आरण देवलोकना देवोने (वसहा) के० वृषभनुं चिन्ह, अने बारमा अच्युत देवलोकना देवोने (विडिमाइ) के० मृग विशेषनु चिन्ह छे. ए (चिंधाइ) के० चिन्हो कह्या ॥ १५२ ॥

हवे दश वैमानिक इंद्रोना सामानिक देवता तथा आत्मरक्षक देवताओनी संख्या कहे छे

चुलसी असिइ बावत्तरि, सत्तरि सट्ठी य पन्न चत्ताला ॥ तुल्लसुर तीस वीसा, दससहस्स आयरक्ख चउगुणिया ॥ १५३ ॥

अर्थ—सौधर्मेंद्रना (चुलसी) के० चोराशी हजार ईशानेंद्रना (असिइ) के० एंशी हजार, सनत्कुमारेंद्रना (बावत्तरि) के० बहोंतेर हजार, माहेंद्रना (सत्तरि) के० सित्तेर हजार ब्रह्मेंद्रना (सट्ठी य) के० साठ हजार, लांतकेंद्रना (पन्न) के० प

चास हजार, शुक्रेंद्रना (चत्ताला) के० चालीश हजार, महस्रारेंद्रना (तीस) के० त्रीश हजार, आनतप्राणतेंद्रना (वीसा) के० वीश हजार, आरणअच्युतेंद्रना (दससहस्स) के० दश हजार (तुल्लसुर) के० सामानिक देवता जाणवा, अने (आयरक्ख) के० आत्मरक्षक देवो (चउग्गुणिया) के० सामानिक देवताथी चार गुणां दरेक इंद्रोने जाणवां. ॥ १५३ ॥

उपरना विमानो कोने आधारे रह्यां छे ? ते कहे छे.

दुसु तिसु तिसु कप्पेसु. घणुदहि घणवाय तदुभयं
च कमा ॥
सुर भवणपइट्ठाणं, आगासपइट्ठिया उवरिं ॥ १५४ ॥

अर्थ—(दुसु) के० पहेला अने वीजा देवलोकने (घणुदहि) के० घनोदधिनो आधार छे. (तिसु) के० त्रीजा चोथा अने पांचमा देवलोकने (घणवाय) के० घनवातनो आधार छे, (च) के० वली (तिसु कप्पेसु) के० छट्ठा सातमा अने आठमा देवलोकने (तदुभयं) के० घनोदधि अने घनवातनो आधार छे ते (कमा) के० अनुक्रमे जाणवुं. (उवरिं) के० तेना उपर (सुरभवणपइट्ठाणं) के० देवलोकने आधार ते (आगासपइट्ठिया) के० आकाशने आधारे छे. ॥ १५४ ॥

हवे विमानोना पृथ्वीपिंडनुं अने विमाननुं उच्चपणुं त्रण गाथाथी कहे छे.

सत्तावीससयाइं, पुढवीपिंडो विमाणउच्चत्तं ॥
पंचसया कप्पदुगे, पढमे तत्तो य इक्किक्कं ॥ १५५ ॥

हायइ पुढवीसु सयं, वड्ढइ भवणेसु दुदुदु कप्पेसु ॥
चउगे नवगे पणगे, तहेव जा णुत्तरेसु भवे ॥ १५६॥
इगवीससया पुढवी, विमाणमिक्कारसेव य सयाइं ॥
बत्तीसजोयणसया, मिलिया सव्वत्थ नायव्वा ॥ १५७॥

अर्थ—(पढमे) के० पहला (कप्पदुगे) के० बे देवलोकने विषे (पुढवीपिंडो) के० पृथ्वीना पिंडनु जाडपणु प्रमाणांगुलना प्रमाणथी (सत्तावीससयाइ) के० सत्तावीस सो योजननु छे अने (विमाणउच्चत्त) के० विमाननु उचपणु (पंचसया) के० पांच सो योजननु छे (तत्तो य) के० त्यार पछी (पुढवीसु) के० पृथ्वीपिंडमा (इक्किक्क सय) क० एक एक सो योजन ॥ १५५ ॥ (हायइ) के० ओछा करवा अने (भवणेसु) के० विमानने विषे (वड्ढइ) के० एक एक सो योजन वधारवा एनी रीते (दु) के० त्रीजा अने चोथा देवलोकमां (दु) के० पाचमा अने छट्ठा देवलोकमा, (दु कप्पेसु) के० सातमा अने आठमां देवलोकमा, (चउगे) के० नवमा दशमा अगीयारमा अने बारमा देवलोकमा, (नवगे) के० नवग्रैवेयकमां, (तहेव) के० तेमज (पणगे) के० पांच अनुत्तर विमानमा (जा णुत्तरेसु भवे) के० यावत् पाचमु अनुत्तर विमान होय त्या सुधीमा ॥ १५६ ॥ (इगवीससया) के० एकवीस सो योजन जाडपणे (पुढवी) क० पृथ्वीपिंड होय अने (विमाणमिक्कारसेव य सयाइं) के० विमाननु उचपणु अगीयार सो योजननु होय पछी ए पृथ्वीपिंडना अने विमानना उचपणाने (मिलिया) के० एकठा करीए तो (सव्वत्थ) के० सर्व ठेकाणे (बत्तीस जोयण सया) के० बत्तीस सो योजन (नायव्वा) के० जाणवा ॥ १५७ ॥

ते आ प्रमाणे-पहेला अने बीजा देवलोके पृथ्वीपिंड (२७००) योजन तथा विमान (५००) योजन ॥ त्रीजा अने चोथा देवलोके पृथ्वीपिंड [२६००] योजन तथा विमान (६००) योजन ॥ पांचमा अने छठ्ठा देवलोके पृथ्वीपिंड (२५००) योजन तथा विमान [७००] योजन ॥ सातमा अने आठमा देवलोके पृथ्वीपिंड (२४००) योजन तथा विमान (८००) योजन ॥ नवमे दशमे अगियारमे अने बारमे देवलोके पृथ्वीपिंड (२३००) योजन तथा विमान (९००) योजन ॥ नव ग्रैवेयके पृथ्वीपिंड (२२००) योजन तथा विमान (१०००) योजन ॥ पांच अनुत्तर विमाने पृथ्वीपिंड (२१००) योजन तथा विमान (११००) योजन ॥ बन्नेने भेगा करीये त्यारे (३२००) योजन थाय ॥

हवे सौधर्मादिक विमानोना वर्ण कहे छे.

पण चउ ति दु वण्णविमाणा, सधय दुसु दुसु य जा सहस्सारो ॥

उवरि सिय भवणवंतर-जोइसियाणं विविहवण्णा॥१५८॥

अर्थ—पहेला देवलोकथी (जा सहस्सारो) के० आठमा सहस्रार देवलोक सुधीना (दुसु दुसु य) के० बन्ने बन्ने देवलोकना (पण चउतिदुवण्ण विमाणा) के० अनुक्रमे पांच चार त्रण अने बे वर्णना विमानो होय छे. तथा (सधय) के० धजा सहित होय छे. ते आ प्रमाणे-पहेला तथा बीजा देवलोकना विमानो काला नीला राता पिला अने धोला होय छे, त्रीजा तथा चोथा देवलोकना विमानो नीला राता पिला अने धोला मोय छे. पांचमा तथा छठ्ठा देवलोके राता पीला अने धोला होय छे. सातमा तथा आठमा देवलोके पीला अने धोला होय छे, उवरि के० तेना उपरना

विमानो (सिय) के० थोडा होय छे तथा (भवणवतर जोइसियाणं) के० भवनपति व्यंतर तथा ज्योतिषी देवोना विमानो (विहगणा) के० विविधवर्णवाळा होय छे ॥१५८॥

हवे प्रत्येक देवलोकना त्रिखूणा चाखूणा अने वाटला विमानोनी संख्या कहे छे

पन्नट्ठ अट्ठसीया, दुसत्तरिया य नव नव सयाओ ॥
सोहम्मगाइमाणे, वट्टा तसा य चउरंसा ॥ १५९ ॥

अर्थ—(सोहम्मगाइमाणे) के० सौधर्म अने ईशान देवलोकमां (वट्टा तसा य चउरंसा) के० वाटला त्रिखूणा अने चउखूणा-विमानो साथे गणता (नव नव सयाओ) के०नव सो नव सो उपर (पन्नट्ठ)के०पासठ,(अट्ठसीया)के०अट्ठयासी अने (दुसत्तरिया य) के० बहोतेर छे. अर्थात् सौधर्म अने ईशान देवलोकना साथे मळी वाटला विमान ९६५ त्रिखूणा विमान ९८८ अने चउखूण विमान ९७२ छे ॥ १५९ ॥

छच्च सया चाणउया, सत्तसया बारसुत्तरा हुंति ॥
छच्च सया छन्नउया, वट्टाइ सणंकुमार माहिंदे ॥१६०॥

अर्थ—(सणंकुमार माहिंदे) के० सनत्कुमार अने माहेंद्र ए बे देवलोकमां साथे गणता (छच्च सया चाणउया) के० छसो अने चाणु वाटला विमान, (सत्तसया बारसुत्तरा) के० सात सो बार त्रिखूणा विमान अने (छच्च सया छन्नउया) के० छसो छन्नु चउखूणा एम (वट्टाइ) के० वाटला विगेरेनी संख्या (हुंति) के० होय छे. ॥ १६० ॥

(वावत्तरि) के० वट्टांतर (तंसा) के० त्रिखूणा विमान, य के० अने (अडसट्ठी) के० अडसठ (चउरंसा) के० चो खूणा विमान (चेव) के० निश्चे (होइ) के० छे ते (नायव्वा) के० जाणवा. ॥१६६॥

पणतीसा चत्ताला, छत्तीसा हेट्ठिमंमि गेविज्जे ॥
तेवीसा अट्ठविसा, चोवीसा चेव मज्झिमए ॥१६७॥

अर्थ—(हेट्ठिमंमि गेविज्जे) के० नीचेना त्रण ग्रैवेयकमां (पणतीसा) के० पांत्रीश वाटला विमान, (चत्ताला) के० चालीश त्रिखूणा विमान, अने (छत्तीसा) के० छत्रीश चोखूणा विमान छे. तथा (मज्झिमए) के० मध्यना त्रण ग्रैवेयकमां (तेवीसा) के० त्रेवीश वाटला विमान, (अट्ठाविसा) के० अठयावीश त्रिखूणा विमान, अने (चोवीसा) के० चोवीश चोखूणा विमान (चेव) के० निश्चे छे. ॥ १६७ ॥

इक्कारस सोलस वार-सेव गेविज्जे उवरिमे हुंति ॥
एकं वट्टं तंसा, चउरो य अणुत्तरविमाणे ॥ १६८ ॥

अर्थ—(उवरिमे गेविज्जे) के० उपरना त्रण ग्रैवेयके (इकारस) के० अगीयार वाटला विमान, (सोलस) के० सोल त्रिखूणा विमान अने (वारसेव) के० वार चोखूणा विमान (हुंति) के० छे. तथा (अणुत्तर विमाणे) के० पांच अनुत्तर विमानने विषे (एकं वट्टं) के० एक वाटलुं विमान (य) के० अने (चउरो तंसा) के० चार त्रिखूणा विमान छे. ॥ १६८ ॥

पणवीसा वासीया, छवीसं चेव अट्ठवीया य ॥
छवीसं चउराहिया, वट्टाईयाण सव्वग्गं ॥ १६९ ॥

अर्थ—(पणवीसा वासीया) के० पचीस सो अने ब्यासी वाटला विमान, (छव्विस अट्ठासीया य) के० छवीश सो अने अठयाशी त्रिखूणा विमान, तथा (छव्वीस चउरहिया) के० छवीश सो अने चार अधिक चोखूणा विमान, ए उर्द्ध लोकमां (वट्टाई-याण) के० वाटला विगेरे विमानोनी (सव्वग्ग) के० सर्व एकठी संख्या कही ॥ १६९ ॥

हवे दरेक देवलोके त्रणे जातिना विमानोनी सर्व संख्या कहे छे.

सत्त सय सत्तवीसा, चत्तारि सया य हुंति चउणउया ॥
चत्तारिसय छासिया, सोहम्मे हुंति वट्टाइ ॥ १७० ॥

अर्थ—(सोहम्मे) के० सौधर्म देवलोक (सत्त सय सत्त-वीसा) के० सात सो सत्तावीस विमान वाटला (य) के० अने (चत्तारिसया चउणउया) के० चार सो चोराणु विमान त्रिखूणावाला (हुंति) के० होय छे वली (चत्तारि सय छासिया) के० चार सो छयासी विमान चोखूणावाला एम (वट्टाई) के० वाटला विगेरे सर्व मलीने सत्तर सो सात विमान चार पंक्तिना (हुंति) के० छे ॥ १७० ॥

इगतीस सय सहस्सा, अट्ठाणउई सवे सहस्सा य ॥
दोयसया तेणउया, सोहम्मे पुप्फकिन्नाण ॥ १७१ ॥

अर्थ—(इगतीस सय सहस्सा) के० एकत्रीस लाख (अट्ठा णउइ सहस्सा) के० अठाणु हजार (दोयसया) के० बसो अने (तेणउया) के० त्राणु अधिक पटला (सोहम्मे) के० सौधर्म

देवलोकने विषे (पुप्फकिन्नाणं) के० पुष्पावकीर्ण विमानो छे. ए सर्व मली बत्रीश लाख विमान सौधर्म देवलोकमां जाणवां ॥१७१॥

एसेवय ईसाणे, नवरं वट्टाण होइ नाणत्तं ॥
दो सय अट्ठत्तीसा, सेसा जहचेव सोहम्मे ॥१७२॥

अर्थ—(ईसाणे) के० ईशान देवलोकने विषे (एसेवय) के० एज प्रमाणे एटले सौधर्म देवलोकनी पेठे जाणवुं, परंतु (नवरं) के० एटलुं विशेष छे के-(वट्टाण) के० वाटला विमाननी (दो सय अट्ठतीसा) के० बसो आडत्रीस (नाणत्तं होइ) के० ए जुदा प्रकारनी संख्या छे. (सेसा) के० बाकीना विमानोनी संख्या (जहचेव सोहम्मे) के० जेम सौधर्म देवलोकमां कही छे तेम जाणवी ॥ १७२ ॥

सत्तरससया सत्तु-त्तरा य सोहम्मि आवलिविमाणा ॥
बारस अट्ठारहिया, ईसाणे आवलि विमाणा ॥१७३॥

अर्थ—(सोहम्मि) के० सौधर्म देवलोकने विषे चारे दिशाना सर्व मलीने (सत्तरससया सत्तुत्तरा य) के० सत्तर सो अने सात (आवलि विमाणा) के० पंक्तिमां रहेलां विमानो छे. अने (ईसाणे) के० ईशान देवलोकने विषे चारे दिशाना चार पंक्तिना मलीने (बारस अट्ठारहिया) के० बार सो अने अढार अधिक (आवलि विमाणा) के० पंक्तिमां रहेलां विमानो छे. ॥ १७३ ॥

सत्तावीसं लक्खा, अट्ठाणउइ भवे सहस्सा य ॥
सत्तसया बासीया, ईसाणे पुप्फकिन्नाणं ॥ १७४ ॥

अर्थ—(सत्तावीस लक्खा) के० सत्यावीश लाख, (अट्ठाणउइ सहस्सा य) के० अठाणु हजार अने उपर (सत्तसया बासीया) के० सातसो ने ब्याशी एटला (पुप्फकिन्नाण) के० पुष्पावकीर्ण विमानो (ईसाणे) के० ईशान देवलोक छे ॥ १७४ ॥

पचसया बावीसा, तिन्नेव सया उ हुंति छप्पन्ना ॥
तिन्नि सया अडयाला, सणंकुमारस्स वट्टाई ॥१७५॥

अर्थ—(पचसया बावीसा) के० पाच सो बावीश वाटलां विमान, (तिन्नेव सया छप्पन्ना) के० त्रण सो छप्पन्न त्रिखूणा विमान, अने (तिन्निसया अडयाला) के० त्रण सो अडतालीश चोखूणा विमान, ए (सणंकुमारस्स) के० सनत्कुमार देवलोकना (वट्टाई) के० वाटला विगेरे विमानो (हुंति) के० होय छे. ॥१७५॥

सत्तरिसयमणूण, तिन्नेव सया हुंति छप्पन्ना ॥
तिन्नि सया अडयाला, वट्टाइ महिंद सगस्स ॥१७६॥

अर्थ—(सत्तरिसयमणूण) के० पुरपुरा एक सो सीत्तेर वाटला विमान, (तिन्नेव सया छप्पन्ना) के० त्रण सो छप्पन त्रिखूणा विमान, (तिन्नि सया अडयाला) के० त्रण सो अडतालीस चोखूणा विमान ए प्रमाणे (महिंदसगस्स) के० माहेंद्र देवलोकना (वट्टाइ) के० वाटला विगेरे विमानो (हवंति) के० होय छे ॥ १७६ ॥

बावन्ना छत्तीसा कप्पंमि य बंभलोय आवलिया ॥
अट्ठसया चोत्तर विमाण माहिंद आवलिआ ॥१७७॥

अर्थ—(सणकुमार कप्पंमि) के० सनत्कुमार देवलोकमां (आवलिया) के० पंक्तिमां रहेला सर्वे विमानो (बारसया छव्वीसा) के० बार सो अने छवीस छे, अने (माहिंद) के० माहेंद्र देवलोकमां (आवलिया) के० पंक्तिमां रहेला सर्वे (विमाण) के० विमानो (अट्ठसया चोवत्तर) के० आठ सो अने चुमोतेर छे.॥१७७॥

एकारस लक्खाई, अट्ठाणउई भवे सहस्सा य ॥
सत्तसया चोवत्तर, हवंति पुप्फावकिन्नाणं ॥ १७८ ॥

अर्थ—(एकारस लक्खाई) के० अगीयार लाख, (अट्ठाणउई सहस्सा य) के० अठाणु हजार (भवे) के० होय. वली ते उपर (सत्तसया चोवत्तर) के० सात सो चुमोतेर अधिक एटला (पुप्फावकिन्नाणं) के० पुष्पावकीर्ण विमानो सनत्कुमार देवलोकमां (हवंति) के० होय छे. ॥ १७८ ॥

सत्तेव सयसहस्सा, नवनवई खलु भवे सहस्साइं ॥
सयमेगं छवीसं, हवंति पुप्फावकिन्नाणं ॥ १७९ ॥

अर्थ—(सत्तेव सयसहस्सा) के० सात लाख, (नवनवई) के० नवाणुं हजार (भवे) के० होय, वली (सयमेगं छव्वीसं) के० एक सो छवीस उपर एटला (पुप्फावकिन्नाणं) के० पुष्पावकीर्ण विमानो माहेंद्र देवलोकमां (हवंति) के० होय छे. ॥१७९॥

हवे सौधर्मादिक विमाननुं लांबपणु, पहोलपणुं, तथा विमाननी अंदरनो परिधि अने बहारनो परिधि मापवानो उपाय कहेछे.

रविणो उदयत्थंतर, चउणवइ सहस्स छवीसा ॥
बायाल सट्ठि भागा, कक्कड संकंति दियहंमि ॥१८०॥

अर्थ—(रविणो) के० सूर्यना (उदयत्थतर) के० उदय अने अस्तना क्षेत्रनु अतर (चउणवइ सहस्स) के० चोरा ु हजार (पणसय) क० पांच सो अने (छवीसा) के० छवीश याजन तथा (बायाल सट्ठि भागा) के० एक योजनना साठ भाग करीये तेवा बेंताळीश भाग एटलु (कक्कडसकति दियहमि) के० कर्क सक्रातिना पहेला दिवसने विषे सूर्य चाले छे ॥ १८० ॥

एयंमि पुणो गुणए,ति पंच सग नवहि होइ कमसाण ॥
तिगुणमि य दोलक्खा,तेसीइ सहस्स पच सया॥१८१॥

अर्थ—(पुणो) क० वळी (एयमि) के० ए पूर्व कहेला उदय अस्तना अतरना योजनने (ति पच सग नवहि) के० त्रण पांच सात अने नवथी (गुणए) के० गुणीये अर्थात् उदय अस्तना अतरने त्रण गुणा, पांच गुणा सात गुणा अने नव गुणा योजन करीये त्यारे (कमसाण) के० अनुक्रमे जे प्रमाण (होइ) के० थाय छे ते कहे छे ज्यारे (तिगुणमि य) क० त्रणगणु करीये त्यारे (दो-लक्खा के० बे लाख, (तेसीइ सहस्स) के० त्र्यासी हजार, (पच) सया) क० पाच सो तथा—॥ १८१ ॥

अनि ' छसट्ठि भागा, जोयग चउलक्ख विसत्तरि सहस्सा ॥
छच्च नवा तेत्तीसा. तीस ला पंचगुणियमि ॥१८२॥

र्थ—(अमिई) के० नी योजन अने (छसट्ठि भागा) क० साठीया छ भाग थाय, तथा (पचगुणियमि) के० पांच गुणा करिये त्यारे (चउलक्ख) के० चार लाख,

(विसत्तरि सहस्सा) के० एक योजनना साठीया त्रीस भाग उपर थाय ॥ १८२ ॥

सत्तगुणे छलक्खा, इगसट्ठि सहस्स छसय छासीया ॥
चउपन्नकला तह नव,गुणंमि अडलक्ख सड्ढाओ॥१८३॥

अर्थ—(सत्तगुणे) के० अंतर प्रमाणने सात गणुं करतां (छलक्खा) के० छे लाख, (इगसट्ठि सहस्स) के० एकसठ हजार अने (छसय) छासीया) के० छ सो ने छयासी योजन तथा (चउपन्नकला) के० एक योजनना साठीया चोपन भाग थाय. (तह) के० तेमज (नव गुणंमि) के० अंतर प्रमाणने नव गणुं करीये त्यारे (अडलक्ख सड्ढाओ) के० साडा आठ लाख, तथा—॥ १८३ ॥

सत्तसया चत्ताला, अट्ठारस कला य इय कमा चउरो॥
चंडा चवला जयणा, वेगा य तहा गई चउरो ॥१८४॥

अर्थ—(सत्तसया चत्ताला) के० सातसो चालीश योजन अने (अट्ठारस कला य) के० एक योजनना साठीया अढार भाग. (इय) के० ए प्रमाणे (कमा) के० चालवानी गतिनो क्रम (चउरो) के० चार प्रकारनो छे. कारण के—(चंडा चवला जयणा) के० चंडा चवला यवना (तहाय) के० अने तेमज (वेगा) के० वेगा ए नामनी (गई चउरो) के० चार गति छे. ए चारे गति एक एकथी वधारे उतावली छे. ॥ १८४ ॥

इत्थ य गई चउत्थि, जयणयरि नाम केइ मन्नंति ॥
एहि कमेहि मिमाहि, गइहि चउरो सुरा कमसो ॥१८५॥

अर्थ—(इत्थ य) के० अहिं (केइ) के० कोइक आचार्य (चउत्थि गइ) के० चोथी देवा गतिने (जयणयरि नाम) के० यवनातरा ए नामथी (मन्नंति) के० माने छे (एहिं कमेहिं) के० ए पूर्वोक्त क्रमेकरीने (चउरो सुरा) के० चार देवता (इमाहिं गईहिं) के० ए चडान्कि चार गतिये करीने (कमसो) के० अनुक्रमे विमानोने मापे, ते एवी रीते के-॥ १८५ ॥

विक्खंभं आयाम, परिहिं अब्भिंतर च बाहिरियं ॥
जुगवं मिणंति छम्मास, जाव न लहंति ते पारं ॥१८६॥

अर्थ—कोइ एक देवता त्रणगुणी चडा गतिने करी विमानना (विक्खंभ) के० पहोलपणने मापे. बीजो देवता पांच गुणी चपला गतिये करी विमानना (आयाम) के० लांबपणाने माप त्रीजो देवता सातगुणी यवनागतिये करी विमाननी (अब्भिंतर परिहिं) के० माहली परिधिने मापे अने चोथो देवता नवगुणी (यगागतिये) करीने विमाननी (बाहिरियं) के० बहारनी परिधिने मापे. एम ए चार देवताओ (जाव) के० यावत् (छमास) के० छमासमुधी (जुगवं) के० एकी सामे (मिणंति) के० विमानने माप, तो पण) के० ते देवता केटलाक विमानाना (पारं) के० पारने (न लहंति) के० न पामे ॥ १८६ ॥

जोयणलक्खपमाणं, निमेसमित्तेण जाइ जो देवो ॥
छम्मासेण य गमणं, एवं रज्ज जिणा बिंति ॥१८७॥

अर्थ—(जो देवो) के० जे कोइ देवना (निमेसमित्तेण) के० एक निमेष मात्र करीने (जोयण लक्खपमाणं) के० एक लाख योजन प्रमाण (जाई) के० चाले तो (छम्मासेण य गमणं) के० छमास सुधी चालतां जे प्रमाण थाय (एवं) के० ए प्रमाणने (रज्जं) के० एक राज प्रमाण कहेवाय, एम (जिणा विंति) के० जिनेश्वरो कहे छे. ॥ १८७ ॥

पावंति विमाणाणं, केसिंपि हु अहव तिगुणियाइए ॥
कम चउगे पत्तेयं, चंडाइ गइ उ जोइज्जा ॥ १८८ ॥
तिगुणेण कप्प चउगे.पंचगुणेणं तु अट्ठसु मुणिज्जा ॥
गेविज्जे सत्तगुणेण. नवगुणेणुत्तरचउक्के ॥ १८९ ॥

अर्थ—(अहव) के० अथवा (केसिंपि विमाणाणं) के० केटलाक विमानोंना (तिगुणियाईए) के० त्रिगुणादिक गतिवडे पारने (पावंति) के० पामे छे. ते एवी रीते के (कम चउगे) के० त्रिगुणादि चार क्रमने विषे, (पत्तेय) के० दरेक प्रत्ये (चडाइ गइउ) के० (चंडादिक गति जोइज्जा) के० जोडवी.ते एवी रीते के-कोइ देवना (कप्पचउगे) के० पहेला चार देवलोकमां (तिगुणेण) के० त्रिगुणी एवी चंडा चवला यवना अने वेगवती गतिवडे विमाननी पहोलाइ लंबाइ अभ्यंतरपरिधि अने बाह्य परिधिने मापे तो पार पामे. बाकीना (अट्ठसु) के० उपरना आठ देवलोकने विषे (पंचगुणेण) के० पांचगुणा चंडादिक गति वडे विमानोनी पहोलाइ विगेरेने मापे तो पार पामे. एम (मुणिज्जा) के० जाणवुं. (गेविज्जे) के० नव ग्रैवेयकने विषे सात गुणी चंडादिक चारे गति वडे विमाननी पहोलाइ विगेरेने मापे अने (अणुत्तरचउक्के) के० सर्वार्थ सिद्ध विमान विना बाकीना चार विमा-

ननी पहोलाइ विगेरने (नरगु ेण) के० नवगुणी चढादिक गतिथी मापे तो पार पामे ॥ १८८ ॥ १८९ ॥

पणयालीस लक्खा, सीमंतय माणुसं उडु सिवं च ॥
अपइठाणो सबट्ठ, जंबुद्दीवो इमं लक्खं ॥ १९० ॥

अर्थ—(सीमंतय) के० सीमंत नामनो नरकावास, माणुस के० मनुष्यक्षेत्र, उडु क० उडु नामनु विमान, च के० अने सिव के० सिद्धशिला ए चार पदार्थो प्रत्येक (पणयालीस लक्खा) के० पीस्तालीश लाख योजनना प्रमाणवाला छे, तथा (अपइट्ठाणो) के० सातमा नरकनो अपइट्ठाण नरकावास, (सबट्ठ) के० सर्वार्थसिद्ध विमान अने (जंबुद्दीवो) के० जंबुद्वीप (इम) के० ए त्रण पदार्थो प्रत्येक (लक्खं) के० एक लाख योजनना छे ॥ १९० ॥

अह भागा सग पुढविसु, रज्जु इक्किक्क तहय सोहम्मे ॥
माहिंद लंत सहसार-अच्चुय गेविज्ज लोगंते ॥१९१॥

अर्थ—मेरुना मध्य भाग रहेला रुचक प्रदेशथकी (अह) के० नीचे (पुढविसु) क० पृथ्वीने विषे [भागा सग] क० सात भाग करीये तो [रज्जु इक्किक] क० एक एक भागनो एक एक राज प्रमाण थाय छे [तहय] के० तेमज (सोहम्मे) के० सौधर्म देवलोक, (माहिंद) क० (माहेंद्र देवलोक, (लंत) के० लांतक देवलोक, (सहसार) के० सहस्रार देवलोक, (अच्चुय) के० अच्युत देवलोक, (गेविज्ज) क० नव ग्रैवेयक अने (लोगंते) क० लोकांतने विषे एम अनुक्रमे सात राजलोक जाणवा नीचेना अने उपरना मली चौद राजलोक थाय ॥ १९१ ॥

वइसाहठाणठियपय-कडिठियकरजुग नरागिई लोगो ॥
उप्पत्तिनासगुनगुण-धम्माइछद्दव्वपडिपुण्णो ॥१९२॥

अर्थ–(वइसाहठाणठियपय) के० बे पग पहोला करीने उभेला, [कडित्थकरजुग] के० केड उपर ने हाथ मूकेला एवा (नरागिई) के० पुरुषनी आकृति समान (लोगो) के० चउद राजलोक छे. ते (उप्पत्तिनासधुवगुण) के० उत्पत्ति नाश अने ध्रुव ए गुणोथी तथा [धम्मादिछद्दव) के० धर्मास्तिकायादि छ द्रव्योथी (पडिपुण्णो) के० भरपूर भरेलो छे. ॥ १९२ ॥

केणवि न कओ न धओ, णाहारो णहठिओ सयंसिद्धो ॥
अहमुहमहमल्लगठिओ, लहुमल्लगसंपुडसरिखो ॥१९३॥

अर्थ—वली (केणवि न कओ) कोइथी नहिं करायेलो, न (धओ) के० कोइथी नहिं धारण करायेलो, (अणाहारो) के० आधार विनानो, (णहठिओ के० आकाशमां रहेलो, (सयंसिद्धो) के० पोतानी मेलेज सिद्ध अने (अहमुहमल्लगठिओ) के० नीचा मुखवाला मोटा सराव सरखी आकृतिवालो तथा उपर (लहु-मल्लगसंपुडसरिखो) के० नाना सराव संपुट सरखो चौदराज लोक छे. ॥ १९३ ॥

पयतलि सग मज्झेगो, पण कुप्परि सिरतलेगरज्जु पिहु ॥
सो चउदसरज्जुच्चो, माघवइतलाओ जा सिद्धि ॥१९४॥

अर्थ—(पयतलि) के० लोकना पगतलियानी नीचे अर्थात् सातमी नरक नीचे (सग) के० सात राज प्रमाण पहोलो (मज्झेगो के० मध्य भागे एक राज पहोलो, (कुप्परि) के० कोणीना भागने विषे [पण] के० पांच राज प्रमाण पहोलो, अने (सिरतलेग-रज्जु) के० मस्तकने विषे एकराज (पिहु) के० पहोलो, (सो) के० ते राजलोक (चउदस रज्जुच्चो) के० चउद राजलोग उंचो

छे. अने ते उचाइ (मायरइनलाओ) क० सातमी नरक पृथ्वीना तलियाथी (जा सिद्धि) के० सिद्धशीला सुधी जाणवी ॥१९४॥

सगवण्ण रेह तिरिय, उच्च पुण पच रज्जु चउअंसे ॥
इगरज्जु वित्थरायय, चउदसरज्जुच्च तसनाडी ॥१९५॥

अर्थ—(सगवण्ण रेह) के० सत्तावन रेखा (तिरिय) के० तिर्छी एटले आडी लखवी (पुण) के० अने (पच) क० पाच रेखा (उच्च) के० उभी लखवी, तथा (रज्जु) के० एक राजना (चउअसे) क० पा पा भागना चार विभाग एटले खाडवा करवा, चउदराजनी (तस नाडी) क० त्रसनाडी एटले मध्यनाडी (इगरज्जु वित्थरायय) के० एकराज लांबी पहोली छे अने (चउदस रज्जुच्च) क० चउदराज प्रमाण उंची छे ॥

तात्पर्य ए छे के—सत्तावन रेखा तिर्छी करवी अने पांच रेखा उभी करवी, एटले सत्तावन रेखाना चउदराजना छप्पन खाडवा थाय, अने पांच रेखानी एक राज पहोली त्रसनाडी छे तेना पा पा भाग करता चार खाडवा थाय, तेमज उचाइमा पण एक राजना चार खाडवाना प्रमाणे चउदराजना छप्पन्न खाडवा थाय. १९५

हवे चउद राजलोकना खाडवा कहवानी इच्छाथी प्रथम ऊर्ध्व लोकना सात राजना खाडवा कहे छे

उड्ढे तिरिय चउरो, दुसु छ दुसु अट्ठ दस य इक्किक्क ॥
बारस दोसु सोलस, दोसु वीसा य चउसु पुणो ॥१९६॥

अर्थ—(उड्ढे) के० उपरना तीर्छा लोकने विषे पलिया (तिरिय) के० तीर्छा चउरा के० चार खाडवा छे. तेनी उपर

(दुग्न) क० बे पंक्तिमां (च्छ) के० छ खांडवां छे, तेनी उपर (दुग्न) के० बे पंक्ति मांहेली (इक्किक्के) के० एक पंक्तिमां [अट्ठ] के० आठ खांडवा छे अने बीजामां (दस य) के० दश खांडवा छे. तेना उपरना (दोग्नु) के० बे पंक्तिमां (बारस) के० बार बार खांडवा छे. तेनी उपर (दोग्नु) के० बे पंक्तिमां (सोलस) के० शोल शोल खांडवा छे, (पुणो) के० वली तेनी उपर (चउग्नु) के० चार पं.क्तमां (वीसा य)के० वीश वीश खांडवा छे,

तेनी समजुती आ प्रमाणे छे के—ताच्छीं सत्तावन रेखा मांहेली ओगणत्रीशमी रेखाथी उपरना सात राजलोक शरु थाय छे, अने चउदराज लोकमां पा पा राजनो एक एक खांडवो करेलो होवाथी एक राजना चार खांडवा थाय छे. एवा चउदे राज लोकना उपरा उपरी छप्पन्न खांडवा थाय छे, तेमां ओगणत्रीशमी रेखानी उपर बे पंक्तिने विषे त्रसनाडीमांज चार चार खांडवा छे. पण बाहेर एके खांडवो नथी. ते उपर बे पंक्तिने विषे छ छ खांडवा छे तेमां चार चार त्रस नाडीमां छे अने एक एक खांडवो त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर एक पंक्तिने विषे आठ खांडवा छे, तेमां चार खांडवा त्रसनाडीमां छे अने बबे खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर एक पंक्तिने विषे दश खांडवा छे, तेमां चारा खांडवा त्रसनाडीमां अने त्रण त्रण खांडवा त्रसनाडीथी बहार बन्ने बाजुए छे. तेनी उपर बे पंक्तिने विषे बार बार खांडवा छे, तेमां चार खांडवा त्रसनाडीमां अने चार चार खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर बे पंक्तिने विषे शोल शोल खांडवा छे, तेमां चार चार त्रसनाडीमां अने छ छ खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर चार पंक्तिने विषे बीश बीस खांडवा छे, तेमां चार चार त्रसनाडीमां अने आठ

आठ खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे. ॥ १९६ ॥

पुणरवि दोसु सोलस,बारस दोसु य तिसु दस तिसुट्ठ ॥
छ दुसु दुसु चउ खडुय,मज्झे चउरुत्तरा तिसया ॥१९७॥

अर्थ—(पुणरवि) क० वली पण उपरनी (दोसु) क० बे पंक्तिने विषे (सोलस) क० सोल खांडवा छे, तेनी उपरनी (दोसु) क० बे पंक्तिने विषे (बारस) क० बार खांडवा छे (य) क० अने तेनी उपर (तिसु) क० त्रण पंक्तिने विषे (दस) क० दश खांडवा छे, अने तेनी उपर (तिसु) क० त्रण पंक्तिने विषे [अट्ठ] क० आठ खांडवा छे तेनी उपर (दुसु) क० बे पंक्तिने विषे (छ) क० छ खांडवा छे अने तेनी उपर (दुसु) क० बे पंक्तिने विषे (चउ) क० चार खांडवा छे, (मज्झे) क० सर्व मली (चउरुत्तरा तिसया) क० त्रण सो चार (खडुया) क० खांडवा थाय छे

तेनी समजुती ए छे के—पूर्वनी गाथामां वीश खांडवानी चार पंक्ति कही गया छे तेनी उपर बे पंक्तिने विषे सोल सोल खांडवा छे, तेमां चार चार खांडवा त्रसनाडीमां अने छ छ खांडवा त्रस नाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे तेनी उपर बे पंक्तिने विषे बार बार खांडवा छे, तेमां चार चार खांडवा त्रसनाडीमां अने चार चार खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर त्रण पंक्तिने विषे दश दश खांडवा छे तेमां चार चार खांडवा त्रसनाडीमां छे, अने त्रण त्रण खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर त्रण पंक्तिने विषे आठ आठ खांडवा छे, तेमां चार खांडवा त्रसनाडीमां छे, अने बे बे खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर बे पंक्तिने विषे छ छ खांडवा छे, तेमां चार चार खांडवा त्रसनाडीमां छे अने

एक एक खांडवो त्रसनाडीना बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर बे पंक्तिने विषे चार चार खांडवा छे ते चारे त्रसनाडीमांज छे, एम उर्ध्व लोकने विषे सात राज प्रमाणमां सर्व मलीने त्रण सो चार खांडवा थाय छे. ॥ १९७ ॥

हवे नीचेना सात राजलोकना खांडवा कहे छे.

उवरीव लोगमज्झा, चउठ्ठाणे सत्तपुढविसु चउ दस ॥
सोल वीसा चउवीस, छवीसा तहय अडवीसा ॥१९८॥

अर्थ—(उवरिव) के० उपरना सात राजनी पेठे (सत्तपुढविसु) के० नाचेना साते नरक पृथ्वीने विषे (लोगमज्झा) के० त्रसनाडीमां एक राजलोकना (चउट्ठाणे) के० चार चार खांडवा छे. रत्नप्रभादि साते नरकरूप सात राजलोकमां अनुक्रमे (चउ) के० चार चार, (दस) के० दश दश, (सोल) के० शोल शोल, (वीसा) के० वीस वीस, (चउवीस) के० चोवीश चोवीश, (छवीसा) के० छवीश छवीश, (तहय) के० तेमज (अडवीसा) के० अठावीस अठावीश खांडवा छे.

समजूती एम छे के–अधो लोकनी सात पृथ्वी सात राजप्रमाण उंची छे. एटले एक एक पृथ्वी एक एक राज प्रमाण उंची छे. अने तेमां पा पा राज प्रमाणनी चार चार पंक्ति छे. तथा साते पृथ्वीमां मध्यनाडी एक राज प्रमाण पहोली छे. रत्नप्रभा पृथ्वी एक राज प्रमाण पहोली होवाथी तेमां फक्त मध्य नाडीनी चारे लाइनमां पा पा राजना चार चार जे खांडवा छे. तेनी बहार एक पण खांडवो नथी. तेनी नीचे बीजी शर्करा प्रभा अढीराज प्रमाण पहोली होवाथी तेनी चारे पंक्तिने विषे दश दश खांडवा छे, तेमां चारा चार खांडवा त्रसनाडीमां छे, अने त्रण त्रण खांडवा त्रसना-

होनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी नीचे त्रीजी वालुका प्रभा चार राज पहोली होवाथी तेनी चारे पंक्तिने विषे शोल शोल खाडवा छे, तेमा चार चार खाडवा त्रस नाडीमा छे, अने छ छ खाडवा त्रस नाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे तेनी नीचे चोथी पंकप्रभा पांच राज प्रमाण पहोली होवाथी तेनी चारे पंक्तिने विषे वीश वीश खाडवा छे, तेमा चारचार खाडवा त्रसनाडीमा छे अने आठ आठ खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे तेनी नीचे पांचमी धूमप्रभा छ राज प्रमाण पहोली होवाथी तेनी चारे पंक्तिने विषे चोवीश चोवीश खाडवा छे, तेमां चार चार खाडवा त्रसनाडीमां छे अने दश दश खाडवा त्रस नाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे. तेनी नीचे छट्ठी तमप्रभा साडा छ राज प्रमाण पहोली होवाथी तेनी चारे पंक्तिने विषे छत्रीश छत्रीश खाडवा छे, तेमा चार चार खाडवा त्रसनाडीमा छे, अने अगीयार अगीयार खाडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे तेनी नीचे सातमी तमस्तमप्रभा सात राजप्रमाण पहोली होवाथी तेनी चारे पंक्तिने विषे अट्ठावीश अट्ठावीश खाडवा छे, तेमा चार चार खाडवा त्रसनाडीमां छे, अने बार बार खाडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, ॥ १०८ ॥

अह पणसय चारुत्तर, खडय सोलहिय अट्ठसय सव्वे ॥
चम्माइ लोगमज्झ, जोयण असंखकोडीहिं ॥ १०९ ॥

अर्थ—(अह) के० हवे (पणसय चारुत्तर) क० पांच सो अने चार नीचेनी सात पृथ्वीरूप सातराजना (खडय) के० खाडवा थया तथा उपरना सातराजना त्रण सो अने चार खाडवा पहेला कह्या छे ते सव्वे के० सर्व मली (सोलहिय अट्ठसय

के० आठ सो अने मोक्ष थाय. (यम्माइ) के० रत्नप्रभा पृथ्वीमां (लोगमज्झं) के० चौद राजलोकनो मध्य भाग (जोयण असंख कोडीहिं) के० असंख्याता कोडी योजन नीचे छे.

भावार्थ ए छे के—रत्नप्रभा नामनी पहेली पृथ्वीने विषे चौदराज लोकनो मध्यभाग छे. पण ते कये ठेकाणे छे ? ते कहे छे. रुचक समभूतलथको नीचे असंख्याता कोडी योजन जइये त्यां चउद राजलोकनो मध्यभाग छे. एटले त्यांथी लोक सात राज उंचो अने सात राज नीचो छे.

उक्तं च पंचमांगे त्रयोदशशतचतुर्थेदिशके ॥ प्रश्नः । कह णं भंते लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्तं ॥ हे भगवन् । लोकनो मध्यभाग क्यां छे ? उत्तरः—गोयमा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवासंतरस्स खेज्जतिभागं ओगाहित्ता, एत्थ णं लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ॥ भावार्थ ए छे के—हे गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वीनो पींड एक लाख एंशीहजार योजननो छे तेनी नीचे वीश हजार योजननो घनोदधिनो पींड छे. तेनी नीचे असंख्याता योजननो घनवातनो पींड छे. तेनी नीचे असंख्याता योजननो तनवातनो पींड छे. ए सर्व अवगाहीने नीचे जइये त्यां असंख्याता योजननो आकाश प्रदेश छे. पण ते आकाश प्रदेश घनवात तथा तनवातना पींडथकी असंख्यात गुणो छे. ते आकाश प्रदेशनो असंख्यातमो भाग अवगाहीने नीचे जइये त्यां चउद राजलोकनो मध्यभाग छे तेनी नीचे सात राज प्रमाण अधोलोक छे अने उपर सात राजप्रमाण उर्द्धलोक छे

प्रश्नः ॥ कह णं भंते अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ? हे भगवन् ! अधोलोकना सात राजनो मध्यभाग क्यां छे. उत्तरः ॥ गोयमा ! चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए उवासंतरस्स साइरेगं अर्द्धं ओगाहित्ता तत्थ णं अहोलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ॥ भावार्थ

ए छे के—हे गौतम ! चोथी पंकप्रभा पृथ्वीनो पींड एक
वीश हजार योजननो छे, तेनी नीचे वीश हजार योजननो घनो
दधि पींड छे, तेनी नीचे असंख्याता योजननो घनवात पींड छे,
तेनी नीचे असंख्याता योजननो तनवात पींड छे ए सर्व अवगा-
हीने नीचे जइये त्या असंख्याता योजन प्रमाण आकाश प्रदेश छे.
वली आकाश प्रदेश घनवात तनवातथकी असंख्यात गुणो छे ते
आकाश प्रदेशनो अर्द्धथी झाझेरो भाग अवगाहीने नीचे जइये त्या
नीचेना सात राजलोकनो मध्य भाग छे एटले ते स्थानथी नीचे
अने उंचे साडा त्रण साडा त्रण राजलोक अधोलोकना छे ॥ तथा
चोक्तं पंचमांगे ॥ प्रश्नः कह ण भंते उड्ढलोगस्स आयाममज्झेपण्णत्ते ? ॥
हे भगवन् ! उर्द्धलोक सात राज प्रमाण छे तेनो मध्यभाग क्या
छे ? ॥ उत्तर गोयमा ! उप्पिं सणकुमार माहिंदाण कप्पाण बंभ
लोए कप्प रिठ्ठविमाणपत्थडे एत्थ ण उड्ढलोगस्स आयाममज्झे प-
ण्णत्ते ॥ भावार्थ ए छे के-रुचक प्रदेशनी उपर नव सो योजनमा
ज्योतीषचक्र छे, ते ज्योतीषचक्रने उल्लंघन करी उपरनो भाग उर्द्ध
लोक कहेवाय छे, ते उपर लोकांतिक सुधी सात राज काइक उणा
छे, अने ओगणत्रीशमी रेखा उपर सात राज पुरा छे ते उपरना
सात राजनो मध्यभाग ते चार देवलोकने उल्लंघी पांचमा ब्रह्मलो-
कना रिष्टनामा त्रीजा प्रतरनी पासे लोकांतिक देवताना विमान छे,
तेनी पासे उर्द्धलोकनो मध्यभाग छे. त्याथी साडा त्रण राज नीचे
तथा साडा त्रण राज उपर उर्द्धलोक छे ए प्रमाणे सर्व लोकना
मध्यभाग तथा अधोलोक अने उर्द्धलोकना मध्य भाग कह्या ।१९९॥

सगरज्जु जोयणसया, अट्ठार ऊण सगरज्जुमाणाइ ॥
अहतिरियउड्ढलोया, निरयनरसुराइ भाविला ॥२००॥

अर्थ—(अहतिरियउड्ढलोया) के० नीचेना सात राजलोक, मध्यनो तिर्यंचलोक अने उपरना सात राजलोक ए त्रणे लोक अनुक्रमे (सगरज्जु) के० सात राज प्रमाण (जोयण सया अट्ठार) के० अठारसो योजन, अने (ऊणसगरज्जूमाणाइ) के० कांइक ओछा सातराज प्रमाणवाला छे. एटले नीचेनो अधोलोक सातराज प्रमाणथी कांइक झाझेरो ऊंचो छे. मध्यलोक अढार सो योजननो ऊंचो छे; अने उपरनो लोक सात राज प्रमाणथी कांइक ओछो एटले असंख्याता योजन ओछो उंचो छे. वली ते त्रण लोक (निरयनरसुराइ भाविल्ला) के० नारकी मनुष्य अने देवता विगेरेथी भरेला छे. ॥ २०० ॥

इक्किकरज्जु इक्किक–निरय सग पुढवी असुर पढमे ॥
तह वंतर तदुवरि नर–तिरियाइय जोइसा गयणे ॥२०१॥

अर्थ—(इक्किकरज्जु) के० एक एक राजप्रमाण (इक्किकनिरय) के० एक एक नरक पृथ्वी छे, तेवी (सग पुढवी) के० सात नरक पृथ्वीना सात राजलोक छे. तेमां (असुर) के० असुर कुमारादिक भुवनपति देवो (पढमे) के०पहेली रत्नप्रभा नरकपृथ्वीने विषे रहेछे,एटले पहेली रत्नप्रभा नरक पृथ्वीनो पींड एक लाख एंशी हजार योजननो छे, तेमांथी एक हजार योजन नीचेना मूकी देवा अने एक हजार योजन उपरना मूकी देवा. बाकीना एक लाख अठोतेर हजार योजनमां भुवनपति देवो रहे छे. तह के० तथा वंतर के० व्यंतर देवो तेना उपर रहे छे एटले रत्नप्रभा पृथ्वीना जे उपरना एक हजार योजन मूक्या छे तेमांथी एक सो योजन उपर मूकी देवा अने एक सो योजन नीचे मूकी देवा, बाकीना वच्चेना आठ सो योजनमां व्यंतर देवो रहे छे. अने (तदुवरि) के० ते

रत्नप्रभाना उपरना भागने विषे (नरतिरियाइय) के० मनुष्य तिर्यंच विगेरे रहे छे. तथा तेनी उपरना (गयणे) के० आकाशमा (जोइसा) के० ज्योतसी देवता रह छे ॥ २०१ ॥

हवे उपरना सात राजलोकना अठ्ठावीश खाडवानो विभाग कहे छे अने जेटला खाडवे जेटला देवलोक थाय छे ते कहे छे.

छसु खंडगेसु य दुगं,चउसु दुग छसु य कप्प चत्तारि ॥
चउसु चउ सेसेसु य,गिविज्जणुत्तर य सिद्धं ते॥२०२॥

अर्थ—ओगणत्रीशमी रेखा उपरना (छसु खंडगेसु) के० छ खाडवाने विषे (दुग) के० सौधर्म अने ईशान ए बे देवलोक छे, तेना उपरना (चउसु) के० चार खाडवाने विषे (दुग) के० सनत्कुमार अने माहेंद्र ए बे देवलोक छे तेना उपरना (छसु) के० छ खांडवाने विषे (कप्पचत्तारि) के० ब्रह्म लांतक शुक्र अने सहस्रार ए चार देवलोक छे, तेना उपर (चउसु) के० चार खाडवाने विषे (चउ) के० आनत प्राणत आरण अने अच्युत ए चार देवलोक छे ए वीश खांडवा थया अने पांच राजप्रमाण उर्द्धलोक थयो. तेना उपर (सेसेसु) के० बाकीना आठ खांडवा रह्या छे तेमा नीचेना चार खाडवाने विषे (गिविज्ज) के० नव ग्रैवेयक छे अने उपरना चार खाडवाने विषे (अणुत्तर) के० पाच अनुत्तर छे अने तेना (अते) के० उपर एटले चौद राजना उपर (सिद्ध) के० सिद्ध भगवत सहित सिद्धशिला छे. अहिं सूचिरज्जु प्रतररज्जु अने घनरज्जु ए त्रण राज छे. तेनी सख्या ग्रथानरथी अथवा लोकनालथी जाणवी ॥ २०२ ॥

हवे लोकांतिक देवता कया देवलोक अने कया विमाने रह छे ? ते अहिं प्रसगथी कह छे के–आ जबुद्वीपथी तीर्च्छो अस

ख्याता द्वीप समुद्र जइये त्यारे अरुणवर नामनो द्वीप आवे छे, ते द्वीपनी वेदिकाना छेडाथी अरुणवर नामना समुद्रमां आगल बेंतालीश हजार योज जइये त्यां पाणीना उपरना तलीयाथी उंचो अप्कायमय महांधकाररूप तमस्काय नीकल्यो छे, ते अगीयार सो योजन सुधी भींत सरखो थइने पछीं तीर्च्छो विस्तार पामतो सौधर्म ईशान सनत्कुमार अने माहेंद्र ए चार देवलोकने आवरी उंचो ब्रह्म देवलोकना अरिष्ट नामना त्रीजे प्रतरे जई रह्यो. ए तमस्काय नीचे भींतने आकारे, शरावलाना तलीयाने आकारे अने उपर कूकडाना पांजराना आकारे. एवुं एनुं संस्थान छे. ते धुरथी संख्याता योजन उंचो छे अने नीचेना विस्तारे संख्याता योजन छे, त्यांथी आगलना विस्तारे असंख्याता योजन प्रमाण छे. अहिंथी ए तमस्काय असंख्यातमे द्वीप समुद्रे उठयो छे माटे ए तमस्कायनो परिधि असंख्याता योजन प्रमाण जाणवो.

ए तमस्कायना महत्वपणाने माटे पूर्वना गीतार्थ पुरुषोए एम कह्युं छे के—कोई महर्द्धिक देवता त्रण चपटी वगाडीये तेटला वखतमां एकवीश वार जंबुद्वीपने प्रदक्षिणा करी आवे तेज देवता छ महिने तमस्कायना योजन विस्तारने उल्लंघे, परंतु उपर असंख्याता योजनना विस्तारवाली तमस्कायनी जगति उल्लंघे नहीं. ॥२०२॥

पंचमकप्पे रिट्ठंमि, पत्थडे अट्ठ कण्हराइओ ॥
समचउरंसक्खाडय,ट्ठिइओ दो दो दिसि चउक्के ॥२०३॥

अर्थ—(पंचमकप्पे) के० पांचमा देवलोकने विषे (रिट्ठंमि पत्थडे) के० त्रीजा रिष्ट नामना प्रतरने विषे (अट्ठकण्हराइओ) के० आठ कृष्णराजीओ छे. ते कृष्णराजी (समचउरंसक्खाडयट्ठिइओ) के० समचतुरस्र नाटकनी रंगभूमि सरखी छे, तथा

(दिसि चउक्के) के० चारे दिशामा (दो दो) के० बे बे कृष्ण-राजी छे ॥ २०३ ॥

ए कृष्णराजीनी समजुती एम छे के—पांचमा देवलोकना त्रीजा अरिष्ट नामना प्रतरने विषे अरिष्ट विमाननी चार दिशाये सचित्त अचित्त पृथ्वीमय बे बे कृष्णराजी छे. तेमा उत्तर दिशानी बे कृष्ण-राजी पूर्व पश्चिम दिशाये लांबी छे, अने दक्षिण दिशानी बे कृष्ण-राजी पण पूर्व पश्चिम दिशाये लांबी छे त्यां वने कृष्णराजीमांहे पहेली पूर्व दिशानी अभ्यंतर कृष्णराजी ते दक्षिण दिशानी बाहे-रनी कृष्णराजीने फरसे छे, तेमज बीजी दक्षिण दिशानी अभ्यं-तर कृष्णराजी ते पश्चिम दिशानी बाहरनी कृष्णराजी ने फरसे छे, तथा त्रीजी पश्चिम दिशानी अभ्यंतर कृष्णराजी ते उत्तर दिशानी बाह्य कृष्णराजीने फरसे छे, अने चोथी उत्तर दिशानी अभ्यंतर कृष्णराजी ते पूर्व दिशानी बाह्य कृष्णराजीने फरसे छे. ए प्रमाणे चारे दिशानी सर्व मली आठ कृष्णराजी छे तेज अर्थने कहेनारी नीचेनी गाथा छे

पुवावर उत्तर दा-हिणा हि मज्झलियाहि पुवाओ ॥
दाहिणउत्तर पुव्वा, वराओ बहि कण्हराईओ ॥२०४॥

अर्थ—(दाहिणउत्तरपुवावरओ) के० दक्षिण उत्तर पूर्व अने पश्चिम दिशा तरफनी (बहिकण्हराईओ) के० बाहरनी कृष्ण-राजीओ (पुवाओ) के० पूर्वनी (पुवावरउत्तरदाहिणाहि) के० पूर्व पश्चिम उत्तर अने दक्षिण दिशा तरफनी (मज्झलियाहि) के० अंदरनी कृष्णराजीओनी साथे जोडायली छे ॥ २०४ ॥

पुव्वावरा छलंसा, तंसा पुण दाहिणुत्तरा बज्झा ॥
अब्भिंतर चउरंसा, सव्वावि य कण्हराईओ ॥ २०५ ॥

अर्थ—(पुव्वावरा) के० पूर्व अने पश्चिम दिशानी (वज्झा) के० बाहेरनी बे कृष्णराजी (छलंसा) के० छ खूणावाली छे. (पुण) के० वली (दाहिणुत्तरा) के० दक्षिण अने उत्तर दिशानी बाहेरनी बे कृष्णराजी (तंसा) के० त्रण खूणावाली छे. तथा (अब्भिंतर) के० अंदरनी (सव्वावि य कण्हराईओ) के० चारे कृष्णराजीओ चउरंसा के० चार खूणावाली छे. ॥ २०५ ॥

आयामपरिक्खेहिं, ताण असंखजोयण सहस्सा ॥
संखेज्जसहस्सा पुण, विक्खंभे कण्हराईणं ॥ २०६ ॥

अर्थ—ताण कण्हराईणं) के० ते आठे कृष्णराजी (आयामपरिक्खेहिं) के० लंबाई अने परिधिये करीने (असंखजोयण-सहस्सा) के० असंख्याता हजारो योजन छे (पुण) के० वली (विक्खंभे) के० जाडाइए करीने (संखेज्ज सहस्सा) के० संख्याता हजारो योजन छे. ॥ २०६ ॥

ईसाणदिसाईसु, एयाणं अंतरेसु अट्ठसुवि ॥
अट्ठविमाणाइ तहा, तम्मज्झे इक्कगविमाणं ॥ २०७ ॥

अर्थ—(ईसाणदिसाईसु) के० ईशानादिक दिशाने विषे (एयाणं) के० ए कृष्णराजीना (अंतरेसु अट्ठसुवि) के० आठ आंतराने विषे (अट्ठविमाणाइ) के० आठ विमान तथा ते विमानना अधिपति देवो तथा तेमनो परिवार छे. (तहा) के० तथा (तम्मज्झे) के० ते विमानोना मध्यभागने विषे (इक्कगविमाणं) के० एक विमान छे. ॥ २०७ ॥

ते विमानोनां नाम कहे छे.

अच्चि तहच्चिमाली, वइरोयण पभकर य चंदाम ॥
सूराभं सुक्काभं, सुपइट्ठाभं च रिट्ठाभं ॥ २०८ ॥

अर्थ—ईशान खूणामां (अच्चि) के० अर्चि नामनु विमान छे, (तह) के० तथा पूर्व दिशामां (अच्चिमाली) के० अर्चिमाली नामनु विमान छे, अग्नि खुणामा (वइरोयण) के० वैरोचन नामनु विमान छे, दक्षिण दिशामा (पभंकर) के० प्रभंकर नामनुं विमान छे,(य) के० अने नैरुत्य खुणाने विषे (चदाभ) के० चद्राभ नामनु विमान छे, पश्चिम दिशाने विषे (सूराभ) के० सूर्याभ नामनु विमान छे, वायु खुणाने विषे (सुक्काभ) के० शुक्राभ नामनु विमान छे, उत्तर दिशाने विषे (सुपइट्ठाभ) के० सुप्रतिष्ठाभ नामनु विमान छे, (च) के० अने मध्यभागने विषे (रिट्ठाभं) के० रिष्टाभ नामनु विमान छे ॥ २०८ ॥

हवे ते विमानोमा वसनारा अधिष्ठायक देवोनां पूर्वे कहेला अनुक्रम प्रमाणे नाम कहे छे

सारस्सय माइच्चा, वन्ही वरुणा य गद्दतोया य ॥
तुसिया अव्वाबाहा, अग्गि तह चेव रिट्ठा य ॥२०९॥

अर्थ—अर्चि विमानमा (सारस्सय) के० सारस्वत देवता वसे छे, अर्चिमालि विमानमा (आइच्चा) के० आदित्य देवता वसे छे, वैरोचन विमानमा (वन्ही) के० वन्हि देवता वसे छे, प्रभंकर विमानमा (वरुणा य) के० वरुण देवता वसे छे, चद्राभ विमानमा (गद्द तोया य) के० गर्दतोय देवता वसे छे, सूर्याभ विमानमा (तुसिया) के० तुषित नामना देवता वसे छे, शुक्राभ विमानमा (अव्वाबाहा) के० अव्याबाध देवता वसे छे, सुप्रतिष्ठाभ

विमानमां (अग्गि) के० अग्निदेवता वसे छे, [तह चेव] के० तेमज रिष्टाभ विमानमां (रिट्ठा य) के०रिष्टाभ देवता वसे छे.॥२०९॥

हवे ते देवताओनो अनुक्रमे परिवार कहे छे.

पढमजुअलंमि सत्तओ-सयाणि बीयंमि चउदह सहस्सा ॥
तइए सत्त सहस्सा, नव चेव सयाणि सेसेसु ॥२१०॥

अर्थ—(पढमजुअलंमि के० पहेला युगल ते सारस्वत तथा आदित्य देवताने (सत्तओ सयाणि) के० सात सो सात सो देवतानो परिवार छे, अने (बीयंमि) के० बीजा युगल ते वन्हि तथा वरुण देवताने (चउदह सहस्सा) के० चउद चउद हजार देवतानो परिवार छे. तेमज (तइए) के० त्रीजा युगल ते गर्दतोय तथा तुषित देवताने (सत्तसहस्सा) के० सात सात हजार देवतानो परिवार छे, अने (सेसेसु) के० बाकीना देवतानो (नव सयाणि) के० नव सो नव सो देवतानो परिवार (चेव) के० निश्चे होय छे, ॥ २१० ॥ ए देवतानुं बीजुं भवनद्वार संपूर्ण थयुं.

हवे त्रीजुं देवताना शरीरनी अवगाहनानुं द्वार कहे छे.

भवणवणजोइसोह-म्मीसाणे सत्त हत्थ तणुमाणं ॥
दुदुदु चउक्क गेवि-ज्जणुत्तरे हाणि इक्किकं ॥ २११ ॥

अर्थ—(भवणवणजोइसोहम्मीसाणे के० भवनपति, व्यंतर, ज्योतषी तथा सौधर्म अने ईशान देवलोक त्यां सुधीना देवताओनुं (सत्त हत्थ तणुमाणं) के० शरीर प्रमाण सात हाथनुं उत्कृष्टथी जाणवुं, त्यार पछी (दु) के० त्रीजो अने चोथो देवलोक, (दु)

के० पांचमा अने छट्टो देवलोक (दु) के० सातमो अने आठमो देवलोक, (चउक) के० नवमो, दशमो अगीयारमो बारमो देवलोक, तथा (गेविज्ज) के० नव ग्रैवेयक अने (अणुत्तरे) के० पांच अनुत्तर ए छ ठेकाणे अनुक्रमे [हाणि इकिक] के० एक एक हाथनी हानी करवी. एटले त्रीजा चोथा देवलोके छ हाथनु, पांचमा छट्ठे देवलोके पांच हाथनु, सातमा आठमा देवलोके चार हाथनु, नवमा दशमा अगीयारमा बारमा देवलोके त्रण हाथनु. नव ग्रैवेयके बे हाथनु अने पांच अनुत्तर विमाने एक हाथनु शरीर जाणवुं. ॥ २११ ॥

हवे विशेषे सागरोपमना आयुष्यनी वृद्धिये करी सनत्कुमारादिकने विषे शरीरनु मान कहे छे.

कप्प दुग दु दु दु चउगे, नवगे पणगे य जिट्ठठिइ अयरा ॥
दो सत्त चउद ठारस, बावीसिगतीसतित्तीसा ॥२१२॥
विवरे ताणिक्कुणे, इक्कारसगा उ पाडिए सेसा ॥
हत्थिकारस भागा, अयरे अयरे समहियम्मि ॥ २१३ ॥
चय पुव्वसरीराओ, कमेण ऐगुत्तराइ वुड्ढीए ॥
एवं ठिइ विसेसा, सणंकुमाराइ तणुमाणं ॥ २१४ ॥

अर्थ—(कप्पदुग) के० पहेला अने बीजा देवलोकमा, (दु) के० त्रीजा अने चोथा देवलोकमा (दु) के० पांचमा अने छट्ठा देवलोकमा (दु) के० सातमा अने आठमा देवलोकमा, (चउगे) के० नवमा दशमा अगीयारमा अने बारमा देवलोकमां, (नवगे) के० नव ग्रैवेयकमा (य) के० अने (पणगे) के० पांच अनुत्तर

विमानमां, (जिट्ठठिइ) के० उत्कृष्ट स्थिति आ प्रमाणे—पहेला वे देवलोके, (दो अयरा) के० वे सागरोपमनी, बीजा वे देव लोके (सत्त) के० सात सागरोपमनी, त्रीजा वे देवलोके (चउद) के० चउद सागरोपमनी, चोथा वे देवलोके (अट्ठारस) के० अढार सागरोपमनी, नवमाथी बारमा सुधीना चार देवलोके (बावीस) के० बावीस सागरोपमनी, नव ग्रैवेयके (इगतीस) के० एकत्रीश सागरोपमनी, अने पांच अनुत्तर विमानने विषे (तित्तीसा) के० तेत्रीश सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति छे. ॥ २१२ ॥ [विवरे] के० अधिक स्थितिमांहेथी ओछी स्थिति काढी नाखीये. पछी बाकी रहे तेमांथी (ताणिकूणे) के० एकरूप ओछो करीये, वली (इक्कारसगा उ पाडिए) के० एक हाथना पाडेला अगीयारीया भागने स्थानके जे (सेसा) के० बाकी रहेला (हत्थिक्कारसभागा) के० एक हाथना अगीयारीया भाग तेने देवताना आयुष्यमां (अयरे अयरे समहियंमि) के० एक एक सागरोपम अधिक थयुं थकुं ॥ २१३ ॥ (चय पुव्वसरीराओ) के० पूर्व पूर्वना शरीरमांथी एक एक भाग ओछो करवो अने (कमेण) के० अनुक्रमे करीने (इगुत्तराइ वुड्ढीए) के० एक एक सागरोपम आयुष्य स्थितिमां वधारवो. (एवं ठिइ विसेसा) के० एवीरीते आयुष्यनी स्थितिना विशेषपणाये एटले सागरोपमनी वृद्धिये करी (सणंकुमाराइ तणुमाणं) के० सनत्कुमारादिक देवलोकना देवतानुं शरीरप्रमाण थाय ॥ २१४ ॥

समजूती एम छे के-पूर्वाचार्योए देवताना शरीरनुं प्रमाण तेमना सागरोपमना आयुष्य प्रमाण उपरथी ओछुं अधिकुं कह्युं छे. जोके ईशान तथा माहेंद्र देवलोके जे कांइ अधिक आयुष्य कह्युं छे ते अहिं न गणवुं. सौधर्म तथा ईशान देवलोकना देवतानुं देहमान

सात हाथनु कयु छे हवे सनत्कुमार देवलोकना देवतानु देहमान कहे छे त्यां, विश्लेष एटले विश्लेष करवो अर्थात् अधिक आयुष्य स्थितिमांथी आठी स्थिति काढी नाखवी बाकी जे रहे तेमांथी एक ओछो करवो. पछी एक हाथना अगीयार भाग करवा तेमांथी विश्लेषकरी एक ओछो करता जे आक आवे ते प्रमाणे हाथना शेष रहेला भाग घटाडवा अने एक एक सागरोपमनु आयुष्य वधारवु एम करता सनत्कुमारादिक देवतानु शरीर प्रमाण थाय छे

अहिं एज वातने दृष्टान सहित समजावे छे के-जेम सौधर्म तथा ईशान देवलोके उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपमनी छे अने सनत्कुमार तथा माहेंद्रे सात सागरोपमनी स्थिति छे, हवे सात सागरोपममाथी बे सागरोपम काढी नाखवा, केमके बे सागरोपमवाळा आयुष्यवाळा देवताना शरीरनु प्रमाण सात हाथ कयु छे, ते बे सागरोपम काढता बाकी पाच सागरोपम रहे तेमाथी एक ओछो करीये त्यार चार रहे हवे सौधर्म तथा ईशान देवलोकना देवतानु सात हाथनु शरीर प्रमाण छे. ते माहेथी छ पुरा राखीये अने सातमा हाथना अगीयार भाग करवा, तेमाथी चार भाग काढी लेवा बाकी सात भाग रहे ते पहला मूकवा एटले सनत्कुमार तथा महेंद्र देवलोकना त्रण सागरोपमना आयुष्यवाळा देवतानु शरीर प्रमाण छहाथ अने एक हाथना अगीयार भाग करीय तेवा चार भाग उपर एटलु शरीर प्रमाण जाणवु एम चार चार सागरोपम वधारता अने एक एक भाग घटाडता जवु, तेथी चार सागरोपमना आयुष्यवाळा देवतानु शरीर प्रमाण छ हाथ अने अगीयारया त्रण भागनु प्रमाण पाचमना आयु ष्यवाळा देवतानु शरीर प्रमाण छ हाथ अने अगीयारीया बे भा-

गनुं, छ सागरोपमना आयुष्यवाला देवतानुं शरीर प्रमाण छ हाथ अने अगीयारीया एक भागनुं, तथा सात सागरोपमना आयुष्य-वाला देवतानुं शरीर प्रमाग वरावर छ हाथनु जाणवुं.

वली वीजुं दृष्टांत कही समजावे छे के-जेम ब्रह्म तथा लांतक देवलोके चउद सागरोपमनी उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति छे, तेमांथी सनत्कुमार तथा महेंद्र देवलोकना सात सागरोपमना सात आंक काढी नाखवा वाकी सात रहे तेमांथी एक ओछो करवो, वाकी छ रहे. पछी एक हाथना अगीयारीया भाग मांहेला पांच पडता मूकी वाकी छ भाग रहे ते अने पांच हाथ. एटलुं आठ सागरो-पम आयुष्यवाला देवतानुं शरीर प्रमाण जाणवुं, एरीते एक एक सागरोपमनुं आयुष्य वधतां एक एक अगीयारीओ भाग शरीर ना प्रमाणमांथी घटाडवो, ए सर्व यंत्र उपरथी जाणी लेवुं. ॥ एज वात नीचेनी गाथाथी कहे छे—



कोष्टक नं. १

उर्ध्व देवलोके आयुष्यने अनुसारे देह प्रमाणनुं कोष्टक.

सागरोपमे	हाथ	हाथना अगीआरीआ भाग
१	७	०
२	७	०
३	६	४
४	६	३
५	६	२
६	६	१
७	६	०
८	५	६
९	५	५
१०	५	४
११	५	३
१२	५	२
१३	५	१
१४	५	०
१५	४	३
१६	४	२
१७	४	१
१८	४	०
१९	३	३
२०	३	२
२१	३	१
२२	३	०
२३	२	८
२४	२	७
२५	२	६
२६	२	५
२७	२	४
२८	२	३
२९	२	२
३०	२	१
३१	२	०
३२	१	१
३३	१	०

हत्थस्सिगारसंसा, अहिगयर समाइगेगत्रयहीणा ॥
त्रीतीयरदेहपमाणं, कम्म क्खिकरेण पुव्वगे ॥२१५॥

अर्थ—(हत्थस्सिगारससा) के० एक हाथना अगीयार भाग करवा (अहिगयरसमा) के० सागरोपमनु आयुष्य वधारीये अने (इगेगत्रयहीणा के० शरीर प्रमाणमाथी एक एक भाग ओछो करीये. एम (त्रितीयरदेहपमाण) के० बीजा त्रीजा देवलोकना

देवताना शरीरनुं प्रमाण (क्रम) के० अनुक्रमे करीने (क्खिवकरेणं पुव्वंगे) के० पूर्वना भागमांथी ओछुं करवाथी थाय छे. ॥ २१९ ॥

कोष्टक नं. २

उर्ध्व देवलोकमां दरेक प्रतरे आयुष्यनुं कोष्टक.

सौधर्म इशाने.

प्रतरे.	सागरोपम.		तेरीया भाग.
१	०	—	२
२	०	—	४
३	०	—	६
४	०	—	८
५	०	—	१०
६	०	—	१२
७	१	—	१
८	१	—	३
९	१	—	५
१०	१	—	७
११	१	—	९
१२	१	—	११
१३	२		

सनत्० माहेन्द्रे.

प्रतरे,	सागरोपम,		तेरीया भाग.
१	२	—	५
२	२	—	१०
३		—	३
४	३	—	८
५	४	—	१
६	४	—	६
७	४	—	११
८	५	—	-
९	५	—	९
१०		—	२
११	६	—	७
१२	७	—	

ब्रह्म देवलोके

प्रतरे	भाग० छठीया भाग
१	७ — [illegible]
२	८ — ०
३	८ — [illegible]
४	८ — ०
५	९ — ३
६	१०

लांत के

	भाग० पांचीया भाग
१	१० — ४
२	११ —
३	१२ — २
४	१३ — १
५	१४

शुक्र देवगीन

प्रतर	भाग० चारीया भाग
१	१४ — ३
२	१५ —
३	१६ — १
४	१७ — ०

सहस्रारे.

१	१७ — १
२	१७ — २
३	१७ — ३
	१८ — ०

आनत प्राणते

१	१८ — २
२	१९ — ०
३	१९ — २
४	२० — ०

आरण अच्युते

१	२० — [illegible]
२	२१ — [illegible]
३	२१ — २
४	[illegible] — [illegible]

कोष्टक नं. ३

नव ग्रैवेयके.

प्रतरे	सागरोपम.
१	२३
२	२४
३	२५
४	२६
५	२७
६	२८
७	२९
८	३०
९	३१

पांच अनुत्तरे.

१	३३
२	३३
३	३३
४	३३
५	३३

भवधारणिज्ज एसा, उत्तरवेउव्वि जोयणा लक्खं ॥
गेविज्जगुत्तरेसु, उत्तर वेउव्विया नत्थि ॥ २१६ ॥

अर्थ—(एसा) के० ए पूर्वे कहेलु शरीरनुं प्रमाण ते (भव-धारणिज्ज) के० भव धारणीय शरीर संबंधी जाणवुं. (देवता जीवे त्यां सुधी जे शरीर धारण करे ते भवधारणीय शरीर कहेवाय छे.) वली (उत्तरवेउव्वि) के० देवता उत्तर वैक्रिय शरीर करे ता (जोयणा लक्खं) के० एक लाख योजननुं करे. परंतु (गेविज्ज-

णुत्तरेसु) के० नव ग्रैवयक तथा पाच अनुत्तर निवासी देवाने (उत्तरेउव्विया नत्थि) के० उत्तर वैक्रिय शरीर नथी, परतु भवधारणीय शरीर छे ते देवताओने उत्तरवैक्रिय शरीर धारण करवानी शक्ति छे, परतु ते शरीर करवानु काइ काम पडतु नथी, तेथी ते उत्तर वैक्रिय शरीर करता नथी ॥ २१६ ॥

हवे भवधारणीय तथा उत्तर वैक्रिय शरीरनी जघन्य अवगाहना कहे छे,

साहाविय वेउव्विय, तणू जहन्ना कमेण पारभे ॥
अगुल असखभागो, अंगुलसखिज्जभागो य ॥२१७॥

अर्थ—(साहाविय) के० स्वाभाविक ते भवधारणीय अने (वउविय) के० वैक्रिय ए बन्ने (तणू) के० शरीर (जहन्ना) के० जघन्यथी (कमेण) के० अनुक्रमे (पारभे) क० आरभती वखते (अगुल असखभागो) के० अगुलना असख्यातमा भागे (य) ० अने (अंगुलसखिज्जभागो) के० अगुलना सख्यातमा भागे एटले भवधारणीय शरीर अंगुलना असख्यातमा भागे तथा वैक्रिय शरीर अंगुलना सख्यातमे भागे होय छे ॥ २१७ ॥ ए देवताने विषे अवगाहना सबधी बीजुं द्वार सपूर्ण थयु ॥

हवे देवताने उत्पातविरहकालनु तथा च्यवन विरहकालनु ए बे द्वार साथे कहे छे

सामन्नेण चउविह सुरेसु बारस मुहुत्त उक्कोसा ॥
उववायविरहकालो अह भवणाईसु पत्तेयं ॥ २१८ ॥

अर्थ—(सामन्नेण) के० सामान्यथी (चउविह सुरेसु) के० चार निकायना देवताने विषे (उववायविरहकालो) के० उत्तर

वानो विरहकाल (उक्कोसा) के० उत्कृष्टथी (बारस मुहुत्त) के० बार मुहूर्त्तनो जाणवो. त्यार पछी अवश्य उपजे. पंचसंग्रह ग्रन्थमां कह्युं छे के-गर्भज तिर्यंच मनुष्य देवता अने नारकी ए चारेने उत्कृष्टथी उपपात विरहकाल बार मुहूर्त्तनो, संमूर्च्छिम मनुष्यने चोवीश मुहूर्त्तनो अने विकलेंद्रिय तथा संमूर्छिम जीवोने अंतर मुहूर्त्तना होय छे. (अह) के० हवे भवणाईसु के० भवनपति विगेरे चारे निकायने विषे (पत्तेयं) के० प्रत्येकनुं विरहकालनुं प्रमाण कहे छे. ॥ २१८ ॥

भवण वण जोइ सोहम्मी-साणेसु मुहुत्त चउवीसं ॥
तो नव दिण वीस मुहू, बारस दिण दस मुहुत्ता य ॥२१९॥
बावीस सड्ढ दियहा, पणयाल असीइ दिण सयं तत्तो ॥
संखिज्जा दुसु मासा, दुसु वासा तिसु तिगेसु कमा ॥२२०॥
वासाण सयसहस्सा, लक्ख तह चउसु विजयमाईसु ॥
पलिया असंखभागो. सव्वट्ठे संखभागो य ॥ २२१ ॥

अर्थ—(भवण वण जोइ सोहम्मीसाणेसु) के० भुवनपति, व्यंतर, ज्योतषी, सौधर्म अने ईशानवासी देवताने प्रत्येके (मुहुत्त चउ वीसं) के० चोवीस मुहूर्त्तनो उत्कृष्टथी उपजवानो विरहकाल छे. (तो) के० त्यार पछी बीजो देवता उपजे. सनत्कुमार देवलोके (नव दिण वीस मुहू) के० नव दिवस अने वीश मुहूर्त्त, माहेंद्र देवलोके (बारस दिण दस मुहुत्ताय) के० बार दिवस अने दश मुहूर्त्त. ॥ २१९ ॥ ब्रह्म देवलोके [बावीस सड्ढदियहा] के० साडा बावीस दिवस. लांतक देवलोके (पणयाल) के० पिस्तालीश दिवस. शुक्र देवलोके (असीइ) के० एंशी दिवस, सहस्रार देवलोके

(सय) के० सा दिवस, (तत्तो) के० त्यार पछी (दुसु) के० आनत अने प्राणत ए बे देवलोक मध्ये (सखिज्जमासा) के० सख्याता मास, (दुसु) के० आरण अने अच्युत ए बे देवलोके (वासा) के० सख्यातावर्ष, हवे नव ग्रैवेयकना (तिसु तिगेसु) के० त्रण त्रिकने विषे (कमा) के० अनुक्रमे करीने उपजवानो विरहकाल कहे छे ॥ २२० ॥ पहेला त्रीके (वासाणसया) के० संख्यातावर्ष शत, बीजा त्रीक (सहस्सा) के० सख्याता हजार वर्ष, अने त्रीजा त्रीक (लक्ख) के० सख्याता लाख वर्ष उपजवानो विरहकाल जाणवो. (तह) के० तेमज (चउसु विजयमाईसु के० पहेला चार विजय ते विजय विजयंत जयंत अने अपराजित ए चार विमानने विषे (पलिया असंख भागो) के० अद्धा पल्योपमनो असंख्यातमो भाग, अने (सव्वट्ठे) के० सर्वार्थ सिद्धने विषे (संखभागो य) के० अद्धा पल्योपमनो सख्यातमो भाग उपपात विरहकाल होय छे ॥ २२१ ॥

हवे देवताओनो जघन्य विरहकाल अने पछी चवन विरहकाल संक्षेपथी कहे छे.

सव्वेसिपि जहन्नो, समओ एमेव चवणविरहोऽवि ॥
इग दु ति संखमसंखा,इग समए हुंति य चवंति॥२२२॥

अर्थ—(सव्वेसिपि) के० भुवनपतिथी आरभी सर्वार्थ सिद्ध सुधीना सर्व स्थानक (जहन्नो) के० जघन्यथी (समओ) के० एक समय उपजवानो विरहकाल होय. (एमेव) के० ए उपपात विरहनी पेठे (चवणविरहोऽवि) के० चवनविरह पण उत्कृष्ट तथा जघन्यथी जाणवो (इग) के० एक, (दु) के० बे, (ति) के० त्रण एम यावत् (संख) के० सख्याता अने (असंख)के० असंख्याता देवता

(इग समए) के० एक समयने विषे (हुंति) के० उपजे छे, (य) के० अने (चवंति) के० चवे छे. तात्पर्य ए छे के-भुवनपतिथी आरंभीने सहस्रार देवलोक सुधी जघन्यथी एक समयमां जो उपजे तो एक बे अथवा त्रण उपजे तथा चवे. अने उत्कृष्टथी संख्याता अथवा असंख्याता उपजे तथा चवे. कारण के-सहस्रार देवलोक सुधी तो तिर्यंच पण जाय छे माटे असंख्याता उपजे अने चवे. ए आठमा सहस्रार देवलोकथी उपरना देवता एक समये संख्याता उपजे अने संख्याता चवे. कारण के-त्यां मनुष्यज जाय छे, अने त्यांथी चवेलो देवता पण मनुष्यज थाय छे. माटे मनुष्य संख्याताज छे, तेथी आनतादि देवता संख्याता उपजे अने संख्याता चवे.॥२२२॥ ए उपपात तथा चवन संख्या द्वार कह्युं. ॥

हवे देवगतिमां कइ कइ गतिना जीवो आवे छे ? ते आगति द्वार कहे छे.

नर पंचिंदिय तिरिया, णुप्पत्ती सुरभवे पजत्ताणं ॥
अज्झवसाय विसेसा, तेसिं गइ तारतम्मं तु ॥२२३॥

अर्थ—(पजत्ताणं) के० पर्याप्ता एवा (नर) के० मनुष्य तथा पर्याप्ता (पंचिंदियतिरियाण) के० पंचेंद्रिय तिर्यंच ए बे गतिना जीव (सुरभवे) के० देवगतिमांहे (उप्पत्ती) के० उपजे छे. तेमां पण विशेष कारण कहे छे के-कोइ जीव भुवनपति, कोइ व्यंतर, कोइ ज्योतषी, कोइ वैमानिक थाय, तेमां पण कोइ ऋद्धिवंत, कोइ महर्द्धिक, कोइ अल्प ऋद्धिवंत, कोइ बहु आयुष्य-वालो, कोइ थोडा आयुष्यवालो इत्यादिक विशेषपणानुं कारण पोताना (अज्झवसायविसेसा) के० अध्यवसायना विशेषपणाये करीने (तेसिं) के० ते देवतानी (गइतारतम्मं) के० गतिनुं

भिन्नभिन्नपणुं छे अध्यवसाय ए मननो व्यापार छे, ते व्या पार तीव्र, तीव्रतर तीव्रतम एम जूदो जूदा होवाथी जूदी जूदी देवगति पामे छे ॥ २२३ ॥

वली कयाकया जीवो देवगति पामे ते कहे छे

नरतिरि असखजीवी सव्वे नियमेण जंति देवेसु ॥
नियआउय समहीणा-उएसु ईसाण अंतेसु ॥२२४॥

अर्थ—(असखजीवी) के० असख्याता आयुष्यवाला (नर तिरि) के० युगलिया मनुष्य अने तिर्यंच (सव्वे) के० ते सर्वे (नियमेण) के० निश्चेथी (देवसु जंति) के० देवतामा जाय छे ते (नियआउय) के० पोताना युगलिक भवमा जेटलु आयुष्य होय तेना (सम) के० तुल्य आयुष्ये अथवा (हीणाउएसु) के० ओछा आयुष्ये (ईसाणअंतेसु) के० एटला आयुष्यवाला ईशान देवलोकसुधीना देवतामा उपजे, पण अधिक आयुष्ये नहीं. कारण के-युगलीया मनुष्यने उत्कृष्ट आयुष्य त्रण पल्योपमनु होयछे अने ते आयुष्य ईशानदेव लोक सुधी होय छे माटे ॥ २२४ ॥

अहिं विशेष समजवानु ए छे के-पल्योपमने असख्यातमे भागे असख्याता आयुष्यवाला युगलिया, पचिंद्रिय तिर्यंच, पखी, छप्पन्न अतर द्वीपवाला तिर्यंच, मनुष्य युगलिया ए सर्वे मरीने भुवनपति तथा व्यतरने विषे उपजे, पण ज्योतसी प्रमुखने विषे उपजे नहीं कारण के-ज्योतषीमाहे पल्योपमनो आठमो भाग आयुष्यछे माटे, अने बीजा युगलिया यथायोग्यपणे पोत पोताना आयुष्य समाने अथवा आछे आयुष्ये ईशान देवलोकसुधी उपजे, तेथी उपरना देवलोकमा उपजवानो निषेध छे ॥

जंति समुच्छिमतिरिया, भवणवणेसु न जोइमाईसु ॥
जं तेसिं उववाओ, पलियासंखंसआऊसु ॥ २२५ ॥

अर्थ—(समुच्छिमतिरिया) के० समूर्छिमतिर्यंच मरीने (भवणवणेसु) के० भवनपतिने विषे तथा व्यंतरने विषे (जंति) के० जाय छे, पण (जोइमाईसु) के० ज्योतषी विगेरेमां (न) के० न जाय. (जं) के० कारणके (तेसिं) के० ते समूर्छिमतिर्यंच उत्कृष्टथी (पलियासंखंसआउसु) के० पल्योपमना असंख्यातमा भागना आयुष्यवाला देवतामांज (उववाओ) के० उपजे छे, पण तेथी वधारे आयुष्यवालामां उपजे नहीं. ॥ २२५ ॥

हवे अध्यवसाय विशेषे गतिनुं तरतमपणुं कहे छे.

बालतवे पडिवद्धा, उक्कडरोसा तवेण गारविया ॥
वेरेण य पडिवद्धा, मरिउं असुरेसु जायंति ॥२२६॥

अर्थ—(बालतवे) के० अज्ञानतपने विषे (पडिवद्धा) के० आसक्त थयेला, (उक्कडरोसा) के० उत्कृष्ट रोष धरनारा, (तवेण गारविया) के० तपथी अहंकार करनारा, (य) के० अने (वेरेण पडिवद्धा) के० वैरथी प्रतिबंध करनारा एवा जीवो (मरिउं) के० मृत्यु पामीने (असुरेसु जायंति) के० असुरकुमारमां उपजे छे. ॥ २२६ ॥

रज्जुग्गह वीसभक्खण, जलजलणपवेस तण्हछुहदुहओ ॥
गिरिसिरपडणाउ मुया, सुहभावा हुंति वंतरिया ॥२२७॥

अर्थ—(रज्जुग्गह) के० गले दोरडानो फांसो खाई मरनारा, (वीसभक्खण) के० विष खाइ मरनारा, (जलजलणपवेस) के० पाणि अथवा अग्निमां प्रवेशकरी मरनारा, (तण्हछुहहओदु)

के० तरस अथवा भूखना दुःखथी मरनारा, अने (गिरिसिरपड-णाउ मुया) के० पर्वतना शिखरउपरथी पडीने मरनारा जीवो (सुहभावा) के० जो शूलपाणीनी पेठे शुभ भावथी मरे तो (वतरिया हुति) के० व्यंतर देवता थाय छे ॥ २२७ ॥

तावस जा जोइसिआ, चरगपरिवाय बभलोगो जा ॥
जा सहसारो पंचिंदि–तिरिय जा अच्चुओसड्ढा ॥२२८

अर्थ—(तावस) के० कंदमूलनु भक्षण करनारा वनवासी तपस्वीओ मरीने (जा जोइसिया) के० भुवनपतिथी आरभी ज्योतषी देवता सुधी जाय तथा (चरगपरिवाय) के० चार पाच भेगा थई भिक्षा मागे ते चरक अने कपिलमति परिव्राजक त्रि-दडिया ते मरीने (बभलोगो जा) के० भुवनपतिथी आरभी उत्कृष्टा ब्रह्मदेव लोक सुधी जाय. तथा (पचिंदितिरिय) के० गर्भज पर्याप्ता पचेंद्रिय तिर्यंच ते हाथी वगेरे विगेरे जीवो कवल सनलनी पेठे सम्यक्त्व देशविरति सहित मरीने उत्कृष्टथी (जा सहसारो) के० सहस्रार देवलोक सुधी जाय अने (सड्ढा) के० श्रावक मनुष्य मरीने उत्कृष्टथी (जा अच्चुओ) के० बारमा अच्युत देवलोक सुधी जाय ॥ २२८ ॥

जइलिंग मिच्छदिट्ठी, गेविज्जा जाव जंति उक्कोस ॥
पयमवि असद्दहंतो, सुत्तत्थ मिच्छदिट्ठीओ ॥ २२९ ॥

अर्थ—(जइलिंग मिच्छदिट्ठी) के० साधुना वेषने धारण करनारो मिथ्यादृष्टि जीव क्रियाना बलेकरी अगारमर्दकाचार्यनी पेठे (उक्कोस) के० उत्कृष्टथी (गेविज्जा जाव जंति) के० नवग्रैवेयक सुधी उत्पन्न थाय वली ते मिथ्यादृष्टि कोने कहेवाय ?

तो के जे (सुतत्थं) के० सुत्र तथा अर्थना (पयमवि) के० एक पदने पण (असद्दहंतो) के० सद्दहे नहीं तो ते (मिच्छदिट्ठीओ) के० मिथ्या दृष्टि जाणवो. ॥ २२९ ॥ अहिं सूत्रनुं लक्षण कहे छे.

सुत्त गणहररइयं, तहेव पत्तेयबुद्धरइयं च ॥
सुयकेवलिणा रइयं, अभिन्नदसपुव्विणा रइयं ॥२३०॥

अर्थ—(गणहररइयं) के० सौधर्म स्वामी प्रमुख गणधरनां रचेलां आचारांगादिक, (तहेव) के० तेमज (पत्तेयबुद्धरइयं) के० नेमिराजा विगेरे प्रत्येक बुद्धना रचेला नेमिप्रव्रज्यादिक, वली (सुयकेवलिणारइयं) के० चउद पूर्वधर श्रुतकेवली शय्यंभवसूरि प्रमुखनां रचेलां दश वैकालिकादिक, अने (अभिन्नदसपुव्विणा रइयं) के० संपूर्ण दश पूर्वधरनां रचेलां ग्रथा ते सर्व (सुत्तं) के० सूत्र कहेवाय ॥ २३० ॥

अत्थं भासइ अरिहा, सुत्तं गुत्थंति गणहरा निउणा ॥
सासणस्स हियट्ठाए, तओ सुत्तं पवत्तइ ॥ २३१ ॥

अर्थ—(अरिहा) के० अरिहंत प्रभु (अत्थं) के० अर्थने कहे. ते उपरथी (निउणा) के० चतुर एवा (गणहरा) के० गणधरो (सुत्तं) के० सूत्रने (गुत्थंति) के० गुंथे छे. (तओ) के० त्यार पछी (सासणस्स हियट्ठाए) के० शासन हितार्थे (सुत्तं पवत्तइ) के० सूत्र प्रवर्त्ते ॥ २३१ ॥

पयमक्खरंपि एगं, जो नवि रोएइ सुत्तनिद्दिट्ठं ॥
सेसं रोयइ अ बहु, मिच्छादिट्ठी मुणेयव्वो ॥२३२॥

अर्थ—जो के० जेने (सुत्तनिद्दिट्ठं) के० सूत्रमां कहेलुं

(पयमक्खरपि एग) के० एक पद अथवा एक अक्षर (नरोएइ) के० न रुचे (अ) के० अने (सेस) के० ते शिवायनु बीजु (बहु रोयइ) के० बहु रुचे ते (मिच्छाद्दिठ्ठि) के० मिथ्या दृष्टि जीव (मुणेयव्वो) के० जाणवो ॥ २३२ ॥

छउमत्थमजयाण, उववाओ उक्कोस सव्वट्ठे ॥
तेसिं सङ्ढाणपि य, जहन्नओ होइ सोहम्मे ॥ २३३ ॥

अर्थ—(छउमत्थमजयाण) के० छद्मस्थसाधुओनुं (उववाओ) के० उपजवुं (उक्कोस) के० उत्कृष्टथी (सव्वठ्ठ) के० सर्वार्थसिद्ध विमान सुधी होय छे अने (तेसिं) के० ते साधुओनुं तथा (सङ्ढाणपिय) के० श्रावकनु (जहन्नओ) के० जघन्यथी (सोहम्मे) के० सौधर्म देवलोकने विषे उपजवु (होइ) के० होय छे ॥ २३३ ॥

लंतमि चउदपुव्विस्स, तावसाईण वंतरेसु तहा ॥
एसो उववायविहि, नियकिरियठियाण सव्वोवि ॥२३४॥

अर्थ—(चउदपुव्विस्स) के० चउद पूर्वधर साधुनु (लंतमि) के० लांतक देवलोक सुधी उपजवु होय. (तहा) के० तेमज (तावसाईण) के० तापस सन्यासी शाक्यादिकनुं जघन्यथी (वंतरसु) के० व्यंतर देवलोकने विषे उपजवुं होय. (एसो) के० आ पूर्व कहेलो (सव्वोवि) के० सर्व पण (उववायविहि) के० उपजवानो विधि ते (नियकिरियठियाण) के० पोतपोतानी क्रियाने विषे सावधान रहेनारो जाणवो अने प्रज्ञापना सूत्रमां तो तापसने जघन्यथी भवनपतिमा उपजवु कह्यु छे ॥ २३४ ॥

अणुगय महव्वएहि य, बालतवाकामनिज्जराए य ॥
देवाउय निबंधइ, सम्मदिट्ठी य जो जीवो ॥ २३५ ॥

अर्थ—(अणुव्वय महव्वएहिं य) के० अणुव्रत अथवा महाव्रतने पालनारो, (वालतवाकामनिज्जराए य) के० वालतप तथा अकाम निर्जरानो करनार, एवो (.जो) के० जे (सम्मदीट्टी य) जीवो के० सम्यक् दृष्टि जीव छे ते (देवाउयं निबंधइ) के० देवतानुं आयुष्य बांधे छे. ॥ २३६ ॥ उक्तम् ॥

नाणस्स केवलीणं, धम्मायरियस्स सव्वसाहूणं ॥
माई अवण्णवाई, किव्विसियभावगं कुणइ ॥ २३६ ॥

अर्थ—(नाणस्स) के० ज्ञानना, (केवलीणं) के० केवलीना, (धम्मायरियस्स) के० धर्माचार्यना अने (सव्वसाहूणं) के० सर्व साधुना (अवण्णवाई) के० अवर्णवादने वोलनारो अने (माई) के० कपट करनारो जीव (किव्विसियभावणं) के० किल्वीशिक एटले पापी भावनाने (कुणइ) के० करे छे. एटले किल्विषिक देवपणे उत्पन्न थाय छे. ॥ २३६ ॥

कोऊय भूइकम्मे, पसिणापसिणे निमित्तमाजीवे ॥
इड्ढिरससायगरुओ, अभिओगं भावणं कुणई ॥२३७॥

अर्थ—(कोउयभूइकम्मे) के० कौतुक अथवा स्नानादिक भूतिकर्म करनार, (पसिणापसिणे) के० प्रश्नथी निमित्त कहेनार अथवा प्रश्न विना निमित्त कहेनार, (निमित्तमाजीवे) के० निमित्तियाना कर्मथी आजीविका करनार, तेमज (इड्ढिरससायगरुओ) के० ऋद्धिगारव. रसगारव अने शातागारव करनारो जीव (अभिओगं भावणं) के० अभियोगिक भावनाने (कुणई) के० करे छे. एटले सेवक देवपणे उत्पन्न थाय छे. ॥ २३७ ॥

हवे अभियोगिक भावनानुं स्वरूप कहे छे.

दुविहो खलु अभिओगो, दव्वे भावे य होइ नायव्वो॥
दव्वंमि होइ जोगा, विज्जा मंता य भावमि ॥२३८॥

अर्थ—[अभिओगो] के० अभियोग (दुविहो) के० बे प्रकारनो छे (खलु) के० निश्चे, ते (दव्वे भावे) के० द्रव्य अभियोग अने भाव अभियोग (नायव्वो) क० जाणवा योग्य [होइ] के० होय छे. तेमा (दव्वमि) के० द्रव्य अभियोगने विषे (जोगा होइ) के० मनादि निमित्त जोग होय छे (य) के० अने (भावंमि) के० भाव अभियोगने विषे (विज्जा मंता) के० आगमादि विद्या अने मत्रो होय छे. ॥ २३८ ॥

हवे संघयणना विशेषपणाथी देवतानी गति विशेष होय छे, माटे संघयणनु स्वरूप कहे छे.

वज्जरिसहनारायं, पढम बीय च रिसहनाराय ॥
नारायमद्धनाराय–कीलिया तहय छेवट्ठं ॥ २३९ ॥
एए छ संघयणा, रिसहो पट्टो य कीलिया वज्ज ॥
उभओ मक्कडबंधो, नाराओ होइ विन्नेओ ॥२४०॥

अर्थ—जे शरीरना हाडकानो अति मजबुत बंध ते संघयण कहेवाय तेना छ भेद छे, (पढम) के० पहलो (वज्जरिसहनाराय) क० वज्रऋषभ नाराच १, (बीयं) के० बीजो (रिसहनाराय) के० ऋषभ नाराच २, त्रीजो (नाराय) के० नाराच ३, चोथो (अद्धनाराय) क० अर्द्ध नाराच ४, पाचमो (कीलिया) के० कीलिका ५, (तहय) के० तेमज छट्ठा (छेवट्ठ) के० सेवार्त ॥ ६ ॥ २३९ ॥ (एए) के० ए पूर्व कहला (छ संघयणा) के०

छ संघयण जाणवा. तेमां (रिसहो) के० ऋषभ ते (पट्टो) के० पाटो जाणवा. (य) के० अने (कीलिया) के० खीलो ते (वज्ज) के० वज्र कहेवाय. तथा (उभओ मक्कडबंधो) के० बन्ने बाजुए मर्कटबंध एटले हाडकाना मर्कटाकारे बंध (नाराओ) के० ते नाराच (विन्नेओ) के० जाणवा योग्य (होइ) के० होय छे. ॥ २४० ॥

कीलिका रहित ते बीजो ऋषभनाराच, फक्त मर्कटबंध ते त्रीजो नाराच, एक बाजुए मर्कटबंध अने एक बाजुए कीलिका ते अर्द्ध नाराच. जेमां हाडकानो संबंध एकली खीली सरखा ते कीलिका, अने जेमां बे हाडकाना छेडा परस्पर फक्त अडेला पण खीली विगेरे कांई न होय ते सेवार्त्त अथवा छेवट्टुं संघयण जैन शास्त्रमां कह्युं छे.

हवे कया जीवोने केटला संघयण होय ? ते कहे छे.

छ गब्भ तिरि नराणं, समुच्छिमपणिंदि विगल छेवट्ठं ॥
सुरनेरइया एगिं-दिया य सव्वे असंघयणा ॥ २४१ ॥

अर्थ—(गब्भतिरि नराणं) के० गर्भज तिर्यंच तथा मनुष्यने (छ) के० छ संघयण होय. वली (समुच्छिमपणिंदि) के० समूर्च्छिम पंचेंद्रि तिर्यंच, तथा समूर्च्छिम मनुष्य अने (विगल)के० बे इंद्रिय तेइंद्रिय तथा चउरिन्द्रियरुप विगलद्रियने एक (छेवट्ठं) के० सेवार्त एटले छेवटुं संघयण होय. वली (सुर) के० देवता, (नेरइया) के० नारको अने (सव्वे एगिंदिया) के० सर्व एकेंद्रिय जीवो (असंघयणा) के० संघयण रहित होय छे, कारण हाडकानी रचना ते संघयण कहेवाय. ते देवता नारकी तथा एकेंद्रियमां नथी,

तो पण देवतामां अस्थिमय संघयण विना जे शक्ति छे तेने पण उपचारथी संघयण कहेवाय. कारण देवतामा पण चक्रवरथी पण अधिक शक्ति होय छे, तेथी देवतामा वज्रऋषभनाराच संघयण होय छे तेमज अल्पशक्ति एकेंद्रियमा पण होय छे, तेथी एकेंद्रियने छेवटुं संघयण कहेवाय परंतु मूल भागे तो देवतामा संघयण नथी ॥ २४१ ॥

हवे संघयणथकी गति कहे छे

छेवट्ठेण उ गम्मइ, चउरो जा कप्प कीलियाइसु ॥
चउसु दुदुकप्प वुड्ढी, पढमे णं जाव सिद्धीवि ॥ २४२ ॥

अर्थ—(छेवट्ठेण) के० छेवट्ठे संघयणे करी अध्यवसायना विशेषपणाथकी जीव (चउरो जाकप्प) के० भुवनपति व्यंतर ज्योतिषी अने वैमानिकना चोथा देवलोक सुधी (उ गम्मइ) के० जाय छे. त्यार पछी (कीलियाईसु चउसु) के० किलिकादिक चार संघयणने पाछलथी गणतां चारे संघयणे करी (दुदुकप्पवुड्ढी) के० बे बे देवलोकनी चढती चढती उपजे ते आ प्रमाणे—कोलिका संघयणवालो जीव पांचमा तथा छट्ठा देवलाक सुधी जाय, अर्द्धनाराच संघयणवालो शुक्र अने सहस्रार देवलोक सुधी जाय नाराच संघयणवालो जीव आनत अने प्राणत देवलोक सुधी जाय. ऋषभनाराच संघयणवालो जीव आरण अने अच्युत देवलोक सुधी जाय, अने (पढमेण) के० वज्रऋषभनाराच संघयणवालो जीव (जावसिद्धीवि) के० भुवनपतिथी आरम्भी मोक्ष सुधी जाय॥२४२॥

हवे शरीरनी आकृतिने संस्थान कहेवाय छे ते संस्थान छ प्रकारना छे तेना नाम तथा लक्षण कहे छे

सनत्कुमारथी आरंभी सहस्रार देवलोक सुधीना देवता चवीने (एगिंदिएसु) के० एकेंद्रियने विषे (नो जंति) के० उपजे नहीं. वली (आणयपमुहा) के० आनत देवलोकथी आरंभी पांच अनुत्तर विमान सुधीना देवता (चविउं) के० चवीने (मणुएसु) के० संख्याता आयुष्यवाला पर्याप्ता मनुष्यमांहे (चेव) के० निश्चे [गच्छंति] के० जाय छे. ॥ २४७ ॥

हवे जे देवताने जेवी रीते देवांगना साथे संभोग छे अने जे देवताने सर्वथा संभोग नथी ते कहे छे.

दो कप्प कायसेवी. दो दो दो फरिसरूवसद्देहिं ॥
चउरो मणेणुवरिमा, अप्पवियारा अणंतसुहा ॥२४८॥

अर्थ—(दोकप्प कायसेवी) के० भुवनपति व्यंतर ज्योतषी तथा सौधर्म अने ईशान ए बे देवलोक सुधीना देवता अति उत्कृष्ट कामवेदनाथी मनुष्यनी पेठे विषय सुख भोगवे. ते उपरना (दो) के० सनत्कुमार तथा माहेंद्र देवलोकना देवता देवांगनानां (फरिस) के० स्तन भुज विगेरे अंगस्पर्शथी भोगसुख पामे छे. ते उपरना [दो] के० ब्रह्म अने लांतक देवलोकना देवता देवांगनानां (रूव) के० रूप देखीने विषय सुख पामे छे. ते उपरना (दो) के० शुक्र अने सहस्रार देवलोकना देवता देवांगनानां (सद्देहिं) के० गीतहास्य विलासादिना शब्द सांभलवाथी संभोग सुखनी तृप्ति पामे छे. ते उपरना (चउरो) के० आनतादि चार देवलोकना देवताओ (मणेण) के० मनमां देवांगनानुं स्मरण करवाथी तृप्ति पामे छे. तेथी (उवरिमा) के० उपरना एटले नव ग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तरना देवताओ तो (अप्पवियारा) के० अल्पविकारीपणाने लीधे विषय सुखथी रहित होवाथी (अणंतसुहा) के० अनंत सुखवाला छे. ॥ २४८ ॥

कहु छे के—

जं च कामसुह लोए, जं च दिव्व महासुह ॥
वीयरायसुहस्सेय–णतभागपि नग्घइ ॥ २४९ ॥

अर्थ—(लोए) के० लोकमा (ज कामसुह) के० जे काम सुख छे (च) के० अने (ज) के०जे (दिव्व महासुह) के० देव सबंधी महासुख छे त सुख (वीयरायसुहस्सेय) के० वीतराग एटले, राग-द्वेष रहित एवा प्रभुना सुखना (णतभागपि) के० अनता भागने पण (नग्घइ) के० पामता नथी अर्थात् प्रभुने जे सुख छे तेना अनतमा भागनु सुख देवताने पण नथी ॥ २४० ॥

हो देवीओनी उत्पत्तिनु स्थान कहे छे

उववाओ देवीण, कप्पदुग जा परो सहस्सारा ॥
गमणागमण नत्थी, अ‍ुअपरओ सुराणपि ॥ २५० ॥

अर्थ—(देवीण) के० देवीओनु (उववाओ) के० उपजवु त (कप्पदुग जा) के० भुवनपतियो आरंभी ईशान देवलोक सुधी छे तेथी उपरना देवलोकमा देवीओनु उपजवु नथी परन्तु देवताना उपभोग माटे सौधर्म तथा ईशान देवलोकनी अपरिगृहिता देवीओ उपरना देवलोकमा जाय ता (परो सहस्साग) के० उपरना सहस्रार देवलोक सुधी जाय. त्याथी उपरना देवलोकमा (गमणागमण नत्थी) के० देवीओनु जवु आववु नथी अने (अच्चुअप रओ सुराणपि) के० अच्युत देवलोकथी उपर तो देवताओनु पण जवु आववु नथी. तेमज नव ग्रैवेयक तथा पाच अनुत्तर विमानवासी देवताओने नीचे आववानु प्रयोजन नथी तीर्थंकरना कल्याणिक अवसर पण पोताना स्थानके रह्या छता नमस्कारादिक करे छे

वाली देवीओ (आणय) के०आनत देवलोकना देवताने भाग योग्य जाणवी. त्यार पछी समय समय वधारता जेटलामां (पन्नासा) के० पचास पल्योपम थाय तेटला आयुष्यवाली देवीओ (आरग देवाण) के० आरण देवलोकना देवताने भाग योग्य जाणवी ॥ २५३ ॥ (ईसाणे) के० ईशान देवलोकमां अपरिग्रहिता देवीओना (चउ लक्खा) के० चार लाख विमान छे. तेमां (साहिय पलियाइ) के० जे देवीओनुं साधिक एक पल्योपमनुं आयुष्य छे ते ईशान देवलोकना देवतानेज भाग योग्य जाणवी. त्यार पछी (समय अहिय) के० समय समय अधिक वधारतां (जाव) के०जे देवीओनुं (जा पनर पल्लय ठिइ) के० ज्यां सुधी पनर पल्योपमनी आयुष्य स्थिति थाय, (ताओ) के० तेटला आयुष्यवाली देवीओ (माहिंद देवाणं) के० माहेंद्र देवलोकना देवताओने भाग योग्य जाणवी ॥ २५४ ॥ (एएण कमेण) के० ए अनुक्रमे करीने (समयाहियपलियदसगवुड्ढीए) के० एक एक समयथी आरंभीने दश दश पल्योपमनी वृद्धि (भवे) के० होय. जेथी पच्चीस पल्योपम सुधीना आयुष्यवाली देवीओ (लंत) के० लांतक देवलोकना देवताने भाग योग्य जाणवी. पांत्रीश पल्योपम सुधीना आयुष्यवाली देवीओ (सहस्सार) के० सहस्रार देवलोकना देवताओने भाग योग्य जाणवी. पीस्तालीश पल्योपम सुधीना आयुष्यवाली देवीओ (पाणय) के० प्राणत देवलोकना देवताने भाग योग्य जाणवी. अने (पणपन्ना) के० पंचावन पल्योपम सुधीना आयुष्यवाली देवीओ (अच्चुअदेवाण) के० अच्युत देवलोकना देवताने भाग योग्य जाणवी. ॥ २५५ ॥

हवे छ लेश्यानुं स्वरूप तथा देवताने केटली लेश्या होय ते कहेछे.

पंथाओ परिभट्ठा, छ प्पुरिसा अडविमज्झयारंमि ॥
जम्बूतरुस्स हिट्ठा, परोपर ते विचिंतंति ॥ २५६ ॥

अर्थ—(पंथाओ) के० मार्गथी (परिभट्ठा) के० भूला पडेला (छ प्पुरिसा) के० छ पुरुषो (अडविमज्झयारंमि) के० अरण्यना मध्ये (जम्बूतरुस्स हिट्ठा) के० जंबुवृक्षनी नीचे उभा रह्या अने (ते) के० ते पुरुषो (परोपर) के० परस्पर (विचिंतंति) के० विचार करवा लाग्या ॥ २५६ ॥

निम्मूलखंधसाला-गुच्छेपक्केपडियसडियाइ ॥
जह एएसिं भावा, तह लेसाओ नायव्वा ॥ २५७ ॥

अर्थ—तेमां एक पुरुष जांबूना फलनी इच्छाथी जांबुना वृक्षने (निम्मूल) के० मूलमांथी उखाडी नाखवानो विचार करवा लाग्यो, बीजो पुरुष (खंध) के० थडने तोडी पाडवानी इच्छा करवा लाग्यो, त्रीजो पुरुष (साला) के० नानी डालोने छेदी नाखवानी इच्छा करवा लाग्यो, चोथो पुरुष (गुच्छे) के० नाना पाना फल लागेला गुच्छाने छेदवानो विचार करवा लाग्यो, पांचमो पुरुष वृक्ष उपर लागेला (पक्के) के० पाका फलोनेज तोडवानी इच्छा करवा लाग्यो, अने छट्ठो पुरुष तो (पडिय सडियाइ) के० नीचे खरी पडेला फलोने लेवानी इच्छा करवा लाग्यो (जह) के० जेवी रीते (एएसिं) के० ए छ पुरुषना (भावा) के० स्वभाव थया (तह) के० तेवा (लेसाओ) के० छ लेश्याना भाव (नायव्वा) के० जाणवा ॥ २५७ ॥

णिद्धंजिमुत्तवण्णाभा, गवलरिट्ठसमप्पभा ॥
खंजणनयणसकासा, लेसाओ कण्ह वण्णओ ॥२५८॥

अर्थ—(णिद्धजिमूतवण्णाभा) के० स्निग्ध मेघसमान वर्णवाली, (गवलयरीट्ठसमप्पभा) के० भेंसना शींग अथवा अरिष्टरत्नना समान कांतिवाली, (खंजण वण्ण संकासा) के० गाडाना पैडानी मेंसना वर्ण सरखी (कण्हवण्णओ) के० कृष्णवर्णनी पहेली (लेसाओ) के० कृष्ण लेश्या जाणवी ॥ २५८ ॥

पल्लवासोय संकासा, चासपिच्छसमप्पभा ॥
वेरुलीयरयणाभा, वण्णाओ, नीललेसाओ ॥ २५९ ॥

अर्थ—(पल्लवासोअसंकासा) के० अशोक वृक्षना पल्लव समान कांतिवाली. (चासपिच्छसमप्पभा) के० चास पक्षीना पीछाना समान वर्णवाली, अने (वेरुलीयरयणाभा) के० वइडुर्यरत्नना समान कांतिवाली वर्णथी नीललेसाओ के० बीजी नील लेश्या जाणवी ॥ २५९ ॥

अलसीकुसुमाइवण्णाभा,जारिसीकोइलतलपीच्छच्छदा ॥
पारावयगीवसमा, वण्णाओ काउलेसाओ ॥ २६० ॥

अर्थ—(अलसीकुसुमाइ वण्णाभा) के० अलसी पुष्प विगेरेना सरखी कांतिवाली, (जारिसीकोइलतुलपीच्छच्छदा) के० जरसी अथवा कोयलना पीच्छना समान वर्णवाली. वली (पारावयगीवसमा) के० पारेवाना कंठ समान कांतिवाली वण्णाओ के० वर्णथी (काउलेसाओ) के० त्रीजी कापोत लेश्या जाणवी ॥२६०॥

तेउलेसा भवे वण्णा, हिंगुलरागसन्निभा ॥
तरुणाइच्चसमा कंती, दीवसमा होइ सुअतुंडा ॥ २६१ ॥

अर्थ—(हिंगुलरागसन्निभा) के० हिंगलाना रंग सरखी, (तरुणाइच्च समाकंति) के० उगता सूर्यना सरखी कांतिवाली, (दीव-

समा) के० दीवा सरखी, (मुअङ्गुडा) के० पोपटनी चाच समान (वण्णा) क० वर्णथी (तेउलेसा) के० चोथी तेजो लेश्या (भवे) क० श्रेष्ठ (होइ) के० होय छे ॥ २६१ ॥

हरियालभज्झरागा, हरिद्दायसमप्पभा ॥
सणासण कुसुम समा, वण्णाओ पह्मलेसाओ ॥२६२॥

अर्थ—(हरियाल भज्झरागा) के० हरतालना भांगरा समान, (हरिद्दाय समप्पभा) क० हलदरना रंग समान कांतिवाली, (स णासण कुसुम समा) क० सणवाना फुल समान (वण्णाओ) क० वर्णथी पांचमी (पह्मलेसाओ) के० पद्मलेश्या जाणवी ॥ २६२ ॥

सुक्कलेसा भवे वण्णा, ससकुंदसमप्पभा ॥
खीरधरदुधधवला, मुत्ताहलहाररययसमा ॥ २६३ ॥

अर्थ—(ससकुन्दसमप्पभा) क० शंख अथवा मोगराना फुल समान उज्ज्वल, (खीरधरदुधधवला) क० क्षीर समुद्रना दुध समान उज्ज्वल, तथा (मुत्ताहलहाररययसमा) क० मुक्ताफलना हार अथवा रूप्य समान (वण्णा) के० वर्णथी (सुक्कलेसा) क० छठी शुक्ललेश्या (भवे) क० होय छे ॥ २६३ ॥

जह कडुओ तुवरसो, निंवरसो कडुयरोहिणीयरसो ॥
एत्तोवि अणतगुणो रसो उ किण्हाए नायव्वो ॥२६४॥

अर्थ—(जह) के० जेवो (कडुओतुवरसो) के० कडवी तुंबीनो रस होय (निंवरसो) क० लींबडानो रस होय, (कडुय रोहिणी यरसो) के० कडवी गलोनो रस होय (एत्तोवि) के० एनाथी पण (अणतगुणो) क० अनंतगुणो (रसो) क० कडवो

रस (कण्हाए) के० कृष्ण लेश्यानो (नायव्वो) के० जाणवो ॥२६४॥

जह तियगडुस्स य रसो, तिक्खो जह हत्थिपीप्पलीए य ॥
एत्तोवि य णंतगुणो, रसो उ नीललेस्साए ॥ २६५ ॥

अर्थ—(जह) के० जेवो (तियगडुस्स) रसो के० सुंठ पींपर अने मरीरूप त्रिकटुनो (तिक्खो) के० तीखो रस होय, (जह) के० जेवो (हत्थिपीप्पलीए) के० गजपीपरनो तीखो रस होय. एत्तोवि) के० एथी पण (अणंतगुणो) के० अनंतगुणो (रसो) के० तीखो रस (नीललेस्साए) के० नीललेश्यानो जाणवो. ॥ २६५ ॥

जह तरुणचूयरसो, कविठ्ठ कच्चस्स वावि जाव रसो ॥
एतोवि अणंतगुणो, रसो य काओय लेसाओ ॥२६६॥

अर्थ—(जह) के० (तरुणचूयरसो) के० काचा आंवाना फलनो रस होय, (वावि) के० अथवा पण (कविठ्ठ कच्चस्स) के० काचा कोठ फलनो (जाव रसो) के० जेवो रस होय, (एत्तोवि) के० एनाथी पण (अणंतगुणो) के० अनंतगुणो) के० अनंतगुणो (रसो) के० कषायलो रस (काओय) लेसाओ) के० कापोतलेश्यानो जाणवो. ॥ २६६ ॥

जह परिणयअंबरसो, पक्ककविठ्ठस्स वावि जारिसओ ॥
एत्तोवि अणंतगुणो, रसोय तेऊए नायव्वो ॥ २६७ ॥

अर्थ—(जह) के० जेवो (परिणय अंबरसो) के० पाकेला आंवाना फलनो रस होय, (वावि) के० अथवा (पक्ककविठ्ठस्स) के० पाकेला क फलनो (जारिसओ) के० जेवो रस होय.

(एत्तोवि) के० एनाथी पण (अणतगुणो) क०अनंतगुणो (रसो) के० मीठरस (तेऊए) के० तेजो लेश्यानो (नायव्वो) क० जाणवो ॥ २६७ ॥

पम्हाए एरिसरसो, वरवारुणि आसवाण जारिसओ ॥
महुमेरगस्सव रसो, तत्तोविय होइ णतगुणो ॥२६८ ॥

अर्थ—(पम्हाए) के० पद्मलेश्यानो (एरिसरसो) क०एवो रस छे. केवो छे ? ते कहे छे. (वरवारुणि) के० श्रेष्ठ मदिरानो तथा (आसवाण) क० विविध आसवोनो (जारिसओ) के० जेवो रस होय छे वली (महुमेरगस्सव रसो) के० मद्य तथा मैरेयमदिरानो जेवो रस छे, (तत्तोविय) तेनाथी पण (णतगुणो) के० अनंतगुणो (पद्मलेश्यानो रस होइ) के०होयछे ॥२६८॥

खज्जूर मुदीयरसो, खीररसो खडसक्कररसो वा ॥
एत्तोवि अणतगुणो, रसो सुक्काओ नायव्वो ॥ २६९ ॥

अर्थ—जेवो [खज्जूरमुद्दीयरसो] के० खजूर अने द्राखनो रस होय, तेमज जेवो (खीररसो के० दुधनो रस होय, वा के० अथवा जेवो (खडसक्कररसो) के० खांड अने साकरनो रस होय, (एत्तोवि) के० एनाथी पण (अणतगुणो) के० अनंतगुणो (रसो) के० मीठो रस (सुक्काओ) के० शुक्लेश्यानो (नायव्वो) के० जाणवो ॥ २६९ ॥

हवे लेश्यानो स्पर्श केवो होय ? ते कहे छे

किण्हा न ला काऊ,तिन्निवि फासो य अप्पसत्थाओ ॥
गोजिब्भकरवय तओ,णतगुणो होइ फासो य ॥२७०॥

अर्थ—(किण्हा नीला काऊ) के० कृष्णलेश्या, नीललेश्या अने कापोतलेश्या, (तिन्निवि फासोय) के० ए त्रणे लेश्यानो पण स्पर्श [अपसत्थाओ] के० माठो जाणवो. जेवो (गोजिप्भ कत्रय) के० गायनी जिभ अने करवत, (तओ) के० तेथी (अणंतगुणो) के० अनंतगुणो (फासो) के० ए त्रणे लेश्यानो स्पर्श [होइ] के० होय छे. ॥ २७० ॥

तेऊ पम्हा सुक्का पसत्थलेसाओ एरिसो फासो ॥
वुरनवणीयसिरीसो, णंतगुणो होइ तत्तोवि ॥ २७१ ॥

अर्थ—(तेऊ पम्हा सुक्का) के० तेजोलेश्या, पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्या, ए त्रण सारी लेश्या छे. तेनो (एरिसो फासो) के० एवो स्पर्श होय छे. केवो होय छे ? तो के० (वुरनवणीयसो) के० वूरनामनी वनस्पति तथा माखण अने शिरीषना फुल सरखो जे स्पर्श छे. (तत्तोवि) के० तेनाथी पण ए त्रण लेश्यानो (अणंतगुणो) के० अनंतगुणो श्रेष्ठ स्पर्श (होइ) के० छे. ॥२७१॥

हवे देवताने कइ कइ लेश्या होय ? ते दोढ गाथाथी कहे छे.

किण्णा नीला काऊ, तेऊ पम्हा य सुक्कलेसाओ ॥
भवणवण पढमचउलेस, जोइसकप्पदुगे तेऊ ॥२७२ ॥
कप्पतिय पम्हलेसा, लंताइसु सुक्कलेस हुंति सुरा ॥

अर्थ—(किण्हा) के० कृष्णलेश्या, (नीला) के० नीललेश्या, (काऊ) के० कापोतलेश्या, (तेऊ) के० तेजोलेश्या, (पम्हा) के० पद्मलेश्या, य के० अने (सुक्क) के० शुक्ललेश्या. ए छ (लेस्साओ) के० लेश्या जाणवी. जीव तथा कर्मनो जेणे करी संबंध थाय ते लेश्या कहेवाय छे. तेना द्रव्यलेश्या अने भाव-

लेश्या एना बे भेद छे. आत्माने कृष्ण पीत विगेर द्रव्यपुद्गल सयोग ते द्रव्यलेश्या, तथा शुभाशुभ परिणाम ते भावलेश्या ए अधिकार आगल नारकीना अधिकारमा कहेशे. (भवणवण) क० भवनपति तथा व्यतर देवताने (पढम चउलेस) क० पहेली चार एटले कृष्ण नील कापोत अने तेजो ए चार लेश्या होय छे त्या परमाधामीने एक कृष्णलेश्यो होय छे, अने (जोइसकप्पदुगे) क० ज्योतषी तथा पहेला वे देवलोकने विषे (तेऊ) क० तेजोलेश्या होय छे ॥ २७२ ॥ ते उपरना (कप्पतिय) के० सनत्कुमार माहेद्र अने व्रह्म ए त्रण देवलोकने विषे (पम्ह लेसा) क० एक पद्म लेश्या होय छे. तथा (लताइसु) के० लातक देवलोकथी आरभी उपरना सर्व लोकने विषे (सुरा) के० देवना (सुक्कलेस) क० शुक्कलेश्यावाला (हुति) के० होय छे

भवनपति व्यतर अने ज्योतषी देवोना शरीरनो वर्ण प्रथम देवोना अधिकारमा कह्या छे अहिं वैमानिक देवोना शरीरनो वर्ण अर्द्धी गाथाथी कहे छे

कणगाभ पउमकेसर-वन्ना दुसुतिसु उवरि धवला ॥२७३॥

अर्थ—सौधर्म अने ईशान ए (दुसु) क० देवलोकमां देवताना शरीर (कणगाभ) क० तपता सुवर्ण समान कातिवाला जाणवा. तथा सनत्कुमार माहेंद्र अने व्रह्म ए (तिसु) के० त्रण देवलोकना देवताना शरीर (पउमकेसर वन्ना) के० कमलना केसरना जेवा वर्णवाला जाणवा अने (उवरि) क० ते उपरना सर्व देवलोकना देवताना शरीर (धवला) क० उज्वल वर्णवाला जाणवा ॥ २७३ ॥

हवे देवताना आहारनु तथा श्वासोश्वासनु स्वरूप कहे छे.

दसवाससमहस्साइं, जहन्नमाउं धरंति जे देवा ॥
तेसिं चउत्थाहारो, सत्तहिं थोवेहिं ऊसासो ॥ २७४ ॥

अर्थ—भवनपति तथा व्यंतर देवोमां (जे देवा) के० जे देवता (दसवाससमहस्साइं) के० दश हजार वर्षनुं (जहन्नमाउं) के० जघन्य आयुष्य (धरंति) के० धारण करे छे. (तेसिं) के० ते देवताने (चउत्थाहारो) के० चोथ पछी एटले एक अहोरात्रीने आंतरे आहारनी इच्छा होय. अने ते इच्छा मनोहर पुद्गलोथी पूर्ण करे. तथा तेमने (सत्तहिं) थोवेहिं) के० सात स्तोक करीने (ऊसासो) के० एक श्वासोश्वास होय. ॥ २७४ ॥

हवे पूर्वे कहेला स्तोकनुं प्रमाण कहे छे.

आहिवाहिविमुक्कस्स, नीसासूस्सास एगगो ॥
पाणु सत्त इमो थोवो, सोवि सत्तगुणो लवो ॥२७५॥

अर्थ—(आहि) के० आधि ते मननी पीडा अने (वाहि) के० व्याधि ते शरीरनी पीडा. ते बन्ने पीडाथी (विमुक्कस्स) के० मुक्त थयेला एवा पुरुषनो (एगगो) के० एक एवो (नीसासूस्सास) के० श्वासोश्वास ते (पाणु) के० एक प्राण कहीये. अने (सत्त इमो) के० एवा सात प्राणे (थोवो) के० एक स्तोक कहीये. (सोवि सत्तगुणो) के० तेवा सात स्तोके (लवो) के० एक लव थाय ॥ २७५ ॥

हट्ठस्स अणवगल्लस्स, निरुवकट्ठस्स जंतुणो ॥
एगे उसासनिस्सासे, एसो पाणुत्ति वुच्चइ ॥ २७६ ॥

अर्थ—(हट्ठस्स) के० हर्षवंत, [अणवगल्लस्स] के० उद्वेग

रहित अने (निरवकट्ठस्स) के० रोग रहित एवा (जंतुणो) के० प्राणीनो (एग उसासनिसासे) के० एक श्वासोश्वास (एसो) के० ए (पाणुत्ति वुच्चइ) कहेवाय छे. ॥ २७६ ॥

एगा कोडि सतसट्ठी, लक्खा सतहत्तरी सहस्सा य ॥
दोय सया सोलहिया, आवलिया इगमुहुत्तेण ॥२७७॥

अर्थ—(एगा कोडी) के० एक क्रोड, (सतसट्ठी लक्खा) के० सडसठ लाख (सतहत्तरी सहस्साय) के० सत्योतेर हजार, (दोय सया) के० अने (सोल्हिया) के० शोल अधिक एटली (आवलिया) क० आवलिका (इगमुहुत्तेण) के० एक-मुहूर्तमा थाय छे ॥ २७७ ॥

लवसत्तहत्तरीए, होइ मुहुत्तो इममि ऊसासा ॥
सगतीससयतिहुत्तर, तीसगुणा ते अहोरत्ते ॥ २७८ ॥

अर्थ—वसो पचोतेरमी गाथामां ओगणपचास श्वासोश्वासे एक लव कह्यो छे तेवा (लवसत्तहत्तरीए) के० सत्योतेर लवे (मुहुत्तो होइ) के० एक मुहुर्त थाय छे अने (इममि) के० एक मुहूर्तमा [सगतीससय तिहुत्तर] के० साडत्रीस सो अने तहोंतेर (ऊसासा) के० श्वासोश्वास थाय हो त्रीस मुहूर्ते अहोरात्री थाय छे माटे साडत्रीस सो अने तहोंतेरने (तीसगुणा) के० त्रीश-गुणा करीये त्यार (अहोरत्ते) के० एक अहोरात्रमा (ते) क० ते श्वासोश्वास कला थाय । तो के- ॥ २७८ ॥

एग च सयसहस्स, ऊसासाण तेर सहस्सा य ॥
नउयसएण अहिया, दिवसनिसि हुंति विन्नेया ॥२७९॥

अर्थ—(एगं सयसहस्सं) के० एक लाख. (तेरसहस्सा के० तेर हजार (य) के० अने (नउयसयगं अहिया) के० एक सो नेवुं अधिक एटला (ऊसासाणं) के० श्वासोश्वासनी संख्या (दिवसनिसि) के० रात्रि अने दिवस मलीने (हुंति) के० थाय छे, एम (विन्नेया) के० जाणवुं. ॥ २७९. ॥

मासेवि य ऊसासा, लक्खा तितीस सहस पणनउई ॥
सत्तसयाइं जाणह, कहियाइं पुव्वसूरीहिं ॥ २८० ॥

अर्थ—(य) के० वली (मासेवि) के० एक मासने विषे (ऊसासा) के० ते श्वासोश्वास (लक्खातित्तीस) के० तेत्रीश लाख (सहसपणनउइ) के० पंचाणु हजार, अने (सत्त सयाइं) के० सात सो थाय. एम (पुव्वसूरिहिं) के० पूर्वना आचार्योए (कहियाइं) के० कह्युं छे. ते (जाणह) के० जाणवुं. ॥ २८० ॥

चत्तारी य कोडिओ, लक्खा सत्तेव हुंति नायवा ॥
अडयालीस सहस्सा, चारसिया एग वरिसेणं ॥२८१॥

अर्थ—(य के० वली (चत्तारी कोडिओ) के० चार क्रोड (लक्खा सत्तेव) के० सात लाख (अडयालीस सहस्सा) के० अडतालीस हजार अने (चारसिया) के० चार सो उपर एटला श्वासोश्वास (एग वरिसेणं) के० एक वर्ष (हुंति) के० थाय छे. एम (नायवा) के० जाणवुं. ॥ २८१ ॥

चत्तारी कोडिसया, कोडीओ सत्त लक्ख अडयाला ॥
चत्तालीस सहस्सा, वाससए हुंति नायव्वा ॥ २८२ ॥

अर्थ—(चत्तारी कोडि सया) के० चार सो क्रोड. (को-

दीओ सत्त) के० सात क्रोड, (लक्ख अडयाला) के० अड तालीस लाख, (चतालीस सहस्सा) के० चालीस हजार एटला श्वासोश्वास (वाससए) के० सो वर्ष हुति के० थाय छे ते (नायव्वा) के० जाणवा ॥ २८२ ॥

लक्खं तेर सहस्सा, नउयसयं अयरसंखयादेवे ॥
पक्खेहिं ऊसासो, वाससहस्सेहिं आहारो ॥ २८३ ॥

अर्थ—मनुष्यने एक अहोरात्रिमा (लक्ख) के० एक लाख (तेर सहस्सा) के० तेर हजार अने (नउयसय) के० एक सो नेवु, एटला श्वासोश्वास होय, परंतु (देवे) के० देवताने विषे (अयरसंखया के० सागरोपमनी संख्याये करीने एटले जे देवताने जेटला सागरोपमनु आयुष्य होय ते देवताने तेटला (पक्खेहिं)के० पखवाडे करीने (ऊसासो) श्वासोश्वास होय छे अने (वास-सहस्सेहिं) के० तेटला हजार वर्ष (आहारो) के० आहार होय छे. दृष्टांत जेम सर्वार्थसिद्धिना देवताने तेत्रीश सागरोपमनु आयुष्य छे तो तेमने तेत्रीश पखवाडीये एक श्वासोश्वास थाय अने तेत्रीश हजार वर्षे आहारनी इच्छा थाय छे ॥ २८३ ॥

जे देवतानुं दश हजार वर्षथी उपर अने एक सागरोपमथी काइक ओछु आयुष्य होय ते देवताना आहार अने श्वासोश्वासनु कालमान कहे छे

दसवास सहस्सुवरिं, समयाई जावसागरं ऊणं ॥
दिवस मुहुत्तपहुत्ता, आहारूसास सेसाणं ॥ २८४ ॥

अर्थ—जे देवतानु (दसवास सहस्सुवरिं) के० दश हजार वर्ष उपरांत (समयाई) के० एक समयथी मांडीने (जावसागर

भयस्त्रो) के० सचित्त अचित्त अने सचित्ताचित्त एटले मिश्र एम त्रण प्रकारनो (आहार) के० आहार होय छे. (तहा) के० तेमज (सव्वनराणं) के० सर्व मनुष्योने पण त्रण प्रकारनो आहार होय छे. (च) के० अने (सुरनेरइयाण) के० देवता तथा नारकीने (अचित्तो) के० अचित्त आहार होय छे. ॥ २८८ ॥

आभोगाणाभोगा, सव्वेसिं होइ लोमआहारो ॥
निरयाणं अमणुन्नो, परिणमइ सुराण समणुन्नो ॥२८९॥

अर्थ-जेम वर्षाकालमां शीतल पुद्गलनो स्पर्श थवाथी बहु मूत्र प्रसवे. तेम सर्व जीवोने अपर्याप्तावस्थामां तो अजाणपणे आहार परिणमे, परंतु पर्याप्तावस्थाये (सव्वेसिं) के० सर्व जीवोने कोइ वखते (लोमआहारो) के० लोमाहार (आभोग) के० जाणतां अने कोइ वखते (अणाभोग) के० अजाणतां (होइ) के० होय छे. तेमां एकेंद्रियने तथा समुर्च्छिम मनुष्यने मनरहितपणाने लीधे सर्वथा अजाणतांज आहार परिणमे छे. वली (निरयाणं) के० नारकीने अशुभकर्मना उदयथी (अमणुन्नो) के० अमनोज्ञ एटले मनने सारो न लागे तेवो आहार (परिणमइ) के० परिणमे छे अने (सुराणं) के० देवताओने शुभकर्मोदयथी (समणुन्नो) के० मनोज्ञ एटले मनने सारो लागे तेवो आहार परिणमे छे. ॥ २८९ ॥

हवे नारकी तिर्यंच तथा मनुष्यने आहारनुं काल मान एटले अंतर कहे छे.

तह विगलनारयाणं, अंतमुहुत्तो स होइ उक्कोसो ॥
पंचिंदितिरिनराणं, साहाविय छट्ठ अट्ठमओ ॥ २९० ॥

अर्थ-(तह) के० तेमज (विगल) के० बेइंद्रि तेइंद्रि अने चउ-

रद्दि तथा (नारयाण) के० नारकी एनु अतर जीवोने एक वार आहार लीधा पछी (उकोसो (के० उत्कृष्टथी (अतमुहुत्तो) के० एक अंतमुहूर्त्त गया पछी (स) के० आहारनी इच्छा (होइ) के० होय छे पृथ्वीकायादि एकेंद्रिय जीवोने तो आहारनी इच्छा निरतर सदा रहे छे. वली (पचिंदितिरि) के० पचेंद्रिय तिर्यचने (साहाविओ) के० स्वाभाविक एटले रोगादिकना कारण विना उत्कृष्टथी (छट्ठ) के० वे अहोरात्रिने अतरे आहारनी इच्छा थाय अने (नराण) के० मनुष्यने उत्कृष्टथी (अट्ठमओ) के० त्रण अहोरात्रिने आतरे आहारनी इच्छा थाय आ आहारनु अतर देवकुरु उत्तरकुरु भरत अने एरवतमा पम सूसमाकाले त्रण पल्योपमना आयुष्यवाला तिर्यच अने मनुष्य आश्री जाणवृ. ॥ २९० ॥

हवे आहारक तथा अनाहारक जीवो कया ? ते कहे छे

विग्गहगइमावन्ना, केवलिणो समुहया अजोगी य॥ सिद्धा य अणाहारा, सेसा आहारगा जीवा ॥२९१॥

अर्थ—जे जीवो समश्रेणीमूकीने विदिशाये उत्पन्न थाय ते (विग्गहगइमावन्ना) के० विग्रहगतिने पामेला जीवो चार समय सुधी, अनाहारी होय आठ समय प्रमाण केवली समुद्घात छे तेमा त्रीजे चोथे अने पाचमे समये केवल कार्मण काययोगी होय तेवा (केवलिणो समुहया) के० केवल समुद्घात करता केवली भगवतो त्रण समय सुधी, तेमज (अजोगी य) के० शैलेशी करण करता अयोगी नामना चौदमे गुण ठाणे रहेला जीवो अतर मुहूर्त्त सुधी, (य) क० अने (सिद्धा) क० आठ कर्मनो क्षय करी सिद्ध थयेला जीवो अनत काल सुधी (अणाहारा) के० अनाहारक जाणवा अने (सेसा) के० ते विना बीजा (जीवा)

के० जीवो (आहारगा) के० आहारक जाणवा. ॥ २९१ ॥

हवे देवताना स्वरूपनुं वर्णन करे छे.

केसट्ठि मंस नह रोम–रुहिर वस चम्म मुत्त पुरिसेहिं ॥
रहिया निम्मलदेहा, सुगंधनिस्सास गयलेवा ॥२९२॥

अर्थ–सर्वे देवता पूर्वे भवमां करेलां शुभकर्मना उदयथी (केस) के० केश, (अट्ठि) के० हाडकां. (मंस) के० मांस, (नह) के० नख, (रोम) के० रुंवाडा, (रुहिर) के० रुधिर, (वस) के० चरबी, (चम्म) के० चामडी, (मुत्त) के० मुत्र अने (पुरिसेहिं) के० विष्टा. एटली वस्तुये करीने (रहिया) के० रहित. तथा (निम्मलदेहा) के० निर्मल शरीरवाला, (सुगंध निस्सास) के० कपूर तथा कस्तुरीना समान श्वासवाला अने (गयलेवा) के० रज परसेवादिकना लेपरहित होय छे. ॥ २९२ ॥

अंत मुहुत्तेणं चिय, पज्जत्ता तरुणपुरिससंकासा ॥
सव्वंगभूसण धरा, अजरा निरुया समा देवा ॥२९३॥

अर्थ–वली उत्पन्न थया पछी (अंतमुहुत्तेणं) के० एक अंतर मुहूर्त्तमां (चिय) के० निश्चे (पज्जत्ता) के० पूर्ण पर्याप्तिवाला थइने (तरुणपुरिससंकासा) के० युवान पुरुष सरखा, (सव्वंग भूसणधरा) के० सर्वांगे आभूषणने धारण करनारा, (अजरा) के० नित्य युवावस्थावाला, (निरुया) के० रोगरहित, अने (समा) के० समचतुरस्त्र संस्थान वाला (देवा) के० देवता छे, श्रीजीवाभिगमसूत्रना अभिप्रायथी कोइक एम कहे छे के–देवता आभरण तथा वस्त्र रहित छे, परंतु ते उत्पत्ति समयेज जाणवा. कारण उत्पत्ति समये उत्पन्न थया पछी अभिषेक सभाये स्नान

करे, अलंकार सभाये अलंकार पहरे, व्यवसाय सभागे पुस्तक वांची धार्मिक उपगरण ल्हे, पछी सुधर्मा सभाये सिद्धायतनने विषे जिनप्रतिमाने पूजे छे, माटे देवता उत्पत्तिसमयेज वस्त्राभूषण रहित होय छे ॥ २०३ ॥

अणिमिसनयणा मण–कज्ज साहणा पुष्फदाम
अमिलाणा ॥
चउरंगुलेण भूमिं,न छिवंति सुरा जिणा बिंति ॥२९४॥

अर्थ–(अणिमिसनयणा) के० देवशक्तिना कारणे अनिमेष नेत्रवाला, (मणकज्जसाहणा) के० मनथी सर्व कार्यने करनारा (पुष्फदामअमिलाणा के० कंठमां प्रफुल्लित पुष्पमाला जेमनी करमाय नहि एवा देवता कोइ कारणे मनुष्य लोकमां आव्या छता (चउरंगुलेण) के० चार अंगुलवडे (भूमिं) के० पृथ्वीने (न छिवंति) के० स्पर्श करता नथी, अर्थात् पृथ्वीथी चार आंगुल उंचा उभा रहे छे एम (जिणा बिंति) के० जिनेश्वर कहे छे ॥ २०४ ॥

हवे देवता मनुष्यलोकमां कया कारणे आवे ते कहे छे

पंचसु जिणकल्लाणेसु, चेव महरिसितवाणुभावाओ ॥
जम्मंतरनेहेण य, आगच्छंति सुरा इहयं ॥ २९५ ॥

अर्थ—(पंचसु जिणकल्लाणेसु) के० तीर्थंकरना जन्मादिक पांच कल्याणकने विषे, तथा (महरिसितवाणुभावाओ) के० महोटा ऋषिओना तपना प्रभावथी, (य) के० वली (जम्मंतर नेहेण) के० जन्मांतरना स्नेह करीने, (जेम स्नेहथी शालिभद्रना

पिता अथवा गीपथी सगम देवता आव्यो हतो तेम) एवा कारणथी (सुरा) के० देवता (इहयं) के० अहियां (आगच्छंति) के० आवे छे. ॥ २९५ ॥

देवता कारण विना मनुष्यलोकमां केम न आवे ? ते कहे छे.

संकंतदिव्वपेमा, विसयपसत्ता समत्तकत्तव्वा ॥
अणहाणमणुयकज्जा,नरभवमसुहं न इंति सुरा ॥२९६॥

अर्थ—उत्पन्न थया पछी तुरत देवांगनानो जेमना हृदयमां (सकंत दिव्व पेमा) के० दिव्यप्रेम प्रसरी रहेलो छे एवा, तथा (विसयपसत्ता) के० देवांगनानी साथे स्पर्श गीतादिक विषयमां आसक्त थयेला, वली (समत्तकत्तव्वा) के० जेमना स्नान वनविहार नाटक विलोकन विगेरे देवकार्य पूरा थया नथी एवा, अने (अणहीणमणुयकज्जा) के० देवताने मनुष्याधिन कांइ कार्य नथी एवा कारणने लीधे (सुरा) के० देवता (असुहं) के० दुर्गंधमय एवा (नरभवं) के० मनुष्यलोकने विषे (न इंति) के० आवता नथी ॥ २९६ ॥

चत्तारि पंच जोयण, सयाइ गंधो य मणुयलोगस्स ॥
उड्ढं वच्चइ जेणं, न हु देवा तेण आवंति ॥ २९७ ॥

अर्थ—जेणं के० जेकारणमाटे मणुयलोगस्स के० मनुष्यलोक संबंधी मृतकशरीर तथा मूत्र पुरिस विगेरेनो (गंधो य) के० दुर्गंध (चत्तारि पंच जोयण सयाइ) के० चारसो पांचसो योजन (उड्ढं वच्चइ) के० उंचे जाय छे (तेण) के० तेकारणमाटे (देवा) के० देवता (हु) के० निश्चे आ मनुष्य लोकमां (न आवंति) के० आवता नथी. २९७

हवे देवताने भवप्रत्ययिक अवधिज्ञाननु क्षेत्र कहे छे

दोकप्प पढमपुढविं, दो दो दो बीय तइयगं चउथिं ॥
चउ उवरिम ओहीए, पासंति पचमं पुढविं ॥ २९८ ॥

अर्थ—(दोकप्प) के० पेहला बे देवलोकना उत्कृष्टआयुष्यवाला देवता अवधिज्ञानथी (पढमपुढविं) के० पहेली नरक पृथ्वी सुधी देखे छे. तेउपरना (दो) के० सनत्कुमार अने माहेंद्र देवलोकना उत्कृष्ट आयुष्यवाला देवता (बीय के० बीजी शर्करप्रभासुधी देखे ते उपरना ब्रह्म अने लांतक ए बे देवलोकना उत्कृष्ट आयुष्यवाला देवता (तइयग) के० त्रीजी वालुकाप्रभासुधी देखे. ते उपरना शुक्र अने सहस्रार देवलोकना देवता (चउथि) के० चोथी पंकप्रभासुधी देखे तेना (उवरिम) के० उपरना (चउ) के० आनत प्राणत आरण अने अच्युत ए चार देवलोकना देवता (ओहिए) के० अवधिज्ञानथी (पचमं पुढविं) के० पांचमी धूमप्रभा नरक पृथ्वी सुधी (पासंति) के० देखे छे अहिं एटलु विशेष के आनत प्राणतना देवताथी आरण अच्युत देवलोकना देवता पांचमी पृथ्वीना प्रतरे अतिविशुद्ध पर्यायवंत देखे एवीरीते ज्यां ज्यां बे बे जोडला छे त्यां पहेलाथकी बीजो गुणविशेष देखे एम जाणवु ॥ २९८ ॥

छठिं छगेविज्जा, सत्तमिईयरे अणुत्तर सुरा उ ॥
किंचूणलोगनालिं, असंखदीवुदहि तिरियं तु ॥२९९॥

अर्थ—त्रण नीचेना अने त्रण मध्यना एम (छगविज्जा) के० छ ग्रैवेयकना देवता अवधिज्ञानथी (छट्ठिं) के० छठ्ठी तमःप्रभा सुधी देखे अने (ईयर) के० उपरना त्रण ग्रैवेयकना देवता (सत्तमि)

के० सातमी नरकपृथ्वी सुधी देखे. (उ) के० वली (अणुत्तर सुरा) के० पांच अनुत्तर निवासी देवताओ (किंचूणलोगनालिं) के० कांइक ऊणी पंचास्तिकायरूप चउदराजप्रमाण लोकनालने देखे अने उंचे पोताना विमाननी ध्वजा सुधी देखे. (तु) के० वली (तिरियं) के० तिर्छु (असंखदीवुदहि) के० असंख्याता द्वीप समुद्र सुधी देखे ॥ २९९ ॥

बहुययरं उवरिमगा, उड्ढं स विमाण चूलियधयाइं ॥
ऊणद्धसागरे संख–जोयणा तप्परमसंखा ॥ ३०० ॥

अर्थ—(उवरिमगा) के० उपर उपरना देवलोकना देवता तिर्छु (बहुययरं) के० असंख्याता असंख्याता भेदेकरी अधिकुं अधिकुं देखे. अने (उड्ढं) के० उंचुं (सविमाण चूलियधयाइं) के० पोताना विमाननी चूलिकानी ध्वजा सुधी देखे. अथवा (ऊणद्धसागरे) के० अर्द्धसागरोपमथी ओछा उत्कृष्टा आयुष्य-वाला देवता (संख जोयणा) के० तिर्छु संख्याता योजन सुधी देखे अने (तत्परं) के० अर्द्धा सागरोपमथी अधिक आयुष्यवाला देवता तिर्छु (असंखा)के० असंख्याता योजन सुधी देखे.॥३००॥

पणवीसं जोयण लहु,नारय भवण वण जोइ कप्पाणं ॥
गेविज्जणुत्तराण य, जहसंखं ओहि आगारा ॥३०१॥

अर्थ—दशहजार वर्षना आयुष्यवाला भुवनपति अने व्यंतर देवता (लहु) के० जघन्यथी (पणवीसं जोयण) के० पचीस योजन सुधी देखे. अहिं तात्पर्य ए छे के–दशे भुवनपति जघन्यथी तो पचीस योजन देखे अने उत्कृष्टथी असुर कुमार निकायना देवता असंख्याता द्वीपसमुद्र देखे तथा नव निकायना देवता संख्याता

योजनना अवधि क्षेत्रवाला होवाथी सख्याता द्वीपसमुद्र सुधी देखे ज्योतपी देवता जघन्य अने उत्कृष्ट सख्याता योजनना अवधिक्षेत्र वाला होवाथी संख्याता द्वीपसमुद्र देखे, व्यतरदेवता जघयथी पचीस योजन देखे अने उत्कृष्टथी सख्याता योजनना अवधिक्षेत्र-वाला होवाथी सख्याता द्वीपसमुद्र देखे

हवे गाथाना पाछला त्रण पदोथी नारकी देवता तिर्यंच अने मनुष्यना अवधिज्ञाननु सस्थान कहे छे

१ (नारय) के० नारकी, २ (भवण) के० भवनपति, ३ (वण) के० व्यतर. ४ (जोइ) के० ज्योतषी, ५ (कप्पाण) के० बार देवलोक, ६ (गेविज्ज) के० नवग्रैवेयक, ७ (अणुत्तराणय) के० पाच अनुत्तर ए सातना (जहसरय) के० यथासख्याये करीने (ओहि आगारा) के० अवधिज्ञानना आकार एटले सस्थान कहे छे ॥ ३०१ ॥

तप्पागारे पल्लग, पडहग झल्लरि मुहग पुप्फ जवे ॥
तिरियमणुएसु ओही,नाणाविह सठिओ भणिओ ॥३०२॥

अर्थ—नारकीनु अवधिज्ञान (तप्पागार) के० पाणी उपर तरवाना त्रापाने आकार, भुवनपतिनु अवधिज्ञान (पल्लग) के० पालाने आकारे, व्यतरनु अवधिज्ञान (पडहग) के० ढोल्ने आकार, ज्योतषीनु अवधिज्ञान (झल्लरि) के० झल्लरीने आकार, बार देवलोकना देवतानु अवधिज्ञान (मुहग) के० मृदंगने आकारे, नवग्रैवेयकना देवतानु अवधिज्ञान (पुप्फ) के० पुष्पथी भरली चगेरीना आकार, अने पाच अनुत्तर विमानवासी देवोनु अवधिज्ञान (जव) के० कुमारीकन्याना गल्कचुवाने आकार होय छे. वली

(तिरियमणुसुए) के० तिर्यंच अने मनुष्यने विषे (ओही) के० अवधिज्ञान (नाणाविह संठिओ) के० नानाप्रकारना संस्थानवाळुं (भणिओ) के० कह्युं छे. ॥ ३०२ ॥

हवे उपर कहेला संस्थानोनुं स्वरूप कहे छे.

तप्पेण समागारो, तप्पागारो, स चाइयंतमसो ॥
उद्धाययओ पल्लो, उवरि रुंदोहसंखित्तो ॥ ३०३ ॥

अर्थ—(तप्पेण समागारो) के० त्रहाणने आकारे जे अवधिज्ञान ते (तप्पागारो) के० तापाकार अवधिज्ञान कहेवाय. (स) के० ते अवधिज्ञान (चाइयंतमसो) के० नारकीनुं छे० (उद्धाययओ) के० उर्ध्व लंबाइवाळो (उवरि रुंदो) के० उपर विस्तार वाळो अने अहसंखित्तो के० नीचे सांकडो एवो (पल्लो) के० पल्य होय छे. ॥ ३०३ ॥

सव्वायओ समोविय, पडहो हिट्ठोवरि पइवासो ॥
चम्मावणद्ध विच्छन्न, वलयरूवा उ झल्लरिया ॥३०४॥

अर्थ—(सव्वायओ समोविय) के० सर्व बाजुएथी सरखो छतां पण (हिट्ठोवरि पइवासो) के० नीचे अने उपर थालीने आकारे पाथरो, वळी (चम्मावणद्ध) के० चामडाथी ढांकेलो एवो (पडहो) के० पडह होय छे. (उ) के० वळी (वलयरूवा) के० गोळ वलयने आकारे (झल्लरिया) के० झालर होय छे. ॥ ३०४ ॥

उद्धायओ मुयंगो, हिट्ठो रुद्दो तहोवरि तणुओ ॥
पुप्फसिहावली रहिया, चंगेरी पुप्फचंगेरी ॥ ३०५ ॥

अर्थ—(उद्धायओ) के० उंची आकृतिवाळो, (हिट्ठोरुद्दो)

के० नीचे विस्तारवालो, (नहोवरि तणुओ) के० तेमज उपर साकडो एवो (मुयगो) के० मृदंग होय छे. (पुप्फसिहावली रहिया) के० पुष्प समूहथी रचेली (चगेरी) के० एटले नीचेनी पडगी सहित छावडी ते (पुप्फचगेरी) के० पुष्पचगेरी कहवाय छे ॥३०५॥

जवनालउत्ति भन्नइ, उप्भोसए कंचुओ कुमारीए ॥
एए अवद्धाकारा, देवा जाणंति जिणवुत्ता ॥ ३०६ ॥

अर्थ—(कुमारीए) के० कुमारिकाना (उप्भोसए) के० उंची करेली बे राहुवाला (कंचुओ) के० कंचुवाने (जवनालउत्ति भन्नइ) के० जवनाल एम कहवाय छे (एए अवद्धाकारा) के० ए अवधिज्ञानना आकारने (देवा) के० देवता (जाणंति) के० जाणे छे अने ए अवधिज्ञानना आकारो (जिणवुत्ता) के० जिनेश्वर कह्या छे ॥ ३०६ ॥

हवे नारकी देवना मनुष्य अने तिर्यंच ए चारमा कोने कइ दिशाए अवधिज्ञान थाय ? ते कहे छे

उद्धं भवणवणाण, बहुगो वेमाणियाण हो ओही ॥
नारय जोइस तिरियं, नरतिरिया ग अणेगविहो ॥३०७॥

अर्थ—(भवणवणाण) के० भुवनपति तथा व्यंतर देवताओने अवधिज्ञान (उ.) के० उंचु (बहुगो) के० घणु होय छे. तिर्छुं तथा नीचु थोडुं होय छे. तेमज (वेमाणियाण) के० वैमानिक देवताने (ओही) के० अवधिज्ञान (अहो) के० नीचु घणुं होय ने उंचु तथा तिर्छुं थोडुं होय छे वली (नारय जोइस) के० नारकी अने ज्योतषीने अवधिज्ञान (तिरियं) के० तिर्छुं घणु होय छे उंचुं नीचु थोडुं होय छे तथा (नरतिरियाण) के० मनुष्य अने तिर्यंचने

(अणेगविहो) के० अनेक प्रकारनुं एटले कोइने उंचुं वधारे कोइने नीचुं वधारे अने कोइने तिर्छु वधारे एम विचित्र प्रकारे होयछे॥३०७॥

हवे देवतानुं द्वार पूर्ण करी नारकीनुं द्वार कहे छे.

इय देवाणं भणियं, ठिइपमुहं नारयाण वुच्छामि ॥
इग तिन्नि सत्तदस सतर, अयर बावीस तित्तीसा ॥३०८॥
सत्तय पुढवीसु ठिई, जिट्ठोवरिमाइ हिट्ठपुढवीए ॥
होइ कमेण कणिट्ठा, दस वास सहस्स पढमाए ॥३०९॥

अर्थ—(इय) के० ए प्रकारे (देवाणं) के० देवतानां (ठिइपमुहं) के० स्थितिप्रमुख एटले स्थिति, भुवन, शरीरप्रमाणरूप अवगाहना, उपपात विरहकाल, चवनविरहकाल, एक समय उपपात संख्या, एक समय चवनसंख्या, गति अने आगतिरूप नव द्वार (भणियं) के० कह्यां. हवे (नारयाणं) के० नारकीना एज नव द्वार ए पूर्वोक्त अनुक्रमे (वुच्छामि) के० कहीश. पहेली रत्नप्रभा पृथ्वीने विषे उत्कृष्टि स्थिति (इग) के० एक सागरोपमनी, बीजी शर्कराप्रभाने विषे (तिन्नि) के० त्रण सागरोपमनी, त्रीजी वालुकाप्रभाने विषे (सत्त) के० सात सागरोपमनी, चोथी पंकप्रभाने विषे (दस) के० दश सागरोपमनी, पांचमी धूमप्रभाने विषे (सत्तर) के० सत्तर सागरोपमनी, छट्ठी तमप्रभाने विषे (बावीस) के० बावीश सागरोपमनी, अने सातमी तमतमप्रभाने विषे (तित्तीसा) के० तेत्रीश सागरोपमनी, ए सर्व (अयर) के० सागरोपमनी उत्कृष्टी स्थिति जाणवी. ॥३०८॥ ए पूर्वे कहेली (सत्तय पुढवीसु) के० साते नरक पृथ्वीने विषे (ठिइ) के० स्थिति कही. तेमां (उवरिमाइ) के० उपरथी आरंभीने (जिट्ठा) के० उत्कृष्ट स्थिति होय अर्थात् उपरनी नारकीनी जे उत्कृष्ट स्थिति होय ते (हिट्ठ पुढवीए) के० नीचेनी (पृथ्वीनी कणिट्ठा) के० जघन्य स्थिति (कमेण) के० अनुक्रमे

कहीने (होइ) के० होय छे जेम रत्नप्रभानी उत्कृष्टी एक सागरोपमनी स्थिति ते शर्कराप्रभाए कनिष्ट एटले जघन्य स्थिति जाणवी अने (पढमाए) के० पहेली रत्नप्रभाने विषे (दस वास सहस्स) के० दश हजार वर्षनी जघन्य स्थिति जाणवी ॥३०९॥

नवइ सम सहस्स लक्खा,पुव्वाणं कोडि अयर दस भागा ॥
इक्किक्कभागवुड्ढी, जा अयर तेरसे पयरे ॥ ३१० ॥
इय जिट्ठ जहण्णा पुण,दस वास सहस्स लक्ख पयरदुगे ॥
सेसेसु उवरि जिट्ठा, अहो कणिट्ठाओ पइ पुढवी ॥३११॥

अर्थ—रत्नप्रभा पृथ्वीना पहेला प्रतरने विषे उत्कृष्टी स्थिति (नवइ सम सहस्स) के० नेवु हजार वर्षनी, बीजा प्रतरने विषे (लक्खा) के० नेवुं लाख वर्षनी, त्रीजा प्रतरने विषे (पुव्वाण कोडी) के० एक पूर्व कोडीनी, चोथा प्रतरने विषे (अयर दस भागा) के० एक सागरोपमना दशमा भागनी, त्यार पछी त्रेक प्रतरे (इक्किक्कभागवुड्ढी) के० एक एक भागनी वृद्धी करवी के (जा) के० ज्या सुधीमा (तेरसे पयर) के० तेरमा प्रतरे (अयरं) के० एक सागरोपमनी उत्कृष्टी स्थिति थाय ॥ ३१० ॥ (इय जिट्ठ) के० ए उत्कृष्टी स्थिति कही, (पुण) के० वली (जहण्णा) के० जघन्य स्थिति ते (पयरदुगे) के० पहेला बे प्रतरने विषे अनुक्रम (दस वास सहस्स) के० पहेला प्रतरे दश हजार वर्षनी अने बीजा प्रतरे (लक्ख) के० दश लाख वर्षनी जाणवी (सेसेसु) के० त्रीजाथी आरंभीने बाकीना प्रतरोने विषे (उवरि जिट्ठा) के० उपरना प्रतरोने विषे जे उत्कृष्टी स्थिति होय ते (अहो कणिट्ठाओ) के० नीचेना प्रतरोने विषे जघन्य स्थिति जाणवी एम (पइ पुढवी) के० दरेक पृथ्वीने विषे समजवु ॥ ३११ ॥

रत्न प्रभामां जघन्योत्कृष्ट आयुष्य.

प्रतरे.	जघन्य.	उत्कृष्ट.
१ ले	१००० वर्ष	९०००
जे	१० लाख वर्ष	९० लाख वर्ष
३ जे	९० लाख वर्ष	पूर्वक्रोड वर्ष
४ थे	पूर्वक्रोड वर्ष	$\frac{१}{१०}$ सागरोपम
५ मे	$\frac{१}{१०}$ सागरो०	$\frac{२}{१०}$ सागरो०
६ ठ्ठे	$\frac{२}{१०}$ "	$\frac{३}{१०}$ "
७ मे	$\frac{३}{१०}$ "	$\frac{४}{१०}$ "
८ मे	$\frac{४}{१०}$ "	$\frac{५}{१०}$ "
९ मे	$\frac{५}{१०}$ "	$\frac{६}{१०}$
१० मे	$\frac{६}{१०}$ "	$\frac{७}{१०}$ "
११ मे	$\frac{७}{१०}$ "	$\frac{८}{१०}$ "
१२ मे	$\frac{८}{१०}$ "	$\frac{९}{१०}$ "
१३ मे	$\frac{९}{१०}$ "	१ सागरो०

हवे बीजी नरकपृथ्वी आदिकमां उत्कृष्टी स्थिति कहेवाने अर्थ करण कहे छे.

उवरि खिइ ठिइ विसेमो,सगपयर विहत्तु इच्छ संगुणिओ ॥
उवरिमखिइ ठिइ सहिओ,इच्छियपयरंमि उक्कोसा॥२१२॥

अर्थ—(उवरि खिइ) के० उपरनी पृथ्वीनी (ठिइ) के० उत्कृष्टी स्थितिने (इत्थ) के० वांछित नरकपृथ्वीनी उत्कृष्टी स्थिति साथे (विसेमो)के० विश्लेप करवो एटलेअधिक स्थितिमाथी ओछीस्थिति काढी नाखवी पछी ते विश्लेप एटलेवधेला आकने (सगपयर) के०वाछित पृथ्वीना मतरे (विहत्तु)के०वेहेंचीए. ते वेहेंचता जे आक आवे तेने (इच्छ) क० ईष्टमतरनी सख्याये (सगुणिओ) के० गुणीये. ते गुणतां जे आक आवे ते (उवरिमखिइ) के० उपरनी पृथ्वीनी (ठिइसहिओ) के० उत्कृष्टी स्थितिए सहित करीए त्यारे (इच्छिय पयरम्मि) उक्कोसा के० वाछित मतर उत्कृष्टी स्थिति थाय ॥३१२॥

तेज वात उदाहरण सहित समजावे छे के-बीजी शर्करा मभाने विषे उत्कृष्टी स्थिति त्रण सागरोपमनी छे अने पहेली रत्नमभानी उत्कृष्टी स्थिति एक सागरोपमनी छे ते त्रण सागरोपममाथी काढी नाखीये त्यारे बाकी बे रहे ते बेसागरोपमने शर्करामभाना अगीयार मतरे भाग आपीये त्यारे एक एक मतरे एक एक सागरोपमना अगीयारीया बबे भाग आवे मथम मतर फक्त बेज भाग वधे तेने उपरनी रत्नमभानी एक सागरोपमनी स्थिति साथे जोडीये त्यार शर्करामभाना मथम मतरे एक सागरोपम अने एक सागरोपमना अगीयारीया भाग उपर आवे, एटली शर्करामभाना मथम मतरे उत्कृष्टी स्थिति जाणवी एरीते दरेक मतरे बे भाग वधारता अगीयारमे मतर त्रण सागरोपम पूर्णायु थाय. अने पहला मतरनी उत्कृष्टी स्थिति ते बीजे मतर जघन्य स्थिति जाणवी एज प्रमाणे त्रीजी चोथी पाचमी अने छट्टी नरक पृथ्वीनु वरण करवु ए सर्वे नरक पृथ्वीनु आयुष्य प्रमाण यन्त्रमा छे त्याथी जाणोलेवु ॥

૨

शर्करा प्रभामां जघन्योत्कृष्ट आयुष्य.

प्रतरे,	जघन्य.	उत्कृष्ट.
૧ લે	૧ सागर.	$૧\frac{૨}{૧૧}$ सागर.
૨ જે	$૧\frac{૨}{૧૧}$,,	$૧\frac{૪}{૧૧}$,,
૩ જે	$૧\frac{૪}{૧૧}$,,	$૧\frac{૬}{૧૧}$,,
૪ થે	$૧\frac{૬}{૧૧}$,,	$૧\frac{૮}{૧૧}$,,
૫ મે	$૧\frac{૮}{૧૧}$,,	$૧\frac{૧૦}{૧૧}$,,
૬ ઠ્ઠે	$૧\frac{૧૦}{૧૧}$,,	$૨\frac{૧}{૧૧}$,,
૭ મે	$૨\frac{૧}{૧૧}$,,	$૨\frac{૩}{૧૧}$,,
૮ મે	$૨\frac{૩}{૧૧}$,,	$૨\frac{૫}{૧૧}$,,
૯ મે	$૨\frac{૫}{૧૧}$,,	$૨\frac{૭}{૧૧}$,,
૧૦ મે	$૨\frac{૭}{૧૧}$,,	$૨\frac{૯}{૧૧}$,,
૧૧ મે	$૨\frac{૯}{૧૧}$,,	૩ ,,

३

वालुका प्रभामां जघन्योत्कृष्ट आयुष्य

प्रतरे	जघन्य	उत्कृष्ट
१ ले	३ साग०	३ ४/९ साग०
२ जे	३ ४/९ ,,	३ ८/९ ,,
३ जे	३ ८/९ ,,	४ ३/९ ,
४ थे	४ ३/९ ,	४ ७/९ ,,
५ मे	४ ७/९ ,,	५ २/९ ,,
६ ठे	५ २/९ ,	५ ६/९ ,,
७ मे	५ ६/९ ,	६ १/९ ,,
८ मे	६ १/९ ,	६ ५/९ ,
९ मे	६ ५/९ ,,	७ ,,

४

पंक प्रभामां जघन्योत्कृष्ट आयुष्य

प्रतरे	जघन्य	उत्कृष्ट
१ ले	७	७ ३/७
२ जे	७ ३/७	७ ६/७
३ जे	७ ६/७	८ २/७
४ मे	८ २/७	८ ५/७
५ मे	८ ५/७	९ १/७
६ ठे	९ १/७	९ ४/७
७ मे	९ ४/७	१०



५

धूम प्रभामां जघन्योत्कृष्ट आयुष्य.		
१ ले	१०	११ २/५
२ जो	११ २/५	१२ ४/५
३ जो	१२ ४/५	१४ १/५
४ थे	१४ १/५	१५ ३/५
५ मे	१५ ३/५	१७

तमःप्रभामां		
१ ले	१७	१८ २/३
२ जो	१८ २/३	२० १/३
३ जो	२० १/३	२२
	तमस्तमप्रभामां	
१ ले	२२	३३

हवे नारकीनो वेदनानुं स्वरुप कहे छे.

सत्तसु खित्तजवेयणा, अण्णुण्णकयावि पहरणेहि विणा ॥
पहरणकयावि पंचसु, तिसु परमाहम्मियकयावि ॥२१३॥

अर्थ—(सत्तसु) के० साते नरक पृथ्वीने विषे (खित्तजवेयणा) के० क्षेत्र वेदना छे, तथा (पहरणेहि विणा) के० शस्त्र विना (अण्णुण्णकयावि) के० परस्पर मांहोमांहे करेली वेदना पण होय. अने (पंचसु) के० पहेली पांच नरक पृथ्वीने विषे (पहरणकयावि) के० परस्पर शस्त्रथी करेली वेदना होय. वली (तिसु) के० पहेली त्रण नरक पृथ्वीने विषे (परमाहम्मियकयावि) के० परमाधामिनी करेली वेदना होय छे ॥ २१३ ॥

नरकने विषे, क्षेत्रस्वभावथीज दश प्रकारनो पुद्गलपरिणाम दुःख आपनारो छे, ते कहे छे

बंधण गइ संठाणो, भेया वण्णा य गंध रस फासा ॥
अगुरुलहु सद्द दसहा,असुहा विय पुग्गला निरए॥३१४॥

अर्थ—१ (बंधण) के० क्षणे क्षणे आहारादिक नाना प्रकारना पुद्गलनु बंधन प्रदिप्त अग्निथकी पण अत्यन्त दारुण होय. २ (गइ) के० गति ते उंट सरखी होय ३ (संठाण) के० अत्यन्त तीव्र हुंडक संस्थान होय. ४ (भेया) के० भेदन थवु ते जाणवु ५ (वण्णा) के० नरकावासानो वर्ण सर्वत्र अंधकारमय तथा अपवित्र वस्तुओथी भरेलो होय, ६ (गंध) के० श्वानादिकना मृत कलेवरोथी अत्यंत दुर्गंध होय ७ (रस) के० रस ते कडवी तुंबडी करता पण अत्यंत कडवो स्वाद होय, ८ (फासा) के० स्पर्श ते वींछीना कांटा सरखो अथवा कौंचना रोम करता पण खराब स्पर्श होय. ९ (अगुरुलहु) के० अगुरुलघु परिणाम अत्यंत दुःख आपनारो होय १० (सद्द) के० शब्द ते विलापादिक अत्यंत भयकारी होय एम (निरए) के० नारकीने विषे (दसहा) के० दश प्रकारना (असुहा पुग्गला) के० अशुभ पुद्गलो (विय) के० निश्चे होय छे ॥ ३१४ ॥

निरया दसविह वेयणा,सी उसिण खुह पिवास कंडुहिं।
परवस्सं जर दाह भय सोग चेव वेयंति ॥ ३१५ ॥

अर्थ—(निरया) के० नारकीना जीवोने (दसविह वेयणा) के० दस प्रकारनी वेदना छे ते मा १ (सी) के० शीतवेदना ते पोष अथवा माघमहिने हिमाचलमा वस्त्ररहित माणसने जेवी शीत लागे तेथी अनंतगुणी शीत नारकीना जीवोने होय २ (उसिण) के०

उष्णवेदना ते ग्रीष्मऋतुमां मध्याह वखते मेघ रहित आकाश छतां अनि पित्तप्रकोपथी व्याकुल थयेला छत्ररहित पुरुषने जेवी उष्णवेदना होय तेथी अनंत गुणी वेदना नारकीना जीवोने होय. ३ (खुह) के० क्षुधा वेदना ते अढी द्वीपना सर्व अन्न घृतादि पदार्थो नारकीना जीवोने खावा आपीये तोपण तेमनी क्षुधा शांत थाय नहीं. ४ (पिवास) के० तृषावेदना ते नारकीना जीवोने सर्व समुद्रना अने नदीओना पाणी पाइये तोपण तेमनी तृषा शांत थाय नहीं. ५ (कंडुहिं) के० नारकीना जीवोने करवत अथवा छरीवती खणतां पण तेमनी खसनी खरज मटे नहीं. ६ (परवसं) के० नारकी जीव निरंतर परवश होय. ७ (जर) के० नारकीना जीवने अहिंना रहेनारा पुरुषो करता अनंत गुणो ज्वर एटले ताव होय. ८ (दाहं) के० नारकीना जीवोने दाघज्वर होय, (९) भय के० नारकीना जीवोने भय अने १० (सोग) के० शोक मनुष्यो करतां अनंतगुणो होय. नारकीना जीवोने विभंग ज्ञानपण अति दुःख आपनारुं छे. परमाधामी देवोपण तरवार विगेरे शस्त्रो देखाडी महा दुःख आपे छे. तेथी नारकीजीवो सर्वदा शोक करता रहे छे. ए (वेयंति) के० नारकीनी क्षेत्रवेदना (चेव) के० निश्चे कही.॥३१५॥

नेरइयाणुप्पाओ, उक्कोसं पंचजोयणसयाइं ॥
दुक्खेण भिन्नयाणं, वेयणसयपच्चमाणाणं ॥ ३१६ ॥

अर्थ—(दुक्खेण भिन्नयाणं) के० दुःखथी भेदाता अने (वेयणसयपच्चमाणाणं) के० शेंकडो वेदनाथी पचाता एवा (नेरइयाण) के० नारकी जीवोनुं (उक्कोसं) के० उत्कृष्टथी (पंचजोयणसयाइं) के० पांच सो योजन उंचाइथी (उप्पाओ) के० पडवु थाय छे. ॥ ३१६ ॥ ए नारकीनुं स्थितिद्वार कह्युं.

हवे नारकीनुं भवनद्वार कहे छे. तेमा प्रथम साते नरक पृथ्वीना गोत्र तथा नाम कहे छे,

रयणप्पह सक्करपह, वालुयपह पंकपह य धूमपहा ॥
तमपहा तमतमपहा, कमेण पुढवीण गोत्ताइ ॥३१७॥

अर्थ—पहेलो (रयणप्पह) के० घणा रत्नो होवाथी रत्न प्रभा, बीजी (सक्करपह) के० घणा कांकरा होवाथी शर्कराप्रभा, त्रीजी (वालुयपह) के० घणी रेती होवाथी वालुकाप्रभा, चोथी (पंकपहय) के० घणो कादव होवाथी पंकप्रभा, पांचमी (धूमपहा) के० घणो धूमाडो होवाथी धूमप्रभा, छट्ठी (तमपहा) के० अंधकार होवाथी तमप्रभा, सातमी (तमतमपहा) के० घणा गाढ अंधकार होवाथी तम तमप्रभा ए कमेण क० अनुक्रमे (पुढवीण) के० साते नरक पृथ्वीना (गोत्ताइ) के० गोत्र एटले अर्थ सहित नाम कह्या ॥ ३१७ ॥

हवे साते नरक पृथ्वीनां नाम तथा संस्थान कहे छे.

घम्मा वंसा सेला, अंजण रिट्ठा मघा य माघवई ॥
नामेहिं पुढवीओ, छत्ताईच्छत्तसंठाणा ॥ ३१८ ॥

अर्थ—१ (घम्मा) के० घम्मा, २ (वंसा) के० वंशा, ३ (सेला) के०शेला ४ (अंजण) के०अंजणा, ५ (रिट्ठा) के०रिष्टा, छट्ठी (मघा) के० मघा, (य) के० अने, ७ (माघवई) के० माघवती ए उपर कहेला (नामेहिं) के० नामवाली (पुढवीओ) के० साते नरक पृथ्वी जाणवी. ते पृथ्वीओ (छत्ताईच्छत्तसंठाणा) के० छत्राति छत्र संस्थाना एटले उपरा उपरी छत्रने आकारे छे.

अर्थात् सौथी उपर नानुं, तेनी नीचे मोटुं, वली तेनी नीचे मोटुं एवी आकृतिये छे. ॥ ३१८

तत्थ सहस्सा सोलस, खरकंडं पंकवहुलकंडं तु ॥
चुलसीइ सहस्साई, असीइ जलवहुलकंडं तु ॥ ३१९ ॥

अर्थ—पहेली रत्नप्रभा पृथ्वीनो पींड एक लाख एंशी हजार योजननो जाडपणे छे. (तत्थ) के० तेमां पहेलो (खरकंडं) के० खरकांड (सहस्सा सोलस) के० सोलहजार योजननो छे, (तु) के० अने वीजो (पंकवहुलकंडं) के० पंकवहुलकांड (चुलसीइ सहस्साई) के० चोराशी हजार योजननो छे. (तु) के० वली त्रीजो (जलवहुलकंडं) के० जलवहुलकांड (असाइ) के० एंशी हजार योजननो छे. ॥ ३१९ ॥

एवं असी उ लक्खा, खरकंडाइ हि धम्मपुढवीए ॥
सेसा पुढवी सव्वा, पुढविओ हुंति बाहुल्ले ॥३२०॥

अर्थ—(एवं) के० ए प्रमाणे (खरकंडाइ) के० खरकांड विगेरे (धम्मपुढवीए) के० धर्मा पृथ्वीमां अनुक्रमे त्रणे पृथ्वीकांड एकठा करता (असीउलक्खा) के० एक लाख एंशी हजार पृथ्वीपींड थाय. (सेसा पुढवी सव्वा) के० वाकी शर्करा प्रभाथी आरंभीने पृथ्वीना स्वरूपो (वाहुल्ले) के० घणुकरीने (पुढविओ) के० गोत्र प्रमाणेज हुंति के० होय छे. ॥ ३२० ॥

हवे पृथ्वीनो पींड तथा पृथ्वीनो आश्रय कहे छे.

असीइ बत्तिस अडविस, वीसा अट्ठार सोल अडसहसा ॥
लक्खुवरि पुढविपिंडो, घणुदहि घणवाय तणुवाया ॥३२१॥

गयणं च पइट्ठाण, वीस सहस्साइ घणुदहीपिंडो ॥
घणतणुवायागासा, असंखजोयण जुया पिंडो ॥२२॥

अर्थ—प्रमाणांगुले करी (लक्खुवरि) के० एक लाख योजन उपर (असीइ) के० एसी, (बत्तिस) के० बत्रीश, (अडवीस) के० अट्ठावीस (वीसा) के० वीस (अट्ठार) क० अढार, (सोल) के० सोल, अने (अड) के० आठ. ए सर्व योजनना (सहसा) के० सहस्र एटले हजार जोडवा. एटले रत्नप्रभानु एक लाख एशी हजार योजननु, शर्कराप्रभानु एक लाख बत्रीस हजार योजननु, वालुका प्रभानुं एक लाख अट्ठावीश हजार योजननु, पंकप्रभानु एक लाख वीस हजार योजननु, धुमप्रभानु एक लाख अढार हजार योजननु, तमप्रभानु एक लाख सोल हजार योजननु, अने तमतमप्रभानु एक लाख आठ हजार योजननु पृथ्वी पींड जाणवु. वली (घणुदहि घणवाय तणुवाया) के० घनोदधि घनवात तनवात—॥ २२ ॥ (गयण च) क० अने आकाश ए चारे एक एक पृथ्वीना नीचे (पइट्ठाण) के० आश्रय एटले आधाररूप जाणवा एटले घर्म्मापृथ्वी घनोदधि उपर छे, घनोदधि घनवात उपर छे, घनवात तनुवात उपर छे अने तनुवात आकाश उपर प्रतिष्ठित छे, एम सर्व पृथ्वीना तलने विषे जाणवु परतु एटलु विशेष छ के—सातमी नरक पृथ्वीना तले घनोदधि घनवात तनुवात अने तेनी नीचे अलोकाकाश बहुल छे ॥ ॥ हवे घनोदधि विगेरे चारनु मध्यभागे पींड स्थूलपणु कहे छे ॥ (घणुदहीपिंडो) क० घनोदधिनो पिंड मध्यभागे (वीस सहस्साइ) क० वीस हजार योजन जाडपणे छे अने (घणतणुवायागासा) क० घनवात तनुवात अने आकाश (असंख्य जोयणजुया पिंडो) क० ए त्रणेनो पिंड असंख्याता योजननो छे तेमा घनवातथी असंख्याता योजन तनुवात,

अने तनुवातथी असंख्याना योजन आकाश जाणवुं ॥ ३२२ ॥

न फुसंति अलोगं चउ–दिसंपि पुढवी य वलयसंगहिया ॥

अर्थ—(वलयसंगहिया) के० घनोदधि घनवात अने तनुवात सम्बन्धी वलयवडे विंटलायेली (पुढवी) के० रत्नप्रभादिक पृथ्वी (चउदिसंपि) के० चारे दिशाये पण (अलोगं) के० अलोकने (न फुसति) के० फरस करती नथी. साते नरक पृथ्वीना तले मध्य भागमां घनोदधि वीशहजार योजन छे. अने घनवातादिक असंख्याता योजन छे. त्यार पछी प्रदेशे घटता घटता आप आपणी पृथ्वीने छेडे थोडा थया थका वलयाकारे पृथ्वीने वींटी रह्या छे.

रयणाए वलयागं, छद्ध पंचम जोयण सढ्ढं ॥ ३२३ ॥

अर्थ—(रयणाए) के० रत्नप्रभा पृथ्वीना (वलयागं) के० त्रणे वलयनो विष्कंभ एटले छेडे जाडपणु अनुक्रमे कहे छे. तेमां घनोदधि (छ) के० छ योजन जाडो, घनवान (अद्धपंचम) के० साडा चार योजन जाडो, अने तनुवात (जोयणसड्ढं) के० दोढ योजन जाडो छे. ॥ ३२३ ॥

विक्खंभो घणउदही, घणतणुवायाण होइ जहसंखं ॥
सतिभाग गाऊयं, गाऊयं च तह गाउय तिभागो ॥३२४॥
पढममहीवलयेसु, खिविज्ज एयंकमेण बीयाए ॥
दुतिचउपंचछगुणं, तइयाइसु तंपि खिव कमसो ॥३२५॥

अर्थ—(विक्खंभो) के० ए त्रणेने साथे जोडतां पहेली नरक पृथ्वीनी चारे दिशाए बार योजन दूर अलोक छे. (पढम महीवलयेसु) के० पहेली नरक पृथ्वीना त्रण वलयमां एटले (घण-

उन्हीं) के० घनोदधि, (घग) के० घनवात अने (तणुवायाण) के० तनुवात ए त्रण वलयनी मध्ये (जहसंख्य) के० यथा संख्याये करीने (सतिभाग गाऊय) के० घनोदधिमा एक गाउ अने एक गाउनो त्रीजो भागघनवात वलयमा (गाउय) के० एक गाउ, (च) के० अने (तह) के० तेमज तनुवातमा (गाउय तिभागो) के० एक भागनो त्रीजो भाग (खिविज्ज) के० नाखीये त्यारे त्रीजी शर्कराप्रभानो वलयविष्कंभ (होइ) के० होय छे, (एय क्रमेण) के० ए अनुक्रमे (त्रीयाए) के० त्राजी नरक पृथ्वीमा सर्वमली बार योजन, बे गाउ, अने एक गाउना भाग करीये तेवा बे भाग एटलो बीजी नरक पृथ्वीथी चारे दिशाये अलोक छे (तहया इसु) के० वालुकाप्रभादि पाचे नरक पृथ्वीना वलयमा (तवि) के० जे शर्कराप्रभावलयमा नाखेलु तेने पण कमसो के० अनुक्रमे करीने (दुतिचउपचछगुण) के० बे गुणु, त्रण गुणु, चार गुणु, पाच गुणु अने छ गुणु करीने (खिव) के० मेलववु एटले वालुकादिकना वलयनो विष्कंभ होय, ॥ ३२४ ॥ ३२५ ॥

छसतिभागा पउणाय-पच वलयाण जोयणपमाण ॥
एग बारसभागा, सत्त कमा त्रीय पुढवीए ॥ ३२६ ॥

अर्थ—त्राजी शर्कराप्रभाना (वलयाण) के० वलयोनु (जोयणपमाण) के० योजनप्रमाण घनोदधिवलय (छ सति भागा) के० छ योजन अने एक योजनना त्रण भाग करीये तेवो एक भाग एटलु जाणवुं, अने घनवातवलय (पउणा पच) के० पोणा पाच योजननु जाणवु. तथा तनुवातना वलयनु प्रमाण (एग) के० एक योजन अने (बारस भागा सत्त) के० एक योजनना बार भाग करीये तेवा सात भाग (कमा) के० अनुक्रमे करीने जाणवा सर्व

एकठा करतां वार योजन बे गाउ अने एक योजनना त्रण भाग करीये तेवा बे भाग. एटलो बीजी नरकपृथ्वीथी चारे दिशाये अलोक छे ॥ ३२६ ॥

जोयण सत्ततिभागुण, पंच एवं च वलयपरिमाणं ॥
वारस भागा अट्ठओ, तइयाए जहक्कमं नेयं ॥३२७॥

अर्थ—(एवं) के० एवीरीते (तइयाए) के० त्रीजी वालुका प्रभाना (वलयपरिमाणं) के० वलयनुं परिमाण ते (जहक्कमं) के० अनुक्रमे करीने (नेयं) के० जाणवुं. तेमां घनोदधिवलयनुं परिमाण जोयण (सत्ततिभागुण) के० छ योजन बे गाउ अने एक गाउना त्रण भाग करीये तेवा बे भाग अधिक एटलुं जाणवुं. घनवातनुं वलय (पंच) के० पांच योजननुं जाणवुं. अने तनुवातनुं वलय एक योजन अने (वारस भागा अट्ठओ) के० एक योजनना वार भाग करीये तेवा आठ भागनुं जाणवुं. ए सर्व मलीने तेर योजन एक गाउ अने एक गाउना त्रण भाग करीये तेवो एक भाग उपर एटलो वालुकाप्रभाथकी चारे दिशाये अलोक छे. ॥ ३२७ ॥

सत्त सवाया पंचओ, पउणादो जोयणा चउत्थीए ॥
घणउदहिमाइयाणं, वलयाणं माणमेयं तु ॥ ३२८ ॥

अर्थ—(चउत्थीए) के० चोथी पंकप्रभाना (घणउदहिमाइयाणं) के० घनोदधि विगेरेना (वलयाणं) के० वलयोनु (माणं) के० प्रमाण (एयं) के० आ आगल कहे छे ते प्रमाणे जाणवुं. घनोदधिनुं प्रमाण (सत्त) के० सात योजनुं घनवातनुं प्रमाण (सवाया पंचओ) के० सवापांच योजननुं, अने तनुवातनुं प्रमाण (पउणा दो जोयणा) के० पोणा बे योजननुं. सर्वमली पंकप्रभाथकी चउद योजन चारे दिशाये अलोक छे. ॥ ३२८ ॥

सतिभागसत्त तह अद्ध, छक्क वलयाणमाणमेयं तु ॥
जोयणमेगं वारस, भागा दस पंचमीई तहा ॥३२९॥

अर्थ-(तहा) के० तेमज (पचमीई) के० पाचमी धूमप्रभा पृथ्वीना (वल्याणमाण) के० वलयोनु प्रमाण (एय) के० आ प्रमाणे जाणवु घनोदधिनु प्रमाण (सतिभागसत्त) के० त्रीजा भागे सहित सात योजननु, (तह) के० तथा घनवातनु प्रमाण (अद्ध छक्क) के० साडा पाच योजननु, अने तनुवातनु प्रमाण (जोयणमेग) के० एक योजन अने एक योजनना (बारस भागा दस) के० एक योजनना बार भाग करीये तेवा दश भागनु, सर्व मली चौद योजन बे गाउ अने एक गाउना त्रण भाग करीये तेवा बे भाग एटलो धूमप्रभाथी चारे दिशाये अलोक छे. ॥३२९॥

अट्ठतिभागूणाइ, पउणाइ छच वलयपरिमाणं ॥
छट्ठीए जोयण तहा, बारस भागा य इक्कारा ॥३३०॥

अर्थ—(तहा) के० तेमज (छट्ठी) के० छट्ठी तमप्रभा नरक पृथ्वीना (वलयपरिमाण) के० वलयोनु प्रमाण आ प्रमाणे– (अट्ठतिभागूणाइ जोयण) के० त्रीजे भागे ओछा आठ योजन एटले सात योजन बे गाउ तथा एक गाउना त्रण भाग करीये तेवा बे भाग एटलु घनोदधिनु वलय प्रमाण जाणवु, तथा (पउणाइ छच) के० पोणा छ योजननु घनवातनु प्रमाण जाणवुं अने (बारस भागाय इक्कारा) के० एक योजनना बार भाग करीये तेवा अगीयार भाग एटलुं तनुवातनु प्रमाण जाणवु. सर्व मली पदर योजन एक गाउ अने एक गाउना त्रण भाग करीये तेवो एक भाग, एटलु तमप्रभाथकी चारे दिशाए अन्तर छे ॥ ३३० ॥

अट्ठ य छच्चिय दोन्नि य, घणोदहिमाइयाग माणं तु ॥
सत्तममहिए नेयं, जहसंखेणं च तिण्हंपि ॥ ३३१ ॥

अर्थ—(सत्तममहिए) के० सातमी तमनमप्रभा पृथ्वीना (घणोदहिमाइयाणमाणं) के० घनोदधिविगेरे वलयोनुं प्रमाण आ प्रमाणे-घनोदधिवलयनुं प्रमाण (अट्ठय) के० आठ योजननु, घनवातनुं प्रमाण (छच्चिय के० छ योजननुं, अने तनुवातनुं प्रमाण (दोन्निय) के० बे योजननुं. एम (तिण्हंपि) के० त्रण वलयनुं प्रमाण (जहसंखं) के० यथा संख्याये करीने जाणवुं. ए सर्व मली सोल योजननो तमतमप्रभाथी चारे दिशाये अलोक छे. ॥ ३३१ ॥

अहिं कोइने शंका थाय के-प्रथम तो "वीस सहस्साई घणुदहिपिंडो" एटले घनोदधिनो पींड वीस हजार योजननो छे एम कह्यु छे अने हवणां "(छ अद्धपञ्चम जोयण सड्ढं)" एटले घनोदधिनुं वलय छ योजन, घनवातनुं साडा चार योजन अने तनुवातनुं दोढ योजन केम कहो छो ? तो तेनुं ग्रंथकार समाधान करे छे ॥

मज्झेच्चिय पुढविअहे, घणुदहिपमुहाण पिंडपरिमाणं ॥
भणियं तओ कमेणं, हायइ जा वलय परिमाणं ॥३३२॥

अर्थ—जे "वीस सहस्साई घणुदहि पिंडो" ए पाठ कह्यो छे तेता (पुढविअहे) के० नरक पृथ्वीनी नीचे (मज्झेच्चिय) के० निश्चे मध्यभागे (घणुदहिपमुहाण) के० घनोदधि विगेरेनुं (पिंड-परिमाणं) के० पिंड परिमाण (भणियं) के० कह्युं छे. (तओ) के० त्यारपछी (कमेण) के० अनुक्रमे (हायइ) के० घटतुं जाय ते (जावलयपरिमाणं) के० जेटलुं वलयनुं परिमाण छ योजन

इत्यादिक कह्यु छे. तेटलु जाणवु एमा विरोध नथी ॥ ३३२ ॥

हो प्रत्येक नरकपृथ्वीमां नरकावासानी सख्या कहे छे

तीस पणवीस पनरस, दस तिन्नि पणूण एगलक्खाइं ॥
पच य नरया कमसो, चुलसी लक्खाइ सत्तसुवि ॥३३३॥

अर्थ—जे नारकी जीवोने उपजवाना स्थानको ते नरकावासा कहेवाय छे. ते पहली नरकपृथ्वीमा (तीस) के० त्रीश लाख, बीजीमां (पणवीस) के० पचीश लाख, त्रीजीमा (पनरस) के० पदर लाख, चोथीमा (दस) के० दश लाख, पाचमीमा (तिन्नि) के० त्रण लाख, छठ्ठीमा (पणूण एग लक्खाइ) के० एक लाखमा पाच ओछा, अने सातमीमा (पच य) के० फक्त पाच (नरया) के० नरकावासा (कमसो) के० अनुक्रमे जाणवा (सत्तसुवि) के० साते नरक पृथ्वीना एकठा करीये एटले (चुलसी लक्खाइ) के० चोरासी लाख नरकावासा थाय छे ॥ ३३३ ॥

सातमी नरक पृथ्वीमा पाच नरकावासा क्या छे ? ते कहे छे.

पुव्वेण होइ कालो, अवरेण अपइठ्ठ ओ महाकालो ॥
रुरु दाहिणपासे, उत्तरपासे महारुरु ॥ ३३४ ॥

अर्थ—(अपइठ्ठिओ) के० मध्यमा रहेला अप्रतिष्ठान नामना नरकावासथी (पुव्वेण) के० सातमी पृथ्वीमा पूर्व दिशाने विषे (कालो) के० कालनामनो नरकावास (होइ) के० छे (अवरेण) के० पश्चिम दिशामा (महकालो) के० महाकाल नरकावास छे (दाहिणपासे) के० दक्षिण दिशामा (रुरो) के० रुरु नामनो नरकावास छे, अने (उत्तरपासे) के० उत्तर दिशामा (महारुरु) के० महारुरु नामनो नरकावास छे ॥ ३३४ ॥

हवे साते नरकना प्रतरोनी जूदी जूदी संख्या कहे छे.

तेरिक्कारस नव सग, पण तिन्निग पयर सव्वि गुणवन्ना॥
सीमंताई अपइ–ट्ठाणंता इंदया मज्झे ॥ ३३५ ॥

अर्थ—पहेली नरक पृथ्वीमां (तेर) के० तेर प्रतर, बीजीमां (इक्कारस) के० अगीयार, त्रीजीमां (नव) के० नव, चोथीमां (सग) के० सात, पांचमीमां (पण) के० पांच, छट्ठीमां (तिन्नि) के० त्रण,अने सातमीमां (इग) के० एक. ए (सव्वि) के० सर्वमली (गुणवन्ना) के० ओगण पचास (पयर) के० प्रतर जाणवा. ए सर्वे प्रतरना (मज्झे) के० मध्ये (सीमंताई) के० सीमंतथी आरंभी (अप्पइट्ठाणंता) के० अप्रतिष्टान सुधी एटले पहेला प्रतरना मध्यमां सीमन्त नामनो अने ओगणपचासमा प्रतरमां अप्रतिष्ठान नामनो (इंदया) के० इन्द्रका एटले मुख्य नरकावास छे. ॥ ३३५ ॥

हवे साते नरकपृथ्वीना मली ओगणपचास प्रतरना मध्यभागना इंद्रक नरकवासनां नाम कहे छे.

सीमन्तओ त्थ पढमो, बीओ पुण रोरूयत्ति नायव्वो॥
रंभो तत्थय तइओ, चउत्थो पुण होइ उज्झंतो॥३३६॥
संभंतमसंभंतो, विप्भंतो चेव सत्तमो नेओ ॥
अट्ठमओ भत्तो पुण, नवमो सीउत्ति नायव्वो॥३३७॥
वक्कंतमवक्कंतो, विकलो तह चेव रोरुओ निरओ ॥
पढमाए पुढवीए, तेरस नीरींदया एए ॥ ३३८ ॥

अर्थ—(अत्थ) क० हो (पढमो) के० पहेलो (सीमतओ के० सीमन्त, (पुग) के० वली (बीओ) के० बीजो (रोरूयत्ति) के० रोरुओ (नायव्वो) के० जाणवो० (तत्थय) के० ते पहेली नरकमां (तइओ) के० त्रीजो (रभो) के० रभ, (पुण) क० वली (चउत्थो) के० चोथो (उज्झतो) के० उज्झतनामनो (होइ) के० होय छे–॥ ३३६ ॥ (सभतमसभंतो) क० पाचमो सभ्रात अने छठ्ठो असभ्रान, वली (सत्तमो) क० सातमो (विभतो) क० विभ्रात (चेव) क० निश्चे (नेओ) क० जाणवो० (पुण) के० वली (अट्ठमओ) के० आठमो (भत्तो) क० भक्त अने (नवमो) के० नवमो (सीउत्ति) के० शीतनामनो (नायव्वो) के० जाणवो–॥ ३३७ ॥ (वक्कत मवक्कतो) के० दशमो वक्रात अने अगीयारमो अवक्रात, बारमो (विक्लो) क० विकल, (तह) के० तथा तेरमो (रोरुओ निरओ) के० रोरुक नामनो नरकावास (चेव) के० निश्चे जाणवो (पढमाए पुढवीए) के० पहेली नरकपृथ्वीना (एए) क० ए पूर्व कहला (तेरस) क० (तेर नीईदया) के० मध्यना इद्रक नरकावास कह्या–॥ ३३८ ॥

थणीए थणकेय तहा, मणए चणके य दोइ नायव्वे ॥
घट्टे तह सघट्टे, जिब्भे अवजिब्भीए चेव ॥ ३३९ ॥
लोले लोलावत्ते, तहेव घणलोलुए य बोधव्वे ॥
बीयाए पुढवीए, इक्कारस इदया एए ॥ ३४० ॥

अर्थ–पहलो (थणीए) के० स्तनिक, (तहा) के० तथा बीजो (थणकेय) क० स्तनक, त्रीजो (मणए) के० मणक, (य) के० अने चोथो (चणक) क० चणक, ए (दोइ) क० ते (नायव्वा) क० जाणवा पाचमो (घट्टे) क० घट, अने (तह) के० तथा छठ्ठो

(संघट्ट) के० संघट्ट, सातमो (जिब्भे) के० जिभ्भ अने आठमो (अवजिब्भीए) के० अवजिब्भ (चेव) के० निश्चे होय—॥ ३३९ ॥ नवमो (लोले) के० लोल, दशमो (लोलावत्ते) के० लोलावर्त, (तहेव) के० तेमज अगीआरमो (घणलोलुए य) के० घणलोलुक (बोधव्वे) के० जाणवो. (बीयाए पुढवीए) के० बीजी नरकपृथ्वीना (एए) के० ए पूर्वे कहेला (इक्कारस) के० अगीयार (इंदया) के० इंद्रक नरकावास छे० ॥ ३४० ॥

तत्तो तविओ तवणो, तावणो पंचमो निदिट्ठोय ॥
छट्ठो पुण पज्जलिओ, उज्जलिओ सत्तमो
नीरओ ॥ ३४१ ॥

संजलिओ अट्ठमओ, संपज्जलिओ य नवमओ भणिओ॥
तइयाए पुढवीए, एए नव होंति नीरइंदा ॥ ३४२ ॥

अर्थ—पहेलो (तत्तो) के० तप्त, बीजो (तविओ) के० तपित, त्रीजो (तवणो) के० तपन, चोथो (तावणो) के० तापन, (य) के० अने (पंचमो) के० पांचमो (निदिट्ठो) के० निदाघ, (पुण) के० वली (छट्ठो) के० छट्ठो (पज्जलिओ) के० प्रज्वलित, अने (सत्तमो) के० सातमो (उज्जलिओ नीरओ) के० उज्वलित नरकावास. ॥ ३४१ ॥ (अट्ठमओ) के० आठमो (संजलिओ) के० संज्वलित, (य) के० अने (नवमओ) के० नवमो (संपज्ज-लिओ) के० संपज्वलित (भणिओ) के० कह्यो छे. (तइयाए पुढ-वीए) के० त्रीजी नरक पृथ्वीना (एए) के० ए पूर्वे कहेला (नव) के० नव (नीरइंदा) के० मोटा इन्द्रक नरकावास (होंति) के० छे. ॥ ३४२ ॥

आरे सारे मारे, वञ्वे तमए य होइ नायव्वे ॥
खाडखडे खडखडे, इदयनिरया चउत्थीए ॥ ३४३ ॥

अर्थ—पहलो (आरे) के० आर, बीजो (सारे) क० मार, त्रीजो (मारे) के० मार, चोथो (वञ्वे) के० वर्च, पाचमो (तमएय) के० तम, (होइ) क० छे छठ्ठो (खाडखडे) के० खाडखड अने सातमो (खडखडे) के० (खण्डखड) ए सात इदयनिरया) के० इन्द्रक नरकावास (चउत्थीए) के० चोथी नरकपृथ्वीने विषे जाणवा ॥ ३४३ ॥

खाए तमए य तहा, ऊसे अधे य तहय तिमिसे य ॥
एए पंचमपुढवी, पचयनीरइदया हुंति ॥ ३४४ ॥

अर्थ—पहेलो (खाए) क० खाल, बीजो (तमएय) के० तमक, (तहा) के० तेमज त्रीजो (ऊसे) के० ऊस, चोथो (अधेय) के० अन्ध, (तहय) के० तेमज पाचमो (तिमिसेय) के० तिमिस (एए) के० ए नामना (पचयनीरइदया) के० पाच इन्द्रक नरकावास (पचमपुढवो) के० पाचमी नरकपृथ्वीने विषे (हुति) के० छे. ॥ ३४४ ॥

हिम वद्दल ललक्खे, तिन्निउ नीरइदया उ छठ्ठीए ॥
एक्को य सत्तमाए, अपइठ्ठाणो य बोधव्वो ॥ ३४५ ॥

अर्थ—पहलो (हिम) के० हिम, बीजो (वद्दल) क० वद्दल, त्रीजो (ललक्खे) के० ललख, (तिन्निउ) क० ए त्रण (नीरइदया) क० इन्द्रक नरकावास (छठ्ठीए) क० छठ्ठी नरकपृथ्वीने विषे छे (य) के० अने (सत्तमाए) के० सातमी नरकपृथ्वीने विषे

(एको) के० एक (अपइट्ठाणो) के० अप्रतिष्ठान नामनो नरकावास (बोधव्वो) के० जाणवो ॥ ३४५ ॥

हवे दरेकप्रतरे ए मध्यना इंद्रक नरकावासाथी केटली श्रेणिओ निकले छे ? तथा ते दरेक श्रेणिमां केटला नरकावासा छे ? ते कहे छे.

तेहिंतो दिसि विदिसि, विणिग्गया अट्ठ निरयआवलीया॥
पढमपयरे दिसि गुण—वन्न विदिसासु अडयाला ॥३४६॥

अर्थ—प्रत्येक प्रतरे (तेहिंतो) के० ते मध्यना इंद्रक नरकावासाथी (दिसि) के० चारे दिशामां अने (विदिसि) के० विदिशामां (अट्ठ निरयआवलीया) के० आठ नरक पंक्तिओ (विणिग्गया) के० निकलेली छे. तेमां (पढमपयरे) के० पहेला प्रतरने विषे (दिसि) के० चारे दिशामां चारे पंक्तिने विषे (उणवन्न) के० ओगणपचास अने (विदिसासु) के० विदिशामां (अडयाला) के० अडतालीस नरकावासा होय छे. ॥ ३४६ ॥

बीयाइसु पयरेसु, इग इग हीणा उ हुंति पंतीओ ॥
जा सत्तमीयपयरे, दिसि इक्किको विदिसि नत्थि॥३४७॥

अर्थ—(बीयाइसु पयरेसु) के० बीजाथी आरंभीने जे प्रतरो छे तेमां (इग इग हीणाउ पंतीओ) के० दरेक प्रतरे एक एक नरकावासे ओछी पंक्तिओ (हुंति) के० होय छे. जेथी (जासत्तमीयपयरे) के० सातमी नरक पृथ्वीना छेल्ला ओगणपचासमा प्रतरने विषे (दिसि) के० चारे दिशामां (इक्किको) के० एक एक, अने (विदिसि) के० विदिसामां (नत्थि) के० एक पण नथी. ॥३४७॥

हो प्रत्येक प्रतर दिशा तथा विदिशानी आवलीना मल्या सर्व नरकावासानी संख्या जाणवा माटे करण कहे छे

इट्ठपयरेगदिसि संखा,अडगुणा चउविणा सइगसंखा ॥
जह सीमंतयपयरे एगुणनउया सया तिन्नि ॥ ३४८ ॥
अपइट्ठाणे पंच उ, पढमो मुहमतिमो हवइ भूमि ॥
मुहभूमिसमासद्धं, पयरगुण होइ सव्वधण ॥ ३४९ ॥

अर्थ—(इट्ठपयर) के० वाछितप्रतरनी (एगदिसि) के० एक दिशाने विषे (संखा) के० जे नरकावासानी संख्या छे ते आवलीनी अपेक्षाये छे आवली आठ छे माटे ते संख्याने (अडगुणा) के० आठगुणी करीये, पण विदिशामा एक एक नरकावास ओछो होवाथी (चउविणा) के० चार ओछा करीये पछी (स) के० एक इन्द्रक नरकावास सहित करीये एटले (इगसंखा) के० एक प्रतर नरका वासानी संख्या थाय. (जह) के० जेम रत्नप्रभाना (सीमंतयपयर) के० सीमंत नामना पहेला प्रतरमा एकदिशाना नरकावासानी संख्या ओगणपचास छे, तेने आठगुणा करीये त्यारे त्रणसो बाणु थाय तेमाथी चार ओछा करता त्रण सो अठयासी रहे तेमा एक इन्द्रक मेलवीये त्यारे (एगुणनउया सया तिन्नि) के० त्रण सो ने नेव्यासी थाय एवीजरीते बीजे प्रतरे एज प्रमाणे गणता त्रण सो एक्यासी आवलिका गत नरकावासा होय ॥ ३४८॥ एवीज रीते छेल्ला ओगणपचासमा (अपइट्ठाणे) के० अपइठाण प्रतर एक दिशाय एक नरकावासो छे, तेने आठगुणो करता आठ थाय तेमाथी विदिशाना चार काढी नाखीये. बाकी चार रहे तेनी साथे एक इन्द्रक मेलवता मानमां लये आवलिका गत नरकावासा (पंच) के० पांच थाय ॥

हवे एक एक पृथ्वीने विषे आवलिकागत नरकावासा जाणवामाटे पाछली गाथाना पाछला त्रण पदेकरी करणांतर कहे छे, (पढमो) के० पहेला सीमंतक प्रतरना त्रणसो नेव्यासो आवलिकागत नरकावासाने (मुह) के० मुख कहीये अने (अंतिमो) के० छेल्ला ओगणपचासमा अपइटाण प्रतरना पांच नरकावासा ते (भूमि हवइ) के भूमी कहेवाय. पछी (मुहभूमि) के० मुखना त्रण सो अने नेव्यासी तथा भूमिना पांच तेने (समास) के० एकठाकरीये त्यारे त्रण सो अने चोराणुं थाय. तेनुं (अद्धं) के० अर्द्ध करतां एक सो अने सत्ताणुं थाय. तेने (पयरगुणं) के० ओगणपचास प्रतरे गुणतां (सव्वधणं होइ) के० सर्वे ओगणपचासे प्रतरना आवलिकामां रहेला नरकावासानी संख्या नव हजार छ सो अने त्रेपन थाय, एटला साते पृथ्वीना आवलिकागत नरकावासा जाणवा. बाकी त्र्यासी लाख नेवुं हजार त्रण सो ने सडतालीश पुष्पावकीर्ण जाणवा. ॥ ३४९ ॥



नं २

नरकानामनु कोष्टक.

	कइ नरक	मुख	भूमि	समास	समासनु अर्ध	प्रतर	पंक्तिबंध	पुष्पावकीर्णक	सर्वे संख्या
०	सातें नरकनुं	३८९	५	३९४	१९७	४९	९६५३	८३९०३४७	८४०००००
१	रत्नप्रभाया	३८९	२९३	६८२	३४१	१३	४४३३	२९९५५६७	३००००००
२	शर्करा प्रभायाः	२४५	२०५	४५०	२२५	११	२६९५	२४९७३०५	२५०००००
३	वालुका प्रभायाः	१९७	१३३	३३०	१६५	९	१४८५	१४९८५१५	१५०००००
४	पंक प्रभाया	१२५	७७	२०२	१०१	७	७०७	९९९२९३	१००००००
५	धूम प्रभायाः	६९	३७	१०६	५३	५	२६५	२९९७३५	३०००००
६	तम प्रभायाः	२९	१३	४२	२१	३	६३	९९९३२	९९९९५
७	तमस्तम प्रभाया	०	०	०	०	१	१	०	५

अहिं एजवात ग्रंथकार कहे छे—

छण्णवइसय तिवण्णा, सत्तसु पुढवीसु आवलीनिरया ॥
सेस तियासी लक्खा, तिसय सियाला नवइ सहस्सा ॥३५०॥

अर्थ—(सत्तसु पुढवीसु) के० साते नरक पृथ्वीमां (आवली निरया) के० आवलिकामां रहेला नरकावासा (छण्णवइसय) के० छन्नु सो अने (तिवण्णा) के० त्रेपन छे. अने (शेष) के० बाकी (तियासी लक्खा) के० त्र्यासी लाख, (नवइ सहस्सा) के० नेवुं हजार, (तिसय) के० त्रण सो अने (सियाला) के० सडतालीश. एटला पुष्पावकीर्ण नरकावासा जाणवा. सर्वे मलीने चोरासी लाख नरकावासा छे. ॥ ३५० ॥

तिण्णि सया अउणनउया, दोतिणउया य हुंति पुढवीए ॥
दोसय पंचासीया, पंचुत्तर दोत्ति बीयाए ॥ ३५१ ॥

अर्थ—(पुढवीए) के० पहेली नरकपृथ्वीने विषे (तिण्णि सया) के० त्रण सो अने (अउणनउया) के० नेव्यासी नरकावासानुं मुख तथा (दोतिणउयाय) के० बसो अने त्राणु नरकावासानी भूमि (हुंति) के० छे. (बीयाए) के० बीजी नरक पृथ्वीने विषे (दोसय पंचासीया) के० बसोने पंचासी नरकावासानुं मुख अने (पंचुत्तर दोत्ति) के० बसोने पांच नरकावासानी भूमि छे. ॥ ३५१ ॥

सत्ताणुयं सयं च, तित्तीस सयं सयं च पणवीसं ॥
सत्तुत्तरि अउणत्तरी, सत्तत्तिसा य गुणतीसा ॥ तेरस
मुह भूमिओ ॥ ३५२ ॥

अर्थ—त्रीजी नरकपृथ्वीने विषे (सत्ताणुय सय च) के० एक सो सत्ताणु नरकावासानु मुख अने (तित्तीससय) के० एक सो तेत्रीश नरकावासानी भूमि छे. चोथी नरकपृथ्वीने विषे (सय च पणवीस) के० एक सो पच्चीस नरकावासानु मुख अने (सत्तुत्तरि) के० सित्योतेर नरकावासानी भूमि छे पाचमी नरकपृथ्वीने विषे (अउणत्तरी) के० ओगणोत्तर नरकावासानु मुख अने (सत्तत्तिसा) के० साडत्रीस नरकावासानी भूमि छे छट्ठी नरकपृथ्वीने विषे (गुणतीसा) के० ओगणत्रीस नरकावासानु मुख अने (तेरस) के० तेर नरकावासानी भूमि छे ए (मुहभूमिओ) के० मुख अने भूमि कह्या परतु सातमी नरकने विषे प्रतरो नथी माटे मुख अने भूमि नथी ॥ ३५२ ॥

सत्तट्ठि पणसय पण–नवइ सहस्स लक्ख गुणतीस ॥
रयणाए सेढिगया, चउयाल सया य तित्तीसा ॥३५३॥

अर्थ—(रयणाए) के० रत्नप्रभा पृथ्वीमा (लक्ख गुणतीस) के० ओगणत्रीस लाख, (पण नवइ सहस्स) के० पचाणु हजार, (पणसय) के० पाच सो अने (सत्तट्ठि) के० सडसठ एटला पुष्पावकीर्ण नरकावासा छे तथा (सेढिगया) के० श्रेणिमा रह्या (चउयालसया य तित्तीसा) के० चुमालीस सो अने तेत्रीस नरकावासा छे सर्व मली त्रीस लाख नरकावासा रत्नप्रभा पृथ्वीमा जाणवा ॥ ३५३ ॥

सत्ताणवइ सहस्सा, चउवीस लक्ख तिसय पचहिया ॥
बीयाए सेढिगया, छव्वीससया य पणनउया ॥३५४॥

अर्थ—(बीयाए) के० बीजी नरकपृथ्वीमा (चउवीस

लक्ख) के० चोवीसलाख, (सत्ताणवइ सहस्सा) के० सत्ताणु हजार, (तिसय) के० त्रण सो अने (पंचहिया) के० पांच अधिक एटला पुष्पावकीर्ण नरकावासा छे. तथा (सेढिगया) के० श्रेणिमां रहेला (छव्वीस सया) के० छवीस सो (य) के० अने (पणनउया) के० पचाणु नरकावासा छे. सर्व मली पचीस लाख नरकावासा बीजी शर्कराप्रभा नरकपृथ्वीमां जाणवा. ॥ ३५४ ॥

पंचसया पन्नरसा, अडनउय सहस्स लक्ख चउदस य ॥
तइयाए सेढीगया, पणसीयाओ चउदसया ॥ ३५५ ॥

अर्थ—(तइयाए) के० त्रीजी नरकपृथ्वीमां (चउदस लक्ख) के० चउद लाख, (अडनउय सहस्स) के० अठाणु हजार, (पंचसया) के० पांच सो अने (पन्नरसा) के० पनर एटला पुष्पावकीर्ण नरकावासा छे. अने (सेढीगया) के० श्रेणिमां रहेला (चउदसया) के० चउद सो अने (पणसीयाओ) के० पंचाशी नरकावासा छे. सर्व मली पनर लाख नरकावासा त्रीजी वालुका-प्रभा नरकपृथ्वीमां जाणवा. ॥ ३५५ ॥

तेणउया दोन्निसया, नवनवई सहस्स नव य लक्खा य ॥
पंकाए सेढीगया, सत्तसया हुंति सत्तहिया ॥ ३५६ ॥

अर्थ—(पंकाए) के० चोथी पंकप्रभा नरकपृथ्वीमां (नव य लक्खा) के० नव लाख, (नवनवइ सहस्स) के० नवाणुं हजार, (दोन्निसया) के० बसो अने (तेणउया) के० त्राणु, एटला पुष्पावकीर्ण नरकावासा छे, अने (सेढीगया) के० श्रेणिमां रहेला (सत्तसया) के० सात सो अने (सत्तहिया) के० सात अधिक एटला नरकावासा (हुंति) के० छे. सर्व मली दश लाख नरकावासा चोथी पंकप्रभा नरकपृथ्वीमां जाणवा. ॥ ३५६ ॥

सत्तमया पणतीसा, नवनवई सहस्स दोन्नी लक्खा य ॥
धूमाए सेढिगया, पणसट्ठी दोसया हुंति ॥ ३५७ ॥

अर्थ—(धूमाए) के० पांचमी धूमप्रभा नरकपृथ्वीमां (दोन्नी लक्खाय) के बे लाख (नव नवई सहस्स) के० नवाणुं हजार, (सत्तमया) के० सात सो अने (पणतीसा) के पांत्रीस एटला पुष्पावकीर्ण नरकावासा छे तथा (सेढिगया) के० श्रेणिमां रहेला (दो सया) के० बसो अने (पणसट्ठी) के० पांसठ एटला नरकावासा छे सर्व मळी त्रण लाख नरकावासा पांचमी धूमप्रभा नरकपृथ्वीमां छे. ॥ ३५७ ॥

नवनवइओ सहस्सा नव चेव सया हवंति बत्तीसा ॥
पुढवीए छट्ठीए, सेढीगया हुंति तेसट्ठा ॥ ३५८ ॥

अर्थ—(पुढवीए छट्ठीए) के० छठ्ठी तमप्रभा नरकपृथ्वीमां (नवनवइओ सहस्सा) के० नवाणु हजार, (नव सया) के० नव सो अने (बत्तीसा) के बत्रीश. एटला पुष्पावकीर्ण नरकावासा (चेव) के० निश्चे (हवंति) के० छे तथा [सेढीगया] के० श्रेणिमां रहेला [तेसट्ठा] के० त्रेसठ नरकावासा (हुंति) के छे. सर्व मळी नवाणु हजार नव सो पचाणु नरकावासा छठ्ठी तमप्रभा नरकपृथ्वीमां छे सातमी नरकपृथ्वीमां पांचज नरकावासा छे पुष्पावकीर्ण नथी ॥ ३५८ ॥

ते ण नरगावासा, अंतो वट्टा बहिं च चउरंसा ॥
हिट्ठा खुरप्पसंठाण—संठीया पर मदुग्गंधा ॥ ३५९ ॥

अर्थ—[तेण नरगावासा] के० ते पूर्वे वर्णवेला सर्व नरका

वासो [अंतो वट्टा] के० मांहेला भागमां गोलाकार, (वहिं चउरंसा) के० वहार चोरस अने (हिंट्टा) के० नीचे (खुरप्पसंठाणा) के० खूरनला एटले घास कापवाना एक जातना हथीयार सरखा आकारवाला अने [परमदुग्गंधा] के० अत्यंत दुर्गंधमय [संठीया] के० रहेला छे. ते नरकावासा देवलोकना आवलिकागत विमाननो पेठे वृत्त त्रिखूणा अने चोखूणा अनुक्रमे जाणवा. अने पुष्पावकीर्ण नरकावासा अनेकनकारना संस्थानवाला जाणवा. ॥ ३५९ ॥

हवे नरकावासानुं लांबपणुं पहोलपणुं अने उंचपणुं कहे छे.

तिसहस्सुच्चा सव्वे, संखमसंखिज्ज वित्थडायामा ॥
पणयाललक्ख सीमं-तओ य लक्खं अपइठाणो ॥३६०॥

अर्थ—साते नरकपृथ्वीओमां जेटला नरकावासा छे ते (सव्वे) के० सर्वे नरकावासा [तिसहस्सुच्चा] के० त्रण हजार योजन उंचा छे. तथा (वित्थडायामा) के० पहोलाइपणे अने लम्बाइपणे [संखमसंखिज्ज] के कोइक संख्याता योजन अने कोइक असंख्याता योजन छे, पण तेमां [सीमंतओ] के० प्रथम सीमन्त नामनो इन्द्रक नरकावासो [पणयाललक्ख] के० पीस्तालीश लाख योजन लांबो अने पहोळो छे. [य] के० अने [अपइट्ठाणो] के० छेलो अप्रतिष्ठान इन्द्रक नरकावास [लक्खं] के० एक लाख योजन लांबो अने पहोलो छे. ए अपइठाणाने फरता काल विगेरे चार नरकावासा छे ते लांबपणे पहोलपणे अने फरता परीधिये असंख्याता कोडाकोडी योजन जाणवा. ॥ ३६० ॥

हिठ्ठो घणो सहस्सं, उप्पिंसे कुट्ठओ सहस्सं तु ॥
मज्झे सहस्स सुसिरा, तिन्नि सहस्सुच्चया निरया॥३६१॥

अर्थ—सर्वे नरकावासा (हिट्ठो) के० नीचे (घणो सहस्स) के० एक हजार योजननी याढ उची पीठिकावाला, (तु) के० वली (उप्पींसे) के० उपरना भागमा (कुट्टओ सहस्स) के० एक हजार योजनना शिखराकारे गोमट्टवाला अने (मज्झे) के० मध्य-भागने विषे (सहस्स सुसिरा) के० एक हजार योजननी पोला-णवाला छे, एम सर्वे मलीने (तिन्नि सहस्स) के० त्रण हजार योजन (उच्चया) के० ऊचा (निरया) के० नरका वासा छे ॥ ३६१ ॥

छसु हिट्ठुवरि जोयण, सहस्स बावन्नसट्ठ चरिमाए ॥
पुढवीनिरयरहियं, निरया सेसभि सव्वासु ॥ ३६२ ॥

अर्थ—रत्नप्रभादि साते नरकपृथ्वीना जे एक लाख एंशी हजार योजन विगेरे पृथ्वीपिंड कह्या छे तेमा (छसु) के० पहेली रत्नप्रभादिक छ पृथ्वीमा (हिट्ठुवरि) के० नीचे अने उपर (जोयण सहस्स) के० एक एक हजार योजन क्षेत्र नरकावासाथी रहित जाणवु, अने (चरिमाए) के० सातमी नरकपृथ्वीने विषे नीचे अने उपर (बावन्न सट्ठ) के० साडीबावन हजार साडिबा वन हजार योजन (पुढवीनिरयरहित) के० क्षेत्र नरकावासाथी रहित जाणवु. (सेसमि सव्वासु) के० बीजी समस्त पृथ्वीने विषे (निरया) के० नरकावासा जाणवा ॥ ३६२ ॥

हवे दरेक नरक पृथ्वीमा प्रतर प्रतर केटलु अंतर छे ? ते कहे छे.

तिसहस्सुणा पुढवी तिसहस्स गुणिएहि नियपयरेहिं॥
ऊणा ~ पयर, भाईया पत्थडतरय ॥ ३॰

अर्थ—(पुढवी) के० पहेली नरक पृथ्वीना पिंडमांथी (विसहस्सुणा) के० एक हजार उपरथी अने एक हजार नीचेथी एम बे हजार योजन ओछा करीये. पछी दरेक प्रतर त्रण त्रण हजार योजन उंचा छे माटे (तिसहस्स गुणिएहिं) के० त्रण हजारवडे गुणेला (निययपयरेहिं) के० पोतपोताना प्रतरोनी जे संख्या थाय ते (ऊणा) के० ओछी करवी. पछी (रूवूण) के० एक रूप करीने (नियपयरभाईया) के० पोत पोताना प्रतरना जेटला आंतरा होय तेथी भागाकार करवो एटले (पत्थडंतरयं) के० प्रतर प्रतरनुं अंतर प्रमाण थाय छे. ॥ ३६३ ॥

हवे ते उदाहरणथी स्पष्ट समजावे छे के-रत्नप्रभा पृथ्वीनो पिंड एक लाख एंशी हजार योजननो छे, तेमांथी बे हजार योजन काढीये एटले बाकी एक लाख अठ्ठोतेर हजार रहे. हवे ए पृथ्वीना तेर प्रतर छे ते दरेक त्रण त्रण हजार योजन उंचा छे माटे तेरने त्रण हजारे गुणीये त्यारे ओगणचालीस हजार थाय. एटला एक लाख अठ्ठोतेर हजारमांथी काढीये बाकी एक लाख ओगणचालीश हजार रहे, तेने तेर प्रतरनी वचमां बार आंतरा छे, माटे बारे भाग आपीये एटले एक एक आंतरे अगीयार हजार पांचसो अने ब्याशी योजन, अने ते उपर एक योजनना त्रण भाग करीये तेवो एक भाग एटलुं रत्नप्रभाना प्रत प्रतर वच्चे अन्तर जाणवुं. एवीज रीते बीजी नरक पृथ्वीओने विषे पण पोतपोताना प्रतरे भाग दीधाथी जे आंक आवे ते प्रत्येके अन्तर जाणवुं. एज आगली गाथाथी कहे छे.

तेसीया पंचसया, इक्कारस चेव जोयणसहस्सा ॥
रयणाए पत्थडंतर-मेगो चिय जोयगतिभागो ॥३६४॥

अर्थ—(रयणाए) के० पहेली रत्नप्रभा पृथ्वीमां (इक्कारस

जोयणसहस्सा) के० अगीयार हजार, (पचसया) के० पाचसो अने (तेसीया) के० त्यासी एटला योजन, तथा (एगो जोयण-तिभागो) क० एक योजनना त्रण भाग करीये तेवो एक भाग एटलु (पत्थडतर) क० प्रतर प्रतर अन्तर (चिय) के० निश्चे जाणवु. ॥ ३६४ ॥

सत्ताणवई सयाइं, बीयाए पत्थडतरं होइ ॥

पणहत्तरि तिण्णि सया, बारस सहस्स तइयाए॥३६५॥

अर्थ—(बीयाए) के० बीजी नरकपृथ्वीने विषे अगीयार प्रतरना दश आतरामा (सत्ताणवई सयाइ) के० नव हजार अने सात सो योजननु (पत्थडंतर होइ) के० प्रतर प्रतर आतर होय (तइयाए) के० त्रीजी नरकपृथ्वीने विषे नव प्रतरना आठ आत-रामा (बारस सहस्स) के० बार हजार, (तिण्णिसया) के० त्रण सो अने (पणहत्तरि) के० पचोतेर योजननु प्रतरे प्रतर अतर होय. ॥ ३६५ ॥

छावट्ठिसय सोलस, सहस्स एगो य दो विभागाइ ॥

अड्ढाइज्ज सयाइं, पणवीस सहस्स धूमाए ॥ ३६६ ॥

अर्थ—चोथी नरकपृथ्वीना सात प्रतरना छ आतरामा (सोलस सहस्स) के० सोल हजार (छावट्ठिसय) के० एक सो ने छासट योजन (य) के० अने (एगो दो विभागाइ) के० एक योजनना त्रण भाग करीये तेवा व भाग एटलु प्रतर प्रतर अतर होय पाचमी (धूमाए) के० धूमप्रभा नरकपृथ्वीने विषे पाच प्रतरना चार आतरामा (पणवीस सहस्स) के० पचीस हजार अने (अड्ढाइज्ज सयाइ) के० अढीसो अर्थात् बसो पचास योज-नतु प्रतर प्रतरे अतर छे. ॥ ३६६ ॥

वावन्न सहस्साइं, पंचेव हवंति जोयणसयाइं ॥
पत्थडमंतरमेयं, छट्ठीपुढवीए नेयव्वं ॥ ३६७ ॥

अर्थ—(छट्ठीपुढवीए) के० छट्ठी तमप्रभा नरकपृथ्वीने विषे त्रण प्रतरना बे आंतरामां (वावन्न सहस्साइं) के० बावन हजार अने (पंचेव जोयणसयाइं) के० पांचसो योजन. (एयं) के० एटलुं (पत्थडमंतरं) के० प्रतरे प्रतरे अंतर (नेयव्वं) के० जाणवुं. ॥ ३६७ ॥ (सप्तम्यां त्वेक एव प्रतर इति तत्रांतरं न संभवति ॥ उक्तं नारकाणां प्रसंगवशाद्भवनद्वारम ॥ अर्थ—वली सातमी तमतमप्रभा नरकपृथ्वीमां एकज प्रतर होवाथी तेमां आंतरा संभवे नहीं.एम ए प्रसंगने अनुसरी नारकी जीवोनुं भवनद्वार कह्युं.

अथ नारकाणा मवगाहनाद्वारमारभ्यते ॥

हवे ते नारकी जीवोनुं अवगाहना द्वार एटले शरीरप्रमाणद्वार कहे छे.

पउणट्ठधणु छ अंगुल, रयणाए देहमाणमुक्कोसं ॥
सेसासु दुगुणदु गुणं,पण धणुसय जाव चरिमाए॥३६८॥

अर्थ—(रयणाए) के० पहेली रत्नप्रभा नरकपृथ्वीमां नारकीओनुं (उक्कोसं) के० उत्कृष्टुं (देहमाणं) के० शरीर प्रमाण (पउणट्ठधणु) के० पोणा आठ धनुष्य अने (छ अंगुल) के० छ अंगुलनुं होय छे. अने (सेसासु) के० बाकीनी छ पृथ्वीमां (दुगुणदुगुणं) के० प्रथमनी नरक करतां बमणुं बमणुं अनुक्रमे करवुं. ते (जाव चरिमाए) के० जेटलामां छेल्ली नरकपृथ्वीने विषे

(पण धणुसय) के० पाच सो मनुष्यनु उत्कृष्ट शरीर प्रमाण होय ॥ जेमकेरत्नप्रभामा सात मनुष्य त्रणहाथ छ आगुल, शर्करप्रभामा पन्नर मनुष्य बे हाथ बार अगुल, वालुका प्रभामा एकत्रीश मनुष्य एक हाथ. पकप्रभामा बासठ धनुष्य बे हाथ, धूमप्रभामा एक सो पचीश मनुष्य, तमप्रभामा अढी सो मनुष्य, अने तमतमप्रभामा पांच सो मनुष्यनु उत्कृष्ट शरीर प्रमाण होय ॥ ३६८ ॥

हवे रत्नप्रभाना प्रतर प्रतरे जुदु जुदु देहमान कहे छे

रयणाएपढमपयरे, हत्थतिय देहमाणमणुपयर ॥
छप्पणगुलसड्ढा, वुड्ढी जा तेरसे पयरे ॥ ३६९ ॥

अर्थ—(रयणाएपढमपयरे) के० रत्नप्रभा पृथ्वीना पहेला प्रतरे (हत्थतिय देहमाण) के० त्रण हाथनु उत्कृष्ट शरीर प्रमाण छे. त्यार पछी (अणुपयर) के० प्रतर प्रतर (छप्पणगुलसड्ढा) के० साडा छप्पन्न अगुलनी (वुड्ढी) के० वृद्धि करवी के-जेथी (जा तेरसे पयरे) के० तेरमा प्रतरे पोणा आठ मनुष्य अने छ अगुलनु प्रमाण पूर्ण थाय ॥ ३६९ ॥

हवे शर्करादिकना प्रतरे प्रतर उत्कृष्ट देहमान कहे छे

जं देहपमाण उवरि-माए पुढवीए अतिमे पयरे ॥
त चिय हिट्ठिमपुढवी-पढमपयरमि बोधव्व ॥ ३७० ॥

अर्थ—(उवरिमाए पुढवीए) के० उपर उपरनी पृथ्वीना (अतिमे पयरे) के० छेल्ला प्रतरने विषे उत्कृष्ट (ज देहपमाण) के० जे शरीर प्रमाण होय (ते) के० ते प्रमाण (चिय) के० निश्चे (हिट्ठिमपुढवीपढमपयरमि) के० नीचेनी पृथ्वीना पहला प्रतर (बोधव्व) के० जाणवु ॥ ३७० ॥

तं चेगूणगसगपयर, भइयं बीयाइ पयर वुढिभवे ॥
तिकर तिअंगुल करसत्त,अंगुला सढि गुणवीसं॥३७१॥
पण धणु अंगुलवीसं, पनरसधणु दुन्नि हत्थ सड्ढा य ॥
बासट्ठि धणुहसड्ढा.पण पुढवी पयर वुढि इमा ॥३७२॥

अर्थ—(तं च) के० ते शर्कराादिक पृथ्वीना पहेले प्रतरे जे देहमान आवे तेने (एगूणग) के० एक उणे (सगपयर) के० पोत पोताने प्रतरे (भइयं) के० भाग आपवो. तेम करतां जे आंक आवे ते शर्कराादिक पृथ्वीना (बीयाइ पयर) के० बीजा प्रतरादिकने विषे (वुढिभवे) के० वृद्धि होय, पण ते वृद्धि बीजी नरकपृथ्वीथी आरंभी छट्ठी पृथ्वी सुधी एटले पांच पृथ्वीना बीजा प्रतरे अनुक्रमे जाणवी. हवे शर्कराप्रभाना प्रथम प्रतरे सात धनुष्य त्रण हाथ अने छ अंगुल देहमान छे, तेमां (तिकर तिअंगुल) के० त्रण हाथ अने त्रण अंगुलनी वृद्धि करीये, तथा त्रीजा नरके प्रथम प्रतरे पन्नर धनुष्य बे हाथ अने बार अंगुलनुं देहमान छे तेमां (करसत्त अंगुला सढि गुणवीस) के० सात हाथ ने साडी ओगणीश अंगुलनी वृद्धि करीये-॥ ३७१ ॥ चोथा नरकना पहेले प्रतरे एकत्रीश धनुष्य अने एक हाथनुं शरीर प्रमाण छे. तेमां (पण धणु अंगुलवीसं) के० पांच धनुष्य ने वीश अंगुलनी वृद्धि करीये. पांचमा नरकना पहेले प्रतरे साडीबासठ धनुष्यनुं देहमान छे, तेमां (पनरस धणु दुन्नि हत्थ सड्ढाय) के० पन्नर धनुष्य ने अढीहाथनी वृद्धि करीये. छठा नरकना पहेले प्रतरे एक सो पच्चीस धनुष्यनुं देहमान छे, तेमां (बासट्ठि धणुहसड्ढा) के० बासठ धनुष्य अने बे हाथनी वृद्धि करीये. एम (पण पुढवी पयर वुढि इमा) के० पांच नरक पृथ्वीना प्रतरोने विषे ए प्रमाणे वृद्धि करवी. ॥ ३७२ ॥

एज वात विस्तार सहित समजावे छे के-शर्कराप्रभाना पहेला प्रतरे सात धनुष्य त्रण हाथ अने छ अंगुल देहमान छे. ते सात धनुष्यना अठ्ठावीश हाथ थाय तेनी साथे उपरना त्रण हाथ मेळवतां एकत्रीश हाथ थाय. तेना अंगुल करवामाटे चोवीसे गुणीये तो सात सो चुमालीश अंगुल थाय, तेमां उपरना छ अंगुल मेळवतां सर्व मली सात सो पचास अंगुल थाय तेने शर्करा प्रभाना अगीयार प्रतरने एके उणा करी दशे भाग आपीये तो एक एक भागे पचोतेर अंगुल आवे. तेना त्रण हाथ अने त्रण अंगुल थाय एटली शर्कराप्रभा पृथ्वीना पहेला प्रतरने विषे देहमाननी वृद्धि थाय एम बीजा प्रतरथी आरभी दरेक प्रतरे एवीज रीते वृद्धि करवी ए प्रमाणे बीजीथी छठी सुधी प्रत्येक नरक पृथ्वीने विषे जाणवुं. समजणमाटे यंत्र स्थापना जोवी सातमी नरक एकज प्रतर छे माटे त्यां उत्कृष्ट पांचसो धनुष्यनुंज देहमान छे

हवे नारकीनुं उत्कृष्ट तथा जघन्य उत्तरवैक्रिय शरीरप्रमाण कहे छे

इय साहावियदेहा, उत्तरवेउव्विओ य तद्दुगुणो ॥
दुविहावि जहन्नकमा, अंगुल असंख संखसो ॥३७३॥

अर्थ—(इय) क० ए पूर्वे साते नरकना नारकीओनुं (साहावियदेहो) क० स्वाभाविक एटले भवधारणीय शरीर प्रमाण कह्यु (तद्दुगुणो) क० तेनाथी बमणुं (उत्तरवेउव्विओय) के० उत्तर वैक्रिय-शरीर जाणवुं जेमके रत्नप्रभाने विषे पन्नर धनुष्य बे हाथ अने बार अंगुल उत्तर वैक्रिय शरीर होय अने सातमीनरके एक हजार धनुष्य उत्तर वैक्रिय शरीर होय. ए भवधारणीय अने उत्तर वैक्रिय शरीरनुं प्रमाण कह्युं हवे (दुविहोवि जहन्न कमा) क० अनुक्रमे बे प्रकारे जघन्य शरीर प्रमाण कहे छे एक भवधारणीय बीजुं

उत्तरवैक्रिय. ए बन्ने शरीर जघन्यथी साते नरकमां अनुक्रमे (अंगुल असंख संखंसा) के० अंगुलनो असंख्यातमो भाग तथा संख्यातमो भाग होय. अहिं भवधारणीय शरीर उत्पत्ति वखते अंगुलने असंख्यातमे भागे अने उत्तरवैक्रिय शरीर प्रारंभनी वखते अंगुलना संख्यातमे भागे होय एम जाणवुं. नारकीनुं अवगाहना द्वार पूर्ण थयुं ॥

हवे नारकीना जीवोनुं उत्पत्तिविरह तथा चवनविरहनुं द्वार दोढ गाथाथी कहे छे.

सत्तसु चउवीस मुहू,सग पनर दिणेग दु चउ छमासा ॥
उववाय चवणविरहो, ओहे बारस मुहुत्त गुरू ॥२७४॥
लहुओ दुहावि समओ,संखा पुण सुरसमा मुणेयव्वा ॥

अर्थ—(सत्तसु) के० साते नरकमां अनुक्रमे एटले पहेलीए (चउवीस मुहु) के० चोवी मुहूर्त, बीजीए (सग) के० सात दिवस, त्रीजीए (पनर दिण) के० पन्नर दिवस, चोथीए (एग) के० एक मास, पांचमीए (दु) के० बे मास, छट्ठीए (चउ) के० चार मास, अने सातमीए (छ मासा) के० छमास सुधी (उववायचवणविरहो) के० उत्पात तथा चवननो विरहकाल जाणवो. जो के साते नरकमां नारकी जीवो घणुं करीने निरंतर उपजे छे अने चवे छे, परंतु (ओहे) के० सामान्यपणे सातेमां न उपजे अने न चवे तो (लहुओ) के० जघन्यथी साते नरके (दुहाविसमओ) के० साथे पण एक समय अने जूदो पण एक समय विरह पडे अने (गुरु) के० उत्कृष्टथी (बारस मुहुत्त) के० बार मुहूर्तनो विरहकाल जाणवो. (पुण) के० वली नारकीना जीवोनी उपजवान तथा चववानी (संखा) के० संख्या तो (सुरसमा) के०

देसनाना मरणी एटले एक समयमां एक ने त्रण उत्कृष्ट संख्याता अने असंख्याता सुधीनी समुजयवा क० जाणवी. ए नारकीनु उपपातविरहद्वार तथा च्यवनविरहद्वार कह्यु.

हवे कयो जीव नरके जाय ते गतिद्वार कहे छे

मखाउ पजत्त पणिंदि–तिरिनरा जंति निरएसु ॥३७५॥

अर्थ—(मखाउ) के० संख्याना आयुष्यवाळा (पजत्त) क० पर्याप्ता (पणिंदि तिरिनरा) क० पचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्य नरकायु बांधे तो (जंति निरएसु) क० नरकमां जाय छे ॥३७५॥

हवे कया जीवो नरकायु बांधे? ते कहे छे

मिच्छदिट्ठि महारंभ,परिग्गहो तिव्वकोह निस्सीलो॥
नरयाऊय निबंधइ, पावमई रुद्दपरिणामो॥ ३७६ ॥

अर्थ—(मिच्छदिट्ठि) के० मिथ्यात्वी, (महारंभ) क० मोटा आरंभ करनारो, (परिग्गहो) के० बहुपरिग्रहधारी, (तिव्व-कोह) के० आकरा क्रोधवाळो, (निस्सीलो) के० शील रहित, (य) के० वळी (पावमई) के० पापबुद्धिवाळो अने (रुद्दपरिणामो) के० रौद्रपरिणामि एवो जीव (नरयाउ) क० नरकनु आयुष्य (निबंधइ) के० बांधे छे ॥ ३७६ ॥

हवे विशेषपणाथी जूदी जूदी नरकगतिए जनारा जीवो कहे छे

असन्नि सरिसिव पक्खी,सीह उरगि त्थि जंति जाछट्ठि॥
कमसो उक्कोसेण, सत्तम पुढवी मणुयमच्छा ॥३७७॥

अर्थ—(असन्नि) के० असंज्ञी सम्मूर्छिम पंचेंद्रिय पर्याप्ता तिर्यंच जो नरकायु बांधे तो पहेली नरक जाय, त्यां ते नरकथी

दश हजार वर्ष अने उत्कृष्टथी पल्योपमना असंख्यातमा भागना आयुष्ये उत्पन्न थाय तथा (सरिसिव) के० भूजापरिसर्प ते नोलीयादिक जीवो बीजी नरक सुधी जाय, (पक्खी) के० गीध सीचाणादिक मांसाहारी पक्षीओ रौद्र अध्यवसायने लीधे त्रीजी नरकसुधी जाय, (सीह) के० सिंह चितरा वल्लाडा विगेरे हिंसकजीवो चोथी नरकसुधी जाय, (उरगि) के० उरपरिसर्प ते दरेक जातिना सर्पो पांचमी नरकसुधी जाय, (त्थि) के० स्त्रीवेदे नरकायुबांधनारा स्त्रीरत्न प्रमुख ते (जाछट्ठि) के० छट्ठी नरकसुधी जंति के० जाय छे. वली गर्भजपर्याप्ता (मणुयमच्छा) के० मनुष्य अने मच्छ ते (उक्कोसेणं) के० उत्कृष्टथी (सत्तमपुढवी) के० सातमी नरकसुधी जाय. ए (कमसो) के० अनुक्रमे उत्कृष्टगति कही. अने जघन्यथी रत्नप्रभाना पहेला प्रतरसुधी जाय. बाकीनी सर्व मध्यमगति जाणवी ॥ ३७७ ॥

हवे केटलाक अतिक्रूर तिर्यंचनी प्राये करीने गति कहे छे.

वाला दाढी पक्खी, जलयर नरगागया उ अइक्रूरा ॥
जंति पुणो नरएसु, बाहुल्लेणं न उण नियमा ॥३७८॥

अर्थ—(वाला) के० व्याल एटले सर्प विगेरे, (दाढी) के० दाढवाला ते सिंह विगेरे, (पक्खी) के० पक्षी ते गीध विगेरे अने (जलयर) के० जलचर ते मत्स्य विगेरे. एटली जातना जीवो (नरगागया) के० नरकथी आव्या होय तो पण (अइक्रूरा) के० अति क्रूरपणाने लीधे (बाहूल्लेणं) के० घणुंकरीने (पुणो) के० पण (नरएसु) के० नरकने विषे (जंति) के० जाय छे. परन्तु (नउण नियमो) के० तेनो निश्चय नथी. कारण कोई जीव नरकथी आवी सम्यक्त्व पामी सारा संघयणने लीधे मोक्षपण पामे छे. ॥ ३७८ ॥

हवे नारकीने संघयण अने लेश्या कहे छे

दो पढमपुढविगमणं, छेवट्ठे कीलियाइ संघयणे ॥
इक्किकपुढविवुढ्ढी, आइतिलेस्सा उ नरएसु ॥ ३७९ ॥

अर्थ—(छेवट्ठे) के० छेवट्ठा संघयणवालो जीव (दो पढमपुढविगमणं) के० पहेली बे नरकपृथ्वी सुधी जाय, अने (कीलियाइ संघयणे) के० कीलिकादिक संघयणवालाजीवोनी (इक्किकपुढविवुढ्ढी) के० एक एक नरकपृथ्वीनी वृद्धि करवी जेम कीलिका संघयणवाला त्रीजी नरकपृथ्वी सुधी जाय अर्द्धनाराचवाला चोथी सुधी, नाराचवाला पांचमी सुधी, ऋषभनाराचवाला छट्ठी सुधी अने वज्रऋषभनाराचवाला सातमी नरकपृथ्वी सुधी जाय ए उत्कृष्टी गति जाणवी जघन्यथी तो सर्व संघयणवाला जीवो रत्नप्रभाना पहेला प्रतर सुधी जाय. ॥ हवे नारकीने लेश्या कहे छे ॥ (उ) के० वली (नरएसु) के० नारकीने विषे (आइतिलेस्सा) क० कृष्ण नील अने कापोत ए प्रथमनी त्रण लेश्या होय ॥ ३७९ ॥

हवे ए लेश्याओने विशेषे विवरीने कहे छे

दुसु काऊ तइयाए, काऊ, नीला य नील पंकाए ॥
धूमाए नीलकिण्हा,दुसु किण्हा हुंति लेस्साओ॥३८०॥

अर्थ—(दुसु) के० पहेली बे नरकमा (काऊ) के० पण कापोतलेश्या होय परन्तु पहेली करता बीजीमा अतिमलीन लेश्या होय (तइयाए) के० त्रीजी नरकमा (काउनीला य) क० कापोत अने नील लेश्या होय तेमा पल्योपमना असंख्यातमा भागे अधिक एवा त्रण पल्योपमना आयुष्यवालाने कापोत अने तेथी अधिक आयुष्यवालाने नील लेश्या होय छे अने (पंकाए) के० पंकप्रभामा

न ल) के० नील लेश्या एकज होय छे. (धूमाए) के० धूमप्रभामां (नीलकिण्हा) के० नील अने कृष्ण लेश्या होय छे. तेमां जे जीवोनुं पल्योपमना असंख्यातमा भागे अधिक दश पल्योपमनुं उत्कृष्ट आयुष्य होय तेमने नील लेश्या अने एथी वधारे आयुष्यवालाने कृष्ण लेश्या होय छे. अने (दुसु) के० छठ्ठी अने सातमी नरकने विषे (किण्हा) के० कृष्णलेश्या छे. तेमां एटलुं विशेष के-प्रथमनी कृष्णलेश्या करता छेल्ली बे नारकीनी कृष्ण लेश्या विशेष कृष्ण लेश्य होय छे. (लेस्साओ हुंति) के० साते नरकमां लेश्याओ होय छे ते कही. ॥ ३८० ॥

हवे उपर कहेली नारकीनी लेश्या [illegible] अथवा भाव रुप छे ? ते सूत्रकार कहे छे.

सुरनारयाण ताओ, दव्वलेस्सा अवट्ठिया भणिया ॥
भावपरावत्तीए, पुण एसिं हुंति छल्लेस्सा ॥ ३८१ ॥

अर्थ—(सुरनारयाण) के० देवता तथा नारकीने (ताओ) के० ते कहेली (दव्वलेस्सा) के० द्रव्यलेश्या (अवट्ठिया) के० क्षेत्रसंबंधी (भणिया) के० कही छे. कांइ वर्णरूप न जाणवी. (पुण) के० वली द्रव्यक्षेत्रकालादिथी तेवी तेवी सामग्री पामीने (भावपरावत्तीए) के० परिणामना विपर्यास एटले फेरफारे करीने (एसिं) के० ए देवता तथा नारकीने (छल्लेस्सा) के० छलेश्या (हुंति) के० होय छे. ॥ ३८१ ॥

हवे नरकथकी निकलेला जीवो कइ गतिमां जाय ? ते कहे छे.

निरउवट्टा गब्भय, पजत्तसंखाउ लद्धि एएसिं ॥
चक्कि हरिजुअल अरिहा, जिण जइ दिसि सम्म
पुहविकमा ॥ ३८२ ॥

अर्थ—(निरउवट्टा) के० नरकथकी निकलेला जीवो (गब्भय) के० गर्भज (पजत्त) क० पर्याप्ता तथा (ससंउ) के० संख्याता आयुष्यवाला थाय (हो (एएसिं) क० ए माते नरकथी निकलेला जीवोने (लद्धि) के० केवी केवी लब्धी एटले पदवी प्राप्त थाय ? ते कहे छे. पहेली नरकपृथ्वीथी निकलेलो जीव (चक्कि) के० चक्रवर्ति थाय, बीजी पृथ्वी थकीनो निकलेला जीव (हरिजुअल) के० वासुदेव तथा बल्देव थाय. त्रीजी नरक पृथ्वीथकीनो निकलेलो जीव (अरिहा) क० अरिहंत थाय, चोथी नरक पृथ्वी थकीनो निकलेलो जीव (जिण) क० सामान्य केवली थाय पांचमी नरक पृथ्वी थकीनो निकलेलो जीव (जइ) क० सर्व विरति साधु होय, छट्ठी नरक पृथ्वी थकीनो निकलेलो जीव (दिसि) के० देशविरति श्रावक होय अने सातमी नरक पृथ्वीथी निकलेलो जीव (सम्म) के० सम्यक्त्वधारी होय ए (पुहविकमा) के० नरक पृथ्वीनी अनुक्रमे लब्धी कही. ॥२८२॥

हवे नारकी जीवो अवधिज्ञानथी केटलु क्षेत्र जोइशके ते कहे छे.

रयणाए ओहि गाउअ, चत्तारि अद्धुट्ठ गुरु लहु कमेण ॥
पइपुढवि गाउयद्ध, हायइ जा सत्तमि इगद्ध ॥ २८३ ॥

अर्थ—(रयणाए) के० रत्नप्रभा पृथ्वीने विषे नारकी जीवोने (ओहि) क० अवधिज्ञान (गाउअ चत्तारि) क० चार गाउनुं होय छे ते गुरु क० उत्कृष्ट जाणवुं अने (अद्धुट्ठ) क० साडात्रण गाउनुं अवधिज्ञान (लघु) के० जघन्यथी होय छे ए (कमेण) के० अनुक्रमे जाणवुं त्यार पछी (पइपुढवि) क० दरेक पृथ्वीए (गाउयद्ध हायइ) के० उत्कृष्टथी अने जघन्यथी

अर्द्धो अर्द्धो गाउ ओछुं करवुं, जेथी (जामत्तमि) के० यावत् सातमी नरकने विषे (इगद्धं) के० उत्कृष्टथी एक गाउ अने जघन्यथी अर्द्धो गाउ अवधिज्ञान होय छे. ॥ ३८३ ॥ ए नरकद्वार पूर्ण थयुं. ॥

हवे मनुष्यद्वार कहे छे। अहिं मनुष्यना भवन विना आठ द्वार कहे छे, तेमां स्थितिद्वार अने अवगाहना द्वार प्रथम कहे छे.

गब्भनर तिपलियाऊ, तिगाउ उक्कोस ते जहन्नेणं ॥
मुच्छिम दुहावि अंतमुहु,अंगुल असंखभाग तणू॥३८४॥

अर्थ—(गब्भनर) के० गर्भज मनुष्य उत्कृष्टथी (तिपलियाऊ) के० त्रण पल्योपमना आयुष्यवाला जाणवा. अने (ते) के० ते गर्भज मनुष्य (उक्कोस) के० उत्कृष्टथी (तिगाउ) के० त्रण गाउना देहमानवाला जाणवा. तथा (जहन्नेणं) के० जघन्यथी गर्भज मनुष्यनुं अने (मुच्छिम) के० समूर्छीम मनुष्यनुं (दुहावि) के० जघन्य अने उत्कृष्टथी (अंतमुहु) के० अंतर्मुहूर्तनुं आयुष्य होय छे. तथा गर्भज मनुष्यनुं जघन्यथी (अंगुल असंखभाग तणू) के० अंगुलना असंख्यातमा भागनुं शरीर होय छे. ३८४ ॥

हवे उपपात उद्वर्त्तना विरहकाल कहे छे.

बारस मुहुत्त गब्भे, इयरे चउवीस विरह उक्कोसो ॥
जम्ममरणेसु समओ,जहण्ण संखा सुरसमाणा ॥३८५॥

अर्थ—(गब्भे) के० गर्भज मनुष्यने जन्म आश्री तथा मरण आश्री विरहकाल उत्कृष्टथी (बारस मुहुत्त) के० बार मुहूर्त्तनो होय छे. एटले एक गर्भज मनुष्य उपन्या पछी बीजो उत्कृष्टथी बार मुहूर्त्तने आंतरे उपजे. मरण पण एज प्रमाणे जाणवुं.

अने (इयरे) के० सम्मूर्छिम मनुष्यने (उक्कोसो) क० उत्कृष्टथी जन्ममरणनो विरह) के० विरहकाल (चउवीस) के० चोवीस मुहूर्तनो जाणवो वली गर्भज तथा समूर्छिम मनुष्यने (जन्ममरणेसु) के० जन्ममरणने विषे विरहकाल (समओ) के० एक समयनो जाणवो तथा गर्भज अने सम्मूर्छिम मनुष्यनी उपजवानी (जहण्णसंखा) क० जघन्यसंख्या (सुरसदाणा) के० देवताना सरखी जाणवी एटले एक समये एक बे त्रणथी आरंभी संख्याता असंख्याता उपजे तथा मरण पामे एम जाणवु. ॥ ३८५ ॥

हवे कयो जीव मरी मनुष्यगतिमा आवे ? ते गतिद्वार कहे छे.

सत्तममहिनेरइए, तेऊ वाऊ असंख नरतिरिए ॥
मुत्तूण सेसजीवा, उप्पज्जंति नरभवंमि ॥ ३८६ ॥

अर्थ—(सत्तममहिनेरइए) के० सातमी नरकपृथ्वीना नारकी. (तेउ) के० तेउकायना जीवो, (वाउ) क० वायुना जीवो तेमज (असंख नरतिरिए) क० असंख्याता आयुष्यवाला युगलीया मनुष्य अने तिर्यंच ए पांच जातीना जीवोने (मुत्तूण) के० मूकीने (सेस जीवा) के० बाकीना सर्वे जीवा (नरभवंमि) क० मनुष्य भवने विषे (उप्पज्जंति) के० उपजे छे ॥ ३८६ ॥

सुरनेरइएहिं चिय, हवंति हरि अरिह चक्कि बलदेवा ॥
चउविहसुर चक्कि बला वेमाणि हुंति हरि अरिहा ॥३८७॥

अर्थ—(हरि) के० वासुदेव (अरिह) क० अरिहंत, (चक्कि) के० चक्रवर्त्ती अने (बलदेवा) के० बलदेव ए चार (सुरनेरइएहिं) क० देवता अने नारकीनी गतिथी आवेला (चिय) क० निश्चे (हवंति) क० होय छे वली (चक्किबला) क० चक्रवर्त्ती तथा

वलदेव (चउविहसुर) के० चार निकायना देवतानी गतिथी आवेला होय छे. तेमज (हरि अरिहा) के० वासुदेव अने अरिहंत (वेमाणिय) के० वैमानिक देवगतिना आवेला (हुंति) के० होय छे. ॥ ३८७ ॥

हरिणो मणुस्स रयणाइं, हुंति नाणुत्तरेहिं देवेहिं ॥
जहसंभवमुववाओ, हयगयएगिंदिरयणाणं ॥ ३८८ ॥

अर्थ—वली (हरिणा) के० वासुदेव अने चक्रवर्तीना (मणुस्स रयणाइं) के० मनुष्यरूप पांच रत्न ते (अणुत्तरेहिं देवेहिं) के० पांच अनुत्तरना चवेला देवो (न हुंति) के० न होय. तात्पर्य ए छे के—वासुदेव वैमानिक देवताथी तथा नरकथी आवेला होय छे. तेमां जो वैमानिकथी आव्या होय तो पांच अनुत्तर विना बीजा स्थानथी आवेला होय छे. वली चक्रवर्तीनां चौद रत्न छे, तेमां चक्रादि सात एकेंद्रिय छे अने पुरोहितादि सात पंचद्रिय छे. तेमां पण हस्ती अने अश्व ए बे तिर्यंच छे. वाकीना पांच मनुष्य छे. ते पांच रत्न सातमी नरक, तेउकाय, वाउकाय, तिर्यंच अने मनुष्यगतिथी आवेला न होय, परन्तु जो देवगतिमांथी आवेला होय तो पांच अनुत्तर विना बीजा देव स्थानकथी आवेला जाणवा. तथा (हयगयएगिंदिरयणाणं) के० हस्ती, अश्व अने एकेंद्रिय सात रत्न ए सर्वनो (जहसंभवमुववाओ) के० यथा संभवे उत्पत्ति जाणवी. एटले जे स्थानकथी आवेला तिर्यंच थता होय ते स्थानकथी आवेला अहिं रत्न पण होय. वली नारको संख्याता आयुष्यवाला तिर्यंच तथा मनुष्य अने सहस्रांत देवलोक सुधीना देवना एटला स्थानकथी आवेला जीवो हस्ती तथा अश्व रत्न होय. तेमज संख्याता आयुष्यवाला तिर्यंच अने मनुष्य तथा

ईशान देवलोक सुधीना देवता एकेंद्रि रत्नो होय ॥ ३८८ ॥

ए उपरना तात्पर्य अर्थवाली त्रण गाथा कहे छे

मंडलिय मणुअरयण, अह सत्तम तेउवाउवज्जेहिं ॥
वासुदेव मणुअरयणा, अणुत्तरविमाणवज्जेहि ॥३८९॥

अर्थ—(अह सत्तम तेउवाउवज्जेहिं) के० नीचेनी सातमी नरकपृथ्वी तथा तेउकाय अने वाउकायना जीवोने वर्जी बाकीना जीवो (मंडलियमणुअरयणं) के० मंडलिक राजा तथा पाच मनुष्य-रत्नपणे उत्पन्न थाय छे वली (अणुत्तरविमाणवज्जेहिं) के० पाच अनुत्तर विमानना जीवो वर्जीने बीजा जीवो वासुदेव (मणुअ रयणा) क० वासुदेव अने पाच मनुष्यरत्नपणे उत्पन्न थाय छे ॥ ३८९ ॥

तिरित्थि मणु असंखाउ–एहि कप्पाओ जासहस्सारो ॥
हयगयरयणुववाओ, नेरइएहि च सव्वेसि ॥ ३९० ॥

अर्थ—(तिरि) के० हस्ती अने अश्वरूप तिर्यंचरत्न तथा (त्थि) क० स्त्रीरत्न ते (मणुअसखाउएहिं) के० सख्याता आयुष्यवाला मनुष्य अने (कप्पाओ जासहस्सारो) क० सहस्रार देवलोक सुधीना देवताओ थाय छे (च) क० वली (नेरइएहिं सव्वेसि) के० साते नारकीना जीवो (हयगयरयणुववाओ) क० अश्व अने हस्ती रत्नपणे उत्पन्न थाय छे ॥ ३९० ॥

एगिंदिय रयणाइ, असुरकुमारेहिं जावईसाणे ॥
उववज्जंति य नियमा, सेसट्ठाणेसु पडिसेहो ॥३९१॥

अर्थ—(य) के० वली (एगिंदियरयणाइं) के० सात एकेंद्रिय रत्नो ते (असुरकुमारेहिं जावईसाणे) के० असुरकुमारथी आरंभी ईशान देवलोकना देवता सुधीना जीवो (नियमा) के० निश्चेथी (उववज्जंति) के० उपजे छे. (सेसट्ठाणेसु पडिसेहो) के० बाकीना जीवो न उपजे. ॥ ३९१ ॥

हवे चौद रत्नानां नाम तथा प्रमाण बे गाथाथी कहे छे.

वामपमाणं चक्कं, छत्तं दंडं दुहत्थयं चम्मं ॥
बत्तीसंगुलखग्गो, सुवण्णकागिणि चउरंगुलिया ॥३९२॥
चउरंगुला दुअंगुल–पिहुलो अ मणिपुरोहियगयतुरया ॥
सेणावइ गाहावइ, वड्ढी त्थी चक्किरयणाइं ॥ ३९३ ॥

अर्थ—(चक्कं) के० चक्ररत्न (छत्तं) के० छत्ररत्न तथा (दंडं) के० दंडरत्न ए त्रण (वामपमाणं) के० एक वाम एटले बेहाथने लांबा करवाथी जे प्रमाण थाय तेवडां होय छे. (चम्मं) के० चर्मरत्न (दुहत्थयं) के० बे हाथप्रमाण होय छे. (बत्तीसंगुल-खग्गो) के० खड्गरत्न बत्रीश अंगुल प्रमाण लांबु होय छे. (सुवण्णकागिणि चउरंगुलिया) के० सुवर्णमय कागिणिरत्न चार अंगुल प्रमाण लांबु होय छे. ॥ ३९२ ॥ (चउरंगुला) के० चार अंगुल लांबु अने (दुअंगुलपिहुलो) के० बे अंगुल पहोलुं (मणि) के० मणिरत्न होय छे. ए सात एकेंद्रिरत्नो चक्रवर्तीना अंगुलथी जाणवा. अने (पुरोहिय गय तुरया) के० पुरोहित, हस्ती अश्व, तथा (सेणावइ गाहावइ वड्ढी त्थी) के० सेनापति, गाथापति, वार्द्धकी अने स्त्री ए सात पंचेंद्रिरत्न. सर्व मलो (चक्किरयणाइं) के० चक्रवर्तीनां चौद रत्न होय छे. ॥ ३९३ ॥

चक्कासिछत्तदंडा, आयुघसालाइ हुति चत्तारि ॥
कागिणिचम्ममणिओ, सिरिगेहे चक्किणो हुति ॥३९४॥

अर्थ—(चक्किणो) क० चक्रवर्तीनो (आयुधसालाइ) के० आयुधशालाने विषे (चक्कासिछत्तन्डा) के० चक्र खड्ग छत्र अने दंड ए (चत्तारि) के० चार रत्नो (हुति) क० उत्पन्न थयेला होय छे तथा (कागिणि चम्ममणिओ) के० कागिणि चर्म अने मणि ए त्रण रत्नो (सिरिगेहे हुति) के० लक्ष्मीना घरने विषे अर्थात् भंडारने विषे उत्पन्न थयेला होय छे ॥ ३९४ ॥

सेणावइ गाहावइ, पुरोहिअ वढ्ढइ य नियनयरे ॥
त्थरियगं रायकुले, वियढ्ढतले उ करितुरया ॥ ३९५ ॥

अर्थ—(सेणावइ) के० सेनापति, (गाहावइ) के० गाथापति, (पुरोहिअ) के० पुरोहित अने (वढ्ढइय) के० वार्द्धकि ए चार रत्नो (नियनयरे) क० पोतानां नगरने विषे उत्पन्न थयेला होय छे (त्थीरयण) के० स्त्रीरत्न (रायकुले) क० राजकुलमां उत्पन्न थयेलु होय छे अने (करितुरया) के० हस्ती अने अश्व ए बे रत्न (वियढ्ढतले) के० वैताढ्य पर्वतने विषे उत्पन्न थयेला होय छे. ॥ ३९५ ॥

चक्किदुगं हरिपणग, पणग चक्की य केसवो चक्की ॥
केसव चक्की केसव, दुचक्की केसव चक्की य ॥३९६ ॥

अर्थ—पहेला (चक्किदुग) क० चक्रवर्ती, त्यार पछी (हरिपणग) के० पांच वासुदेव, त्यार पछी (पणग चक्की) क० पांच चक्रवर्ती, त्यार पछी (केसव) के० एक वासुदेव, त्यार पछी (चक्की) क० एक चक्रवर्ती, त्यार पछी (केसव) के० एक वासुदेव, त्यार

पछी (चक्की) के० एक चक्रवर्ती, त्यार पछी (केसव) के० एक वासुदेव, त्यार पछी (दुचक्की) के० बे चक्रवर्ती, त्यार पछी, (केसव) के० एक वासुदेव, त्यार पछी (चक्की) के० एक चक्रवर्ती एम अनुक्रमे थया छे. तेनो विशेष समजुती यन्त्रमां जोवी.॥३९६॥

उसहे भरहो अजोए, सगरो मघवं सणंकुमारो य ॥
धम्मस्स य संतिस्स य, जिणन्तरे चक्कवट्टीयुगं ॥३९७॥
संतिकुंथु जिनवरो, अरिहं ता चेव चक्कवट्टी य ॥
अरमल्लिअंतरे पुण, होइ सुभुमो य कोरवो ॥३९८॥
मुणिसुव्वयमिजिणे, हुंति दुवे पउमनाम हरिसेणा ॥
नमिनेमि य जयनामा, नेमिपासंतरे बंभो ॥३९९॥

अर्थ—(उसहे) के० ऋषभदेवना वखते (भरहो) के० भरत चक्रवर्ती अने (अजीए) के० अजितनाथना वखते (सगरो) के० सगर चक्रवर्ती थयेल छे. (य) के० वली (मघवं) के० मघवा तथा (सणंकुमारो) के० सनत्कुमार (चक्कवट्टीयुगं) के० ए बे चक्रवर्ती (धम्मस्स य संतिस्स य जिणन्तरे) के० धर्मनाथ अने शांतिनाथनी वचमां थया छे. ॥ ३९७ ॥ वली (संति) के० शांतिनाथ, (कुंथु) के० कुंथुनाथ तथा (अरिहं) के० अरनाथ (ता) के० ते त्रणे (जिनवरो) के० जिनेश्वर तथा (चक्कवट्टी) के० चक्रवर्ती (चेव) के० निश्चे थया छे. (पुण) के० वली अरमल्लि-अंतरे के० अरनाथ तथा मल्लीनाथना वचमां (सुभुमो कोरवो) के० सुभुम चक्रवर्ती होइ के० थयो छे. ॥ ३९८ ॥ तेमज (मुणि-सुव्वयमिजिण) के० मुनिसुव्रत प्रभु नमिनाथ एमना वखते (पउमनाम हरिसेणो) के० महापद्म अने हरिषेण ए (दुवे) के० बे चक्र-

अनुक्रमे (हुति) के० थया छे तथा (नमिनेमिय) के० नमिनाथ अने नेमनाथना वचमा (जयनामा) क० जय नामनो चक्रवर्ती थयो छे अने (नेमिपासंतरे) के० नेमनाथ तथा पार्श्वनाथना वचमा (बंभो) के० ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती थयो छे ॥ ३९९ ॥

हवे वासुदेवना सात रत्न कहे छे.

चक्क धणुह खग्गो, मणी गया तहय होइ वणमाला ॥
संखो सत्त इमाइं, रयणाइ वासुदेवस्स ॥ ४०० ॥

अर्थ—(चक्क) के० चक्र, (धणुह) के० धनुष्य, (खग्गो) क० खड्ग, (मणी) के० मणि, (गया) क० गदा, (तहय) के० तेमज (वणमाला) के० वनमाला अने (संखो) के० संख-(इमाइ) के० ए (सत्तरयणाइ) के० सात रत्न (वासुदेवस्स) के० वासुदेवना (होइ) के० होय छे ॥ ४०० ॥

जंबुद्वीपमा उत्कृष्टथी अने जघन्यथी एक समते केटलां रत्न होय ते कहे छे

जंबूद्दीवे चउरो, सयाइं वीसुत्तराइ उक्कोस ॥
रयणाइं जहन्न पुण, हुति विदेहंमि छप्पन्ना ॥ ४०१ ॥

अर्थ—(जंबूद्दीव) के० जंबुद्वीपने विषे (उक्कोस) क० उत्कृष्टथी (चउरो सयाइ) के० सो अने (वीसुत्तराइ) के० वीस अधिक एटले चारसो वीश (रयणाइ) के० रत्नो होय छे (पुण) के० वली (जहन्न) के० जघन्यथी (विदेहंमि) क० महाविदेह क्षेत्रमा (छप्पन्ना) के० छप्पन्नरत्न हुति क० होय छे उत्कृष्ट त्रीश चक्रवर्ती होय त्यारे चारसो वीश अने जघन्यथी चार होय त्यारे छप्पन्न रत्न होय छे ॥ ४०१ ॥ मनुष्यनु गतिद्वार पूर्ण थयु

हवे मनुष्य मरीने क्यां जाय ? ते आगति द्वार कहे छे.

संख नरा चउसु गईसु, जंति पंचसुवि पढमसंघयणे ॥
इगदुति जा अट्ठसयं, इगसमए जंति ते सिद्धिं ॥४०२॥

अर्थ—(संख) के० संख्याता आयुष्यवाला (नरा) के० मनुष्य ते (चउसु गईसु) के० चारे गतिमां जंति) के० जाय छे. तेमां जे मनुष्य (पढमसघयणे) के० पहेला संघयणवाला होय ते (पंचसुवि) के० मोक्ष सहित पांचे गतिने विषे पण जाय छे. मोक्षमां केटला जाय ? ते कहे छे. (ते) के० ते मनुष्य (इगसमए)के० एक समयमां जघन्यथी (इगदुति) के० एक बे त्रण अने उत्कृष्टथी (जाअट्ठसयं)के० यावत् एक सो आठ सुधी (सिद्धिं)के० मोक्षप्रत्ये (जंति) के०जाय छे. ॥ ४०२ ॥

हवे त्रण वेदआश्री सिद्धिगति कहे छे.

वीसित्थि दस नपुंसग, पुरिसट्ठसयं तु एगसमएणं ॥
सिज्झइ गिहि अन्न सलिंग, चउदस अट्ठाहियसयं च ।४०३।

अर्थ—(इत्थि) के० स्त्रीवेदे उत्कृष्टथी (वीस) के० वीस मोक्षे जाय. (नपुंसग) के० नपुंसकवेदे (दस) के० दश मोक्षे जाय. (तु) के० अने (पुरिस) के० पुरुषवेदे उत्कृष्टथी (एगसमएणं) के० एक समये (अट्ठसयं) के० एकसो आठ (सिज्झइ) के० मोक्षे जाय. वली (गिहि) के० गृहस्थलिंगे (चउ) के० चार, (अन्न) के० तापसादिकलिंगे (दस) के० दश, (च) के० अने (सलिंग) के० साधुलिंगे (अट्ठाहियसयं)के०एकसो आठ मोक्षे जाय छे.॥४०३॥

गुरुलहुमज्झिम दोचउ-अट्ठसयं उड्ढहो तिरियलोए ॥
चउबावीसट्ठसयं, दुसमुद्दे तिन्नि सेसजले ॥ ४०४ ॥

अर्थ—(गुरु) के० उत्कृष्ट अवगाहनाथी एटले पांचसो धनुष प्रमाण शरीरवाला अने (लहु) के० जघन्य अवगाहनाथी एटले बे हाथ प्रमाण शरीरवाला, तथा (मज्झिम) के० मध्यम अवगाहनाथी एटले बे हाथथी उपर अने पांचसो धनुष्यथी ओछा शरीर प्रमाणवाला उत्कृष्टथी (च्चो चउ अट्ठसय) के० बे चार अने एक सो आठ मोक्षने विषे जाय. वली (उड्ढहो तिरीयलोए) के० उर्द्धलोके अधोलोके अने तिर्च्छालोके (चउ बावीसट्ठसय) के० चार बावीस अने एक सो आठ अनुक्रमे उत्कृष्टथी मोक्ष जाय अहिं उर्द्धलोक मेरु चूलिका ते नंदनवन जाणवुं अधोलोक ते अधोग्राम विगेरे जाणवा अने तिर्च्छो लोक प्रसिद्ध छे वली (समुद्दे) के० समुद्रमा (दु) के० बे तथा (सेसजले) के० गंगादिक नदीना तथा द्रहना जल विगेरेमा (तिन्नि) के० त्रण उत्कृष्टथी मोक्षे जाय छे ॥ ४०४ ॥

अधोग्राम क्या छे? ते कहे छे

जोयणसयदसगते, समधरणीए अहे अहोगामा ॥
बायालीससहस्सेहिं, गंतु मेरुस्स पच्छिमओ ॥४०५॥

अर्थ—(मेरुस्स पच्छिमओ) के० मेरुपर्वतनी पश्चिम दिशा तरफ (बायालीससहस्सेहिं गंतु) के० बेंतालीस हजार योजन जइये त्यार (समधरणीए अहे) के० समभूतला पृथ्वीथी नीचे (जोयणसयदसगते) के० एक हजार योजनने आंतरे ते (अहोगामा) के० अधोग्राम छे ॥ ४०५ ॥

हवे चारे गतिमांहेथी आवेला केटला केटला जीवो मोक्षे जाय ते कहे छे

नरयतिरिया गया दस, नरदेव गईओ वीस अट्ठसय ॥
दस रयणा सक्कर वा-लुयाओ चउ पंक भूदगओ ॥४०६॥

अर्थ—(नरयतिरियागया) के० नरक अने तिर्यंच गतिथी नीकलीने मनुष्यगति पामेला (दस) के० दस जीवो उत्कृष्टथी एक समये मोक्षे जाय, (नरदेव) के० मनुष्य मरीने फरी मनुष्य थयेला अथवा देवगतिथी चवीने मनुष्य थयेला जीवो (वीस अट्ठसयं) के० वीस अने एक सो आठ जीवो मोक्षे जाय. अर्थात् मनुष्य मरीने मनुष्य थयेला वीस, अने देवगतिथी चवीने मनुष्य थयेला एक सो आठ जीवो मोक्षे जाय छे. वली (रयणा सक्कर-वालुयाओ) के० रत्नप्रभा शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभा ए त्रण नरकथी नीकलीने मनुष्य थयेला जीवो उत्कृष्टथी एक समये (दस) के० दश मोक्षे जाय, तथा (पंकभूदगओ) के० पंकप्रभा पृथ्वीकाय अने अप्कायथी नीकलीने मनुषय थयेला जीवो (चउ) के० चार मोक्षे जाय छे. ॥ ४०६ ॥

छच्च वणस्सइ दस तिरि, तिरित्थि दस मणुय वीस नारीओ॥
असुराइ वंतरा दस, पण तद्देवी उ पत्तेयं ॥ ४०७ ॥
जोइ दस देवि वीसं, विमाणियट्ठसय वीस देवीओ ॥

अर्थ—(वणस्सइ) के० वनस्पतिकायथकी मनुष्य थयेला (छच्च) के० छ, (तिरि) के० पचेंद्रिय तिर्यंचथी मनुष्य थयेला (दस) के० दश, (तिरित्थि) के० तिर्यंचनी स्त्रीथी मनुष्य गति पामेला जीवो पण दश मोक्षे जाय. (मणुय दस) के० मनुष्य-गतिथी फरी मनुष्य थयेला दस के० दश अने (नारीओ) के० मनुष्यनी स्त्रीथी फरी मनुष्य गति पामेला (वीस) के० वीश जीवो मोक्षे जाय छे. वली (असुराइ) के० असुरादि दशनिकायथी अने (वंतरा) के० व्यंतरनी सर्व जातिथी मनुष्य थयेला जीवो (दस) के० दश मोक्षे जाय, तेमज (तद्देवीउ) के० असुरादिक

दश निकायनी अने व्यनरदेवोनी देवीओथी मनुष्य थयेला (पत्तेय/ के० दरेक (पण) के० पाच पाच मोक्ष जाय ॥ ४०७ ॥ (जोइ) के० ज्योतपी देवोथी मनुष्य थयेला जीवो (दस) के० दश मोक्षे जाय, अने (देवि) के० ज्योतपिनी देवीओथी मनुष्य थयेला जीवो (वीस) के० वीश मोक्षे जाय. वली (वेमाणियट्ठसय) के० वैमानिक देवथकी मनुष्य थयेला जीवो एकसो आठ तथा (देवीओ) के० वैमानिक देवीथी मनुष्य थयेला जीवो (वीस) के० वीश मोक्षे जाय ॥

हवे वेदआश्री सिद्धि कहे छे, तथा सिद्धिगतिनो उपपात विरहाकाल कहे छे.

तह पुव्वेएहितो, पुरिसो होऊण अट्ठसय ॥ ४०८ ॥
सेसट्ठभगएसु, दस दस सिज्झति समएणं ॥
विरहो छमास गुरुओ,लहु समओ चवणमिह नत्थि॥४०९॥

अर्थ—(तह) के० तथा (पुव्वेएहिंतो) के० पुरुषथी फरी (पुरिसो) के० पुरुष (होउण) के० थया होय तो एक समये उत्कृष्टथी (अट्ठसय) के० एक सो आठ जीवो मोक्षे जाय. तात्पर्य ए छे जे-पुरुषवेदवालो देव मनुष्य अथवा तिर्यंचथी नीकलेलो कोई जीव पुरुष थाय कोई स्त्री थाय अने कोइ नपुंसक पण थाय एवीज रीते स्त्री वेदवाली देवी विगेरेथी नीकलेलो कोइ जीव स्त्री थाय कोई पुरुष थाय अने कोइ नपुसक पण थाय एमज नपुसक वेदवाला नारकी विगेरेथी निकलेलो कोइ जीव नपुसक थाय कोइ स्त्री थाय अने कोइ पुरुष पण थाय. एम ए नव भागा मायी पहेला भागावाला एटले पुरुष वेदथी पुरुष वेद थयेला मनुष्यो

एक समये एक सो आठ मोक्षे जाय. ॥ ४०८ ॥ अने (सेसट्ठ-भंगएसु) के० बाकीना आठ भांगामां तो (समएणं) के० एक समयमां (दस दस सिज्झंति) के० दश दश जीवो मोक्ष पामे छे. हवे पाछला बे पदे करीने सिद्ध गतिनो उपपात विरहकाल कहे छे. मोक्ष जवानो (गुरुओ) के० उत्कृष्टो (विरहो) के० विरहकाल (छमास) के० छमहिनानो जाणवो. अने (लहु) के० जघन्य विरहकाल (समओ) के० एक समयनो जाणवो, परन्तु (इह) के० ए मोक्षथकी (चवण) के० चववुं (नत्थि) के० नथी थतुं. अर्थात् मोक्षे गयेलाने फरी संसारमां आववुं नथी. ॥ ४०९ ॥

अड सग छ पंच चउ, तिन्नि दुन्नि इक्कोय सिज्झमाणेसु ॥
बत्तीसाइसुसमया, निरंतरं अंतरं उवरि ॥ ४१० ॥
बत्तीसा अडयाला, सट्ठी बावत्तरी य बोधव्वा ॥
चुलसीई छन्नवइ, दुरहिय मट्ठुत्तरसयं च ॥ ४११ ॥

अर्थ—(बत्तीसाइसु सिज्झमाणेसु)के० बत्रीशने आदि दइने मोक्षे जतां जीवोने (अड सग छ पंच चउ तिन्नि दुनि इक्कोय) के० अनुक्रमे आठ सात छ पांच चार त्रण बे अने एक (समया) के० समय (निरंतरं)के० आंतरा विना मोक्षे जाय. एथी (उवरि) के० उपर (अंतरं) के० अंतरपडे. भावार्थ ए छे के-एक समये एक बेथी आरंभी बत्रीश सुधी मोक्षे जाय तो आठ समय सुधी मोक्षे जाय, पछी अंतर पडे. ॥ ४१० ॥ ते बत्रीश विगेरेनी संख्या कहे छे. (बत्तीसा) के० बत्रीश, (अडयाला) के० अडतालीश, (सट्ठी) के० साठ, (बावत्तरी) के० बहोंतेर, (चुलसीइ] के० चोराशी, (छन्नवइ) के० छन्नु, (दुरहिय) के० एक सो बे अने

(अहुत्तरमय च) के० एक सो आठ एम अनुक्रमे जाणवा भावार्थ ए छे के–एकथी आरभी बत्रीस जीवो सुधी समये समये मोक्षे जाय तो आठ समय सुधी जाय. पछी एकादि समयनु अतर पडे. तेत्रीशथी आरभी अडतालीस सुधी समये समये मोक्षे जाय तो सात समय सुधी जाय. पछी अतर पडे ओगणपचासथी आरभी साठ सुधी समये समये मोक्षे जाय तो छ समय सुधी जाय, पछी अतर पडे एकसठथी आरभी बहोतर सुधी समये समये मोक्षे जाय तो पाच समय सुधी जाय, पछी अतर पडे तहुतेरथी आरभी चोरासी सुधी समये समये मोक्षे जाय तो चार समय सुधी पछी अतर पडे पचाशीथी आरभी छनु सुधी समये समये मोक्षे जाय तो त्रण समय सुधी, पछी अतर पडे सत्ताणुथी आरभी एक सो बे सुधी समये समये मोक्षे जाय तो बे समय सुधी, अने एक सो त्रणथी आरभी एक सो आठ सुधी मोक्षे जाय तो एकज समय मोक्षे जाय बीजे समये अतर पडे.॥४११॥

हवे सिद्धक्षेत्रनु स्वरूप कहे छे

पणयाल लक्ख जोयण–विक्खभा सिद्धिसिल फलिहविमला ॥
तदुवरिगजोयणते, लोगंतो तत्थ सिद्धठिई ॥ ४१२ ॥

अर्थ—सर्वार्थसिद्ध विमानथी बार योजन उपर (पणयाललक्ख जोयणविक्खभा) के० पीस्तालीस लाख योजन विस्तारवाली अने (फलिहविमला) के० स्फटिकरत्न समान निर्मल (सिद्धि सिल) के० सिद्धशीला छे (तदुवरिगजोयणंते) के०ते सिद्धशीलाना उपर एक योजनने अंते (लोगतो) के० लोकात छे. (तत्थ) के० त्या (सिद्धठिइ) के० सिद्धनो निवास छे ॥ ४१२ ॥

बहुमज्झदेसभाए, अठ्ठेव जोयणाइं बाहुल्लं ॥
चरमंते सुइतणुइ, अंगुलसंखीज्जइ भागं ॥ ४१३ ॥

अर्थ—ते सिद्धशीला (बहुमज्झदेसभाए) के० मध्यभागने विषे (अठ्ठेव जोयणाइं) के० आठ योजन (बाहुल्लं) के० जाडी छे. अने (चरमंते) के० छेडे (सुइतणुइ) के० अतिपातली थतां (अंगुलसंखीज्जइभागं) के० अंगुलना संख्यातमे भागे अर्थात् मोखीनी पांख समान पातली छे. ॥ ४१३ ॥

अंजण सुवण्णवण्णा, सा पुढवी निम्मला सहावेणं ॥
उत्ताणछत्तसंठाण-संठिय भणिया जिणवरेहिं ॥ ४१४ ॥

अर्थ—(अंजणसुवण्णवण्णा) के० स्वेतांजन समान सुवर्णवाली (सा पुढवी) के० ते सिद्धशीला (सहावेणं) के० स्वाभाविक रीते (निम्मला) के० निर्मल छे. वली ते सिद्धशीला (उत्ताणछत्तसंठाणसंठिय) के० उंधा उघाडेला छत्रना सरखा संस्थाने रहेली (जिणवरेहिं) के० जिनेश्वरोए (भणिया) के० कही छे. ॥ ४१४ ॥

ईसीपब्भाराए, उवरि खलु जोयणंमि जो कोसो ॥
कोसस्स य छब्भाए, सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥ ४१५ ॥

अर्थ—(ईसीपब्भाराए) के० ए इषत्प्राग्भार नामनी सिद्धशीलाना (उवरि) के० उपरना (जोयणंमि) के० एक योजनना उपरनो (जो कोसो) के० जे एक गाउ छे. (कोसस्स छब्भाए) के० ते गाउना उपरना छठ्ठा भागमां (सिद्धाणोगाहणा) के० सिद्ध जीवोनी अवगाहना (भणिया) के० कही छे. ॥ ४१५ ॥

तिन्नीसया तित्तीसा, धणुहतिभागोय कोसछब्भागो ॥
एसा खलु सिद्धाण, मज्झिम ओगाहणा भणिया ॥४१६॥

अर्थ—(कोसछब्भागा) के० ते उपरनो एक गाउनो छट्ठो भाग ते (तिन्नीसया तित्तीसा) के० त्रण सो तत्रीश धनुष्य अने उपर (धणुतिभागो) क० एक धनुष्यनो त्रीजो भाग (एसा) के० एटलु प्रमाण क्षेत्र (खलु) क० निश्चे (सिद्धाण) के० सिद्धोनी (मज्झिमा ओगाहणा) क० मध्यम अवगाहना (भणिया) के० कही छे ॥ ४१६ ॥

एगा होई रयणी, अट्ठेवय अगुलाइ साहिया ॥
एसा खलु सिद्धाण, जहन्न ओगाहणा भणिया ॥४१७॥

अर्थ—(एगा रयणी) के० एक हाथ अने (अट्ठेवय अगुलाई साहिया) क० उपर आठ आगुल अधिक (एसा) क० एटली (सिद्धाण) के० सिद्धोनी (जहन्न ओगाहणा) क० जघन्य अवगाहना (खलु)के०निश्चे (भणिया होई) क०कहीछे ॥४१७॥

सिद्धना आठ गुणो कहे छे

सम्मत्त नाण दसण, विरिय सुहुम तहेव अवगाहणा ॥
अगुरु अव्वाबाह, अट्ठगुणा हुति सिद्धाण ॥ ४१८ ॥

अर्थ—(सम्मत्त) के० सम्यक्त्व, (नाण) के० ज्ञान, (दसण) के० दर्शन, विरिय क० वीर्य, (सुहुम) के० सूक्ष्मत्व, (तहेव) के० तेमज (अवगाहणा) के० अवगाहना, (अगुरु) क० अगुरुलघु, (अव्वाबाह) क० अव्याबाधपणु ए (अट्ठ गुणा) क०

आठ गुणो (सिद्धाणं) के० सिद्धना (हुंति) के० होय छे.॥४१८॥ ए मनुष्यद्वार पूर्ण थयुं.

हवे तिर्यंचना भुवन विना आठ द्वार कहे छे. अहिं एकेंद्री बेंद्री ते इंद्री अने चउरेंद्री अने पंचेंद्री ए पांच प्रकारना तिर्यंच जाणवा. तेमां पृथ्वीकाय अप्काय तेउकाय वाउकाय अने वनस्पतिकाय ए पांच एकेंद्री जाणवा. सर्व मली नव भेद थाय. तेमां पण पंचेंद्रीना समुर्च्छिम अने गर्भज मली अगीयार भेद थाय. परंतु अहिं सामान्यथी तिर्यंचना नव भेदनुं स्थिति द्वार कहे छे.

वावीस सग ति दस वास, सहस्स गणितिदिण वेंदियाइसु ॥
वारस वासुणु पणदिण, छम्मास तिपलिय ठिइ जिट्ठा॥४१९॥

अर्थ—पृथ्वीकायनी (वावीस) के० बावीश हजार वर्षनी, अप्कायनी (सग) के० सात हजार वर्षनी, वाउकायनी (ति) के० त्रण हजार वर्षनी, वनस्पतिकायनी (दस वाससहस्स) के० दश हजार वर्षनी, (अगणि) के० तेउकायनी (तिदिण) के० त्रण दिवसनी, (बेंदियाइसु) के० बे इंद्रिय विगेरेनी एटले बे इंद्रियनी (वारस वास) के० बार वर्षनी, तेइंद्रियनी (उणुपणदिण) के० ओगण पचास दिवसनी, चउरिंद्रियनी (छम्मास) के० छमासनी, अने पंचेंद्रियनी (तिपलिय) के० त्रण पल्योपमनी. ए (ठिइ जिट्ठा) के० उत्कृष्ट स्थिति एटले आयुष्य जाणवुं. ए सामान्यथी तिर्यंचनी स्थिति कही. ॥ ४१९ ॥

हवे अहिं पृथ्वीकायना भेद अने आयुष्य कहे छे.

सण्हाय सुद्ध वालुय, मणोसिला सक्करा य खरपुढवी ॥
इग बार चउद सोलस,ट्ठारस बावीस सम सहस्सा॥४२०॥

अर्थ—(सण्हाय) क० मारवाड देशनी सुकुमाल माटीनी (इग) के० एक हजार वर्षनी, (सुद्ध) क० गोपीचंदनादिक सुकुमाल माटीनी (बार) क० बार हजार वर्षनी, (वालुय) के० नदी प्रमुख वेलुनी (चउद) के० चउद हजार वर्षनी, (मणोसिला) के० मनसीलनी (सोलस) के० सोल हजार वर्षनी, (सक्कराय) के० शर्करा हरताल सुरमान्फिकनी (अट्ठारस) के० अढार हजार वर्षनी, अने (खरपुढवी) क० शीला पाषाण तथा रत्न विगेरेनी (बावीस सममहस्सा) के० बावीश हजार वर्षनी उत्कृष्ट स्थिति जाणवी ॥ ४२० ॥

हवे पचेंद्रितिर्यंचना जूदा जूदा भेदनी स्थिति कहे छे

गब्भ भुय जलयरोभय,गब्भोरग पुवकोडि उक्कोसा ॥
गब्भचउप्पय पक्खिसु,तिपलिय पलिया असखसो॥४२१॥

अर्थ—(गब्भ) के० गर्भज एवा (भुय) क० भुजपरिसर्प नोलीया विगेर तथा (जलयरोभय) क० गर्भज अने समूर्छिम एवा जलचर, वली (गब्भोरग) के० गर्भज उरपरिसर्प ए सर्वेनी (उक्कोसा) के० उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति (पुव्वकोडि) क० एक पूर्व कोडी वर्षनी जाणवी तथा (गब्भ चउप्पय) के० गर्भज चतुष्पद ते गाय भेंस विगेरनी (तिपलिय) के० त्रण पल्योपमनी, अने (पक्खिसु) क० मोर सारस विगेर पक्षिनी (पलिया असखसो) के० पल्योपमना असंख्यातमा भागनी आयुष्य स्थिति जाणवी ॥ ४२१ ॥

हवे एक पूर्वनुं प्रमाण कहे छे.

पुव्वस्स उ परिमाणं, सय्यरि खलु वास कोडिलक्खाओ ॥
छप्पन्नं च सहस्सा, बोधव्वा वासकोडीणं ॥ ४२२ ॥

अर्थ—चोरासी लाख वर्षनुं एक पूर्वांग थाय अने ते पूर्वांगने बीजा पूर्वांग साथे गुणाकार करीये त्यारे (पुव्वस्स) के० एक पूर्वनुं (परिमाणं) के० प्रमाण (बोधवा) के० जाणवुं. ते एक पूर्वमां केटला वर्ष थाय ? तो कहे छे के-(सय्यरिवास कोडिलक्खाओ) के० सीत्तेर लाख क्रोड वर्ष अने (छप्पन्नं सहस्सा वासकोडीणं) के० छप्पन्न हजार क्रोड वर्ष (७०५६००००००००००) एटली संख्याना वर्ष एक पूर्व प्रमाण थाय. ॥ ४२२ ॥

हवे संमूर्च्छिम पंचेंद्रिय थलचर विगेरेनी उत्कृष्ट आयुस्थिति कहे छे.

समुच्छिपणिंदि थलखयर, उरगभुयगाण जिट्ठ ठिइ कमसो॥
वास सहस्सा चुलसी, बिसत्तरि तिपण्ण बायाला ॥४२३॥

अर्थ—(समुच्छि) के० संमूर्च्छिम एवा (पणिंदिथल खयरउरगभुयगाण) के० पंचेद्रि थलचर ते गाय भेंस, विगेरे, खेचर ते बगला चकला विगेरे, उरपरिसर्प ते अजगर विगेरे, अने भुजपरिसर्प ते नोलीया विगेरे. ते सर्व जीवोनी (कमसो) के० अनुक्रमे करीने (जिट्ठ ठिइ) के० उत्कृष्टि आयुष्य स्थिति (वाससहस्सा चुलसी) के० चोराशी हजार वर्ष, (बिसत्तरि) के० बहोंतेर हजार वर्ष, (तिपण्ण) के० त्रेपन हजार वर्ष अने (बायाला) के० बेंतालीश हजार वर्षनो, एटले संमूर्च्छिम पंचेंद्रिय गाय विगेरेनी

चोराशी हजार वर्षनी, समूर्च्छिम पक्षीनी बहोतेर हजार वर्षनी, समूर्च्छिम सर्प विगेरेनु त्रेपन हजार वर्षनी, अने समूर्च्छिम नोळीया विगेरेनी बेतालीं हजार वर्षनी उत्कृष्टी आयु स्थिति होय छे. ॥ ४२३ ॥

हवे ए जीवोनी कायस्थिति कहे छे

एसा पुढवाईण, भवठिइ संपय तु कायठिई ॥
चउएगिंदिसु णेया, उसप्पिणीओ असंखिज्जा ॥४२४॥

अर्थ—(पुढवाईण) के० पृथ्वीकायादिक जीवोनी (एसा) के० ए पूर्वे कहेली आयुष्यरूप (भवठिइ) के० भवस्थिति कही (तु) के० वळी एज जीवोनी (संपय) क० हवणा (कायठिई) के० फरी फरी मरण पामी तेजकायामा उपजे ते कायस्थिति कहे छे. (चउ एगिंदिसु), क० वनस्पति विना बाकीना पृथ्वीकायादि चार एकेंद्रिजीवोनी उत्कृष्टी कायस्थिति (असंखिज्जा उसप्पिणीओ) के० असंख्याता उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काळनी (णेया) के० जाणवी ॥ दश कोडा कोडी सागरोपमे एक उत्सर्पिणी अने दश कोडा कोडी सागरोपमे एक अवसर्पिणी थाय छे ए काळमान भरत तथा एरवतनी अपेक्षाथी जाणवु ए काल प्रमाणथी काय स्थिति कही, क्षेत्रथी तो जेटला चउदराजना आकाश प्रदेश छे तेटली संख्याए असंख्याता लोक करीने ते लोकना एक एक प्रदेशे समय समय काढता असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी थाय छे. ॥ ४२४ ॥

ता उ वणमि अणता, संखिज्जा वाससहस्स विगलेसु ॥
पंचिंदितिरिनरेसु सत्तट्ठ भवा उ उक्कोसा ॥ ४२५ ॥

अर्थ—(वणंमि) के० वनस्पतिकायने विषे (ताउ) के० ते पूर्वे कहेली उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी (अणंता) के० अनता कायस्थिति काले करी जाणवी. अने क्षेत्रथकी अनंता लोकाकाश प्रदेश प्रमाण असंख्याता पुद्गल परावर्त होय.

आ कायस्थिति व्यवहाररासी जीवने संभवे छे. कारण व्यवहाररासी जीव मरण पामी निगोदमां जाय तो अनंती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल रही पछी व्यवहार रासीमां आवे छे माटे.

वली (विगलेसु) के० विकलेंद्रियने (संखिज्जा वाससहस्स) के० संख्याता वर्ष सहस्रनो कायस्थिति जाणवी. तथा (पचिंदितिरिनरेसु) के० पंचेंद्रियतिर्यंच अने मनुष्यने विषे (उक्कोसा) के० उत्कृष्टथी (सत्तट्ठभवा) के० सात अथवा आठ भव सुधी होय छे. एटले संख्याते आयुष्ये सात भव करे अने आठमे भवे युगलिक थाय तो आठ भवे त्रण पल्योपम तथा सात पूर्व कोटी उत्कृष्टी जाणवी. ॥ ४२५ ॥

हवे अर्द्धगाथा वडे जघन्यथी भवस्थिति अने कायस्थिति कहेछे.

सव्वेसिंपि जहन्ना, अंतमुहुत्तं भवेय काएय ॥

अर्थ—(सव्वेसिं) के० पूर्वे कहेला पृथ्वीकायादि सर्वे जीवोनी (जहन्ना) के० जघन्यथी (भवेय काएय) के० भवस्थिति अने कायस्थिति (अंतमुहुत्तं) के० एक अंतमुहूर्त्त प्रमाण होय. ॥

हवे तिर्यंचनुं अवगाहना द्वार कहे छे.

जोयणसहस्समहियं, एगिंदियदेहमुक्कोसं ॥ ४२६ ॥

बितिचउरिंदिसरीरं, बारस जोयण तिकोस चउकोसं ॥

जोयणसहस्स पणिंदिय, ओहे वुच्छं विसेसं तु ॥४२७॥

अर्थ—(एगिंदियदेह) के० एकेंद्रिय जीवोनु शरीर (उक्कोस) के० उत्कृष्टथी (जोयणसहस्समहियं) के०एक हजार योजनथी अधिक होय छे ॥ ४२६ ॥ वलि (बि) के० बेंद्रीय शखादिक जीवोनु शरीर (बारस जोयण) के० बार योजननु, (ति) के० तेंद्री कीडी मकोडादिक जीवोनु शरीर (तिकोस) के० त्रण गाउनु, (चउरिंदिसरीर) के० चउरिंद्रिजीवोनु शरीर (चउकोस) के० चार गाउनु होय छे अने (पणिंदिय) के० पचेंद्रिय जीवोनु शरीर (जोयणसहस्स) के० एक हजार योजननु उत्कृष्टथी होय छे, ए (ओहे वुच्छ) के० सामान्यथी शरीरप्रमाण कह्यु. (विसेस तु) के० विशेषथी शरीरप्रमाण आगलनी गाथाओथी कहेछे ॥४२७॥

अंगुलअसंखभागो, सुहमनिगोओ असंखगुण वाऊ ॥
तो अगणि तओ आऊ,तत्तो सुहमा भवे पुढवी ॥४२८॥
तो बायर वाउगणी, आऊ पुढवी निगोय अणुक्कमसो॥
पत्तेयवणसरीरं, अहियं जोयणसहस्स तु ॥ ४२९ ॥

अर्थ—वनस्पतिकायना साधारण अने प्रत्येक एवा बे भेद छे तेमा साधारण शब्दथी निगोद अनतकाय कहेवाय छे ते (सुहम निगोओ) के० सूक्ष्मनिगोदीयानु शरीर (अगुलअसखभागो) के० आगुलना असख्यातमा भागनु होय छे, तेथी (असखगुणवाऊ) के० असख्यातगणु सूक्ष्म वायुकायनु जाणवु (तो) के० तेथी असख्यातगणु (अगणि) के० सूक्ष्म अग्निकायनु शरीर जाणवु. (तओ) के० तेथी असख्यातगणु (आऊ) के० सूक्ष्म अप्कायनु जाणवु अने (तत्तो) के० तेथी असख्यातगणु (सुहमा पुढवी भवे) के० सूक्ष्म पृथ्वीकायनु होय एम जाणवु ॥ ४२८ ॥

(तो) के० तेथी असंख्यातगणु (वायर वाउ) के० वादर वायु-कायनुं होय, तेथी असंख्यातगणु (अगणी) के० वादर अग्नि-कायनुं शरीर जाणवुं, तेथी असंख्यातगणु वादर (आउ) के० वादर अप्कायनुं शरीर जाणवुं, तेथी असंख्यातगणु (पुढवी) के० वादर पृथ्वीकायनुं शरीर जाणवुं, अने तेथी असंख्यातगणु (निगोय) के० वादर निगोदनुं शरीर जाणवुं. एम ए दशे शरीर एक बीजाथी असंख्यगुणा छे. तो पण ते दरेक शरीर आंगुलना असंख्यातमा भागनुं जाणवुं. (तु) के० वली (पत्तेयवणसरीरं) के० प्रत्येक वनस्पतिकायनुं शरीर (अहियं जोयण सहस्स) के० एक हजार योजनथी अधिक होय छे. ॥ ४२९ ॥

अहिं कोइने शंका थाय के-पूर्वे कहेला जीवोनां शरीर उत्से-धांगुलप्रमाणथी कह्यां छे अने समुद्र द्रह विगेरेनुं प्रमाण प्रमाणां-गुलथी छे. तो एक हजार योजनना उंडा द्रहादिकमां पद्मनाल विगेरेनुं शरीर केम घटे ? त्यां ग्रंथकार उत्तर कहे छे के-

उस्सेहंगुलजोयण-सहस्समाणे जलासए यं ॥
तं वल्लिपउमपमुहं, अओ परं पुढविरूवं तु ॥ ४३० ॥

अर्थ—(उस्सेहंगुल) के० उत्सेधांगुलेकरी (जोयणसहस्स-माणे) के० एक हजार योजनना प्रमाणवालां (जलासए) के० जलाशय (नेयं) के० जाणवां. (तं) के० ते (वल्लिपउमपमुहं) के० वेल तथा कमल प्रमुख एक हजार योजनथी अधिक होय छे. (अओ परं) के० एथी अधिक उंडा जलाशयोमां घणां मोटां कमलो विगेरे ते (पुढविरूवं) के० पृथ्वीकायरूप जाणवां. ॥४३०॥

जोयणसहस्समहियं, वणस्सइदेहमागमुद्दिट्ठं ॥
तं च किल समुद्दगयं, जलरुहनालं हवइ नन्नं ॥४३१॥

अर्थ—(जोयणसहस्समहिय) के० एक हजार योजनथी अधिक (वणस्सन्देहमाण) के० प्रत्येक वनस्पतिकायनु शरीरप्रमाण (उद्दिट्ट) के० कह्यु छे. (त) के० ते (किल) के० निश्चे (समुद्दगय) के० समुद्रमा रहेला (जलरुहनाल) के० कमलनाल (हवइ) के० होय छे. (नन) के० ते विना बीजी वनस्पतिनु शरीर तेटु न होय. ॥ ४३१ ॥

इवे बेइंद्रियादिक जीवोना विशेष नामग्रहणपूर्वक उत्कृष्टथी शरीरप्रमाण कहे छे ॥

बारस जोयण सखो, तिकोस गुम्मी य जोयण भमरो ॥
मुच्छिम चउपय भुय उरग,गाऊ धणु जोयण पहुत्तं ४३२॥

अर्थ—(सखो) के० शखविगेरे बेन्द्रीयजीवोनुं शरीर (बारस जोयण) के० बार योजननु होय छे (गुम्मीय) के० कानखजुरादिक तेइन्द्रियजीवोनु शरीर (तिकोस) के० त्रण गाउनु जाणवुं (भमरो) के० भ्रमर विगर चउरिन्द्रियजीवोनुं शरीर (जोयण) के० एक योजननु होय छे वली (मुच्छिमचउप्पय) के० समूर्छिम चार पगवाला गाय विगेरे जीवोनु (गाउपहुत) के० बे गाउथी नव गाऊसुधीनु, (भुय) के० समूर्च्छिम नोलीयादि भुजपरिसर्पनुं (धणुपहुत्त) के० बे धनुष्यथी नवधनुष्य सुधीनु, अने (उरग) के० उरपरिसर्पनु (जोयणपहुत्त) के० बे योजनथी नवयोजन सुधीनु उत्कृष्टथी शरीर जाणवु ॥ ४३२ ॥

गब्भचउप्पय छगाउ-याइ भुयगा उ गाउयपुहुत्तं ॥
जोयणसहस्समुरगा, मच्छा ऊभयावि य सहस्स ॥४३३॥
पक्खिदुग धणुपुहुत्त, मच्छांगुल असंखभागलहु ॥

अर्थ—(गब्भचउप्पय) के० गर्भज चतुष्पद हाथी वगेरेनुं शरीर (छगाउयाइ) के० छगाउनुं होय छे. (उ) के० वली (भुयगा) के० गर्भज भुजपरिसर्पनुं शरीर (गाउयपहुत्तं) के० बेगाउथी नव गाउ सुधीनुं होय छे. (उरगा) के० गर्भज उरपरिसर्पनुं शरीर (जोयणसहस्सं) के० एक हजार योजननुं होय छे. तथा (उभयाथि) के० गर्भज अने संमूर्च्छिम (मच्छा) के० मत्सोनुं शरीर (सहस्सं) के० एक हजार योजननुं होय छे. ॥ ४३३ ॥ वली (दुग) के० गर्भज अने समूर्च्छिम एवा (पक्खि) के० पक्षीओनुं शरीरप्रमाण (धणुप्पहुत्तं) के० बे धनुष्यथी नव धनुष्य सुधीनुं होय छे. अने (सव्वाणं) के० एकेंद्रियथी आरम्भी पंचेंद्रितिर्यंच सुधीना सर्व जीवोनुं (लहु) के० जघन्य शरीर (अंगुलअसंखभाग) के० अंगुलना असंख्यातमा भागनु होयछे. ॥

हवे बेन्द्री विगेरे जीवोनो उपपात चवन विरहकाल कहे छे.

विरहो विगलासन्नीण, जम्ममरणेसु अंतमूहु ॥४३४॥
गब्भे मुहुत्त बारस, गुरुओ लहु समय संख सुरतुल्ला ॥

अर्थ—(विगल) के० बेंद्री तेंद्री अने चउरेंद्री तथा (असन्नीण) के० सम्मुर्छिम पंचेंद्रितिर्यंच ए दरेक जीवोनो (जम्ममरणेसु) के० जन्ममरण आश्री विरहकाल (अंतमूहु) के० एक अन्तर्मुहूर्त्तनो (गुरूओ) के० उत्कृष्टथी जाणवो. ॥ ४३४ ॥ अने (गब्भे) के० गर्भज पंचेंद्रितिर्यंचनो उपपात चवन विरहकाल (गुरुओ) के० उत्कृष्टथी (मुहुत्तवारस) के० बारमुहूर्तनो जाणवो, तथा सर्वनो (लहु) के० जघन्यथी विरहकाल (समय) के० एक समयनो जाणवो. वली ए बेन्द्री विगेरे जीवोनी एक समये उत्पत्ति (सुरतुल्ला) के० देवतानी पेठे एक बे त्रणथी संख्याना असंख्याना सुधीनी जाणवी. ॥

हवे एकेंद्रियने उपजवा तथा चववानी सख्या कहे छे

अणुसमयमसखिज्जा, एगिंदिय हुंति य चवंति ॥४३५॥
वणकाइओ अणता, इक्किकाओवि जं निगोयाओ ॥
निच्चमसखो भागो, अणतजीवो चयइ एइ ॥ ४३६ ॥

अर्थ—(एगिंदिय) क० एकेन्द्रिय जीवो (अणुसमयं) के० समय समय प्रत्ये (असखिज्जा) के० असख्याता (हुंति) के० उपजे य के० अने (चवति) के० चवे ॥ ४३५ ॥ वली (वण काइओ) के० वनस्पतिकाय जीवो प्रतिसमये (अणता) के० अनता उपजे अने अनता चवे भावार्थ ए छे के-वनस्पतिकाय माथी वनस्पतिकाय उपजे तो अनता, अने बाकीना पृथ्व्यादि चार स्थावरमाथी वनस्पतिमा उपजे तो असख्याता उपजे एम जाणवु (ज) के० जे कारण माटे (इक्किकाओवि निगोयाओ) के० एक एक एवा निगोदमाथी (निच्च) के० निरन्तर (असखो भागो) क० असख्यातमो भाग जे (अणतजीवो) के० अनत जीवात्मक ते (चयइ) के० चवे छे अने (एइ) के० उपजे छे अहिं निगोद ते अनता जीवोनु एक साधारण औदारिक शरीर सिंघुकाकार एटले पाणीना परपोटा सरखु ते निगोद जाणवु. ते निगोदीया अनता जीवो साथे श्वासोश्वास ल्ये अथवा आहार करे छे तेवा असख्याता निगोद समुदायने गोलो कहवाय, तेवा गोला चउदराज लोक असख्याता छे ॥ ४३६ ॥

गोला य असखिज्जा, असख निग्गोयओ हवइ गोलो ॥
इक्किक्कमि निगोए, अणतजीवा मुणेयव्वा ॥ ४३७ ॥

अर्थ—समाग्मा (असखिज्जा गोला) क० असख्याता

गोला छे. वली (असंखनिगोयओ) के० असंख्याता निगोदे गोलो (हवइ) के० एक गोलो थाय छे. तथा (इक्किकंमि निगोए) के० एक एक निगोदने विषे (अणंतजीवा मुणेयव्वा) के० अनंता जीवो जाणवा. ॥ अहिं निगोदिया जीवोना बे भेद छे. एक संव्यवहारिया बीजा असंव्यवहारिया. तेमां जे अनादि निगोदथी निकली पृथ्वीकायादिकमां जाय ते संव्यवहारिया कहेवाय. कदापि ते जीव फरी पाछो निगोदमां जाय तो पण संव्यवहारीकज कहेवाय पण जे जीवो सूक्ष्म तथा बादर निगोदमांथी निकल्याज नथी ते असंव्यवहारिया कहेवाय छे. ॥ ४३७ ॥

अत्थि अणंता जीवा, जेहिं न पत्तो तसाइ परिणामो ॥
उप्पज्जंति चयंति य, पुणोवि तत्थेव तत्थेव ॥ ४३८ ॥

अर्थ—(अणंता जीवा अत्थि) के० तेवा अनंताजीवो छे के (जेहिं) के० जे जीवो (तसाइपरिणामो) के० त्रस विगेरेना परिणामने (न पत्ता) के० पाम्या नथी, ते जीवो (पुणोवि) के० फरीफरीने (तत्थेव तत्थेव) के० त्यांने त्यांज (उप्पज्जति चयंति य) के० उपजे छे अने चवे छे ॥ ४३८ ॥

सामग्गी अभावाओ, ववहाररासिम्मि अपत्ताओ ॥
सव्वावि ते अणंता, जे मुत्तिसुहं न पावंति ॥ ४३९ ॥

अर्थ—(सामग्गी अभावाओ) के० सकाम निर्जरा तथा अकामनिर्जरारूप सामग्रीना अभावथी (ववहार रासिम्मि) के० व्यवहारराशीमां (अपत्ताओ) के० न पामेला (सवावि ते अणंता) के० तेवा सर्व जीवो पण अनंता छे के (जे) के० जे जीवो (मुत्ति-सुहं न पावंति) के० मुक्तिसुखने पामता नथी ॥ ४३९ ॥

सव्वोवि किसलओ खलु,उग्गममाणो अणंतओ भणिओ
सोचेव विवढ्ढतो, होइ परित्तो अणंतो वा ॥ ४४० ॥

अर्थ—(सव्वोवि किसलओ) के० सर्वे एवा पण किशलय जे कुपला (उग्गममाणो) के० उदयपामता (अणंतओ भणिओ) के० अनतकाय कह्या छे परतु (सोचेव विवढ्ढतो) के० तेज किसलय वृद्धि पामता (परित्तो) के० प्रत्येक वनस्पतिकायना किशलय प्रत्येक अने (अणंतो) के० साधारण वनस्पतिकायना किशलय अनत वनस्पतिकाय (होइ) के० होय छे. ॥ ४४०)

ज नरए नेरईया, दुक्खं पावंति गोयमा तिव्व ॥
तं पुण निगोयमज्झे, अणतगुण मुणेयव्वं ॥ ४४१ ॥

अर्थ—श्रीवीर प्रभुए कह्युं छे के-(गोयमा) के० हे गौतम ! (नरए) के० नरकने विषे (नेरईया) के० नारकी जीवो (ज) के० जेवा (तिव्व) के० आकरा (दुक्ख) के० दुःखने (पावंति) के० पामे छे (त पुण) के० तेथी पण (अणतगुण) के० अनत-गणु दुःख (निगोयमज्झे) के० निगोदनीमध्ये (मुणेयव्व) के० जाणवु ॥ ४४१ ॥

हवे जीवने कया कर्मथी एकेंद्रियपणु प्राप्त थाय ते कहे छे.

जया मोहोदओ तिव्वो, अन्नाण खु महब्भयं
पेलव वेयणीय तु, तया एगिंदियत्तण ॥ ४४२ ॥

अर्थ—(जया) के० ज्यारे (तिव्वो) के० आकरो एवो (मोहोदओ) के० विषयाभिलापरूप मोहनी उदय होय, (खु

के० निश्चे (महब्भयं) के० महाभयकारी (अन्नाणं) के० अज्ञान होय, (तु) के० वली (पेलवं) के० असार एवुं (वेयणीयं) के० असाता वेदनीय कर्म उदय आव्युं होय, (तया) के० त्यारे जीवने (एगिंदियत्तगं) के० एकेन्द्रियपणुं प्राप्त थाय छे. ॥४४२॥

हवे तिर्यंचनी गतिमां कया जीवो आवे? ते आगतिद्वार कहेछे.

तिरिएसु जंति संखा-उतिरिनरा जादुकप्पदेवाओ ॥
पज्जत्तसंख गब्भय, बायर भूदगपरित्तेसु ॥ ४४३ ॥
तो सहसारंतसुरा, निरया पज्जत संख गब्भेसु ॥

अर्थ—एकेंद्री बेंद्री तेंद्री चउरिंद्री तथा (संखाउतिरिनरा) के० संख्याता आयुष्यवाला पंचेंद्री तिर्यंच अने मनुष्य एटला जीवो मरण पामी (तिरिएसु) के० एकेंद्री बेंद्री तेंद्री चउरिंद्री अने पंचेंद्री तिर्यंचने विषे (जंति) के० जाय छे. वली भुवनपति व्यंतर ज्योतषी अने (जादुकप्पदेवाओ) के० सौधर्म तथा ईशान ए बे देवलोकना देवताओ मरण पामीने (पज्जत्तसंखगब्भय) के० पर्याप्ता संख्याता आयुष्यवाला गर्भज तिर्यंचमां तथा (बायर भूदगपरित्तेसु) के० पर्याप्ता बादर पृथ्वीकाय अप्काय अने प्रत्येक वनस्पतिकायमां उपजे ॥ ४४३ ॥ वलो (तो सहसारंतसुरा) के० सनत्कुमारथी मांडीने सहस्रार देवलोक सुधीना देवता तथा (निरया) के० नारकी ए जीवो मृत्यु पामीने (पज्जत्तसंखगब्भेसु) के० पर्याप्ता संख्याता आयुष्यवाला गर्भज तिर्यंचमां जाय ॥ ए तिर्यंचनु आगतिद्वार कह्युं.

हवे तिर्यंचना भवथी मरण पामी क्यां जाय ? ते गतिद्वार कहे छे.

संखपणिंदिय तिरिया, मरिउ चउसुवि गईसु जंति ॥४४४॥
थावर विगला नियमा, सखाउयतिरिनरेसु गच्छंति ॥
विगला लभिज्ज विरइ,सम्मपि न तेउवाउचुया ॥४४५॥

अर्थ—(सखपणिंदियतिरिया) के० सख्याता आयुष्यवाला पंचेंद्रिय तिर्यंच जीवो (मरिउ) के० मरण पामीने (चउसुवि गइसु) के० चार गतिमा (जंति) जाय छे ॥ ४४४ ॥ वली (थावर) के० एकेंद्री जीवो अने (विगला) के० विकलेंद्री जीवो (नियमा) के० निश्चयथी (सखाउयतिरिनरेसु) के० सख्याता आयुष्यवाला तिर्यंच अने मनुष्यने विषे (गच्छति) के० जाय छे (विगला) के० विकलेंद्री जीवो मरण पामी मनुष्य गतिने पामे तेम (लभिज्ज विरइ) के० सर्व सावद्यविरतिरुप चारित्र पामे, पण मोक्ष पामे नहीं. वली (तेउवाउचुया) के० तेउकाय अने वाउकायना जीवो मरण पामी मनुष्य तो न थाय, परंतु तिर्यंच भव पामे तो पण (सम्मपि न) के० समकीत पामे नहीं ॥ ४४५ ॥

हवे तिर्यंचने तथा मनुष्यने लेश्या कहे छे

पुढवि दग परित्तवणा, बायरपज्जत्त हुंति चउलेसा ॥
गब्भयतिरियनराण, छलेस्सा तिन्नि सेसाण ॥४४६॥

अर्थ—(बायरपज्जत्त) के० बादर अने पर्याप्ता एवा (पुढविदगपरित्तवणा) के० पृथ्वीकाय अप्काय अने प्रत्येक वनस्पतिकाय जीवाने (चउलेसा) के० कृष्ण नील कापोत अने तेजो ए चार लेश्या (हुंति) के० होय छे तथा (गब्भयतिरियनराण) के० गर्भज तिर्यंच अने मनुष्यने (छल्लेसा) के० छ लेश्या

हाय छे. तथा (सेसाणं) के० वाकीना सर्वजीवोने (तिन्नि)के० त्रण लेश्या होय छे. ॥ ४४६ ॥

अंतमुहुत्तंमि गए, अंतमुहुत्तंमि सेसए चेव ॥
लेसाहि परिणयाहिं, जीवा वच्चंति परलोयं ॥४४७॥

अर्थ—(जीवा) के० मनुष्य तथा तिर्यंच (लेसाहि परिणयाहिं) के० परभवनी लेश्या आव्या पछी (अंतमुहुत्तमि गए) के० एक अंतर्मुहुर्त्त गये थके मरण पामे छे अने देवता तथा नारकी (अंतमुहुत्तंमि सेसए चेव) के० एक अंतर्मुहूर्त्त पोतानी लेश्या वाकी रही होय त्यारेज (परलोय वच्चंति) के० मरण पामे छे. ॥ ४४७ ॥

तेज वात आगली गाथाथी कहे छे—

तिरिनर आगामिभवे, लेस्साए अइगए सुरानिरया ॥
पुव्वभव लेस्ससेसे, अंतमुहुत्ते मरणमिंति ॥ ४४८ ॥

अर्थ—(तिरिनर) के० तिर्यंच तथा मनुष्य ते (आगामि भवे) के० आवता भवनी (लेस्साए अइगए) के० लेश्या आव्याने अंतर्मुहूर्त्त गया पछी मरण पामे छे. तथा (सुरानिरया) के० देवता अने नारकी ते (पुव्वभव लेस्ससेसे अंतमुहुत्ते) के० पोताना पूर्वना एटले चालता भवनी लेश्या एक अंतर्मुहूर्त्त वाकी होय त्यारेज (मरणमिंति) के० मरण पामे छे. एटले तेजो लेश्यावाला देवता पृथ्वी अप अने प्रत्येकवनस्पतिकायमां आव्याने अंतर्मुहूर्त्त थाय त्यांसुधी तेमने तेजो लेश्या होय छे. आ कारणथी पृथ्वी अप अने प्रत्येक वनस्पतिकायने चार लेश्या कहीछे. ॥४४८॥

हवे मनुष्य तथा तिर्यचने लेश्यानी स्थिति कहे छे

अंतमुहुत्तठ्ठिइओ, तिरियनराण हवंति लेस्साओ ॥
चरिमा नराण पुण नव, वासूणा पुव्वकोडीवि ॥४४९॥

अर्थ—(तिरियनराण) के० पृथ्वीकायादि तिर्यंच तथा मनुष्यने (लेस्साओ) के० पोतपोताने संभवती लेश्याओ (अंतमुहुत्तठ्ठिइओ) के० एक अंतर्मुहूर्त्तनी स्थितिवाली (हवंति) के० होय छे (पुण) के० वली (नराण) के० मनुष्यने (चरिमा) के० छेल्ली शुक्लेश्या (नववासूणा पुव्वकोडीवि) के० नव वर्ष उणी एक पूर्वकोडी वर्ष सुधी रहे छे ते एवी रीते के–गर्भकालना नवमास सहित आठ वर्षमां चारित्र न होय, माटे कोइक जीव नवमे वर्षे चारित्र लइ केवलज्ञान पामे अने त्यार पछी नव वर्ष उणी एवी एक पूर्वकोडी वर्ष पर्यंत जीवतो रहे त्यां सुधी केवलीने एक शुक्ल लेश्याज होय. अने बीजा मनुष्यने तो शुक्ल लेश्या अंतर्मुहूर्त्त सुधीज होय छे ॥ ४४९ ॥

तिरियाणवि ठिइपमुहं, भणियमसेसंपि संपई वुच्छं ॥
अभिहियदारब्भहियं, चउगइ जीवाण सामन्नं ॥४५०॥

अर्थ—(तिरियाणवि) के० एकेंद्रियथी आरंभी पंचेंद्री सुधीना सर्वे तिर्यंचनी (ठिइपमुहं) के० स्थितिप्रमुख (असेसंपि) के० सर्वे आठे द्वार (भणियं) के० कह्यां (संपइ) के० हवणां (अभिहियदारब्भहियं) के० जे द्वार पूर्वे कह्यां नथी ते (चउगइ जीवाण) के० चारे गतिना जीवोना (सामन्नं) के० सामान्यपणे द्वार (वुच्छं) के० कहीश ॥ ४५० ॥

देवा असंखनरतिरि–इत्थीपुवेय गब्भनरतिरिया ॥
संखाउया तिवेया, नपुंसगा नारगाईया ॥ ४५१ ॥

अर्थ—(देवा) के० देवता तथा (असंख नरतिरि) के० असंख्याता आयुष्यवाला युगलिया मनुष्य अने तिर्यंच ए जीवोमां इत्थी पुंवेय) के० स्त्रीवेद अने पुरुषवेद एवा वेद होय छे. वली (संखाउया) के० संख्याता आयुष्यवाला (गब्भनरतिरिया) के० गर्भज मनुष्य अने गर्भज तिर्यंच ते जीवोमां (तिवेया) के० पुरुष स्त्री तथा नपुंसक एवा त्रण वेद होय छे. अने (नारगाईया) के० नारकी आदि एटले नारकी, एकेंद्री, बेंद्री, तेंद्री चउरेंद्री, संमुर्च्छिम मनुष्य तथा संमुर्च्छिम तिर्यंच ए जीवो (नपुंसगा) के० एक नपुंसक वेदवाला जाणवा. ॥ ४५१ ॥

हवे पूर्वे कहेला विमानादिक जे अंगुलप्रमाणथी मपाय ते कहेछे.

आयंगुलेण वत्थुं, सरीर मुस्सेह अंगुलेण तहा ॥
नगपुढविविमाणाइं, मिणसु पमाणंगुलेणं तु ॥ ४५२ ॥

अर्थ—आंगुलनां त्रण भेद छे, आत्मांगुल, उत्सेद्धांगुल अने प्रमाणांगुल. तेमां (आयंगुलेण) के० आत्मांगुले करी (वत्थुं) के० वास्तु जे घर कूवा तलाव विगेरे मपाय. (तहा) के० तथा उस्सेह अंगुलेग) के० उत्सेद्धांगुले करीने (सरीरं) के० देवता विगेरेनुं शरीर मपाय. (तु) के० वली (प्रमाणंगुलेणं) के० प्रमाणांगुले करीने (नगपुढविविमाणाइं) के० पर्वत, नरकपृथ्वी, अने देवविमान विगेरे (मिणसु) के० मपाय छे. ॥ ४५२ ॥ जे काले जे प्राणीओ पोताना हाथना आंगुलथी माप करे ते आत्मांगुल कहेवाय छे. हवे उत्सेद्धांगुलनुं स्वरूप कहे छे.

सत्थेण सुतिक्खेणवि, छित्तुं भित्तुं च जं किर न सक्का ॥
तं परमाणुं सिद्धा, वयंति आइं पमाणाणं ॥ ४५३ ॥

अर्थ—(सुतिक्खेणवि) क० अत्यन्त तीक्ष्ण एवा (सत्थेण) के० शस्त्रेकरीने (ज) के० जे वस्तु (किर) के० निश्चे (छित्तुं भित्तु न सक्का) क० छेदी भेदी न शकाय (सिद्धा) के० सिद्ध एटले केवलज्ञानी पुरुषो (त) क० ते वस्तुने (परमा णुयति) के० परमाणु कहे छे अने ते परमाणु (पमाणाण) के० सर्व प्रमा णोनी मध्ये (आइ) के० आदि प्रमाण छे. ॥ ४५३ ॥

परमाणू तसरेणू रहरेणू, वालअग्ग लिक्खा य ॥
जूय जव अट्ठगुणो, कमेण उस्सेह अंगुलय ॥४५४॥
अंगुल छक्क पाओ,सो दुगुण विहत्थि सा दुगुण हत्थो॥
चउहत्थ धणुदुसहस्स,कोसो ते जोयण चउरो ॥४५५॥

अर्थ—(परमाणू) के० आठ व्यवहार परमाणुए (तसरेणू) के० एक तसरेणु थाय आठ तसरेणुए (रहरेणु) क० एक रथ रेणु थाय आठ रथरेणुए (वालअग्ग) के० एक वालाग्र थाय आठ वालाग्रे (लिक्खाय) के० एक लीख थाय आठ लीखे (जूय) के० एक थाय आठ जूये (जव) के० एक जव थाय. अने (अठगुणो) के० जवने आठगुणो करीये त्यार (कमेण) के० अनुक्रमे करीने (उस्सेह अंगुलय) के० एक उत्सेधांगुल थाय ॥ ४५४ ॥ (अंगुलछक) के० तेवा छ उत्सेधांगुले (पाओ) के० एक पग थाय. (सो दुगुण) के० पगने बमणो करीये त्यारे (विहत्थि) के० एक वेंत थाय, (सा दुगुण)के० बे वते (हत्थो) क० एक हाथ (चउहत्थे) के० चार हाथे (धणु) के० एक धनुष्य थाय, (दुसहस्स) तेवा बे हजार धनुष्ये (कोसो) क० एक कोश थाय. (ते चउरो) क० ते चारकोशे (जोयण) के० एक योजन थाय छे ॥ ४५५ ॥

हवे प्रमाणांगुलनुं स्वरूप कहे छे.

चउसयगुणं पमाणं-गुलमुस्सेहंगुलाउ बोधव्वं ॥
उस्सेहंगुल-दुगुणं, वीरस्सायंगुलं भणियं ॥ ४५६ ॥

अर्थ—(चउसयगुणं) के० चार सो गणु (उस्सेहुंगुलाउ) के० उत्सेद्धांगुल करीये अर्थात् चारसो उत्सेद्धांगुले (पमाणंगुलं) के० एक प्रमाणांगुल (बोधव्वं) के० जाणवुं आ प्रमाणांगुले श्रीऋषभदेव भरतचक्रवर्तीनुं शरीर एकसो वीस अंगुल लांबु जाणवुं, ते एकसो वीस अंगुलने चारसो गणुं करीये त्यारे अडतालीश हजार अंगुल थाय. अहिं छन्नु अंगुले धनुष्य थाय छे माटे अडतालीश हजारने छन्नुए भागीए त्यारे पांचसो धनुष्यनुं देहमान थाय. वली (उस्सेहंगुलदुगुणं) के० उत्सेद्धांगुलने बमणां करीये त्यारे (वीरस्स) के० वीरप्रभुनुं (आयंगुले) के० एक आत्मांगुल (भणियं) के० कह्युं छे. एवा चोराशी अंगुलप्रमाण श्रीमहावीर प्रभुनुं शरीर हतुं. चोराशीने बमणा करीये त्यारे एक सो अडसठ थाय. एक हाथना चोवीस अंगुल गणतां एकसो अडसठने चोवीसे भांगता श्रीमहावीर प्रभुनुं सात हाथ प्रमाण शरीर होय. ए कारणे बे उत्सेद्धांगुले श्रीमहावीरनो एक आत्मांगुल कह्यो छे. ॥ ४५६ ॥

हवे चोराशी लाख जीवायोनीना भेद कहे छे.

पुढवाइसु पत्तेय, सग वण पत्तेय णंत दस चउद ॥
विगले दुदु सुरनारय, तिरि चउचउ चउदस नरेसु॥४५७॥

अर्थ—(पुढवाइसु) के० पृथिव्यादिकने विषे एटले पृथ्वी, अप, तेउ. अने वायु ए चारने विषे (पत्तेयं) के० दरेकने (सग)

के० सात सात लाख योनि होय छे तथा (वण पत्तेय) के० प्रत्येक वनस्पतिकायने (दश) दशलाख योनि होय छे. अने (अणंत) के० साधारण वनस्पतिकायने (चउद) के० चउद लाख योनि होय छे वली (विगले) के० बेंद्री तेंद्री अने चउरेंद्रीने दरेकने (दुदु) के० बे बे लाख योनि होय छे तथा (सुरनारय तिरि) के० देवता नारकी अने पचेंद्री तिर्यचने (चउ चउ) के० चार चार लाख योनि होय छे अने (नरेसु) के० मनुष्यने विषे (चउदस) के० चउद लाख योनि होय छे. ॥ ४५७ ॥ अहिं चोराशी लाख योनि सख्यानी गणती करता सामान्यपणे योनि जातिये करी एक जीव निकायमा जेनो वर्ण, गंध रस अने स्पर्श सरखो होय ते एक जातियोनिमा ग्रहण कराय तेवा सर्व मली चोराशी लाख भेद थाय छे. ॥

हवे एक एक योनिमा कुल होय ते कहे छे.

एगिंदिएसु पचसु, बार सगति सत्त अट्ठवीसा य ॥
विगलेसु सत्त अड नव,जल खह चउपय उरगभुयगे॥४५८
अद्धतेरस बारस, दस दस नवग नरामरे निरए ॥
बारस छवीस पणवीस,हुंति कुलकोडि लक्खाइं ॥४५९॥
इगकोडि सत्त नवई, लक्खा सद्धा कुलाण कोडीण ॥

अर्थ—(पचसु एगिंदिएसु)के० पाच एकेंद्रिय एटले पृथ्वी अप तेउ वाउ अने वनस्पतिकायने विषे अनुक्रमे करीने (बार) के० बार लाख, (सग) के० सात लाख, (ति)के० त्रण लाख, (सत्त) के० सात लाख अने (अट्ठावीसा) के० अट्ठावीश लाख कुलकोटी जाणवी (विगलेसु) के० विगलेंद्री एटले बेंद्री तेंद्री

अने चउरंद्रीने विषे अनुक्रमे (सत्त) के० सात लाख,) (अड) के० आठ लाख, अने (नव)के० नव लाख कुलकोटी जाणवी. वली (जल) के० जलचर, (खह) के० खेचर, (चउप्पय) के० चतुष्पद, (उरग) के० उरपरि सर्प अने (भुयगे)के० भुजपरिसर्प ए पांचेने अनुक्रमे ॥ ४५८ ॥ (अद्धतेरस) के० साडावार लाख,(बारस के० बार लाख, (दस) के० दश लाख, (दस) के० दश लाख, अने (नवगं) के० नव लाख कुलकोटी जाणवी. एमज (नरामरे निरये) के० मनुष्य, देवता अने नारकीने विषे अनुक्रमे (बारस) के० बार लाख, (छवीस) के० छवीश लाख अने (पणवीस)के० पचीस लाख (हूंति कुलकोडि लक्खाइं)'के० कुलकोडी जाणवी. ॥४५९॥ ए सर्व संख्या एकठी करीय त्यारे (इगकोडि) के० एक कोडा कोडी, अने (सगनवइ लक्खा सड्ढा) के० साडीसत्ताणुं लाख कोडी एटली (कुलाण कोडीणं) के० कुलकोडी एटले एटली जीवोने उपजवानी योनिमांहे कुलकोडी छे.

हवे बीजे प्रकारे योनी कहे छे.

संवुडजोणि सुरेगिंदि–नारया वियड विगल गब्भु-
भया ॥ ४६० ॥

अर्थ—(सुर) के० चार प्रकारना देवता, (एगिंदि) के० एकेंद्री ते पृथ्वी आदि पांच स्थावर, अने (नारया) के० नारकी ए सर्वे (संवुडजोणि) के० ढांकेली योनिवाला होय छे. त्यां देवताना देवदुष्ये ढांकेला देवशयनीय होय, एकेंद्रिय जीवोनी योनि स्पष्ट जाणी शकाय नहीं, नारकीने ढांकेला गोखने आकारे आला छे. वली (विगल) के० विकलेंद्रीने तथा संमूर्च्छिम तिर्यंच अने संमूर्च्छिम मनुष्यने (वियड) के० प्रगट जलाशय सरोवर विगेरे

देखाय छे. तथा (गब्भुभया) क० गर्भज पचेंद्रीतिर्यंच अने गर्भज पचेंद्री मनुष्य ए बन्नेने संवृत अने विवृत एटले ढांकेली अने प्रगट एम प्रकार योनी होय छे ॥ ४६० ॥

वली पण योनीना भेद कहे छे

अचित्तजोणि सुरनिरय, मीस गब्भे तिभेय सेसाण ॥ सी उसिण निरय सुरगब्भ,मीसत्ते उसीण सेस तिहा४६१॥

अर्थ—(सुर) क० देवना अने (निरय) के० नारकी तेमनी (अचित्तजोणि) के० अचित्तयोनी होय छे जोके सूक्ष्म जीव तो सर्वलोक व्यापी छे तो पण सूक्ष्म एकेंद्री जीवने प्रदेशे त क्षेत्र सनत नथी तथा (गब्भे) क० गर्भज तिर्यंच अने गर्भज मनुष्यने (मीस) के० मीश्र एटले सचित अचित होय छे शुक्र ऋतु रुधिर सग्राह्य सचित्त अने बीजी अचित जाणवी (सेसाण) के० एकेंद्री, बेंद्री, तेंद्री, चउरेंद्री,समूर्च्छिम पचद्री तिर्यच अने समूर्च्छिम पचेंद्री मनुष्य एटलानी (तिभेय) के० सचित अचित्त अने मिश्र योनी होय छे जीवतो गाय विगेरना शरीरे क्रमी उपजे ते सचित्त योनी जाणवी, सूका लाकडामा घुण विगेर उपजे ते अचित्त योनी जाणवी, अर्द्ध सूका लाकडा तथा गाय विगेर शरीरना क्षताादिकमा घुण क्रमि विगेरे उपजे ते मिश्र योनी जाणवी (निरय) के० नारकीजीवोने केटलाकने (सी) के० शीतयोनी अने केटलाकने (उसिण) क० उष्ण योनी होय छे (सुर) क० देवताने तथा (गब्भ) के० गर्भज तिर्यंच अने गर्भज मनुष्यने (मीस) के० शीत अने उष्ण एम मिश्रयोनी होय छे (ते) के० तेउकाय जीवोने एक उष्ण योनी होय छे (सेस) क० बाकी रहना जे पृथ्वी, अप, वाउ, वनस्पति, समूर्च्छिम तिर्यंच अने समूर्च्छिम

मनुष्य ए छएने (तिहा) के० शीत, उष्ण अने शीतोष्ण योनी होय छे. ॥ ४६१ ॥

हवे एकला मनुष्यनी योनीना भेद कहे छे.

हयगब्भ संखवत्ता, जोणी कुम्मुन्नयाइ जायंति ॥
अरिहहरि चक्किरामा, वंसीपत्ताइ सेस नरा ॥४६२॥

अर्थ—मनुष्यनी योनी त्रण प्रकारे छे एक शंखावर्त्ती, बीजी कुर्मोन्नता, त्रीजी वंशीपत्रा. तेमां (संखवत्ता) के० शंखावर्त्ती (जोणी) के० योनी (हयगब्भ) के० हतगर्भा होय छे. कारण एमां उपजेलो गर्भ अत्यंत अग्नितापथी मरण पामे छे. तेवी योनी चक्रवर्तीनी स्त्रीने होय छे. बीजी (कुम्मुन्नयाइ) के० कुर्मोन्नता ते काचवानी पीठ सरखी उंची होय. ते मांहे अरिहहरि चक्किरामा के० अरिहंत, वासुदेव, चक्रवर्ती अने बलदेव (जायंति) के० उत्पन्न थाय छे. त्रीजी (वंसीपत्ताइ) के० वंसीपत्रा ते वांसना पत्राकार योनी होय तेमां (सेसनरा) के० बाकीना सर्व मनुष्यनो जन्म थाय छे. ॥ ४६२ ॥

हवे आयुष्यबंध संबंधी कांइ विशेष कहे छे.

आउस्स बंधकालो, अबाहकालो य अंतसमओ य ॥
अपवत्तण णपवत्तण, उवक्कम णुवक्कमा भणिया ॥ ४६३ ॥

अर्थ—चालता भवनुं आयुष्य पूर्ण थवाना पहेलां परभवनुं आयुष्य बांधे ते (आउस्स) के० आयुष्यनो (बंधकालो) के० बंधकाल कहेवाय १, आयुष्य बांध्या पछी जेटलो काल गये थके आयुष्य उदय आवे तेना वचमानो जे काल ते (अबाहकालो) के० अबाधाकाल कहेवाय २, भोगवातुं आयुष्य जे समये पूर्ण थाय

ते (अतसमओ य) के० अतसमय कहीये ३, घणा काले वेदवा योग्य आयुष्यने थोडा समयमा वेगीये ते (अपवत्तण) के० अप वर्त्तन कहीये ४, जे आयुष्य जेटले काले वेदवानु छे ते आयुष्य तेटलेज काले वेदाय ते (णपवत्तण) के० अनपवर्त्तन कहीये ५, जेणे करी आयुष्य ओछु करीये ते (उवक्कम) के० सोपक्रम कहीये ६, कारण मल्या छता पण आयुष्य घटे नहीं ते (णुवक्कमा) के० अनुपक्रम कहीये ७, एवी रीते आयुष्यना सात भेद (भणिया) के० कह्या छे ॥ ४६३ ॥

हवे ते साते द्वारने अनुक्रमे विस्तारथी वखाणे छे.

बंधंति देव नारय, असंख नरतिरि छमास सेसाऊ ॥
परभवियाऊ सेसा, निरुवक्कम तिभाग सेसाऊ ॥४६४॥
सोवक्कमाउया पुण, सेस तिभागे अहव नवम भागे ॥
सत्तावीसइमे वा, अंतमुहुत्तंतिमे वावि ॥ ४६५ ॥

अर्थ—(देव) के० चार निकायना देवता, (नारय) के० नारकी तथा (असंख नरतिरि) के० असंख्याता आयुष्यवाला युगलिया मनुष्य अने तिर्यंच ते सर्व (छमास सेसाऊ) के० पोताना चालता भवनु आयुष्य छ मास बाकी होय त्यारे (परभवियाऊ) के० पर भवनु आयुष्य (बंधंति) के० बांधे छे अने (सेसा) के० बीजा संख्याता आयुष्यवाळा तिर्यंच, मनुष्य, एकेंद्री, बेंद्री, तेंद्री, चौरेंद्री अने पचेंद्री जीवो (निरुवक्कमतिभागसेसाऊ) के० निरुपक्रम एवा पोताना भोगवाता आयुष्यनो त्रीजो भाग बाकी होय त्यारे परभवनु आयुष्य बांधे छे ॥ ४६४ ॥ (पुण) के० वळी (सोवक्कमाउया) के० सोपक्रम आयुष्यवाळा मनुष्य, तिर्यंच,

एकेंद्री, बेंद्री, तेंद्री, चौरेंद्री अने पंचेंद्री जीवो (सेसतिभागे) के० पोताना भोगवाता आयुष्यनो त्रीजो भाग बाकी होय त्यारे, (अहव) के० अथवा (नवमभागे)के० नवमो भाग बाकी होय त्यारे, अथवा (सत्तावीसइमे वा) के० सत्तावीसमो भाग बाकी होय त्यारे, अथवा (अंतमुहुत्तंतिमेवावि)के० छेल्ले अंतर्मुहूर्त्त आयुष्य बाकी होय त्यारे परभवनुं आयुष्य बांधे छे. ॥ ४६५ ॥ ए बंध-कालनुं प्रथमद्वार कह्युं.

हवे अबाधाकालादिकना बीजा द्वारा कहे छे.

जइमे भागे बंधो, आउस्स भवे अबाहकालोसो ॥
अंते उज्जुगइ इग-समय वक्क चउपंच समयंता ॥४६६॥

अर्थ—(जइमे भागे) के० जे जीव पूर्वे कहेला जे भागे (आउस्स बंधो) के० परभवनां आयुष्यनो बंध करे (सो अबाह-कालो) के० ते अबाधाकाल एटले आयुष्यनो बंध कर्या पछी परभवना आयुष्यनी उदय पहेलांनो अर्थात् वच्चेनो समय ते अबाधाकाल (भवे) के० होय छे. वली (अते) के० अंतसमये जीवने परभवे जातां बे गति होय छे. एक ऋजुगति, बीजी वक्रगति. तेमां जे (उज्जुगइ) के० ऋजुगति छे ते (इगसमय) के० एक समय प्रमाण होय छे अने (वक्क) के० वक्रगति छे ते (चउपंच समयंता) के० चार पांच समयनी होय छे. ॥ ४६६ ॥

उज्जुगइ पढमसमए, परभवियं आउयं तहाहारो ॥
वक्काइ बीयसमए, परभवियाउं उदयमेई ॥ ४६७ ॥

अर्थ—(उज्जुगइ) के० ऋजुगतिये (पढमसमए) के० पहेला समयने विषे (परभवियं आउयं) के० परभवनुं आयुष्य उदय

आवे, तदा के० तेमज (आहारो) क० आहार पण पहेलेज समये उन्य आवे (वक्काइ) के० वक्रगतिये (बीयसमए) के० बीजा समये (परभवियाउ) के० परभवनु आयुष्य तथा आहार (उन्य मेइ) के० उदय आवे छे ते एक समयनी वक्रगति जाणवी बीजी वक्राए त्रण समय लागे त्रीजी वक्राए चार समय लागे अने चोथी वक्राए पाच समय लागे अहिं प्रथम समये अने अंत समये जीवने आहारक जाणवो वचला एक बे त्रण समये अनाहारक होय छे ॥ ४६७ ॥ एज वात आगलनी गाथाथी कहे छे

इगदुति चउ वक्कासु, दुगाइसमएसु परभवाहारो ॥
दुगवक्काइसु समया, इगदोतिन्नि य अणाहारा ॥२६८॥

अर्थ—(इगदुतिचउवक्कासु) क० एक बे त्रण अने चार समयनी वक्रगतिये जीव (दुगाइ समएसु) के० बे आदि समयने विषे (परभवाहारो) के० परभवना आहार करे छे पहेले एक समयनी वक्रगतिये बीजे समये, समयनी वक्रगतिये त्रीजे समये, त्रण समयनी वक्रगतिये चोथे समये, अने चार समयनी वक्रगतिये पांचमे समये परभवनो आहार करे छे (दुगवक्काइसु) क० बे स मयादिक वक्रगतिमा (इगदोतिन्निय) के० एक, बे, त्रण विगेर समय सुधी जीव (अणाहारा) के० अनाहारक होय ॥ ४६८ ॥

बहुकालवेयणिज्ज, कम्म अप्पेण जमिह कालेण ॥
वेइज्जइ जुगवं चिय, उइन्न सव्वप्पएसग्ग ॥ २६९ ॥
अपवत्तणिज्जमेय, आउ अहवा असेसकम्मंपि ॥
बंधसमएवि बद्ध,सिढिलं चिय त जहा जोग ॥२७०॥

अर्थ—(इह) के० अहिं (बहुकालवेयणिज्जं) के० बहु-वेदवा योग्य (जं कम्मं) के० जे आयुष्य कर्म (अप्पेण कालेणं) के० थोडा कालमां (सव्वप्पएसग्गं) के० आत्माना सर्व प्रदेशना अग्रभागे (उइन्नं) के० उदय आणी (चिय) के० निश्चे (जुगवं) के० समकाले (वेइज्जइ) के० वेदे ॥४६९॥ (एयं) के० ए (आउं) के० आयुष्य कर्म (अपवत्तणिज्जं) के० अपवर्तन कहीये. (अहवा) के० अथवा आयुष्यनी पेठे (असेसकम्मंपि) के० बीजां सर्व कर्म पण बहुकाले वेदवा योग्य छतां थोडे काले वेदाय ते अपवर्त्तन कहीये. अहिं कोइने शंका थाय के-जेवी रीते कर्म बांध्युं होय तेवी रीते न वेदाय तो पछी बांध्या न बांध्यामां विशेष शुं ? त्यां उत्तर कहे छे के-(बंधसमएवि) के० बंधना अवसरे पण (तं) के० ते कर्म (जहा जोगं) के० यथायोग्य मलेला कारणे करी (चिय) के० निश्चे (सिढिलं बद्धं) के० शिथिल एटले ढीलुं कर्म बांध्युं होय जेथी देशकालादिक कारण मलवाथी थोडा समये ते कर्म वेदाय. ते सोपक्रम कहेवाय छे. ॥ ४७० ॥

जं पुण गाढनिकायण–बंधेण पुव्वमेव किल बद्धं ॥
तं होइ अणपवत्तण, जुग्गं कम वेयणिज्जफलं ॥४७१॥

अर्थ—(पुण) के० वली (जं) के० जे कर्म (गाढनिकायणबंधेण) के० गाढ निकाचित बंधेकरीने (पुव्वमेव) के० प्रथमथीज (किल) के० निश्चे (बद्धं) के० बांध्युं छे. (तं) के० ते (अणपवत्तण) के० अनपवर्त्तन (होइ) के० होय. ते (जुग्ग) के० योग्य रीतेज (कम) के० अनुक्रमे करी (वेयणिज्जफलं) के० वेदवा योग्य फलवालुं होय छे. ॥ ४७१ ॥

हवे कया जीवो सोपक्रमी अने कया जीवो निरुपक्रमी ते कहेछे.

उत्तम चरमसरीरा, सुरनेरइया असंखनरतिरिया ॥
हुंति निरुवक्कमाओ, दुहावि सेसा मुणेयव्वा ॥ ४७२ ॥

अर्थ—चोवीश तीर्थंकर, बार चक्रवर्ती, नव वासुदेव, नव प्रतिवासुदेव अने नव बल्देव एटला (उत्तम) के० उत्तम पुरुषो कहेवाय तेओ, तथा (चरम सरीरा) के० तेज भवे मोक्षे जनारा चरम शरीरवाला, तथा (सुर) के० चार प्रकारना देवता, तथा (नेरइया) के० साते नरकना जीवो, तथा (असंखनरतिरिया) के० असंख्याता आयुष्यवाला युगलिया मनुष्य अने तिर्यंच एटला जीवो (निरुवक्कमाओ) के० निरुपक्रम आयुष्यवाला (हुंति) के० होय छे. अने (सेसा) के० ते विनाना बीजा जीवो (दुहावि) के० सोपक्रम आयुष्यवाला तथा निरुपक्रम आयुष्यवाला एम बे प्रकारना (मुणेयव्वा) के० जाणवा ॥ ४७२ ॥

जेणाउमुवक्कमिज्जइ, अप्पसमुत्थेण इयरगेणावि ॥
सो अज्झवसाणाई, उवक्कमऽणुवक्कमो इयरो ॥ ४७३ ॥

अर्थ—(जेण) के० जे (अप्पसमुत्थेण) के० आत्माथी उत्पन्न थयेला अध्यवसायादिक करीने अथवा (इयरगेणावि) के० बीजा शस्त्र विगेरेथी करीने (आउ उवक्कमिज्जइ) के० पोतानु आयुष्य ओछु करीये (सो अज्झवसाणाई) के० ते अध्यवसाय विगेरे (उवक्कम) के० उपक्रम कहीये अने (इयरो) के० बीजा ते अणुवक्कमो) के० अनुपक्रम कहीये ॥ ४७३ ॥

हवे उपक्रमना सात भेद कहे छे

अज्झवमाण निमित्ते, आहारे वेयणा पराघाए ॥
फासे आणापाणू, सत्तविह झिज्झए आउं ॥ ४७४ ॥

अर्थ—(अज्झवसाण) के० राग स्नेह भय विगेरे मननो विकल्प, (निमित्ते) के० शस्त्र विगेरे कारण, (आहारे) के० आहार, (वेयणा) के० शीघ्र विनाशी शूलादि वेदना, (पराघाए) के० खाडा कुवामां तथा वृक्ष विगेरेथी पडवुं. (फासे) के० सर्प अग्नि विष विगेरेनो स्पर्श, अने (आणापाणू) के० श्वासनुं न्यूनाधिक चालवुं. (सत्तविहं) के० ए सात प्रकारे आउं) के० आयुष्य (झज्झए के० नाश पामे छे. ॥ ४७४ ॥

ए सात प्रकारना वालमरण क्रोधादिक चार कषायना कारणथी थाय छे माटे क्रोधादिक चार कषायनुं स्वरूप कहे छे.

जलरेणुपुढविपव्वय–राई सरिसो चउव्विहो कोहो ॥
तिण सलया कट्ठट्ठिअ–सेलत्थंभोवमो माणो ॥४७५॥

अर्थ—संजलननो, प्रत्याख्याननो अप्रत्याख्याननो, अने अनंतानुवंधीनो एम (चउव्विहो कोहो) के० चार प्रकारनो क्रोध ते अनुक्रमे (जल) के० पाणीमां करेली रेखा सरखो, (रेणु) के० रेतीमां करेली रेखा सरखो, (पुढवि) के० पृथ्वीमां पडेला रेखा सरखो, अने (पव्वयराइ सरिसो) के० पर्वतमां पडेली फाट सरखो जाणवो. तथा संजलननो, प्रत्याख्याननो, अप्रत्याख्याननो, अने अनंतानुवंधीनो एम चार प्रकारनो (माणो) के० मान ते अनुक्रमे (तिणसलया) के० नेतरना थांभला सरखो, (कठ) के० लाकडाना थांभला सरखो, (अट्ठिअ) के० हाडकाना थांभला सरखो, अने (सेलत्थंभोवमो) के० पथ्थरना थांभला सरखो जाणवो. ॥ ४७५ ॥

मायावलेहिगोमुत्ती, मिढसिंगघणवंसमूलसमा ॥
लोहोहलिद्दखंजण–कद्दमकिमिरागसारिच्छो ॥ ४७६ ॥

अर्थ—संजलननी, प्रत्याख्यानननी, अप्रत्याख्यानननी अने अनंतानुबंधी एम चार प्रकारनी (माया) के० माया ते अनुक्रमे (अवलेहि) के० वासनी छाल सरखी, (गोमुत्ती) के० गोमुत्र-सरखी, (मिढसिंग) क० मेंढाना शिंगडा सरखी, अने (घण वंसमूलसमा) के० कठीन वासना मूल सरखी छे तेमज संजलन नो, प्रत्याख्याननो, अप्रत्याख्याननो अने अनंतानुबंधीनो (लोहो) के० लोभ ते (हलिद्द) के० हलदरना रंग सरखो, (खंजण) क० सरावलाना मेल सरखो, (कद्दम) के० कादवना पास सरखो, अने (किमिरागसारिच्छो) क० करमजीना रंग सरखो होय छे. ॥ ४७६)

पक्खं चउमास संवच्छर–जावजीवाणु भवे कमसो ॥
देवनरतिरिय नारय–गइ साहणहेउआ भणीया ॥४७७॥

अर्थ—ते संजलनादिक कषाय (कमसो) के० अनुक्रमे (पक्ख) के० पंदर दिवस, (चउमास) के० चारमास, (संवच्छर) के० एक वर्ष अने (जावजीवाणु) के० यावत् जीवित सुधी (भवे) के० होय, वली ते संजलनादिक कषाय अनुक्रमे (देव-नरतिरियनारयगइ) के० देवता, मनुष्य, तिर्यंच अने नारकीनी गतिना (साहणहेउआ) क० मेलववाना कारण (भणिया) के० कह्या छे ॥ ४७७ ॥

हवे सर्व जीवने पर्याप्ति कहे छे

आहारसरीरिंदिय, पज्जत्ती आणपाण भास मणे ॥
चउपंचपंचछप्पिय, इग विगलासन्निसन्नीणं ॥ ४७८ ॥

अर्थ—पुद्गल परिणमन हेतु जे आत्मशक्तिविशेष ते पर्याप्ति कहेवाय पर्याप्ति छ प्रकारे छे (आहार) के० आहारपर्याप्ति, (सरीर) के० शरीरपर्याप्ति, (इन्दिय पज्जत्ती) क० इंद्रियपर्याप्ति,

(आणपाण) के० श्वासोश्वासपर्याप्ति, (भास) के० भाषापर्याप्ति, (मणे) के० मनपर्याप्ति. तेमां (इग) के० एकेंद्रियजीवोने (चउ) के० चार, (विगल) के० विकलेंद्रियजीवोने (पंच) के० पांच, (असन्नि) के० असंज्ञी पंचेंद्रियने (पंच) के० पांच, अने (सन्नीणं) के० संज्ञी पंचेंद्रियने (छप्पिय) के० छ पर्याप्ति होय छे. ॥४७८॥

आहारसरीरिंदिअ, ऊसासवओ मणोभि निव्वत्ति ॥
होइजओ दलियाओ,करणं पइ सा उ पज्जत्ती ॥४७९॥

अर्थ—(आहार) के० आहारपर्याप्ति, (सरीर) के० शरीरपर्याप्ति, (इंदिअ) के० इंद्रियपर्याप्ति, (पइ) के० प्रत्ये (ऊसास) के० श्वासोश्वासपर्याप्ति, (वओ) के० वचनपर्याप्ति, अने (मणो) के० मनपर्याप्ति, ए छ पर्याप्तिनी (अभिनिव्वत्ति) के० उत्पत्ति (जओ दलिआओ) के० जे पुद्गल दलथकी आहारादिकनी उत्पत्तिप्रत्ये (करण) के० जीव सम्बन्धी शक्तिविशेष (होइ) के० थाय ने (पज्जत्ती) के० पर्याप्ति कहेवाय छे. ॥ ४७९ ॥

हवे जीवने दश प्राण होय ते कहे छे.

पण इंदिय तिबलूसा,साऊ दस पाण चउ छ सग अट्ठ ॥
इगदुतिचउरिंदाणं, असन्निसन्नाण नव दस य ॥४८०॥

अर्थ—स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु अने श्रोत्र ए (पण इंदिय) के० पांच इंद्रिय, मनोबल वचनबल अने कायबलरूप (तिबल) के० त्रण बल, (ऊसास) के० श्वासोश्वास, अने (आऊ) के० आयुष्य ए (दस पाण) के० दश प्राण जाणवा. तेमां (इग) के० एकेंद्रियने (चउ) के० चार, (दुतिचउरिंदिणं) के० बेंद्री तेंद्री अने चउरिंद्रीने अनुक्रमे (छ सग अट्ठ) के० छ सात अने आठ प्राण होय छे. (य) के० तथा (असन्निसन्नीण) के० असंज्ञी पचेंद्रीय

तथा सज्ञीपचेंद्रीयने (नव दस) के० नव अने दश प्राण अनुक्रमे जाणवा ॥ ४८० ॥

एगिंदियस्सवि आहार-भयमेहुणपरिग्गहाइ सन्नाइ ॥
कोहे माणे माया-लोहे ओहे य लोगे य ॥ ४८१ ॥

अर्थ—(एगिंदियस्सवि) के० एकेंद्रीय जीवोने (आहार) क० आहार, (भय) के० भय, (मेहुण) क० मैथुन, (परिग्गह) क० परिग्रह, (कोहे) के० क्रोध, (माणे) के० मान, (माया) के० माया, (लोहे) के० लोभ (ओहय) के० ओघ अने (लोगेय) के० लोक ए दश (सन्नाइ) के० सज्ञा होय छे ॥ ४८१ ॥

हव जीवोने समुद्घात कह छे

वेयण कसाय मरणे, वेउव्वी तेय हार केवलिया ।।
सग पण चउ तिन्नि कमा, नर सुर नेरइयतिरियाण ॥४८२॥

अर्थ—(वेयण) के० वेदना, (कसाय) के० कसाय, (मरणे) के० मरण, (वउव्वी) के० वैक्रिय, (तेय) के० तेजस, (आहार) के० आहारक अने (केवलिया) के० केवली, ए सात समुद्घात जाणवा—तेमा (नर) के० मनुष्यने (सग) के० सात, (सुर) के० देवताने (पण) के० पांच, (नेरइय) के० नारकीने (चउ) के० चार, अने (तिरियाण) के० तिर्यंचने (तिन्नि) के० त्रण समुद्घात (कमा) क० अनुक्रमे होय छे ॥ ४८२ ॥

हवे सक्षेप सग्रहणीना चोवीस द्वार कहे छे

संखित्तयरी उ इमा, सरीरमोगाहणा य संघयणा ॥
सन्ना संठाण कसाय,लेसिंदिय दु समुग्घाया ॥४८३॥
दिट्ठीदसणनाणे, जोगुवओगोववायचवणठिइ ॥
पज्जत्ति किमाहारे, सन्नि गई आगई वेए ॥ ४८४॥

अर्थ—(इमा) के० आ संग्रहणी (संखित्तयरी) के० अति संक्षेपमात्र चोवीसद्वारे करी कहे छे, १ (सरीर) के० शरीरद्वार, २, ओगाहणाय) के० अवगाहना द्वार, ३ (संघयणा) के० संघयणद्वार, ४ (सन्ना) के० संज्ञाद्वार, ५ (संठाण) के० संस्थानद्वार, ६ (कसाय) के० कसायद्वार, ७ (लेस) के० लेश्याद्वार, ८ (इंदिय) के० इंद्रियद्वार, ९, (दुसमुग्घाया) के० द्विसमुद्घातद्वार, १० (दिट्ठी) के० दृष्टिद्वार, ११ (दंसण) के० दर्शनद्वार, १२ (नाणे) के० ज्ञानद्वार अने १३ अज्ञानद्वार, १४ (जोग) के० जोगद्वार, १५ (उवओग) के० उपयोगद्वार, १६ (उववाय) के० उपपातद्वार, १७ (चवण) के० च्यवनद्वार, १८ (ठिइ) के० स्थितिद्वार, १९ (पज्जत्ति) के० पर्याप्तिद्वार, २० (किमाहारे) के० किमाहारद्वार. २१ (सन्नि) के० संज्ञाद्वार, २२ (गई) के० गतिद्वार,२३(आगई) के० आगतिद्वार,२४(वेए) के० वेदद्वार॥४८४॥

मलहारहेमसुरीण, सीसलेसेण सूरिणा रइयं ॥
संघयणिरयणमेयं, नंदउ जावीरजिणतित्थं ॥ ४८५ ॥

अर्थ—(मलहार हेमसुरीण) के० मलधारी गच्छना हेमचन्द्रसूरिना (सीसलेसेण) बालशिष्य एवा (सूरिणा) के० चन्द्रसूरिए (रइयं) के० रच्युं (संघयणिरयणं) के० आ संग्रहणीरत्न (जावीरजिणतित्थं) के० ज्यां सुधी वीरतीर्थप्रवर्त्ते त्यां सुधी (नंदउ) के० वृद्धिपामो ॥ इति चन्द्रसूरिरचिता संग्रहणी समाप्ता ॥

